In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

वनस्पति परिचय

(संक्षिप्त सचित्र)

—अन्तुभाई वैद्य
आयुर्वेदाचार्य

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

बल भारतीय आयुर्वेद महासम्मेलन

श्रीं शंकर दाजी शास्त्री पदे स्मारक पुस्तकालय

धन्वन्तरि-भवन, नई दिल्ली-२६

क्रमांक 1774

न्थनाम वनस्पति परिचय

खक/सम्पादक अन्नु भाई वैद्य,

काशक

क्रय तिथि

मूल्य

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

वनस्पति-परिचय

(संक्षिप्त सचित्र)

★

लेखक

अन्तुभाई वैद्य, आयुर्वेदाचार्य

डायरेक्टर:

आयुवद रिसर्च इन्स्टीट्यूट,

प्रधान सम्पादक:

आराग्य विभाग, वंदेमातरम् गुजराती दैनिक.

स्त्री विज्ञान, स्वयमभिषक् आदि पुस्तकों

के रचयिता.

★

१९५२

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

प्रकाशकः
आयुर्वेद रिसर्च इन्स्टीटयूट
कलम कुटीर, फ्रिअर रोड,
फोर्ट, बम्बई–१.

Vaidyaraj Zandu Bhatt
National Ayurvedic Library
Punjabi Bagh, New Delhi-26
Call No.
Book No.
000096

(सर्वाधिकार सुरक्षित)

मुद्रकः
कन्हैयालाल पी. श
सीताफल वाड़ो, माउन्ट र
मझगांव, बंबई–

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

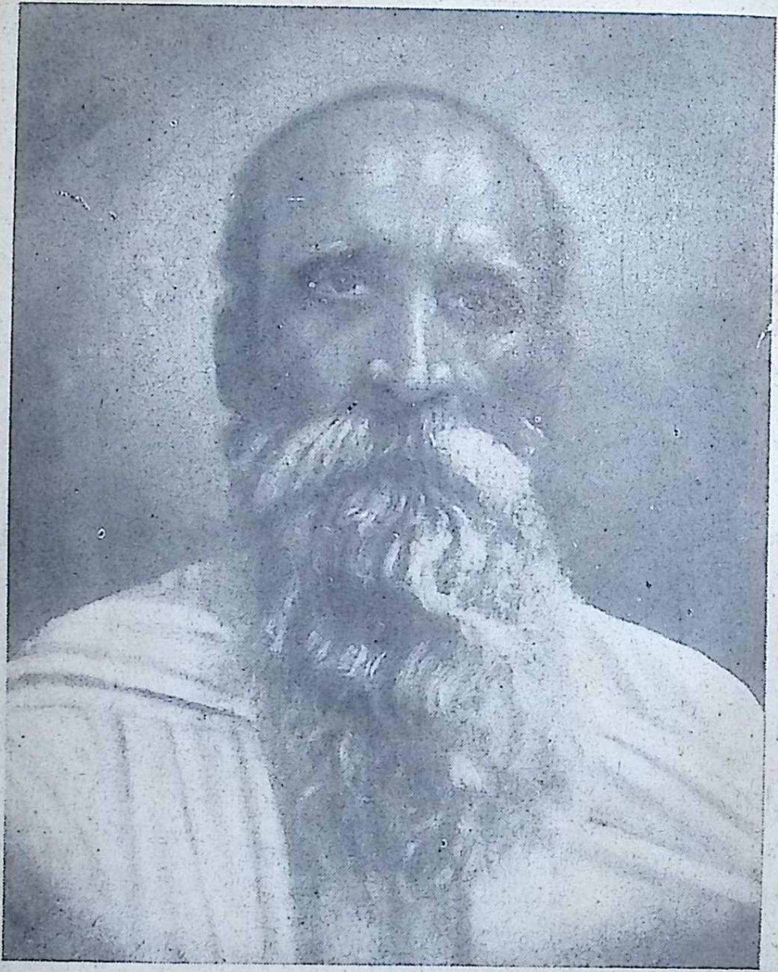

वैद्यराज पं. विश्वनाथ मिठाराम

आयुर्वेदाचार्य, वेदान्ताचार्य, रसायनाचार्य.

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

पूज्यपाद् पिताश्री वैद्यराज पं. विश्वनाथ मिठाराम

जिनके आशिर्वाद ने

प्रस्तुत पुस्तक

के प्रणयन में प्रेरित किया है

उस दिवंगत आत्मा के

पुनीत पावन चरणों में

यह प्रथम पुष्प सादर

समर्पित

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

'यस्य देशस्य योज्जन्मीतज्जम्, तस्यौषधं हितम्'

★

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

दो शब्द

मनुष्य के जन्म के साथ ही उसकी मृत्यु का विधान हैं। जीवन और मरण दोनों की गति समानान्तर रेखाओं की तरह है। समय की धार, जीवन के प्रत्येक पल को काटती जाती है और इस प्रकार पल-विपल, घड़ियाँ, दिन, मास और वर्ष बीत जाते हैं। आयुष्य पूरा हो जाता है। मनुष्य देह बाल, युवा, प्रौढ़ और वृद्धि इन चार अवस्थाओं से क्रमशः गुजरती है। इन अवस्थाओं में उसे अनेक प्रकार के संघर्षों और संकटों का सामना करना पड़ता है। ये संकट शारीरिक भी होते हैं, मानसिक भी। शरीर-शास्त्री इन्हें अनेक प्रकार के रोगों के नाम से जानते हैं। मनोविज्ञान के ज्ञाता इन्हें विविध प्रकार के मानसिक द्वन्द्वों, हर्ष, विषाद, शोक, प्रेम, घृणा और मन के उतार-चढ़ाव से सम्बन्धित दशा उपदशाओं में विभाजित कर विभिन्न उपचार विवरण देते हैं।

मानव-देह अमूल्य है। त्रैलोक्य का राज्य, कुबेर की सम्पदा, और ज्ञान-विज्ञान के समस्त चमत्कार भी मनुष्य की मृत देह को प्राण-दान नहीं दे सकते। मृत्यु के अनेक कारण हैं। दुर्घटना हैं। पर उन किसी का वश नहों। रोग है—रोग के अनेक निदान हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

मनुष्य-शरीर के प्रादुर्भाव कें साथ ही रोग की उत्पत्ति हुई है। अतः कहना होगा कि रोग उतने ही प्राचीन हैं, जितना मनुष्य देह ! फिर भी रोगों की संख्या वृद्धि धीरे २ हुई हे। विभिन्न कालों और सामाजिक परिस्थितियों में, युद्ध और शान्ति दशाओं में राष्ट्र और जातियों ने विभिन्न रोग देखे हैं। रोग की उत्पति के साथ ही या कुछ समय पश्चात् पंडितों ने उनके उपचारों की खोज की है। इस प्रकार कहना चाहिए कि चिकित्सा-शास्त्र उतना ही प्राचीन है। जितना मानव जाति का इतिहास।

विद्वानों की राय है कि आदि मानव जाति के विचार हमें सबसे पहले ऋग्वेद में लिपिबद्ध रूप में मिलते है। इस ग्रंथ की रचना पुरातत्ववेत्ताओं के मतानुसार इसके ३५०० वर्ष पूर्व तक किसी काल में मानी जाती है।

ऋग्वेंद में सोम नामक औषधि के वर्णन मिलते हैं। किन्तु सोम के विषय में आजतक कोई यथेष्ट अनुसन्धान नहीं हो पाया है। शास्त्रीय वर्णनों से यह अवश्य ज्ञात होता है कि यज्ञ और पूजन के समान पवित्र कर्मों में सोम का उपयोग था और सोम का मादक पदार्थ के रूप में सेवन भी किया जाता था।

अथर्ववेद में, जड़ी बूटियों का अधिक विस्तृत वर्णन मिलता है। ज्यों ज्यों औषधि विज्ञान की जानकारी बढ़ने लगी त्यों २ इस विषयक आवश्यकताएं बढ़ती गईं और धीरे-धीरे उपरोक्त विज्ञान से एक स्वतन्त्र शास्त्र के रूप में आयुर्वेद कहलाया। प्राचीन ग्रन्थों के अनुसार इस आयुर्वेद के पिता स्वयं ब्रह्मदेव हैं। और मनुष्यजाति में इस विज्ञान का प्रचार उन्होंने दक्ष प्रजापति के द्वारा करवाया। दक्ष प्रजापति के बाद अश्विनीकुमार तथा उनके कई नाम प्रसिद्ध हैं। अश्विनीकुमार आयुर्वेद और चिकित्सा शास्त्र में पारंगत थे। च्यवन ऋषि को पुनः नवयौवन की प्राप्ति, दक्ष प्रजापति के कटे मस्तक का जोड़ा जाना, युद्ध क्षेत्र में घायलों का उपचार, कटी हुई टांग के स्थान लोहे की टांग जोड़ देना आदि उनके चमत्कार हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अश्विनीकुमारों के पश्चात् आत्रेय और धनवन्तरि के नाम आते हैं। आत्रेय चरक-सम्प्रदाय के संस्थापक और धन्वन्तरि सुश्रुत के गुरु थे। इनका जन्म आयुर्वेद के इतिहास में कालान्तरों के लिए स्मरणीय रहेगा। चरक की चरक-संहिता और सुश्रुत की सुश्रुत-संहिता ग्रंथावलियां आयुर्वेदाकाश के चन्द्र सूर्य के समान हैं। चरक संहिता में चिकित्सा विज्ञान का विस्तृत वर्णन पाया जाता है और सुश्रुत संहिता में शल्यक्रियाओं का विषद वर्णन है।

जहाँ तक वनस्पतियों का विषय आता है, इस बात के प्रमाण मिले हैं कि प्राचीनकाल से ही भारत में विदेशी वनस्पतियों का आयातनिर्यात होता था। कहते हैं कि मुलेठी इस देश की वनस्पति न होकर एशिया माइनर से भारत में आई है। चक्रदत्त ग्रन्थ में मुलेंठी का वर्णन पाया जाता है।

इन औषधियों और वनस्पतियों में अपार गुण थे। आज भी हैं। किन्तु उनका उपयोग और प्रयोग चिकित्सक बन्धुओं ने एक सीमा तक बहुत कम कर दिया है। इसमें कई प्रकार की समस्याएं भी आ खड़ी हुई हैं।

भारत वर्ष में वैदिककाल और बुद्धकाल में जो २ औषधियां पाई जाती थीं, वनस्पति-विज्ञान के जो चमत्कार प्रस्तुत थे और चिकित्सा की गति में जो विकास हुए थे, उनकी पुष्टि हमें विदेशी औषधियों का अध्ययन करने पर मिलता है कि उनपर आर्यौषधियों का कितना प्रभाव है! ग्रीस, रोम, और पूर्व-पश्चिमी योरप के विभिन्न देशों की चिकित्सा प्रणालियों और औषधियों पर आर्यावर्तीय आयुर्वेद-शास्त्र का पर्याप्त प्रभाव पड़ा है।

आयुर्वेदोक्त बनस्पति शास्त्र विषयक विभिन्न क्षेत्रों में आजतक जो अध्ययन किया गया है वस्तुतः वह किसी अंश तक विकासोन्मुखी रहा है किन्तु अक्रमबद्ध और अश्रेणिबद्ध होने से इसके संशोधन का पर्याप्त निर्वाह नहीं हो सका।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

पाठकों के लिए वनस्पति-विज्ञानसे सम्बन्धित सचित्र हिन्दी पुस्तक की पूर्ण आवश्यकता इधर बरसों से रही है। इन्हीं कमियों की पूर्ति के लिए और सद्‌गृहस्थों, विशेषज्ञों और विद्यार्थियों का ध्यान अधिक स्पस्ट रूप से इस ओर आकर्षित करने के लिए "वनस्पति-परिचय" ग्रंथ की रचना की गई है।

इस कार्य मे मेरे अग्रज भ्राता पूज्य *श्री वल्लभराम विश्वनाथ वैद्य* का आशीर्वाद प्राप्त हुआ है। साथ ही *श्री शामलदास गांधी* का मै अन्यन्त आभारी हूँ जिन्होंने समय समय पर प्रस्तुत पुस्तक के प्रणयनमें मुझ पूर्ण प्रेरणा और सहयोग दियाहै। इसके अतिरिक्त *श्री मान् डॉ. टी. एस. महाबले* अध्यक्ष, बोड ऑफ स्टडीज इन बॉटेनी, बम्बई यूनिवर्सिटी, ने पुस्तक की पाण्डुलिपि संशोधन का अवलोकन कर कृतज्ञ किया है। ग्रंथ रचना में मुझे *श्री घनश्यामलाल खेमराज भट्ट* का सर्वथा सराहनीय सहयोग मिला है। उन्होंने अत्यन्त परिश्रम पूर्वक मुझे कई बातों मे सहायता की है, जिसके लिए मैं उनका अनुगृहीत हूं। ग्रंथ के मुद्रण में ओरियन्ट प्रिन्टिग हाउस के अधिष्ठता श्री कन्हैयालाल शाह ने जो सहयोग किया है, उसक लिए धन्यवाद के पात्र हैं।

अन्ततः मैं पुनः उन आयुर्वेद रिसर्च इन्स्टीट्यूटके सभी साथियों और सहयीगियों के प्रति आभार प्रदर्शन करता हूँ जिनसे मुझे इस महत्कार्य में सदैव सहयोग मिला है।

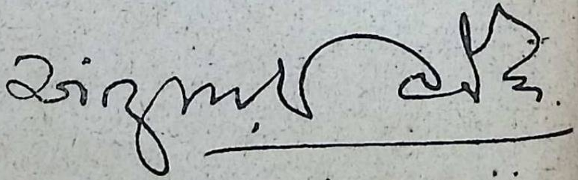

बम्बई-१

श्रावण शुक्ला १५

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

प्राक्कथन

(वैद्यरत्न कविराज डाक्टर प्रतापसिंहजी)
डी. एससी., प्राणाचार्य, रसायनाचार्य, भिषंगमणि;
डायरेक्टर—आयुर्वेदिक डिपार्टमेन्ट, राजस्थान गवर्नमेन्ट,
उदयपुर.

भारत की चिकित्सा शास्त्र की मूल भित्ति वनस्पति है। वनस्पतियों के संपूर्ण ज्ञान के बिना वैद्य केवल पंसारियों का दास रहता है, और जो कुछ पन्सारी जिस किसी नाम से द्रव्य देता है उसे प्राप्तकर उपयोग करता है और असिद्धि प्राप्त होने पर अपयश का भागी बनता है। अपयश तभी होता है जब।

"यस्य कस्य तरोर्मूलं, येन केनाऽपि संचितम्
यस्मै: कस्मै: प्रदातव्यं, यद्वा तद्वा भविश्यति"

इस पद्य के अनुसार औषधियों का उपयोग किया जाता है।

आयुर्वेद शास्त्र का निश्चित सिद्धान्त है कि ज्ञानपूर्वक चिकित्सा करने से अवश्य लाभ होता है, ज्ञान मूल सिद्धान्तों का गुरुमुखोद्गीर्ण ही न हो वह प्रत्यक्ष मूलक होना चाहिए। प्रत्यक्ष ज्ञान शास्त्रानुकूल द्रव्य का साक्षात्कार करने ही से होता है। इस कार्यको सचित्र ग्रंथ उत्तमता से करा सकते हैं।

प्रस्तुत पुस्तक इसी उद्देश्य की पूर्ति करने के लिए लिखी गई है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

विद्वान लेखक अनुभवी चिकित्सक हैं, आप उभयज्ञ हैं; इससे जो कुछ लिखा है वह परम मनन और उभय प्रकार की चिकित्सा पद्धतियों के सार रूप से संकलित किया गया है। चित्र बहुत ही सुन्दर और उत्तम बने हैं, चित्रों की सहायता से वनोपवन में औषध द्रव्यों के समय पर संग्रह करने में बड़ी सहायता प्राप्त होगी।

भारतवर्ष वनस्पतियों का भंडार है। अनेक प्रकार की वनस्पतियों में विविध प्रकार की रूप रेखा में ऋतुभेद से वनस्पतियों की आकृतियाँ बदलती रहती है, अनेक वनस्पतियां समानाकृति होती हैं। ऐसी दशा में विद्यार्थी या वैद्य वनस्पति को देखकर भ्रमित हो जाया करते हैं, उसका परिहार सुन्दर चित्र और विषद वर्णन ही से हो सकता है। प्राचीन काल में जब चित्र निर्माण कला का विकास केवल कलम के ही बल पर होता था उस समय भी बड़े २ परिश्रम से चित्र बनाकर ज्ञान प्राप्त किया जाता था। ऐसे अनेक चित्र राजा महाराजाओं के संग्रहालय में अब भी देखने को मिल जाया करते हैं।

चित्रकला द्रव्य के परिचय के लिये परमावश्यक साधन है। पाश्चात्य शिक्षा दक्षों ने इस कला का सर्वत्र सर्व प्रकार की शिक्षा में भूरि भूरि प्रयोग कर अध्ययन अध्यापन बड़ा सरल कर दिया है।

ऋषि, मुनि, तपस्वी जन बिना चित्रकला की सहायता के भी निम्न पद्य के अनुसार वनस्पति ज्ञान के लिये बड़ा परिश्रम करते थे।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

"किरात गोपालक तापसाद्याः, वने चरास्तत् कुशलास्तथान्ये ।
विदन्ति नाना विद्य भेषजानां प्रमाण वर्णाकृति नाम जातिः ।।
तेभ्यः सकाशादुपलभ्य वैद्यः पश्चाच्चशास्त्रेषु विमर्ष्य बुध्याः ।
विकल्पयेत द्रव्य रस प्रभाव विपाक वीर्याणि तथा प्रयोगात् ।।"

किन्तु आज का समय उस प्रकार के ज्ञान के उपयुक्त नहीं है । अतः सचित्रग्रन्थों का प्रकाशन परमावश्यक है ।

आयुर्वेद पढ़ाने का ढंग समय के अनुसार बदलना ही पड़ेगा । शास्त्र ने साफ २ बतलाया है कि प्रत्यक्ष और शास्त्रमूलक ज्ञान प्रत्येक वैद्य को होना चाहिये । जो वैद्य कर्मभ्यासी हैं और शास्त्र से विमुख है तो उसे राजाज्ञा से प्राण दंड देने का आदेश है ।

"यस्तु कर्मसु निष्णातः धार्ष्टयात् शास्त्र बहिष्कृतः ।
न सत्सु पूजोमाप्नोति, वंधं चार्हति राजतः" ।।

आज राज व्यवस्था प्राचीन आदर्श के अनुसार चलने का समय आगया है । भारत के अतिरिक्त देशों में चिकित्सा मर्यादा का नियंत्रण कठोरता से होने लगा है । विदेशी कोई बिना यहां की राजाज्ञा के चिकित्सा व्यवसाय नहीं कर सकता है, पर दुर्भाग्य से हमारे देश में अभी ऐसी व्यवस्था नहीं है पर संभवतः शीघ्र ही होने की आशा है ।

इस समय देश में नव विविध विधान बन रहे हैं । आयुर्वेद का भी भाग्योदय होगा ऐसी पूर्ण आशा है और आज की जो पठनपाठ्य की नाटकीय शैलि है उसका अन्त अवश्य होगा ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

आयुर्वेद प्रकाकार ने आयुर्वेद के इस शास्त्र के पठन पाठन का निम्म पद्य में कैसा सुन्दर सजोव चित्राङ्कण किया है ।

"अध्यापयन्ति यदि दर्शयितु क्षमन्ते, सूतेन्द्र कर्म गुरवो गुरवस्त एव ।
शिष्यास्त एव रचयन्ति पुरो: गुरूणांशेषा: पुनस्त्वूभयाभिनयं भजन्ते ।।"

अन्य विषय भी इसी प्रकार जब पढ़ाये जावेंगे तब आयुर्वेद की शिक्षा पूर्ण होगी । प्रस्तुत पुस्तक इस दशा में उत्तम कार्य करेगी ऐसी पूर्ण आशा है ।

मैं लेखक और प्रकाशक महोदय का पूर्ण आभारी हूँ कि मुझे इस उपयोगी पुस्तक के प्राक्कथन लेखन के लिये अवसर प्रदान किया ।

आशा है वैद्य समाज इस उपयोगी पुस्तक का समुचित समादर कर लेखक का उत्साह वर्धन कर आदर्श शिक्षा प्रसार में सहयोग प्रदान करेंगे ।

आनन्द भवन
उदयपुर
४. ४. ५२

कु. प्रतापसिंह

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

'वनस्पति विज्ञान'

आयुर्वेद के परिष्कृत, परिमार्जित और वैज्ञानिक अध्ययन के लिये 'वनस्पति विज्ञान' का विस्तृतज्ञान प्राप्त करना नितान्त आवश्यक है। चरक, सुश्रुत, ऋग्वेद और यजुर्वेद प्रभृति प्राचीन ग्रंथों से हमें 'वनस्पतिशास्त्र' के विभिन्न अंगों पर प्रकाश प्राप्त होता है।

अधिकांशतः यह ज्ञान इन ग्रंथों में सूत्ररूप से, अक्रमबद्ध तथा अश्रेणीबद्ध प्राप्त होने पर भी, संसार के–ग्रीक, चीन, मिश्र आदि–अन्य देशों की अपेक्षा भारत, तत्कालीन चिकित्सालयोपयोगी वनस्पतियों (Medical plants) के ज्ञान की दृष्टि से सर्वोत्तम रहा है। दुर्भाग्यवश इसके 'विकास' का निर्वाह अन्त तक नहीं हो सका। संभवतः इसके 'सूत्र रूप, अक्रमबद्ध और अश्रेणीबद्ध ज्ञान के होने के कारण ही भारतीय विद्वान इस ओर विशेष आकृष्ट नहीं हो सके जिससे इस विज्ञान में आधुनिक वैज्ञानिक दृष्टिकोण से वर्गीकरण; विभाजन आदि प्राप्त नहीं होता जो विज्ञान के प्रधान अंग समझे जाते हैं।

Messers Hooker Thompson सन् १८५५ के लगभग लिखते हैं कि:—

"We have had a considerable experience both in medical and economical botany, and we announce boldly our oonviction that so far as India is concerned these departments are at standstill for want of a accurate scientific guide to the flora of that country."

—*Introductory essay to the flora Indica; Page 3 London 1855.*

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

एक अमेरिकन वनस्पतिशास्त्रवेत्ता का कथन है कि:—

"But the discoveries and observation of the Indians have perished with themselves; having had no system for the classification or description of plants, no any written language by which such a system might have been conveyed to others, no other vestige remains than uncertain tradition of their knowledge of the medicinal qualities of plants".

स्थावर जंगमात्मक यह समस्त सृष्टि पंचीकृत पंच महाभूतों से उत्पन्न हुई है। सृष्टि में दृष्टि सम्मुख उपस्थित होने वाले, नाना प्रकार के समस्त विलक्षण पदार्थों को साधारणतः हम दो विभागों में विभक्त कर सकते हैं।

(१) सजीवपदार्थ या चेतन सृष्टि (Living objects):

यह सृष्टि वह है जिसको हम 'जीवित' कहते हैं तथा जिसके द्वारा हमको 'जीवन' की अभिव्यक्ति होती है। जैसे—मनुष्य, गाय, बैल आदि चौपाये पशुपक्षी, समस्त जलचर, तथा विभिन्न प्रकार के पेड़ पौधे, पुष्पादि।

(२) निर्जीव पदार्थ या जड़ सृष्टि (Non-living objects):

सृष्टि के उन पदार्थों को, जिनमें चेतन सृष्टि के विपरीत लक्षण प्राप्त हों, निर्जीव सृष्टि (Non-living objects) कहते हैं। जैसे पत्थर, मिट्टी, अन्य धातु आदि पदार्थ।

उपरोक्त दो प्रकार की सृष्टि का यदि मार्मिक अध्ययन किया जाय तो वस्तुतः हमको सजीव सृष्टि में भी दो श्रेणियां दृष्टिगोचर होती हैं। प्रथम श्रेणी में गाय, बैल आदि पशु और द्वितीय श्रेणी में वृक्ष पुष्पादि सम्मिलित किये जा सकते हैं। अतः यह स्पष्ट है कि प्रथमश्रेणी द्वितीय श्रेणी से नितान्त भिन्न है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

वर्ग विशेष की दृष्टि से आधुनिक वैज्ञानिकों ने सजीव का नाम—Biological Science—दिया है। यह Bios (life); जीवन; और Logos (Discouse or Science) विज्ञान, इन दो ग्रीक शब्दों के संयोग से बना है जिसे 'प्राणिविज्ञान' (Biology) कहते हैं।

सजीव सृष्टि की उपरोक्त दो श्रेणियां प्राणिविज्ञान का भेद मात्र है। जिसे क्रमशः जन्तुवर्ग (Zoology) और वनस्पतिवर्ग (Botany) कहते हैं। अर्वाचीन मतानुसार प्रस्तुत दोनों वर्गों का उद्गम क्रमशः ग्रीक के शब्द Zoo (animal) प्राणीवर्ग और Botane (Herbs) वनस्पतिवर्ग, से हुआ है।

निम्नांकित चित्र से वर्ग विशेषों के श्रेणी विभाग का स्पष्टतया ज्ञान हो जावेगा।

सृष्टि
- सजीव (living objects)
  - (Botany) वनस्पतिवर्ग
  - (Zoology) जन्तुवर्ग
- निर्जीव (Non-living objects)

वस्तुतः वनस्पति शास्त्र में पेड़ पौधों आदि का अध्ययन भिन्न २ दृष्टिकोणों से किया जाता है। जैसे उनके बाह्य और आभ्यान्तरिक अंगनिर्माणक्रियाओं का अनुसन्धान, उनकी शारीरिक वृद्धि, पोषण, सन्तानोत्पत्ति तथा संवर्तन क्रियाओं की परिचालन शक्ति उनके आसपास के वायुमंडल का उनकी विभिन्न क्रियाओं पर प्रभाव, परिवर्तन आदि। इसके अतिरिक्त ये मानव समाज के लिये कहां तक उपयोगी हैं यह भी विचार है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

"How plants may be trained to work for man" के सिद्धान्तानुसार इनका अध्ययन किया जा सकता है। अतः विभिन्न वनस्पतियों का विभिन्न स्थिति में अध्ययन करना आवश्यक हो जाता है। क्योंकि सजीव सृष्टि में हमको उसकी लघु, दीर्घ, दोनों ही प्रकार की स्थितियां पूर्णतया परिलक्षित होंगी। चाहे वह वनस्पति वर्ग की हों या प्राणीवर्ग की। प्रत्येक वर्ग की सृष्टि छोटी बड़ी सभी प्रकार की है। प्रायः हम देखते हैं कि एक ओर जहां विशाल महाकाय वट, ताड़, अम्रादि वृक्ष हैं वहाँ दूसरी ओर कुश, दूर्वा, और नाना प्रकार की छोटी छोटी घास, लताएँ आदि भी प्राप्त हैं। यदि इसका और सूक्ष्म दृष्टिकोण से अध्ययन किया जाय तो हमें इससे और नन्हीं नन्हीं सूक्ष्म वनस्पतियां प्राप्त होंगी जिन्हें हम अपने नेत्रों से नहीं देख सकते। अणुवीक्षण या सूक्ष्म दर्शक (Microscope) का आश्रय लेकर ही उनको भली प्रकार देख सकते हैं। अतः वनस्पति वर्ग का विभिन्न दृष्टिकोण से अध्ययन करना स्वाभाविक ही है।

सजीव पदार्थों के लक्षण—(Characteristics of living objects):

हम यह नहीं जानते कि वस्तुतः 'जीव' 'जीवात्मा' या 'ज़ीवन' क्या वस्तु है तथा इसकी आकृति प्रकृति क्या है? केवल इसकी कल्पना ही की जा सकती है। अतः स्वभावतः हम इसकी परिभाषा करने में नितान्त असमर्थ सिद्ध होते हैं। केवल सजीव पदार्थों (Living objects) में निर्जीव पदार्थों (Non-living objects) से कुछ विशेष भिन्न लक्षण प्राप्त होने से हम इसका सजीव पदार्थ नामकरण कर देते हैं। ऐसे सजीव पदार्थों के निम्नलिखित लक्षण प्राप्त होते हैं:—

(१) जीवनचक्र (Life cycle)–प्रत्येक सजीव पदार्थ का एक निश्चित्त जीवन-क्रम होता है। जिसमें उत्पादन, शारीरिकवृद्धि, सन्तानोत्पत्ति और मृत्यु आदि समस्त क्रियायें सम्मिलित होती हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

प्रत्येक प्राणी वृक्ष और पौधे आदि सजीव पदार्थों का विकास भ्रूण (Fmbryo) द्वारा सम्पादित होता है। यह शनैः शनैः वृद्धि को प्राप्त हो, भिन्न, २ वर्गानुसार—वनस्पतिवर्ग या प्राणीवर्ग का रूप धारण करता है तथा कुछ काल पश्चात् अपने जीवन क्रम को स्थायी रखने के हेतु सन्तानोत्पत्ति कर विभिन्न विभागों में विभिन्न रूप प्राप्त करता है। अन्त में जीर्णशीर्ण अर्थात् वृद्धावस्था को प्राप्त होने पर समस्त क्रियायें शीतल हो जाने से यह समाप्त हो जाता है।

(२) जीवनमूल (Protoplasm)-यह सजीव पदार्थों के जीवन का एकमात्र आधारभूत वह पदार्थ है जिसे जीवनमूल (Protoplasm) कहते हैं।

जीवन केवल ज़ीवनमूल पर ही स्थित है। प्राणभूत जीव सम्बन्धी समस्त क्रियाओं का प्रचालन भी जीवनमूल द्वारा ही सम्पादित होता है और इसके विभिन्न व्यापारों से ही जीवन की अभिव्यक्ति होती है। यह सजीव सृष्टि में नानाप्रकार की गतियों का प्रादुर्भाव करता है तथा प्रकाश (Light), तापक्रम (Temperature), रसायनिक द्रव्य (Chemical substantances), और विद्युताघात (Electric Shock) आदि समस्त उत्तेजक (Stimulus) वस्तुओं के प्रति बहुत ही सूक्ष्मग्राही (Sensitive) होता है। जीवनमूल एक संदिग्ध वस्तु है।

श्रीदत्तजी लिखते हैं कि—"It is a delicate and complicated substance and any attempt to analyze it will Kill and destroy the properties that impart it life".

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

भौतिकता की दृष्टि से (Physically) यह एक स्निग्धपारदर्शक पदार्थ (Hyaline, Viscous substance) है और अणुवीक्षण से देखने पर बीजाकार प्रतीत होता है। रसायनिक दृष्टि से (Chemically) जीवनमूल एक जटिल प्रोटीन (Complex Protein) है जिसका विशेषत: जारक (Oxygen), प्राङ्गार (Carbon) और 'शुल्वारि' (Sulphur) से पूर्ण सामञ्जस्य है। विश्लेषण (Analysis) द्वारा जीवनमूल के विचित्र निर्माण (Peculiar organisation) के आवश्यक लक्षण भी प्राप्त नहीं होते हैं। जीवनमूल में केवल रसायनिक परिवर्तन निरंतर होता रहता है। यह बाहर से आये हुए निम्नश्रेणी के पदार्थों को लेकर उच्चश्रेणी के पदार्थों का निर्माण करता है और साथ ही साथ उन उच्चश्रेणी के पदार्थों का विश्लेषण भी निरन्तर आरम्भ रहता है। अत: जीवनमूल में परिवर्तनशीलता का अंश प्रधानतया प्राप्त होता है इसके जिस अणु या अंश को 'जीवन' कहते हैं वह केवल 'परिवर्तनशीलता' पर ही अवलम्बित है तथा यह एक आत्मसंचालक पदार्थ है।

(३) श्वासोच्छ्वानक्रिया (Respiration)–श्वासोच्छ्वास क्रिया ही केवल 'जीवन का द्योतक है। प्रत्येक सजीव सृष्टि–वनस्पतिवर्ग या प्राणीवर्ग–में निरन्तर अहोरात्र यह क्रियाये चलती ही रहती हैं। श्वासोच्छ्वासक्रिया का वायुमंडल तथा अन्य वातावरण से बहुत सामञ्जस्य रहता है। इस क्रिया द्वारा ये जारक (Oxygen) ग्रहण करते हैं। और प्रांगारद्विजारेंय (Carbon di oxide) का परित्याग करते हैं। श्वासोच्छ्वासक्रिया से सजीव सृष्टि के विभिन्न अंगों में भिन्न २ प्रकार का प्रभाव पड़ता है। वनस्पति वर्ग में प्राणी–वर्ग से यह विभिन्नता विशेष प्राप्त होती है

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

श्वासोच्छ्वासक्रिया में भिन्न २ पदार्थों से संयोग, नियोग आदि से उसमें उतार-चढ़ाव आता है। साथ ही इस क्रिया का शारीरिक तंतुओं (tissues) तथा लसीकाओं आदि पर भी बहुत प्रभाव पड़ता है।

श्वासोच्छ्वासक्रिया से प्रत्येक सजीव में खाद्यरूप-शक्ति संचय होती है जिसे जीवनमूल (Protoplasm) अपनीपेचीदी क्रियाओं के लिये उपयोग में लाता है।

भारतीय प्राचीन विद्वान संभवत: वनस्पति विज्ञान के आधुनिक श्वासोच्छ्वास क्रिया विज्ञान विषय में अनभिज्ञ हों परन्तु श्वासोच्छ्वास क्रिया के समय वनस्पतिवर्ग जो गेस (Carbon di oxide) का परित्याग करता हैं उसके विषय में अनभिज्ञ नहीं थे। जिसकी पुष्टि मनुजी के निम्नांकित श्लोक से स्पष्टतया होती है।

अद्वारेण च नातीयाद्ग्रामं वा वेश्म वाऽऽवृतम्।
रात्रौ च वृक्षमूलानि दूरतः परिवर्जऐत ॥

मनुसंहिता अध्याय ४ श्लोक ७३

(४) सन्तानोत्पति (Reproduction) सचीव सृष्टि चाहे औद्भिज्य वर्ग की हो या प्राणी वर्ग—दोनों में ही—सन्तानोत्पति की शक्ति होती है अर्थात् वें अपने समान अन्य नवीन अंगों का प्रादुर्भाव करते हैं।। निर्जीव (Non-living objects) में सन्तानोत्पति—शक्ति का नितान्त अभाव होता है। केवल यांत्रिक क्रियाओं द्वारा ही वे कई टुकड़ों में विभक्त किये जा सकते हैं। परन्तु सजीव सृष्टि की सन्तानोत्पति की समस्त क्रियायें एक निश्चित क्रम और समयानुसार होती है।

आयुर्वेदिक दृष्टिकोण:—

प्राचीन ग्रन्थों मे भी पेड़ पौधों आदि के सन्तानोत्पति के विषय में यथेष्ट मात्रा में अध्ययन प्राप्त होता है:—

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

हारीत उवाचः—

संयोगेन विना प्राज्ञ कथं गर्भो न जायते ।
संयोगेन विना पुष्पं फलं वा न कथं भवेत् ॥

आत्रेय उवाचः—

विरुद्धानाञ्च वल्लीनां स्थावराणाञ्च पुत्रक ।
तत्र धातु समं बीजं समयोगेन वर्तते ॥
न भिन्नदृष्टिस्तस्यैव दृश्यते शृणु पुत्रकः ।
स्थावराणाञ्च सर्वेषाम् शिवशक्तिमयं विदुः ॥
निश्चलोऽपि शिवोज्ञेयो व्याप्तिशक्तिर्म्महामते ।
तत्र स्त्रीपुरुषगुणा वर्तन्ते समयोगतः ॥
आम्रपुष्पं फलं तद्वद् बीजं शुक्रमयं विदुः ।

—हारीत संहिता, शारीरस्थान अध्याय पहला ॥

एक पाश्चात्य अवेक्षक (observer) लिखता है कि:—

"The Indian tells us that in the plants (Indian Reeds—Perhapes palmyra or Date, palm is meant) also the distinction of male and female obtains, the body of the male being more compact, and that of the female of greater amplitude"

—McCrindle Ancient India Sec V90

मनुजी लिखते हैं:—

"उद्भिज्जाः स्थावराः सर्वे बीजकाण्ड प्ररोहिणः ।
ओषध्यः फलपाकान्ता, बहुपुष्पफलोपगाः ॥
गुच्छगुल्मं तु विविधं तथैव तृणजातयः ।
बीजकाण्डरुहाण्येव प्रताना वल्ल्य एव च ॥

—मनुस्मृति अध्याय १ श्लोक ४६; ४८ ॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

(५) सात्मीकरण (Metabolism)–यह जीवन की अद्भुत क्रिया है। इसमें 'जीवनमूल' की 'रचनात्मक' (Anabolic) और 'संहारक' (Katabolic) दोनों क्रियाओं का घनिष्ट सामंजस्य है।

'रचनात्मक् क्रिया' आहार द्वारा जीवनमूल का निर्माण कर शरीर को धारण करती है। 'संहारकक्रिया' जीवनमूल और आहार रसका विश्लेषण कर विभिन्न प्रकार के रासायनिक तत्वों का निर्माण करता है।

(६) पोषण (Nutrition)–सजीव सृष्टि के जीवन के लिये आहार एक प्रधान वस्तु है। वनस्पतिजगत् को भी जीवन स्थायी रखने के हेतु आहार की आवश्यकता होती है। प्राणिवर्ग और वनस्पतिवर्ग के आहार की रासायनिक तत्व समान होते हैं। इन तत्वों का जीवनमूल द्वारा स्वयम् के पोषण और वृद्धि के हेतु पाचन और समीकरण किया जाता है। इस प्रकार सजीव सृष्टि के जीवन के लिये नियमित रूप से आहार पहुंचना नितान्त आवश्यक है।

(७) वृद्धि (Growth)–सजीव सृष्टि चाहे वनस्पति या प्राणि जगत्-हो दोनोंमें वृद्धि क्रिया सम्पादित होती है। यद्यपि 'स्फटिक' Crystal के समान निर्जीव सृष्टि में भी वृद्धि क्रिया होती है किन्तु ये अधिकांश अवस्था में एक दूसरे से भिन्न होती है। निर्जीव सृष्टि का वृद्धि-क्रम प्राय: बाह्य होता है। समान प्रकृति वाले भौतिक और रासायनिक अणु निर्जीव पदार्थ के बाह्य भाग को चारो ओर से आवृत हो जाते हैं। फलत: ये वृद्धि का कारण होते हैं।

सजीव सृष्टि में यह स्थिति नहीं होती है उनका 'वृद्धिक्रम' अभ्यान्तरिक होता है। जीवनमूल विभिन्न प्रकृति वाले अणुओं का अन्दर ही अन्दर अन्त:स्राव की वृद्धि को प्रश्रय देता है। इसमें वृद्धि के बाह्य लक्षण ही प्रकाश में आते है। सजीव सृष्टि में सर्वदा 'रचनात्मक' और 'संहारकक्रिया' अहोरात्र चलती रहती है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

(८) गति (Movements)—गति जीवन का द्योतक है। इसी के द्वारा हमें 'जीवन' की अभिव्यक्ति होती है। अधिकांश वनस्पतियों में गति सीमित होती है। उनकी गतिशक्ति की कार्य क्षमता पृथ्वी के आश्रित है। प्राणिजगत् इस क्रिया का सम्पादन स्वच्छन्द रूप से करते हैं।

सजीव सृष्टि में 'गति' क्रिया दो भागों में विभक्त की जा सकती हैं—

(क) स्वाभाविक गतिक्रिया (Spontaneous movements)—यह वह अवस्था है जिसमें एक वनस्पति या प्राणि का अवयव विशेष किसी अन्य के हस्तक्षेप रहित स्वयम् की इच्छानुसार 'गतिक्रिया' का सुचारु रूपेण सम्पादन करें। यह क्रिया सजीवता का लक्षण है जिसके द्वारा जीवितावस्था का निश्चय किया जाता है। स्वाभाविक गति प्रायः वनस्पतियों और प्राणियों दोनों में प्राप्त होती है। प्रधानतः निम्नश्रेणी की वनस्पतियों में यह क्रिया बहुतायतसे प्राप्त होती है जैसे शेवाल (Algae) अणुवीक्षणयंत्र द्वारा वनस्पतियों में जोवनमूल संवहन या गतिक्रिया को भली प्रकार देखी जा सकती है।

(ख) उत्तेजक गतिक्रिया (Induced movement)—यह वह क्रिया है जिसमें वानस्पतिक या प्राणि अवयव विशेष बाह्य उत्तेजन द्वारा गति सम्पादन करें। यदि प्राणि के सन्निकट ताप होतो वह उससे दूर भागता है और यदि किसी हरित पौधे को बन्द कमरे में एक खिडकी खोलकर रखा जाय तो उसकी वृद्धि अवश्य होगी किन्तु वह खिडकी के आनेवाले प्रकाश की ओर प्रवृत होगा। तात्पर्य यह है कि प्रकाश और ताप उपरोक्त दोनों प्रकार की सजीव सृष्टि में वाह्य-उत्तेजकों के रूप में कार्य करते हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

इसके विपरित निर्जीव सृष्टि को इस सिद्धान्त की कसौटी पर लिया जाय तो वे उनपर किसी प्रकारका प्रभाव नहीं पड़ेगा। जैसे किसी लोहे की छड़पर ताप और प्रकाश बाह्य उत्तेजन क्रियाओं का काम में लाया जाय तो उनकी अवस्था और गतिक्रिया में किसी भी प्रकार का परिवर्तन प्राप्त नहीं होगा।

सजीव और निर्जीव सृष्टि के बिभेदक लक्षण—

सजीव और निर्जीव सृष्टि को एक दूसरे से विभेदन करना अत्यन्त ही कठिन है। किन्तु साधारणतः इनका विभेदन निम्न प्रकार से किया जाता है—

(क) जीवन मूलकी पेचिदी क्रियायें—भौतिक जीवन का आधार जीवन मूल है। अतः 'जीवनमूल' स्थित समस्त सृष्टि 'सजीव' मानी जाती है और जीवनमूलरहित सृष्टि को निर्जीव कहते हैं।

(ख) जीवन मूलाश्रयी क्रियायें—जीवनमूल की प्रेरणा द्वारा संचालित, श्वासोच्छ्वास, गति, वृद्धि और पोषणादि क्रिया में सजीवसृष्टि के लक्षण हो जिनके द्वारा निर्जीव से इसका विभेदन किया जाता है। किन्हीं २ अवस्थाओं में निर्जीव सृष्टि में भी गति और वृद्धि की क्रिया प्राप्त होती है किन्तु ये आंशिक होती हैं। निर्जीव सृष्टि उस मशीन की भाँति है जो प्रेरणा द्वारा उत्तेजना प्राप्तकर अपना कार्य करती है। अपितु दोनों सृष्टियों को नितान्त एक दूसरे से विभेदन करने के लिए कोई निश्चित सिद्धांत स्थिर नहीं किया जा सकता है।

वनस्पति और प्राणि जगत् की विभेदक लक्षण—

उच्चश्रेणी के वनस्पतियों और प्राणियों के विदभेन में किसी प्रकार की कठिनाई नहीं होती है क्योंकि उनके स्वयम् के विशिष्ट प्रकार के अवयव होते हैं। किन्तु निम्न श्रेणियों की सृष्टि में कुछ कठिनता अवश्य प्राप्त होती है। ऐसी स्थिति में इसके निश्चित रूप से विभेदन नहीं किया जा सकता है। साधारणतः इनके निम्नांकित विभेदक लक्षण प्राप्त होते हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

क्रम संख्या	विभेदक-क्रिया	वनस्पति वर्ग	प्राणिवर्ग
(१)	वृद्धि (Growth)	(क) वृद्धिक्रम निश्चित स्थानाश्रमी (Localized.) (ख) वनस्पतियों का वृद्धि क्रम मृत्यु पर्यन्त चलता रहता है।	(क) वृद्धि क्रम-निश्चित स्थानाश्रमीका अभाव; प्राणियों की वृद्धि सर्वांगिक होती है। समस्त अंग एक साथ वृद्धिको प्राप्त होते है (ख) प्राणियोंका द्धि क्रम मृत्यके बहुत पहले एक निश्चितकाल के बाद बंद हो जाता है
(२)	हरितद्रव्य (Chlorophyll)	(Fungi) पराश्रमी (Parasite) के अतिरिक्त समस्त वनस्पतिवर्ग में उनके वर्ग को हरित करने वाला एक द्रव्य होता है जिसे हरितद्रव्य Chlorophyll कहते हैं।	अभाव
(३)	घटक प्राचीर (Cell-wall)	वनस्पति वर्ग में होता है।	यद्यपि प्राणिवर्ग भी घटक(Cell) से बना हुआ है किन्तु इनके घटक-प्राचीर का अभाव होता है।
(४)	वर्ण विहिन रासायनिक तत्व (Cellulose)	वनस्पतियों की घटक प्राचीरके एक रासायनिक तत्वसे निर्मित है जिसे Cellulose कहते है।	अभाव

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

क्रम संख्या		वनस्पति वर्ग	प्राणि वर्ग
(५)	आहार (Food)	हरित वनस्पतियां अपने पत्रोंके हरित द्रव्य और प्रकाश की सहायता से स्वयम् आहार प्राप्त करती हैं।	प्राणि वर्ग में हरित द्रव्य का अभाव होने से उनको अपने आहार के लिये दूसरों पर आश्रित रहना पड़ता है अर्थात प्राणिजगत् अपने आहार की समस्त आवश्यकताओं की पूर्ति वनस्पति जगतसे ही करता है।
(६)	प्राँगार द्विजारेय विभाजन (Decomposition of Co2)	वनस्पतियों में वायु मंडल के प्रांगारद्विजारेय के विभाजन की शक्ति होती है। यह शक्ति इनकी हरित घटकोंमें ही होती है। ये घटकोमें दिन प्रांगार द्विजारेय का वायु से आचूषनकर शर्करा आदि उपयोगी द्रव्यों के निर्माण के कार्यमें लाती है। रात्री के वनस्पतियां प्रांगार द्विजारेय का परित्याग करती ह। इसी लिय कहा है कि–"**रात्री वृक्ष मूलानी दूरतः परिव्रजेत्**"	अभाव

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

वानस्पतिक सृष्टि

(THE PLANT KINGDOM)

	Division	Sub division	
अपुष्प (Cryptogams) (Kryptos; concealed, gamos, menlage)	१. Thallophyta	Algae. Fungi. Lichens.	
	२. Bryophyta	Liverworts Mosses.	
	३. pteridophytas.	Horse-tails. Club-mosses. Ferns. Selaginella.	
सपुष्प (Phanerogams)	नग्न बीजी	(१) (Gymnosperms) (naked seeds)	Cycads. Conipers.
	आवृत बीजी	(२)Angiosperms (Closed seeded plants.)	Dicotyledons Monocotyledons

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

वर्णन की दृष्टि से समस्त वानस्पतिक सृष्टि का विभाजन निम्न प्रकार से किया जाता है।

(१)	वानस्पतिक सृष्टि	(Plant kingdom)
(२)	विभाग	(Division)
(३)	उप-विभाग	(Subdivision)
(४)	श्रेणी	(Class)
(५)	वर्ग	(Orders)
(६)	जाति	(Family)
(७)	उपजाति	(Genus)
(८)	विशिष्ट	(Species)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

मूल पत्र काण्ड विहिनोद्भिज्ज Thallophyta) Gr. "*Thallo*" a young short and "*Phyton*" a plant)—ये मूल काण्ड पत्र रहित सबसे निम्न श्रेणी की वनस्पतियां होती हैं।

(क) शेवाल (Algae)—साधारणतः ये हरित वर्ण की होती है और इनके हरित द्रव्य पर्याप्त मात्रा में रहता है। प्रधानतः ये जल में रहती है किन्तु इसकी कुछ जातियां तरभूमि, पेड की त्वक् लकड़ी के लट्ठों; बाडो या कभी कभी चट्टानों पर जहां पर नमी विशेष हो प्राप्त होती है।

हरितद्रव्य के अतिरिक्त इसमें अन्य 'वर्णोंत्पादक द्रव्य' (Colour substances) भी होते हैं जो इसके प्रधान हरितवर्ण को फीका कर देते हैं। इन वर्ण के कारण इसकी निम्न प्रकार की जातियां प्राप्त होती है:—

शेवालादि Algae	(अ)	Cyanophyceae	(Blue green alage)
	(आ)	Chloropyceae	(green alage)
	(इ)	Phaeophyceae	(Brown alage)
	(ई)	Rhodophyceae	(Red alage)

(ख) हरित द्रव्य विहिनवनस्पति Fungi—इसमें हरित द्रव्य का अभाव होता है। अतः ये हरितवर्ण रहित होती है। इसका जीवन पराश्रयी होता है। इसकी निम्नांकित चार जातियां होती हैं।

(अ) जीवाणु (Bacteria)—

(आ) जलाश्रयीं वनस्पति (Phycomycetes)Gr "*Phykos*" seaweed "*Myces*" Fungus,—य algae से मिलती जुलती है।

(इ) मूत्राशयाकारी (Ascomycetes)—Gr "*Askos*," a bladder, and "*Myces*" a fnngus इसके spores

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

(उ) Basidomycetes; (Gr. "*Basis*," base- and "myces," fungus.)—

(ग) मिश्रित हरित वर्ण विहिनि वनस्पति Lichens ये शेवाल और fungi की मिश्रित जाति की होती है। ये प्राय: सर्वत्र प्राप्त होती है।

(२) अपुष्प वनस्पति (Bryophyta;—"*Bryon*," moss and "*phytom*, i.e moss plant—ये उच्च श्रेणि की अपुष्प जाति की वनस्पति है। प्रधानत: ये नम दिवालों, और तरभूमि पर प्राप्त होती है। इनका वर्ण सुन्दर और हरित होता है। इसकी कोई भी जाति औषधोपयोगी नहीं है।

(अ) Liverworts —ये निम्न श्रेणी के Bryophyta है। ये हरितवर्णयुक्त और चौड़ी होती हैं इनके निम्नभाग में मूलाकारी रचना प्राप्त होती है।

(आ) Mosses—ये उच्च श्रेणी के Bryopyta होते हैं। इनके काण्ड पत्र, और मूलकी रचना सूक्ष्म होने से दूसरों से पहिचाने जा सकते हैं।

(३) पक्षाकारी वनस्पति Pteridophyta— (Gr. "*pteron*" wing. and '*Phytona*' plants) ये सर्वोच श्रेणीके अपुष्प वनस्पतियां होती हैं। इस जाति के पौधा का तना, पत्र और मूल पूर्ण विकसित होते हैं। ये सपुष्प से केवल इतनी ही भिन्नता रखते हैं कि इनमे सन्तानोत्पति क्रिया का अभाव होता है। ये प्रधानत: छायादार नम स्थानों में प्राप्त होते हैं।

(अ) Ferns— इनमें फूलों की पूच्छ के समान मुडी हुई पत्तियां होती हैं और परिपक्व पत्तियों के निम्न प्रान्त पर Spores होते हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

(आ) **Horsetail**— ये रोमश होती है।

Club mosses—इसकी मूल भेड़िये के पंजे के आकार के समान होती है।

(१) नग्नबीजी (Gymonsperms)—इसके बीज फल में बन्द नहीं होते हैं।

(२) आवृतबीजी (Angiosperms)—इसके बीज फल में बन्द होतेहैं। ये सपुष्प जाति का सर्वोच्च श्रेणी होती है जिनमें विशिष्ठ प्रकार के पूर्ण विकसित मूल काण्ड, पत्र, पुष्पादि होते हैं।

अबतक प्राप्त जातियों की संख्या–

१.	Alage—	१४,०००
२.	Fungi—	७०,०००
३.	Mosses & allies—	२२,७७०
४.	Ferns & allies—	८,०००
५.	Gymnosperms—	५००
६.	Angiosperms—	१३३;०००
(क)	Dicotylendons—	१०१,००
(ख)	Mynocotyledons—	२४,०००
कुल		२,४८,४२०

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

मूल

परिभाषा—मूल औद्भिज सृष्टि का अधोगा भाग है जोकि आदिमूल से विकास पाता है।

प्रकार—प्रधानतः मूल के तीन प्रकार होते हैं:—

(क) प्रारम्भिक मूल (primary root)— आदिमूल से सीधा विकास प्रारम्भिक मूल कहलाता है।

(ख) प्रधान मूल (Tap-root)—यदि प्रारम्भिकमूल बराबर नियमित रूप से विकास पाती रहे और अन्य शाखाओं की अपेक्षा उसका आकार मोटा हो तो उसे 'प्रधानमूल' कहा जाता है। यह प्रधानतः द्विदली उद्भिज्जों में प्राप्त होती है।

(ग) सूत्रमूल (Fibrous root)—एक दली उद्भिजों में भी आदिमूल से 'प्रारम्भिक मूल' निकलती है किन्तु उसमें पृथ्वी के समीप काण्ड के तलभाग से अनेक सूत्र समान मूल समूह निकलते हैं जिन्हें 'सूत्र-मूल' कहते हैं।

मूल विभाग (Regions of the root)—मूलके निम्नांकित चार भाग होते हैं।

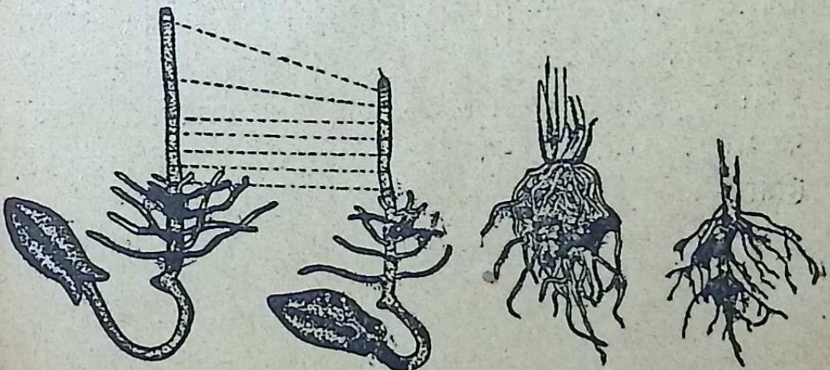

मूल विभाग

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

(क) मूलकोष (Root cap)—प्रत्येक मूल का अग्रिम भाग एक कोष से आवृत रहता है जो कि पृथ्वी में प्रवेश करते समय उसके अग्र कोमल भाग की रक्षा करता है। जलाश्रयी उद्भिजों में (Aquatic plants) मूलकोष का अभाव होता है। मूलकोष का बाह्य भाग जैसे जैसे प्रायः नष्ट होने लगते हैं तो निम्न भागीय तन्तुओं द्वारा घटकों (Cells) का निर्माण होता है।

(ख) वृद्धि-भाग (Grownig region)—वह मूलकोष का पृष्ठ भाग है जिसकी लम्बाई एक मिलिमीटर के लगभग होती है। घटकों का विभाजन इसीभाग में होता है।

(ग) लम्ब-भाग (Regions of elongation)—यह 'वृद्धिभाग' का ऊपरी भाग है जिसकी लम्बाई २ से ५ मिलिमीटर के लगभग होती है। इसमें घटक की लम्बाई में वृद्धि बहुत ही क्षिप्रगति से होती है। मूल की वृद्धि का प्रधान कारण इस भाग के घटकों की लम्बाई में वृद्धि है।

(घ) मूल-रोम-भाग (Region of root hairs)—मूल के किंचित् उर्ध्वभाग में सघन सूक्ष्म रोमगुच्छ विखरे हुए होते हैं जिनकी रचना 'डोरे' से मिलती जुलती है। इन्हें 'मूल-रोम' कहते हैं ये पृथ्वी में मृत्कणो से जल और अन्य वनस्पति-जीवनोपयोगी पदार्थों का शोषण करते हैं। इस भाग में तन्तुओंमें का विभाजन भी होता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

विभेदक लक्षण	मूल	काण्ड
(१) स्वभाव	मूल का स्वभाव प्रकाश और काण्ड के विपरित पृथ्वी की ओर जाना है। केवल अनियमित मूल की वृद्धि पृथ्वी की ओर ही होती है।	काण्ड प्रकाश का आश्रय ले पृथ्वी के ऊपरकी ओर वृद्धि को प्राप्त होता है।
(२) पत्र वर्ण	साधारणतः मूल हरितवर्ण रहित होते हैं। कभी कभी प्रकाश प्राप्त होने पर इनका वर्ण हरित हो जाता है जैसे गूडूचीमूल	नवीन काण्ड सर्वदा हरित वर्ण युक्त होता है।
(३) पत्र-पुष्प	मूल में प पुष्पपर्व नहीं होते हैं। कहीं कहीं पत्र-पर्व (Leaf bud) अवश्य देखने में आते है। किन्तु पुष्प-पर्व का मूल में नितान्त अभाव होता है। पत्र-पर्व वालों में शीशम, बेल आदि।	काण्ड को सन्तानोत्पति आदि क्रियाओं के लिये इन पर्वो को उपयोग में लाता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

विभेदक लक्षण	मूल	काण्ड
(४) मूलकोष	मूल सर्वदा मूलकोष द्वारा रक्षित रहती है और वहीं उसका अन्त माना जाता है।	काण्ड का अन्त 'शुंग' (Terminal buds) में होता है जिसका अक्ष अनेक नवीन पत्रों से आवृत रहता है। वायकीय या आरोही मूलों में अनेक मूल कोष होते है। जैसे केवड़ा
(५) केश	मूल में रोम एक घटकीय (Unicellulan) होते है।	काण्डके रोम बहू घटकीय (Multi-cellular) होते हैं।
(६) निमार्ण	मूल का निर्माण हमेशा अंन्तः स्थित तन्तुओं से होता है। अतः इन्हें 'अन्तर्जात' (Endogenous) कहते है।	प्रायः शाखाये बहिर्स्थित तन्तुओं से निर्मित होती है। अतः इन्हें 'बहिर्जात' (Exogenous) कहतें हैं।
(७) ग्रंथि और पर्व	गंथि आर पर्व का मूल में अभाव होता है।	काण्ड में ग्रथि और पर्व रहते है। किन्तु ये स्पष्ट नहीं होते है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अनियामित मूल

(ADVENTITIOUS ROOTS)

परिभाषा–प्रारंभिक मूल और उसकी शाखायें नियमित मूल (Norml roots) कहलाती हैं। काण्ड के अन्य किसी भाग से निकलने वाले मूल को 'अनियमित-मूल' कहते हैं। ये निम्न प्रकार की होती हैं।

(१) स्तम्भाकार (Prop roots)–ये काण्डकी विस्तृत शाखाओं से निकलकर जमीन में जाती है और पेड़ को स्तम्भ का कार्य करती है जैंसे बरगद

(२)अवलम्बकमूल Stilt roots)–काण्डकी भिन्न भिन्न ऊंचाई से अनियमित मूल निकलकर तिरछे बढते हुए पृथ्वी में प्रवेश कर पेड़ को अवलम्बन प्रदान करे इन्हें 'अवलम्बक मूल' कहते हैं।

(३) पत्रमूल (Leaf-roots)—पत्र कलिआओं से निकलने वाले मूल को 'पत्रमूल' कहते हैं जैसे पत्थर चूर

(४) आरोही मूल (Climbing roots)—जो काण्ड से मूल निकालकर दूसरे वृक्षपर उसकी सहायता से चढ़े उसे 'आरोही मूल' कहते हैं। जैसे नागरवेल, पिप्पली आदि

(५) श्वसनीय मूल (Respiratory roots)–जलाश्रयी उद्भिज्जमें जल में तैरती हुई शाखाओं से मूल निकालते हैं जो वर्णरहित, हल्की कोमल और सछिद्र होती है और जल के सतह पर तैरती है। इन्हीं के द्वारा श्वासोच्छ्वास में सहायता प्राप्त होती है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

(६) आचोषक-मूल (Parasite or sucking roots)–पराश्रमी उद्भिज्ज एक विशेष प्रकारकी मूल द्वारा अन्य उद्भिज्ज अर्थात् उससे आश्रय प्रदान करने वाले (Host plants) का छेदनकर उंसके तन्तुओं से आहाररस का आभूषन करते है। जैसे स्वर्णलता; अमर वेल आदि

(७) वायवीय मूल (Aerial roots)–कुछ उद्भिज्ज अन्य वृक्षों पर उत्पन्न होते हैं किन्तु वे उनके आश्रयी वृक्षोंसे आहाररस का आचूषन नहीं करते हैं। उनके मूल लटकते हुए होते है और वायुद्वारा अपने आहार का निर्माण करते हैं। उन्हें 'वायवीय मूल' कहते हैं।

(८)सात्म्यकरण-मूल(Assimilatory roots)–बहुतसे जलाश्रमी और वातावलम्बी उद्भिज्जोंकी मूल हरित वर्णयुक्त हो जाती है इनके घटको में हरित द्रव्य होता है। यह हरित द्रव्य आहार निर्माण का कार्य करता है। इन्हें 'सात्म्यकरण-मूल' कहते हैं।

(९) सूत्र–मूल (Fibrous roots)—एक दली उद्भिजों के सूत्र मूल सर्वदा अनियमित होते हैं। ये मूल काण्ड ग्रांथि या जमीन पर फैलनेवाली शाखाओं के पर्वो से गुंच्छों में निकलते हैं। ये घास में बहुतायत से प्राप्त होते हैं और स्पष्टतया दृष्टिगोचर होते है।

मूल–रूपान्तर (Modification of roots)—प्राय: प्रारम्भिक मूल और उसकी शाखाओं का रूपान्तर हो जाता है। ये मोटे और माँसल हो जाते हैं। उद्भिज्ज को जमीन में दृढ़ रखने के साथ ही साथ आहार का संचय कार्य विशेष बढ़ जाता। ये रूपान्तर निम्नाकित हैं:—

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

(१) मूलिकार-मूल (Fusiform roots)—जो मध्यभाग में ऊंचे उठे हुए हों, और अग्रिम भाग की ओर क्रमशः पतले होते उन्हें 'मूलिकारी मूल' कहते हैं जैसे मूली

मूलिकार-मूल

(२) सलगमाकार-मूल (Napiform roots)—जो ऊपरी भाग में बहुत ही ऊंचे उठे हुए हों और जिनका निम्न भाग एकाएक पतला हो गया हो उन्हें 'सलगमाकारी मूल' कहते हैं जैसे सलगम और बीट

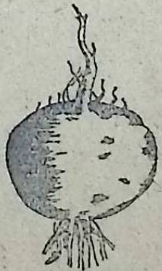

सलगमाकार-मूल

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

(३) शंक्वाकारी-मूल (Conical roots)—जिनका ऊर्ध्वभाग मोटा और अधोभाग क्रमशः पतला हो उसे 'शंक्वाकारी मूल' कहते जैसे गाजर

शंक्वाकारी-मूल

(४) कन्दाकार-मूल (Tuberous roots)—जिनकी मोटाई अनियमित रूप से हों वे 'कन्दाकारी मुल' कहे जाते हैं जैसे शकरकन्द, रतालु आदि

कन्दाकार-मूल

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

(५) कन्द गुच्छाकारीमूल (Fasciculated roots)—जब काण्ड के तल भाग से अनेक गुच्छ में कन्द निकले तो उन्हें 'कन्द गुच्छाकार मूल' कहते हैं जैसे शतावरी

कन्दगुच्छाकारी–मूल

(६) ग्रंथि-मूल (Nodulose roots)—जो मूल अग्रिम भाग के समीपवर्ती प्रान्त में एकाएक मोटी हो जाय उन्हें 'ग्रंथिमूल' कहते हैं जैसे अम्बाडा

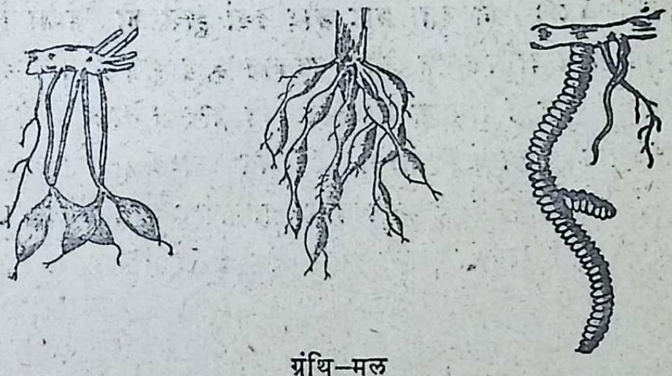

ग्रंथि–मूल

मूल के कार्य— प्रधानतः मूल के निम्नांकित कार्य होते हैं—

(१)दृढ़ता (Fixation)—मूल उद्भिजी को दृढ़ता प्रदान करता हैं। प्रधानमूल भूमि में गहरी प्रवेश करती है और उसकी अन्य शाखायें उद्भिज से समीपवर्ती प्राँन्त में चहुं ओर फैलकर उसकी दृढ़त कसंरक्षण करती है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

(२)अचूषन (Absorption)—मूल अपने रोमोंके द्वारा मृत्कणोंसे उद्भिज जीवनोपयोगी आहार द्रव्यों का आचूषन करती है।

(३)संवहन (Conduction)—मूल पृथ्वी से प्राप्त नानाप्रकार के उपयोगी द्रव्यों तथा जल को काण्ड में और अन्तः पत्तों तक पहुँचती है।

(४)संग्रह (Storage)—अपने भविष्य की आवश्यकता की पूर्ति के हेतु मूल खाद्य द्रव्यों का संचय करती है।

काण्ड (तना)

(STEM)

काण्ड उद्भिज के अक्ष से उर्ध्वगामी भाग है जो सीधा 'प्ररोह' (Plumle)से वृद्धिको प्राप्त होता है। इसके प्रधानअंग पत्र शाखायें और पुष्प हैं। नवीन काण्ड हरितवर्ण युक्त होता है। नवीन वर्धन-शील अक्ष (Axis) की रक्षा छोटे छोटे पत्रों द्वारा की जाती है। प्रायः काण्ड के नाना प्रकारसे अनेक घटकीय कार्य होते हैं और बाह्य भाग शाखा में होते हैं। बाह्य भाग पर पर्व और सन्धिया होती हैं जिनसे पत्र और शाखायें निकलती हैं। जब काण्ड या शाखा का पत्र पर्व में अन्त होता है तो वे ऊर्ध्व या चारोंओर बढ़ने लगते हैं किन्तु इनका पुष्प पर्व में अन्त होने पर वृद्धि क्रिया नष्ट हो जाती है।

वर्णनोपयोगी—पारिभाषिक शब्द—

१ गोलाकार (Cylindrical)—प्रायः काण्ड गोल होता ह।

२ त्रिकोणाकार (Triangular)—जैसे तुलसी

३ चतुष्कोणीय (Quadrangular)—

४ नलिकाकारी (Fistular)

काण्ड-प्रकार (Forms of stem)—

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

(१) वायवीय (Arial)—ये स्वावलम्बी, कठोर और पृथ्वी पर सीधे खड़े हुए होते हैं। प्रधानतः ये दो प्रकार के होते हैं–

(अ) स्वावलम्बी (Erect or strong stem)—ये कठोर होते हैं। अतः पृथ्वी पर बिना किसी अवलम्बन के दृढ़ रहते हैं। वृक्ष, गुल्म और क्षुप के काण्ड इसी श्रेणी में आते हैं।

ये भी विभिन्न प्रकार के होते हैं—

(क) शाखारहित काण्ड (Caudex)—शाखारहित, गोल, स्वालम्बी, और गिरे हुए पत्रों के निशान वाले काण्ड को शाखारहित काण्ड कहते हैं जैसे ताड

(ख) रिक्तपर्व-काण्ड (Culm)–कठोर सन्धि रिक्तपर्वयुक्त और आपस में संयुक्त काण्ड को-कहते हैं। जैसे बाँस

(ग) आवृत-काण्ड (Scape)—कुछ एकदली उद्भिजों के वायवीय काण्ड नहीं होते हैं। कांड दबा हुआ और जहां अन्तः प्रविष्ट होता है और वहीं से उसके पत्र निकलते हैं। इससे ऐसा प्रतीत होता है मानो मूल से पत्र निकल रहे हों। पुष्पोद्भवकाल में यह भूमि स्थित काण्ड एक स्वावलम्वी वायवीय काण्ड को उत्पन्न करता है जिसके अग्रिम भाग से एक या गुच्छ में पुष्प निकलते हैं ऐसे काण्ड को (Scape) कहते हैं जैसे रजनीगंधा।

प्रधान काण्ड (Excurrent)—अनिश्चितरुप से बढ़ता जाता है और चारों ओर शाखाये प्रशाखे फैलाता हुआ एक Pyramidal आकर को धारण करता है उसे (Excurrent) कहते है।

(अ) छमाकारी (Deliquescent)—जब प्रधान कक्ष की वृद्धि अवरूद्ध हो जाती है और शाखाये प्रकाण्ड के चारों ओर फैलकर एक छत्र Dome का आकार धारण करलेती है उसे-कहते है जैसे बरगद

(आ) परालम्बी —में कोमल, पतले, लम्बे, और निर्बल होतें से पृथ्वी पर दीर्घ काल तक दृढ़ खड़े नहीं रह सकते है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

(१) प्रसारणि (Creepers)–ये मूल रहित होती है और पृथ्वी से कुछ पर ऊउठने पर शाखाये निकल कर जमीन पर चारों ओर फैलती हैं।

भौमिक काण्ड (Underground)—कुछ काण्ड हमेशा के लिये जमीन में ही रहते हैं अनुकुल परिस्थिती प्राप्त होने पर ही इससे वायवीयकाण्ड निकलते हैं। इनका प्रधान कार्य खाद्य संचय करना होता है।

काण्डाक्षि (Buds)–का अग्रिमभाग मूल, पत्र आदि अवयव जो नवीन उद्भिज्ज उत्पन्न करने वाले अकुंर को 'अक्षि' कहते हैं।

(१) शुंगाक्षि (Terminal buvd)–काण्ड या शाखा के अग्रिम-भाग से निकलेनें वाली अक्षि को 'शुंगाक्षि' कहते है।

(२) पत्रकोणोद्भूताक्षि (Axillary buds)–पत्रकोणोसे निकलनें वाली अक्षिको पत्रकोणोद्भूताऽखि कहते हैं।

(३) अतिरिक्ताक्षि (Accessory buds)—पत्रकोणोंके अतिरिक्त सभी मध्य प्रदेशमें अन्य उद्भूत होने वाली अक्षियोंकी 'अतिरक्तक्षि' कहते हैं।

(४) अनियमिताक्षि (Adventitious buds)—उद्भिज्ज के क्रिमी की अवसर पर उत्पन्न होने वाली अक्षिको अनियमिताक्षि कहते है।

काण्ड का रूपान्तर

(क) भौमिक काण्ड रूपान्तर—कार्य विशेष की दृष्टि से काण्ड को रूपान्तरित होना आवश्यक हो जाता है। इसके प्रधान चार रूपान्तर होते है।

(१) अनियताकार (Rhziome)—यह मोटा, प्रसरणाशील और मांसल होता है जैसे अदरक

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

(२) गोलाकार (Tuber)—यह मांसल और इसका अग्रभाग गोल होता हें। इसके अक्षियाँ (Eyes) होती है जिसके स्वतंत्र पौधा अन्दर होता है। ज़ैसे अलू

(३) वज्राकार (Corm)—इसमें खाद्य द्रव्य बहुत संचित होता ह। अतः यह मोटा और मांसल होता है— सूरण

(४) वल्लीकाका (Bulbs)—इसका कन्द छोटा होता है और वल्कल पत्रों से आवृत रहता है। जैंसे प्याज

(५) दीर्घमूलिनी (Runner)— यह क़ोमल हरित वर्णयुक्त पतली औ लब्ब शाखा है ज़ो जमीन पर फैलती है। इसके पर्वों से मूल निकलती है जो स्वतंत्र पौधा उत्पन्न होता है जैसे ब्राह्मी

(६) ह्रखमूलिनी (Stolon)—यह तने के तल भाग से उत्पन्न होकर पृथ्वी से कुछ ऊपर उठती है इसका क़ाण्ड किंचित् छोटा और मोटा होता है इसकी शाखायें विभिन्न दिशाओं को फैलती हैं जैसे जलकुंभी

(७) नतमूलिनी (Offset)—ये पत्रकोण से निकलती है। उद्भव के समय वह छोटी कुछ मोटी होती है दहले यह कुछ ऊपर की ओर प्रवृत होकर पुनः नीचे झुक जाती हैं। जमीन तक पहुंचते ही इससे छोटी २ गुच्छ में मूल निकलते हैं। इन्हीं से नवीन पौधे का जन्म होता है।

(८) प्ररोही (Sucker)—यह जमीनसे कुछ बढ़ने के पश्चात् एक नवीन पौधे को जन्म देती हैं।

ग वायवीय काण्ड रूपान्तर (Metamorphors)—

(९) तान्तवी-काण्ड (Sten tenudril)—यह पतला, पत्र रहिन, और आवृत शाखायुक्त होता हैं जिससे पराश्रमी पौधे अन्य पौधों का आश्रय लेकर चढ़ते हैं। इससे प्रधानतः सूत्र होते हैं केवल सूत्र ही आरोहण का कार्य करते हैं। जैसे क़दली

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

(१०)कंटक (Thorn)—ये कठोर, प्रायः सीधे और तीक्ष्ण होते हैं ये बाह्याक्रमण से पौधे की रक्षा करते हैं। तालीसपत्री

(११) पत्रामास-काण्ड (Phylloeladke)–यह हरित वर्णयुक्त चपटा और गोल काण्ड होते हैं हरे वर्ण का होने से यह पत्र का कार्य करता है। जैसे थूहर.

(१२) मासल-काण्ड (Bulbil)—ये बहुधावायवीय अवयव जो पौधे के सन्तानोत्पति कार्य में सहायता प्रदान करता है। चूका

काण्ड के कार्य

(१) संवहन—यह जल और घुले हुए खाद्यखनिजद्रव्यों को मूल से पत्रों तक संवहन करता है।

(२) संरक्षण—यह उद्भिज के लिए स्तम्भ का कार्य करता है।

(३) सन्तानोत्पति— काण्ड अपनी शाखा और पतों को बहुत ही विस्तृत कर खाद्य पदार्थों का निर्माण करता हैं और पुष्पों के द्वारा सन्तानोत्पति का कार्य सम्पादन करता है।

(४) संचय—अपने भविष्य की आवश्यकता की पूर्ति केहेतु खाद्य पदार्थों का संचय करता है।

पत्र
(Leaf)

पत्र काण्ड या शाखा की चौड़ी पार्श्विक प्रवर्धन है जो कि एक पर्व से निकलता है और जिसके पत्रकोण में एक अक्षि अवश्य होती है। साधारणतः इसका पृष्ठ हरित वर्ण का होता है और पौधे का सबसे आवश्यक अंग जो कि खाद्य निर्माण क्रिया सम्पादन करता है।

पत्र के भाग—पत्र के मुख्य तीन भाग होते हैः—

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

(१) पत्र तल भाग (Leaf base)—यह भाग काण्ड से काण्ड लग्न होता है ।

(क.) बहुत से पौधे में पत्र तलभाग मोटा (Sheaths) होता है जो आँशिक्रिया सम्पूर्ण काण्ड को आवृत करलेता है इसे Speathing leaf कहते हैं ऐसे पत्र तल भाग एक दलो पौधों में बहुतायत से प्राप्त होता है।

(ख)पुंखपत्र (Stipues)–द्विबीजी पौधों से पत्रों के तल भाग के दोनों किनारों पर एक हस्ताकार रचना होती है जिसे पुंखपत्र (Stipubes)कहते हैं ।

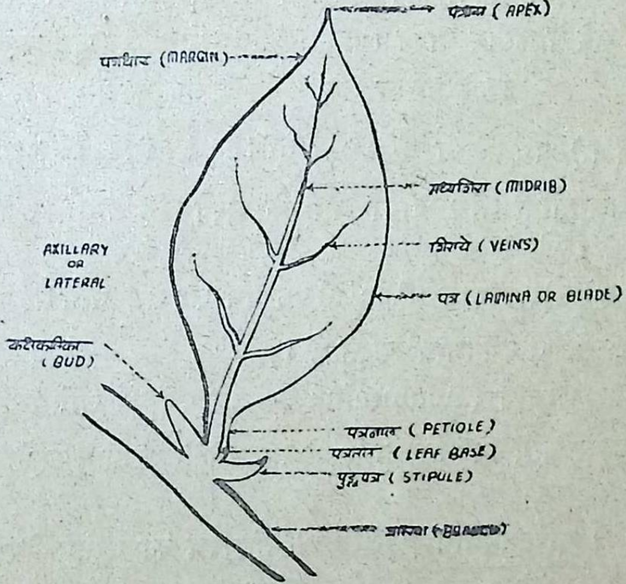

पत्र–विभाग

(ग) मासल (Pulvines)–कहीं कहीं पत्र तल भाग बहुत ही मोंटा होता है उसे जैंसे अपराजिता

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

(२) पत्रवृन्त (Petiole)–पत्र तल और पत्र फलकके मध्य भाग को 'पत्रवृन्त' कहते हैं।

(क.) सवृन्त (Petiolate)–जब पत्र के वृन्त से संलग्न रहता है। तो उसे 'सवृन्त' कहते हैं।

(ख.) अवृन्त (Sessile)–वृन्त रहित पत्र को 'अवृन्त' कहते हैं। अवृन्त पत्रों का फल के तल भाग के ही दो पर्वों में विभक्त हो जाते हैं जो कांण्ड को आंशिक या सर्वांगिक रूप से आवृत कर लेते हैं।

(३) फलक (Leaf blade or lamina)–यह पत्र का विस्तृत भाग है ये दो पार्श्वों से मिलकर बना हुआ हीता है जो आपस में एक दूसरे से कठोर माध्य शिरा (Mid-rib) द्वारा जुड़े हुए होते हैं।

इसके प्रधान अवयव निम्न प्रकार हैं:–

(अ.) पत्राग्रभाग (Apex of the leaf)—जहां माध्यशिरा समाप्त होती है और दोनों ओर के पार्श्व मिलते हैं उसे 'पत्राग्र' कहते हैं।

(क) तीक्ष्णपत्राग्र (Acute)जब पत्र का अग्र भाग अत्यन्त तीक्ष्ण हो तो उसे 'तीक्ष्णपत्राग्र' कहते हैं।

(ख) लम्बाग्र (Acumminate)–जब पत्र का अग्रिमभाग पतला ओर बहुत आगे निकला हुआ हो तो उसे 'लम्बाग्र' कहते हैं। जैसे पीपल

(ग) कुण्डितपत्राग्र (Obtuse)–जब पत्र का अग्रिमकोप नितान्त गोल हो तो उसे कुण्ठितापत्राग्र कहते हैं। जैसे बरगद

(घ) नतपत्राग्र (Emarginate)—जब पत्र का अग्रिम भाग बहुत ही भीतर दबा हुआ हो तो उसे नतपत्राग्र कहते हैं। जैसे कचनार

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चकंटकीय पत्राग्र (spionus)–जब पत्र का अग्रिम भाग तेज हो तो उसे 'कंटकीय पत्राग्र' कहते है । जैसे खजूर

छ सूत्रवत् पत्राग्र (Tendrills)–जब पत्र का अग्रिम भाग सूत्र मैं रूपान्तरित हो जाय उसे 'सूत्रवत् पत्राग्र' भाग कहते हैं । जैसे कलिहारी

पत्रधार (Margin of the leaf)–पत्र के दोनों पार्श्वों के किनारे को 'पत्राधार' कहते हैं–

ये निम्न प्रकार की होती हैं ।

(१)अखण्ड (Entire)–अखण्डित और स्निग्ध किनारे 'अखण्ड' कहे जाते हैं । जैसे बरगद, आम आदि

(२) (Pepand)–जब पत्रधार अखण्ड हो तो चारों ओर से लहर के समान मुड़ी हुई हो जैसे देवदारुस आदि

(३) तीक्ष्णदन्ताकार (Sessae)—जब पत्रधार और द्रव्यके समान दन्त युक्त हो और ये दांत उध्वोनुभवी हो तो उन्हें 'तीक्ष्णदन्ताकार' पत्रधार कहते हैं ।

(४)दन्ताकार (Entat)–जब पत्रधार से पन्त ० तक उर्ध्वभुवी हो तो उन्हें 'दन्ताकार' पत्राग्र कहते हैं ।

(५) कुण्ठित दन्ताकार (Crenate)–यह गोल दन्ताकारी पत्रधार होती है । जैसे ब्राह्मी

(६) कंटकपत्रीधार (Spinous)-जब पत्र धार पर कांटे हो जैसे पीला धतूरा

पत्र पृष्ठ (Surface of the leaf)–पत्र के ऊपर नीचे दो पृष्ठ होते हैं । सूर्य की किरणों के और वाले पृष्ठ को उर्ध्वपृष्ठ और पृथ्वी की ओर वाले पृष्ठ को अथोपृष्ठ कहते हैं ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

(१) श्लक्ष्ण (Glabrous)-इसका पृष्ठ चमकीला और रोमहित होता है।

(२) खरपृष्ठ (Rough)-जब पत्र के पृष्ठ भागपर स्पर्श से कर्कशकता की प्रतीति हो तो वह 'खरपृष्ठ' समझना चाहिए।

(३) रोमश (Hairy)-जिस पत्र का पृष्ठ भाग रोमयुक्त हो तो उसे 'रोमश' कहते हैं।

(४) स्निग्ध (Glutinous)-जब पत्र पृष्ठ स्निग्ध हो तो उसे 'स्निग्ध' कहते हैं। जैसे तम्बाकू

(५) चिक्कण (Glaclous)-जब पत्र पृष्ठ हरा और चमकदार हो तो उसे चिक्कण कहते हैं।

(६) कंटकीय (Spiny)-पत्र पृष्ठ पर कंटक होनेपर उसे 'कंटकीय पृष्ठ' कहते है।

पत्राकार

(१) रेखाकार (Linear)—जो पत्र लम्बा और सकड़ा हो उसे 'रेखाकार' कहते हैं। जैसे घास के पते

रेखाकार

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

(२) भल्लाकार (Lanceolate)—भाले के समान आकार वाले पत्रों को 'भल्लाकार' कहते है जैसे बाँस का पत्र

भल्लाकार

(३) गोलाकार(Rotund)—जिस पत्र का किनारा गोलाकार हो उसे कहते हैं जैसे कमल पता

भल्लाकार

(४)उपाण्डाकार (Elliptical or oval)—उपाण्ड समान आकार वाले पत्र को 'उपाण्डाकार' कहते है।

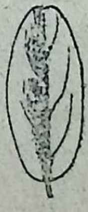

उपाण्डाकार

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

(५) अण्डाकार (Ovate)—अण्डे के आकार से मिलते जुलते पत्र को 'अण्डाकार' कहते हैं। जैसे बड़ के पत्र

अण्डाकार

(६) स्रुवाकार (Spathulate)—जिस पत्र का आकार स्रुवा समान अर्थात सिरेपर गोल और चौड़ा और आधार पर सकड़ा हो उसे 'स्रुवाकारपत्र' कहते हैं।

स्रुवाकार

(७) तिर्यक-पत्र (Oblique)—जिस पत्र के मध्य शिरा के पास के विभाग बराबर न हो उसे 'तिर्यक-पत्र' कहते हैं। जैसे निम्ब

तिर्यक-पत्र

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

(८) वृक्काकार (Reniform)—वृक्क के आकार से मिलते-जुलते पत्र को 'वृक्काकार' कहते हैं बड़ा मण्डूकी

वृक्काकार

(९) हृदयाकार (Cordate)—हृदय के आकार वाले पत्र को 'हृदयाकार पत्र' कहते हैं जैसे पान

हृदयाकार

(१०) वाणाकार (Sagittate)—तीर के समान आकार वाले पर्ण को वाणाकार कहते हैं ।

वाणाकार

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

(११) कुन्ताकार (Hastate)-वाण-पत्र के मध्यशिरा के पास वाले दोनों भाग उपर की ओर प्रवृत प्रतीत हों तो उन्हें 'कुन्ताकार-पत्र' कहा जाता है। जैसे कलमीशाक

कुन्ताकार

(१२) वीणाकार (Lyrate)-वीणा के समान आकार वाले पर्ण को 'वीणाकारपत्र' कहते हैं जैसे सर्षप

वीणाकार

(१३) सूच्याकार (Acicular)-जो पत्र 'सूची' के समान लम्बा संकड़ा और गोल हो उसे 'सूच्याकार-पत्र' कहते हैं। जैसे चीड़

सूच्याकार

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

१४ स्फानाकार (Cuneate)–स्फान के समान आकार वालें पत्र को 'स्फानाकार पत्र' कहते है जैसे पान

स्फानाकार

१५ दीर्घवृताकार (Oblong)–जब पत्र चौड़ा और लम्बा हो और नीचे गोल होतो उसे 'दीर्घवृताकार' पत्र कहते हैं।

दीर्घवृनाकार

पत्र के कर्म

१ खाद्य-निर्माण—पर्ण का प्रधान कार्य खाद्य-निर्माण करना है। ये दिन में सूर्य के प्रकाश की सहायता से शर्करा और स्टार्च का निर्माण करते हैं।

२ वात-नियमन (Inter-changes of gases)—पर्ण द्वारा ही वायु मंडल और वनस्पति से वाति-नियमन क्रिया सम्पादित होतो है। प्रधानतः ये नियमन उद्भिज्जों की श्वासोच्छ्वास क्रिया और खाद्य निर्माण के लिये ही होता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

३ जल-वाष्पीकरण (Evaporation of water)—मूलरोम प्राय: अपनी आवश्यकतासे अधिक जल का आचूषन करते हैं जिसका पत्रो द्वारा वाष्पीकरण होता रहता है।

४ खाद्य-संचय (Storage of food)—पत्र विशिष्ठ की आवश्यकता के हेतु खाद्य-संचय करते हैं। जैसे घृतकुमारी

५ उद्भिजोद्भेद (Vegetative propagation)— कुछ उद्भिज्ज में अक्षि निकलती है जिससें एक स्वतंत्र पौधे का निर्माण होता है। जैसे पत्थरचूर

पुष्प

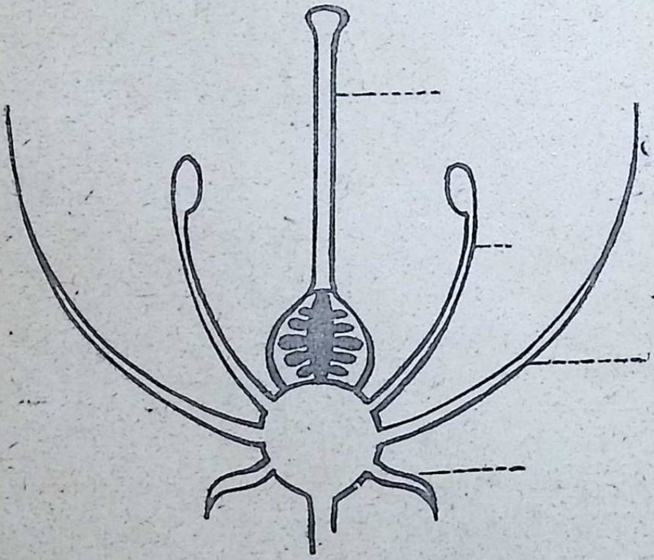

पुष्प विभाग

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

पुष्प–मूल का विशिष्ठ रुपान्तरित भाग को पुष्प कहा जाता है जो फल और बीज की उत्पति का कारण होता है।

पुष्प विभाग (Parts of a flower)—पुष्प के निम्नांकित चार भाग होते हैं जिसका पत्रव्यूह छोटे से अक्षपर होता है जिसे 'आधार' (Thalamus) कहते हैं।

(१) पुष्प-कोष (Calyx)-बाह्य पुष्प ब्यूह पर पर्णाकारी को निदल (Sepals) कहते है।

(२) पुष्पकुट (Corolla)—यह पुष्पकोष के ऊपरी भाग पर होता है जिस पर श्वेत या विविध रंग की पंखुड़ियाँ (Petals) होती हैं।

(३) पुंकेशर (Androceium)-यह पुष्प का तीसारा-व्यूह होता है जिसकी पुँकेशर या पुल्लिगी रचना होती है।

(४) स्त्रीकेशर (Gynaecium or pistil)—यह पुष्प के सबसे ऊपर होती है जिसकी स्त्रीकेशर (Carpel) या 'स्त्रीलिंगी' रचना होती है।

(१) परिपुष्प (Perianth,--अब पुष्प में पुष्पकोष और पुष्प कुट, कद, आकार और वर्ण में समान होते है तब उसको परि-पुष्प कहते हैं।जैसे:–नाग दमन गुलछडी सहायक व्यूह (Accessary whorls

पुष्पकोष और पुष्प कुट को सहायक–व्यूह कहते हैं।

आवश्यक व्यूह: (Essential whorls)—पुंकेशर और स्त्री केशर उत्पादनो क्रिया का महत्व भाग होने से उनको आवश्यक व्यूह कहा जाता हैं।

पुष्प लिंग (Sex of flower) उभयलिंग (Hermaphrodite)

(१) पुंकेशर (Androecium)—यह तीसरा (Whorl) है और इस में पुंकेसर (Stamen) और पुरुष इंद्रीय होता हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

पुष्प में पुंकेसर और स्त्रीकेसर दोनों होते हैं तब उसको उभयलिंग (Bisexeual) कहते है। जैंसे गुलाब

(२) एक लिंगी (Unisexoual)—स्त्रीकेशर और पुंकेसर दोनों में से एक ही पुष्प में होता है तब उसको एक लिंगी कहते है।

एक लिंगी का भी उपप्रकार होते है।

(अ) पुंकेसरि पुष्प (Staminate flower)—जिसमें सिर्फ पुंकेसर ही होता है उसको पुंकेसरी पुष्प कहते है। जैसे मक्का

(आ) स्त्रीकेसरि पुष्प (Pistillate flower)—जिसमें केवल स्त्रीकेसर ही होते हैं जैसे एरंड कर्कटी

पुष्प

पुष्प विभाग

(३) नपुंसकलिंगीः—(Neuter)—स्त्रीकेसर और पुंकेशर दोनों में से एक भी केसर नहीं मिलते उसको नपुंसक लिंगी कहते है। जैसे सूर्यमुखी

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

(४) सर्वलिंगी (Polygamus)—पुंकेसर, स्त्रीकेसरि पुष्प एक ही वृक्ष से उमय लिंगी मिलता हैं. उसको सर्वलिंगी कहते है। जैसे.—आम्रतरु (Mango)

(५) विलिंगी (Menoecious)—जब एक ही वृक्ष पर स्त्री केसर और पुंकेसर पुष्प होते है तब उसको विलिंगी कहते है। जैसे एरंड़

(६) अद्विलिंगी (Dioecious)—स्त्रीकेसर और पुंकेसर के पुष्पो विविध पेड पर होते हैं तब उनको अद्विलिंगी कहते है।

आभ्यान्तरिकक़ोष या पुष्पमुकुट (Corolla)—पुष्प के दूसरे व्यूह को 'आभ्यान्तरिक-कोष' कहते है। ये अनेक पत्रों से बना हुआ होता है जिन्हें पंखड़ियां (Petals) कहा जाता है। ये पंखड़ियां श्लक्षण और प्राय: सुगन्धित होती है। इनका प्रधान कार्य गर्भ-धारणा के हेतु भ्रमरों को आर्कषित करता है।

स्वतंत्र-दल (Polypetalous)—जब पुष्प सब पंखड़ियां स्वतंत्र होती है अर्थात एक दूसरे से संयुक्त नहीं होती है उसे 'स्वतंत्रदल' कहते है। जैसे गुलाब

संयुक्तदल (Gamopetalous)—जब पुष्प की समस्त पंखु-डियां एक दूसरे से संयुक्त रहती है उसे 'संयुक्त-दल' कहते हैं। जैसे धतूरा

पुंकेशर (Androceium)—यह पुष्प का तीसरा व्यूह होता है जिसे पुंकेशर कहते हैं प्रत्येक पुंकेशर की निम्नांकित तीन रचना होती है।

(१) केशर सूत्र (Filament)—यह पुंकेशर का अधोभाग है। ये छोटा, लम्बा, चौड़ा या कभी-कभी इसका अभाव भी होता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

(२) संयोजक (Connective)

(३) पराग कोष (Anther)

षण्डकेशर (Staminode)—जब केशरसूत्र पर परागकोष की उपस्थिति नहीं होतो उसे षण्ड पुंकेशर कहते है जैसे बबुल

दलबद्ध (Epipetalous)—जब पुंकेशर पुष्पासन से निकलने क विपरित पुष्पमुकुट की पंखुडियों से लगे हुए हो उसे कहते दलबद्ध है जेसे धतूरा

स्त्रीकेशर (Gynaecium or pistil)—पुष्प के सबसे आभ्यान्तरिक व्यूह को 'स्त्रीकेशर' कहते है यह पुष्प का स्त्रीसन्तानोत्पादक अवयव है।

इसने निम्नांकित तीन भाग होते हैं।

(१) परागवाहिनीकला (Stigma)—यह परागवाहिनी अन्तिम भाग है जिसमें वायुद्वारा पराग एकत्रित हो गर्भाधारणा का होता है।

(२) परागवाहिनी (Style)—यह परागवाहिनीकला और बीजकोष के मध्यका रिक्त भाग है। ये लम्बीया छोटी होती है कभी-कभी इसका अभाव भी होता है। जैसे कमल

(३) बीजकोष (Ovary)—यह स्त्रीकेशर का अधःस्थ उभरा हुआ और रिक्तस्थान है। इसमें अपरिपक्व बीज रहते हैं।

पुष्प की जाति—

(१) नरपुष्प (Male flower)—स्त्रीकेशर रहित पुष्प को नरपुष्प कहते हैं।

(२) स्त्रीपुष्प (Female flower)—पुंकेशर रहित पुष्प को 'स्त्रीपुष्प' कहा जाता हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

(३) द्विलिंगी (Bisexual flower)—जिसमें स्त्रीकेशर और पुंकेशर दोनों होते है उसे द्विलिंगी पुष्प कहते हैं।

(४) नपुंसक (Neuter)—स्त्रीकेशर और पुंकेशर रहित पुष्प को नपुँसक पुष्प कहते हैं।

फल (Fruit)

वनस्पति की अन्तिम रचना को 'फल' कहते हैं।

फल के अंग—फलके निम्नांकित पांच अवयव होते हैं।

(१) फलबाह्य त्वक (Epicarp or inner layer)—यह फल की बाह्य त्वचा है जो प्राय: कठोर होती है।

(२) मांसल भाग या मध्यावरण(Mesocarp or central layer यह फल के मध्य का भाग है जिसे गुदा कहा जाता है।

(३) आभ्यान्तरिकावरण या अस्थि भाग (Endocarp or inner layer)—यह फल है भीतर का कठोर भाग होता हैं। जिसे 'अष्ठि' कहते हैं।

उपरोक्त तीनों अवयव मिलकर फलकी दिवाल (Pericarp) का निर्माण करते हैं।

बीज

गर्भधारणाके पश्चात् उत्पन्न होने वाली प्रनाल रचना को बीज कहा जाता है ये निम्नांकित दो भागों में विभक्त किये जाते है।

(१) नग्न बीज (Gymnosperms)—जो बीज फल से आवृत नहीं रहते हैं उन्हें नग्नबीज कहते हैं।

(२) आवृत बीज़ी (Angiosperms)—जो बीज फल से पूर्णतया आवृत रहते हें उन्हें 'आवृत बीज' कहते हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

फल का वर्गीकरण

- फल
  - एकाकी (Simple)
    - शुष्क (निरस) (Dry)
      - अविदारी (Indehiscent)
        - एकबीजी (Achene) कमल
        - शमी (Cypsela) गलगोटा
        - शूक (Earyopsis) गेहुं चावल
        - सवक्ष Samara आधवीलता
        - काष्ट (Nut) काजु
      - विदारी (Dehiscent)
        - प्रावर (Capsule) कासकी
        - शिम्बी (Legume) अगस्त
        - एकसेवनीक (Follicle) आक
        - (Siliqua) हुरहुर
    - मांसल (Fleshy)
      - (Berry) तरबुज
      - अष्ठिल (Drupe) समुद्रफल
  - सामूहिक (Aggregate)
  - संयुक्त (Composite)
    - गोलाकार (Syconus) अंजीर बरगद के फल
    - शंक्वाकार (Sorosis) केवड़ा फणस

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

विषय-सूची

प्रस्तावना

भूमिका

वनस्पति विज्ञान

वनस्पतियों का वर्णन:—

	हिन्दी	Botanical Name	चित्रसंख्या	पृष्ठसंख्या
१	अकरकरा	Anacyclus pyrethrum, D. C.	१	१
२	अगस्त	Sesbania grandiflora, Pers Kirt.	२	३
३	अगर	Aquilaria agallocha, (Roxb.)	३	५
४	अंकोल	Alangium lamarckii, Thw.	४	७
५	अंगूर	Vitis vinifera, Linn.	५	९
६	अगियाघास	Andropogon citratus, D. C.	६	११
७	अजमोद	Apium graveolens, Linn.	७	१३
८	अजवायन खुरासानी	Hyocyamus niger, Linn.	८	१५
९	अडूसा	Adhatoda vasica, Nees.	९	१७
१०	अतिबला	Abutilon indicum, G. Don.	१०	१९
११	अतीस]	Aconitum heterophyllum, Wall.	११	२१

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

१२	अदरक	Zingeber. officinale, Rosc.	१२	२३
१३	अनार	Punica granatum, Linn.	१३	२५
१४	अमन्तमूल(सारिवा)	Hemidesmus indicus, R. Br.	१४	२७
१५	अपराजिता	Clitoria ternatea, Linn.	१५	२९
१६	अपामार्ग	Achyrathes aspera,	१६	३१
१७	अफीम	Papaver sominiferum. Linn.	१७	३३
१८	अमलतास	Cassia fistula, Linn.	१८	३५
१९	अमलवेंत	Rumex vesicarius, Linn.	१९	३७
२०	अरण्ड	Ricinus communis, Linn.	२०	३९
२१	अरणी	Clerodendron phlomoides, Linn.	२१	४१
२२	अरलू (सोनापाठा)	Oroxylum indicum, (Linn.) vent.	२२	४३
२३	अरिमेद	Acacia farnesiana, Willd.	२३	४५
२४	अरीठा	Spindus trifoliatus, Linn.	२४	४७
२५	अर्गट	Claviceps purpurea, Fr Tul.	२५	४९
२६	अर्जुन	Terminalia arjuna, W. & A.	२६	५१
२७	अलसी	Linum usitatissimum, Linn.	२७	५३
२८	अशोक	Saraca indica, Linn.	२८	५५
२९	असगन्ध	Withania somnifera, Dunal.	२९	५७

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

३०	आक	Calotropis procera, R. Br.	३०	५९
३१	आँबाहल्दी	Curcuma aromatica, Salisb.	३१	६१
३२	आँवला	Emblica officinalis, Gaertn.	३२	६३
३३	इन्द्रजौ	Holarrhena antidysenterica, Wall.	३३	६५
३४	इन्द्रायण	Citrullus colocynthis, Schard.	३४	६७
३५	इमली	Tamarindus indica, Linn.	३५	६९
३६	इलायची	Elettaria cardamomum, Maton.	३६	७१
३७	इसबगोल	Plantago ovata, Forsk.	३७	७३
३८	उलटकंबल	Abroma augusta, Linn.	३८	७५
३९	उशबा	Smilax zeylanica, Linn.	३९	७७
४०	कंगुनी	Celastrus paniculata, Willd.	४०	७९
४१	कचनार	Bauhinia variegata, Linn.	४१	८१
४२	कचूर	Curcuma zedoaria, (Rose.)	४२	८३
४३	कटेरी (बड़ी)	Solanum indicum, Linn.	४३	८५
४४	कडवी तोरई	Luffa acutangula, Roxb. (Luffa amara)	४४	८७
४५	कोहला, कद्दू	Benincasa hispida, (Thumb).	४५	८९
४६	कंटकरंज	Pongamia glabra, vent.	४६	९१
४७	कनेर	Nerium odorum, (Soland.)	४७	९३

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

४८	कपास	Gossypium herbaceum, Linn	४८	९५
४९	कपीला	Malloto philipinensis, (Muell.)	४९	९७
५०	कपूर	Cinnamum camphora. F.•Nees.		९९
५१	कपूर	,, ,,		१००
५२	कपूरकचरी	Hedychium spicatum, Ham.	५१	१०१
५३	कबावचीनी	Piper cubeba, Micuel.	५२	१०३
५४	कम्भारी	Gmelina arborea, Roxb.	५३	१०५
५५	करंज	Pongamia glabra	५४	१०७
५६	कलुंबो	Jatrohizza palmata, Linn.	५५	१०९
५७	कमल	Nelumbium speciosum Willd.	५६	१११
५८	कसौंदा	Cassia occidentalis, Linn.	५७	११३
५९	ककडासिंघी	Rhus succedanea, Linn.	५८	११५
६०	कायफल	Myrica nagi, Thunb.	५९	११७
६१	कालमेघ	Andrographis panicul-ata, Nees.	६०	११९
६२	किरमानी अजवायन	Artemisia maritima, Linn.	६१	१२१
६३	कुचला	Strychnos nuxvomica, Linn.	६२	१२३
६४	कुटकी	Picrorhiza kurrooa, Benth.	६३	१२५
६५	कुलिंजन	Alpinia galanga, Sw.	६४	१२७

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

६६	कूठ	Saussurea lappa, Clarke.	६५	१२९
६७	केशर	Corcus sativus, Linn.	६६	१३१
६८	कौंच बीज	Mucuna pruriens, D.C.	६७	१३३
६९	खरैंटी	Sida cordifolia, Linn.	६८	१३५
७०	खरजाल (पीलु)	Salvadora persica, Linn	६९	१३७
७१	खैर	Acacia catechu, Willd.	७०	१३९
७२	गांज।भांग	Canabis sativa, Linn.	७१	१४१
७३	गन्धप्रसारणि	Paederia foetida, Linn.	७२	१४३
७४	गिलोय	Tinospora cordifolia, Miers.	७३	१४५
७५	गूगल	Balsamodendron mukul, Hook.	७४	१४७
७६	गूलर	Ficus glomerata, Roxb.	७५	१४९
७७	गोखरू	Tribulus terrestris, Linn.	७६	१५१
७८	गोरखमुण्डी	Sphaeranthus indicus, Linn.	७७	१५३
७९	चन्दन	Santalum album, Linn.	७८	१५५
८०	चव्य	Piper chaba. Hunter.	७९	१५७
८१	चांगेरी	Oxalis corniculata, Linn.	८०	१५९
८२	चालमोगरा	Gynocardia odorata, R. Br.	८१	१६१
८३	चित्रक	Plumbago zeylanica, Linn.	८२	१६३

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

८४	चिरायता	Swertia chirata, Ham.	८३	१६५
८५	चिल्ला (सप्तचक्रा)	Casearia esculenta, Roxb.	८४	१६७
८६	चीड (सरल)	Pinus longifolia, Roxb.	८५	१६९
८७	छतिवन (सप्तपर्ण)	Alstonia scholaris, R.B.r.	८६	१७१
८८	छोटाचांद (सर्पगंधा)	Rauwolfia serpentina, Benth.	८७	१७३
८९	छोंपचीनी	Smilax china, Linn.		१७५
९०	जायफल	Myristica fragrans, Houtt.		१७६
९१	जटामांसी	Nardostachys jatamansi. D. C.	८९	१७७
९२	जामुन	Eugenia jambolana, Lamk.	९०	१७९
९३	जीरा	Cumminum cyminum, Linn	९१	१८१
९४	डिजिटेलिस	Digitalis purpurea, Linn.	९२	१८३
९५	डिकामाला	Gardenia gummifera, Linn.		१८५
९६	तज दालचीनी	Cinnamomum zeylanicem, Breyn.		१८६
९७	तगर	Valeriana wallichii, D. C.	९४	१८७
९८	जमीकन्द (सूरण)	Amorphophallus companulatus, Blume.	९५	१८९
९९	ढाक	Butea frondosa, Roxb.	९६	१९१
१००	ताम्बूल	Piper betle, Linn.	९७	१९३
१०१	तालमखाना	Asteracantha longifolia, Ness	९८	१९५

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

१०२	त्रायमाण	Delhinium zalil, Caith.	९९	१९७
१०३	तिल	Sesamum indicum, Linn.	१००	१९९
१०४	तुवरक	Hydnocarpus wightiana, Blume.	१०१	२०१
१०५	तेजपात(तमालपत्र)	Cinnamomum tamala, Linn.	१०२	२०३
१०६	तेजबल	Zahthoxylum alatum, (Roxb.)	१०३	२०५
१०७	तालीसपत्र	Abies webbiana, Windl.	१०४	२०७
१०८	दली	Baliospermum montamum,	१०५	२०९
१०९	देवदारू	Cedrus deobdara,	१०६	२११
११०	दारुहलदी	Berberis aristata, Linn.	१०७	२१३
१११	धनिया	Coriandrum sativum, Linn.	१०८	२१५
११२	धमासा	Fagonia arabica, Linn.	१०९	२१७
११३	धामन	Grewia telialfolia, Vahl.	११०	२१९
११४	धाय	Woodfordia fruticosa, Kurz.	१११	२२१
११५	नागकेशर	Mesua Ferrea.	११२	२२३
११६	नागबला	Sida humilis, Linn.	११३	२२५
११७	नागरमोथा	Cyprus rotundus, Linn.	११४	२२७
११८	निसोत	Ipomoea turpethum,	११५	२२९
११९	नीम	Azadiracita indica, Linn.	११६	२३१

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

१२०	नींबू (विजोरा)	,, medica, Linn.	११७	२३३
१२१	नाबू	Citrus acida, Linn.	११८	२३५
१२२	निर्गुण्डी, सम्हालु	Vitex nigunds vitex. Trifolia.		२३७
१२३	पद्माक	Prunus puddum, Roxb.		२३८
१२४	परवल पटोल	Trichosanthes dioica, Roxb.	१२०	२३९
१२५	पवार	Cassia tora, Linn.	१२१	२४१
१२६	पाडल (पाटला)	Stereospermum suaveolens, D. C.	१२२	२४३
१२७	पाषाण भेद	Saxifraga linulata, Wall.	१२३	२४५
१२८	पारिजात	Nyctanthes arbortristis, Linn.	१२४	२४७
१२९	पंजूला (भुई आँवला)	Phyllanthus niruri, Linn.		२४९
१३०	प्रियंगु	Prunus mahaleb, Linn.		२५०
१३१	प्याज	Allium sepa, Linn.	१२६	२५१
१३२	पिठवन (प्रश्नपर्णी)	Uraria lagopoides, D.C.	१२७	२५३
१३३	पितपापडा	Fumaria parviflora, Lamk.	१२८	२५५
१३४	पीपल	Ficus religiosa, Linn.	१२९	२५७
१३५	पीपर (पिपरामूल)	Piper longum Linn.	१३०	२५९
१३६	पुनर्नवा	Boerhaavia diffusa, Linn.	१३१	२६१
१३७	पोखरमूल	Inula racemofa, Hook.	१३२	२६३

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

१३८	बड	Ficus bengalensis, Linn.	१३३	२६५
१३९	बबूल	Acacia arabica, Willd.	१३४	२६७
१४०	बच	Acorus calamus, Linn.	१३५	२६९
१४१	वरुण	Crataeva religiosa, Forst.	१३६	२७१
१४२	बहेडा	Terminalia belerica, Roxb.		२७३
१४३	ब्राह्मी	Hydrocotyle asiatica, Linn.		२७४
१४४	वंशलोचन	Bambusa arundinacea, Retz.		२७५
१४५	बाँस	Bambusa arundinacea, Retz.	१३८	२७६
१४६	बावची	Psoralea corylifolia, Linn.	३९	२७७
१४७	बछनाग	Aconitum ferox, Wall.	१४०	२७९
१४८	बिल्व	Aegle marmeloes, Corr.	१४	२८१
१४९	बेलाडोना	Atropa belladonna, Linn.		२८३
१५०	भारंगा	Clerodandron serratum, Spreng.		२८४
१५१	भांगरा	Eclipta alba, Hassk.	१४३	२८५
१५२	भिलावां	Semicarpus anacardium, Linn	१४४	२८७
१५३	मरिच	Piper nigrum, Linn.	१४५	२८९
१५४	मजीठ	Rubia cardifolia, Linn.	१४६	२९१
१५५	महुआ	Bassia latifolia, Roxb.	१४७	२९३

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

१५६	मायफल	Quercus infectoria, Oliv.		२९५
१५७	मुलेठी	Glycyrrhiza glabra, Linn		२९६
१५८	मूसली–सफेद	Asparagus adscendeus, Linn.	१४९	२९७
१५९	मैनफल	Randia dumetorum, Lamk.	१५०	२९९
१६०	राई	Brassica nigra, hk. F. & t.	१५१	३०१
१६१	रास्ना	Pluchea lanceolata, G. b. c.	१५२	३०३
१६२	रेवंदचीना	Rheum emodi, Wall.	१५३	३०५
१६३	रोहिड़ा	Tecoma undulata, C. Don.	१५४	३०७
१६४	लांगली	Gloriosa Superba, Linn.	१५५	३०९
१६५	लज्जालु	Mimosa pudica, Linn.	१५६	३११
१६६	लहसुन	Allium sativum, Linn.	१५७	३१३
१६७	लौंग	Caryophyllus aromaticus, Linn		३१५
१६८	लोबान	Gum benzoin, Dryand.		३१६
१६९	वायविडंग	Embelia Ribes, Burm.	१५९	३१७
१७०	लोध्र	Symplocos racemosa (Roxb)		३१९
१७१	लताकस्तुरी	Hibiseus abelmoschus Linn		३२०
१७२	लुनिया	Portulaca oleracea, Linn		३२१
१७३	शिलारस	Altingia epccelsa, Linn.		३२२

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

१७४	शतावरी	Asparagus racemosus, Willd.	१६०	३२३
१७५	शरपुंखा	Tephrosia Purpura, Or.	१६१	३२५
१७६	शाल	Shorea robusta, Gaertn.	१६३	३२७
१७७	शालपर्णी	Desmodium gangeticum, D. C.	१६३	३२९
१७८	सेभल	Bombax malabaricum, Linn.	१६४	३३१
१७९	शंखाहुली	Evolvulus alsinoides, Linn.	१६५	३३३
१८०	सिरस	Albizzia lebbek, Benth.	१६६	३३५
१८१	विदारीकन्द	Ipomoea dilitata, Linn.	१६७	३३७
१८२	शैलेय	Parmelia perforata, Linn.	१६८	३३९
१८३	सहदेवी	Vernonia cinera, Linn.	१६९	३४१
१८४	सहिंजना	Moringa pterygosperma, Linn.	१७०	३४३
१८५	सिताव	Ruta graveolens, Linn.	१७१	३४५
१८६	स्नुही	Euphorbia neriifolia, Linn.	१७२	३४७
१८७	हिंगु	Feurla narthex, Boiss.	१७३	३४९
१८८	सुरजन	Colchicum luteum, Bakel.	१७४	३५१
१८९	वनजीरक	Centratherum anthelminticum, Linn.	१७५	३५३
१९०	वाताम (बदाम)	Prunus amygdalus, Baili.	१७६	३५५
१९१	स्याहजीरा	Carum corvi, Linn.	१७७	३५७

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

१९२	शाखोटक	Streblucous asper, lour (cepicarpus orientalis, Blome)	१७८	३५९
१९३	बकुल	Mimusops elengi, Linn.	१७९	३६१
१९४	बनफ्शाह	Viola odoarata, Linn.	१८०	३६३
१९५	हल्दा	Curcuma longa, Linn.	१८१	३६५
१९६	सालबमिश्री	Orchis laxiflora. Lam.	१८२	३६७
१९७	सागवान	Tectuna gradis, Linn. F.	१८३	३६९
१९८	सिघाड़ा	Trapa bispinosa, Roxb.	१८४	३७१
१९९	सीसम	Dalbergia sissoo, Roxb.	१८५	३७३
२००	सोया	Peucedanum graveolens, Benth & Hook	१८६	३७५
२०१	श्लेष्मातक	Cordia dichotoma, Forst. (syn. Codia myxa, Linn.	१८७	३७७
२०२	हंसराज	Adiantum lunulatum, Burm.	१८८	३७९
२०३	हाड़जाड़	Vitis quadrangularis, Wall.	१८९	३८१
२०४	हैमवतीवचा	Iris versicolor, Linn.	१९०	३८३
२०५	वनककड़ी	Podophyllum embodi, Wall.	१९१	३८५
२०६	वेदमुश्क	Salix caprea, Linn.	१९२	३८७
२०७	रक्तचंदन	Ptero carpus santazinus, Linu.	१९३	३८९
२०८	जोगीबादशाह	Saussurea sarca, Linn.	१९४	३९१

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

२०९	जुनकी बेर	Vaccinium myristis, Linn.	१९५	३९३
२१०	मूली	Raphanus sativus, Linn.	१९६	३९५
२११	वृक्षाम्ल	Garcina indica, Chois.	१९७	३९७
२१२	सिकोना	Cinchona suceirubra, Psvom.		३९९
२१३	हरीतकी	Terminalia chebula, Linn.		४००
२१४	हरमल	Panganum harmala, Linn.		४०१
२१५	वृक्षादनी	Loronthus longiflorus, Desa.		४०२
२१७	पृष्ठ संख्या २३७ का	चित्रसंख्या	११९	४०३
२१८	,, ५४९	,,	१२५	४०४
२१९	,, २७५	,,	१३९	४०५
२२०	,, ३१९	,,	१६०	४०६

परिशिष्टः

१ पंचमहाभूत
२ रस, विपाक, रस और दोष
३ पंचकषाय कल्पना
४ मान परिभाषा
५ योग परिभाषा
६ वनस्पति कर्म भेदानुसार वर्गीकरण
७ रोगानुसार वर्गीकरण
८ अनुक्त परिभाषा
९ औषध संग्रहणकाल
१० शारीरिक अवयवानुसार वर्गीकरण
११ वर्णानुक्रमणिका—गुजराती
१२ ,, मराठी
१३ ,, लेटीन
१४ आधार ग्रंथ
१५ सम्मतियां
१६ शुद्धिपत्र

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चित्रों के संकतों का विवरण

मूल—अ

कांड–पत्र–कलिका—इ, उ.

पुष्प—ग

पुष्प मुकुट—क, ख, च, छ.

पुष्प कोष—क, ख, च, छ.

पुंकेशर—क.

स्त्री केशर—क.

पुष्प व्यूह—उ, ए, च, छ.

गर्भाशय—घ, ज, झ, त, थ, घ,

फल—ट, ठ, ड.

बीज—ढ, ण.

★

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

"There is a lesson in each flower:
A story in each stream and bower;
In every herb on which you tread,
Are written words, which rightly read;
Will lead you from earth's fragrant sod.
To hope, to holiness, and God."

— Davis

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अकरकरा

नाम **चित्रसंख्या—१**

(१) संस्कृत–अकल्लकः (२) हिन्दी–अकरकरा
(३) गुजराती–अक्कलकरा (४) मराठी–अक्कलकरो
(५) अंग्रेजी–Pellitory root (६) लेटिन–Anacyclus pyrethrum, D. C.

नैसर्गिक वर्ग--Compositae
प्राप्तिस्थान--भारत, अरब, उत्तरी अफ्रिका और अलजारियामें प्रायः सर्वत्र होती है।

उपयोगी अंग—मूल
रस—कटु **वीर्य**—उष्ण **विपाक**—कटु
गुण-कामोद्दीपक, बल्य, आर्तवजनन **दोषशमन**—वात
श. स. प्रभाव—वात संस्थान

योग—
अकरकरादि बटी, रतिवर्धकलेप, सन्तति निग्रह लेप, टिंचर आँफ पाइरीथ्रम उपदंश-नाशक बटी, अकरकरादि चूर्ण

रोगोपयोग-उदररोग (अतिसार); ज्वर (सन्निपातिक); प्रतिश्याय; कास; दंतरोग; स्नायु सम्बन्धिरोग; वीर्य; **कफवातप्रधान व्याधियां; तुतलाहट**

मात्रा—चूर्ण–दो से छः रति

विशेष-(१) इस वनस्पति का वर्णन चरक, सुश्रुत, वाग्भट आदि प्राचीन प्रमाणिक ग्रंथों में प्राप्त नहीं होता है। भारत में यह वनस्पति यूनानी- चिकित्सों को द्वारा प्रचारित हुई है।

(२) लगभग **सातवर्ष** तक इस वनस्पति का उपयोग किया जा सकता है। इसके पश्चात इसके गुणों में निर्बलता आ जाती है।

(३) **प्रतिनिधि द्रव्य**—
(अ) यकृत्तरोग में अकरकरे के अभाव में पीपल और शहद
(आ) आमाशयी रोगमें ,, ,, ,, रास्ना और अगर

(४) **दर्पनाशक वनस्पति**--मुनक्का और कतीरागोंद इसकी गुण–द्रवित का ह्रास करते है।

(५) अधिक मात्रा में इसका सेवन करने से श्लोष्मावरण में दाह उत्पन्न होता है। आक्षेप, रक्तातिसार आदि उपद्रव होते है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चित्र संख्या. १.

अकरकरा

ANACYCLUS PYRETHRUM, DC.
(Compositae)

वानस्पतिकवर्णन-यह क्षुप जाति की वनस्पति है जो वर्षा की पहली बौछार से ही उत्पन्न होती है।

सूत्र--२ से ४ इंच लम्बी और १/२ से ३/४ इंच चौड़ी **पुष्प**--गुच्छेदार, पीतवर्ण युक्त—

शाखा--रोयेंदार **त्वचा**--मोटी और भुरापन लिये हुए होती है।

पत्र--छोटे, साधारण

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अगस्त

नाम **चित्र संख्या—२**

(१) संस्कृत–अगस्त (२) हिन्दी–अगथियो
(३) गुजराती–अगथियो (४) मराठी–अगस्त
(५) अंग्रेजी–Agati (६) लेटिन–Sesbania grandiflora, Pers Kirt

नैसर्गिक वर्ग—Papilionaceae

वानस्पतिक वर्णन—यह दस से तीस फुट ऊँचा वृक्ष होता है।

मूल—साधारण

तना—स्निग्ध, हल्का भूरा

शाखा—साधारण

पत्र—अण्डाकार, कुछ इमली के पत्रोंसे, किन्तु उनसे बड़े।

पुष्प—तिरछे, रक्त और श्वेत वर्णयुक्त

फल—कोमल

प्राप्तिस्थान—भारत, मलाया से उत्तरी आस्ट्रेलिया तक सर्वत्र पाया जाता है।

उपयोगी अंग—पंचाग

रस—तिक्त **वीर्य**—शीत **विपाक**—कटु

गुण—रुक्ष **दोषशमन**—कफपितहर; वातकर

श. स. प्रभाव—फुफ्फुस **रोगोपयोग**—प्रतिश्याय; अतिसार, वातरक्त **चातुर्थिकज्वर**; **कास**, अर्श.

योग

अगस्त्य हरीतकी अवलेह, (कास)
अगस्त्य अवलेह (राजयक्ष्मा)
अगस्तिमोद (अर्शे)
अगस्तिसूतराजरस (संग्रहणी, अतिसार)

मात्रा—चूर्ण ३ से ६ माशा

वानस्पतिक-विकृतियां—पत्रों की मध्य-नाड़ी (Mid-vein) के समीपवर्ती श्वेतमण्डल प्राप्त होता है। कुछ काल पश्चात् यह मण्डल सूक्ष्म–छिद्रयुक्त जाल बनाता है।

विशेष—पुष्प वर्ण भेद से इसकी-श्वेत और रक्त-दो जातियां होती हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अगस्त

चित्र संख्या. २०

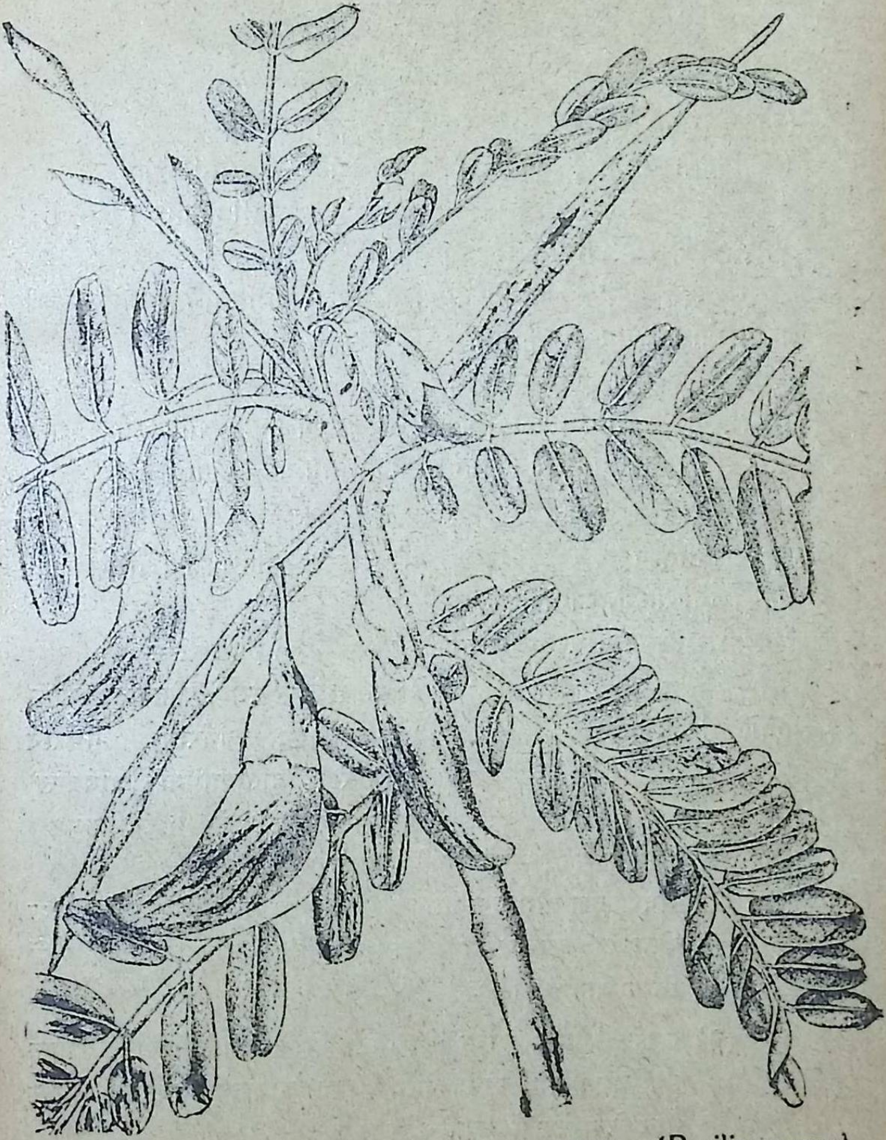

SESBANIA GRANDIFLORA, PERS KIRT. (Papilionnaoeae)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अगर

नाम— **चित्रसंख्या—३**

(१) संस्कृत—अगरु (२) हिन्दी—अगर
(३) गुजराती—अगर (४) मराठी—अगर
(५) अंग्रेजी—Eggle wood (६) लेटिन—Aquilaria agallocha, (Roxb)

नैसर्गिक वर्ग—Thymelaeaceae

वानस्पतिक-वर्णन—यह सर्वदा हरित रहनें वाला विशाल वृक्ष होता है।

तना—पाँच से सात फीट; गोल

शाखा—साधारण

प्राप्तिस्थान—आसामका पहाड़ा प्रदेश, सिलहट, मलावार आदि और प्रशाँत महासागर के टापुओं में प्राय: सर्वत्र प्राप्त होता है।

उपयोगी अंग—काष्ठ **वीर्य**—उष्ण **विपाक**—कटु

रस—कटु तिक्त **दोषशमन**—वातकफहर; पैत्तिक

गुण—लघु, तीक्ष्ण, कामोद्दीपक

श. स. प्रभाव—मस्तिष्क और तापकेन्द्र **रोगोपयोग**—

योग—

अगुर्वादि तैल (ज्वरे)

सन्निपातिक ज्वर, शीतवात, श्वास **कुक्कुरकास**, कर्णरोग, नेंत्ररोग त्वचारोग, वातव्याधियाँ (आमवात्त)

मात्रा—चूर्ण—५ से १५ रति तक

वानस्पतिक-विकृतियाँ—कहीं कहीं पत्रोंपर धब्बे प्राप्त होते है।

विशेष (१) अगर वृक्ष बीस वर्ष में लगभग पूर्ण पक्वावस्था को प्राप्त होता है। पक्वावस्था के पश्चात् ही इसका काष्ठ उपयोग में लिया जाता है।

(२) इसके कोमल काष्ठ के छिद्रों से राल के समान कोमल सुगन्धित पदार्थ प्राप्त होता है जो आजकल अगरबती और शारीरिक लेप में उपयोग किया जाता है।

(३) अगर की कई जातियाँ होती है इनमें कृष्ण अगर श्रेष्ठ है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चित्र संख्या ३

अगर

AQUILARIA AGALLOCHA, (ROXB.)
(Thymelaeaceae)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अंकोल

नाम— **चित्रसंख्या—४**

(१) संस्कृत—अंकोल (२) हिन्दी—अंकोल
(३) गुजराती—अंकोल (४) मराठी—अंकोल
(५) अन्ग्रेजी—Alangy (६) लेटिन—Alangium lamarckii, Thw

नैसर्गिक वर्ग—Alagiaceae

वानस्पतिक वर्णन—यह पचीस से चालीस फीट ऊचाँ काँटेदार वृक्ष होता है।

मूल—साधारण
तना—लगभग ढाई फीट गोल
शाखा—श्वेतवर्ण युक्त गोल
पुष्प—पीताभ श्वेत या रक्ताभ श्वेत
फल—नीले (अपक्व); रक्त (पकते हुए) और जामुन के समान बैंगनी (पूर्ण पक्व)

पत्र—ये तीन से छः इंच लम्बे एक से दा अंगुल चौडे, कनेंर के पत्रों के समान होते है। ये पतझड़ में गिर जाते है और चैत्रवैशाख में नवीन आते है। ये उग्रगन्धयुक्त कटु अम्ल होते है।

प्राप्तिस्थान—भारत, लंका, चीन, मलाया और फिलिपाइन्स में सर्वत्र प्राप्त होते है।

उपयोगी अंग—मूलत्वक, पत्र और बीज

गुण—लघु, तीक्ष्ण; सारक
दोषशमन—वातकफहर,
श.स. प्रभाव—वातसंस्थान,
रोगोपयोग—
वातव्याधि (Rheumatic pain) रक्तदोष, विषदोष, पूयमेह, अतिसार, अर्श, जलोदर
मात्रा—चूर्ण दो से दस ग्रेन

योग—
प्रमेहनाशकचूर्ण (पूयमेह)
अतिसार नाशक बटी (रक्तातिसार)
अंकोल तैल (व्रणरोपण)

विशेष (१) इसका तैल हेमगर्भ के समान क्षणिक चेतनाउत्पादक गुणयुक्त है।
(२) यह पचास ग्रेन की मात्रा में सुरक्षित वामक, छः से दसग्रेन की मात्रामें ज्वरघ्न,और मूत्रवर्धक है। (Dr.Modecno Sheriff)
(३) इसमें Alkaloid की मात्रा विशेष होती है। इसका रस रक्ताभिसरण (Blood Pressure) कम करने में लाभप्रद है।
(४) कहीं कहीं इसका नैसर्गिक वर्ग Cornaceae प्राप्त होता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चित्र संख्या ४

अङ्कोल

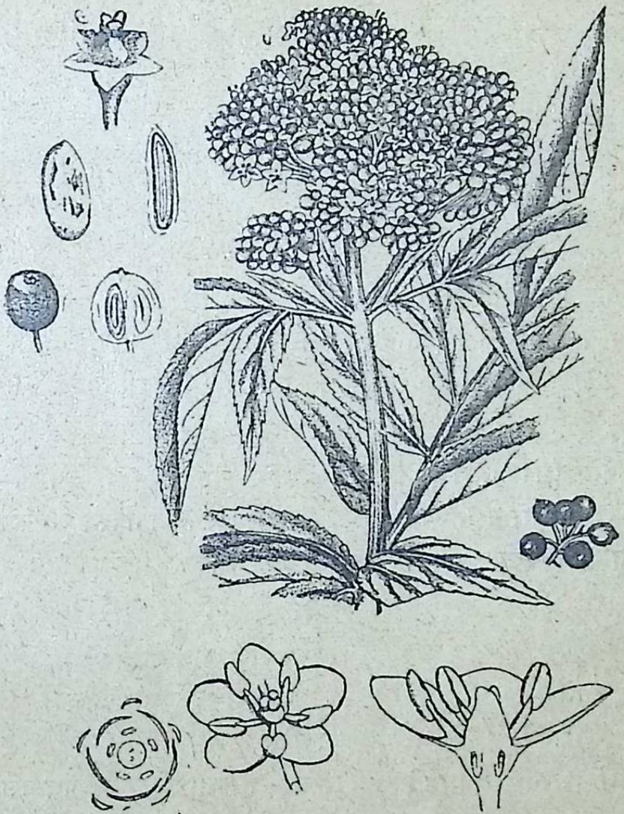

ALANGIUM LAMARKII, THW.

(Alagiaceae)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अंगूर

नाम— चित्रसंख्या——५

(१) संस्कृत—द्राक्षा (२) हिन्दी—अंगूर, दाख

(३) गुजराती—द्राक्ष (४) मराठी—द्राक्ष

(५) अंग्रेजी—Grapes (६) लेटिन—Vitis vinifera, linn.

नैसर्गिक वर्ग—Vitaceae

वानस्पति वर्णन—यह लता जाति की वनस्पति है।

मूल-छोटी

पुष्प-हरित वर्ण युक्त; सुगन्धित, गुच्छदार

तना-गोल-किंचित चतुष्कोणीय

फल—गुच्छदार

शाखा—साधारण

पत्र—गोल, पंचदलीय हस्ताकार

प्राप्तिस्थान—भारत, अफगानिस्तान और फारस में प्रायः सर्वत्र प्राप्त होते हैं। इनमें सीमाप्रान्त के अंगूर उत्तम होते हैं।

उपयोगी अंग—फल

रस—कषाय (पक्व), मधुर **वीर्य**—शीत **विपाक**—मधुर

गुण—सर, शीतल, गुरु, स्वर्य **दोषशमन**—वातपित्तहर, कफकारक

श. स. प्रभाव—सर्वशरीर, विशेषतः यकृत, फुफ्फुस और मूत्राशय

योग	रोगोपयोग
	त्वचा-रोग, मूत्रकृच्छ्र;
द्राक्षासव (कासे)	मूत्रावरोध, क्षय, जीर्णज्वर
द्राक्षारिष्ट—(क्षये)	रक्तपित,
द्राक्षादिचूर्ण (अरूचि अपचन)	**मात्रा**—आसवारिष्ट १से४ पल बलानुसार

विशेष (१) इसकी कई जातियाँ प्राप्त होती है। इनमें केवल दो—कृष्ण और तीन हरित वर्ण की-कुल पाँच बहुत प्रसिद्ध हैं।

(२) इसके अपक्व फलमें Oxalic Acid $(COOH)_2$ पाया जाता है।

(३) यूरोप में नैत्र-पीड़ा में इसका विशेष प्रयोग किया जाता है।

(४) कहीं कहीं इसका नैसर्गिक वर्ग Ampelideae मिलता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अंगूर चित्रसंख्या. ५

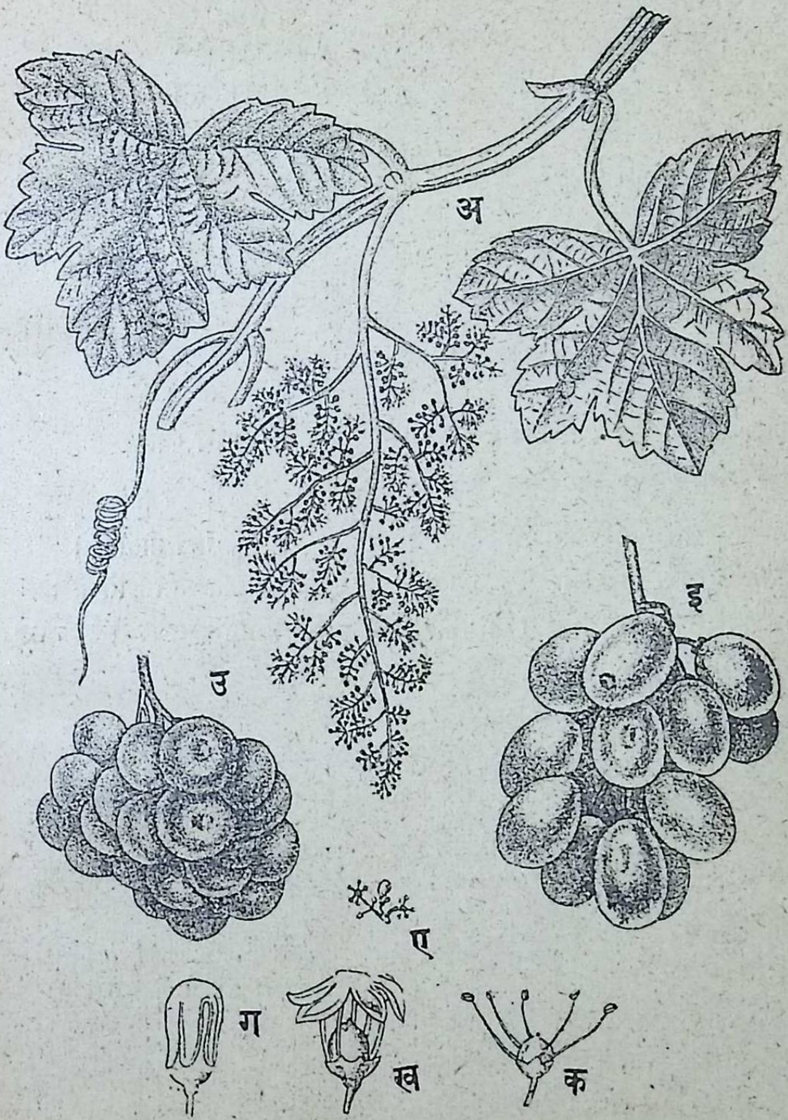

VITIS VINIFERA, LINN.
(Vitaceae)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अगियाघास (रोहिष)

नाम-- **चित्रसंख्या**—६

(१) संस्कृत—रोहिष (२) हिन्दी—अगियाघास, रूसाघास

(३) गुजराती-रोहिष (४) मराठी-रोहिष

(५) अंग्रेजी— Rusa grass (६) लेटिन—Andropogon citratus, D. C.

नैसर्गिक वर्ग—Gramineæ

वानस्पतिक वर्णन—यह एकप्रकार का दो से चार फीट ऊंचा बहुवर्षायु क्षुप (घास) है।

मूल--साधारण, सूक्ष्म रेशेदार **पुष्प**--छोटे निलाभ श्वेत

तना--गोल **फल**--सुक्ष्म

शाखा—अनेंक पत्रयुक्त, पत्र झड़ जाने पर शाखा पत्ररहित होती हैं।

पत्र—खुरदरे, निचे चौड़े क्रमशः पतले होते हुए उपर नुकीले हो जाते हैं।

प्राप्तिस्थान—भारत में सर्वत्र प्राप्त होती है। प्रधानतः राजस्थान और काठियावाड़ में बहुतायत से होती हैं।

उपयोगी अंग—पंचाग

रस—कटु तिक्त **वीर्य**—उष्ण **विपाक**—कटु

गुण—स्वेदजनन, मूत्रजनन, विरेचक **दोषशमन**—कफ

श. स. प्रभाव—आन्त्र

रोगोपयोगः— **मात्रा**—चूर्ण- २ से ४ माशा

कृमि; श्वास;

आन्त्ररोग, कास; हृदरोग

विसूचिका, अजीर्ण, शूल, ज्वर

विशेष-(१) इसके पतों से एक प्रकार का सुगन्धित तैल निकाला जाता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अगियाघास (रोहिष) चित्र संख्या. ६-

ANDROPOGON CITRATUS, DC. (Gramineae)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अजमोद

नाम **चित्रसंख्या—७**

(१) संस्कृत—अजमोदा (२) हिन्दी— अजमोद

(३) गुजराती—बोडी अजमोद (४) मराठी—अजमोदा

(५) अंग्रेजी—Celery (६) लेटिन—Apium graveolens, linn.

नैसर्गिक वर्ग—Umbellifarae

वानस्पतिक-वर्णन—यह एक से तीन फीट ऊंची द्विवार्षिक क्षुप जाति की वनस्पति है।

मूल—सूक्ष्म

तना—गोल

शाखा—साधारण छोटी

पुष्प—श्वेतवर्णयुक्त छोटे

फल—पुष्प खिलने पर दाने के रुप में हाते है जिन्हें 'अजमोद' कहते है।

पत्र—अनेक भागों में विभक्त कंगुरेदार

प्राप्तिस्थान—उत्तर पश्चिमी हिमालय प्रदेश, पंजाब, अफगानिस्तान पश्चिमी एशिया और एबिसिनिया में सर्वत्र प्राप्त होता है।

उपयोगी अंग—बीज

रस—कटु तिक्त

वीर्य—उष्ण

विपाक—कटु

गुण—रुक्ष, रोचक, दीपक

दोषशमन—कफवात

श. स. प्रभाव— गर्भाशय, मूत्राशय, और उदरसंस्थान

योग—

अजमोदादितैल (गण्डमाला)

अतिसारनाशकचूर्ण (प्रवाहिका)

वात्तनाशकचूर्ण (वातरोगे)

अजमोदादिवटी (वातव्याधि)

रोगोपयोग— वमन उदररोग, शुष्ककास, कृमि, वात्तव्यांधि

मात्रा—चूर्ण–३ से ६ माशा

विशेष-(१) इसके तैल और अर्क में Glucocide विशेष मात्रा में प्राप्त होता है।

(२) कुछ ग्रंथों में इसका लेटिन नाम Sesili Indicum मिलता किन्तु यह अशुद्ध है।

(३) इस वनस्पति की शीतकाल के प्रारंभ में खेती होती है।

(४) गर्भवती, और दुग्धापान कराने वाली स्त्रियों को इसका प्रयोग प्रायः हानिकारक होता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अजमोद

चित्र संख्या ७

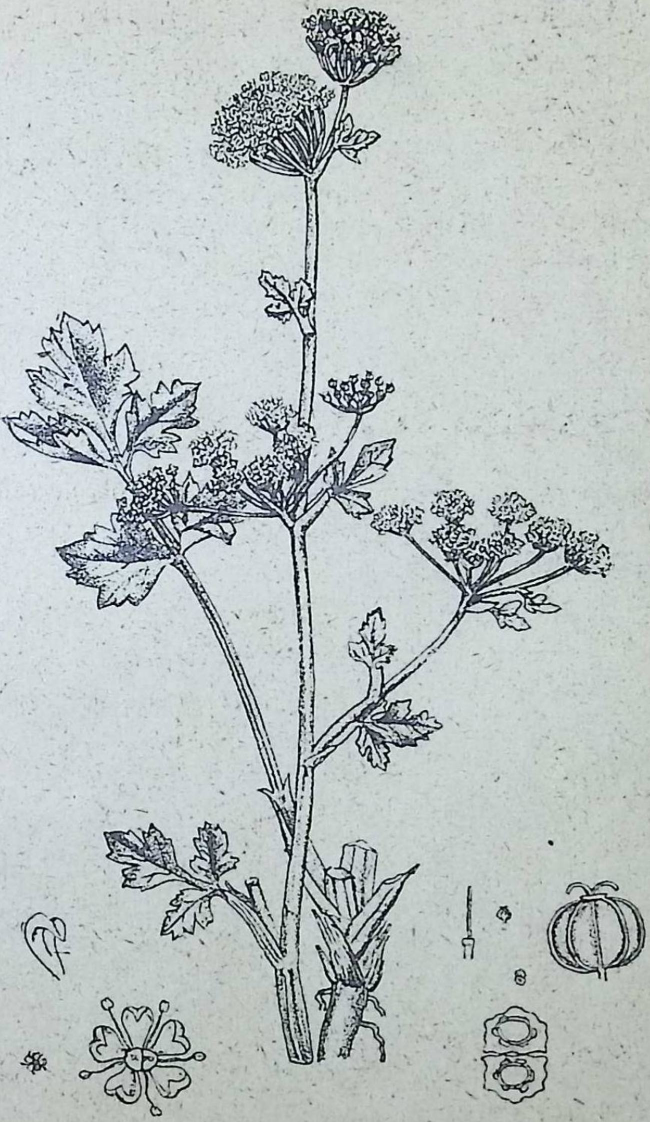

APIUM GRAVEOLENS, LINN (Umbellifarae)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अजवायन खुरासानी

नाम— **चित्रसंख्या—८**

(१) संस्कृत–पारसिकयवानी (२) हिन्दी–अजवायन खुरासानी

(३) गुजराती -खुरासानी अजमो (४) मराठी–खुरासानी ओंवा

(५) अंग्रेजी–Hebane (६) लेटिन–Hyocyamus niger, Linn

नैसर्गिक वर्ग—Solanaceae

वानस्पतिक वर्णन—यह क्षुप जाति की वनस्पति है।

मूल—साधारण **पुष्प**—पीताभ श्वेत, कहीं २ बैंगनी

तना—सीधा; तीव्रगन्धयुक्त **फल**—रेखा युक्त

शाखा—साधारण, छोटे **बीज**—बड़ें, और खाकी वर्ण युक्त

पत्र—विभक्त, कंगुरेदार; वृक्काकार

प्राप्तिस्थान—हिमालय में काश्मीर से गढ़वाल तक सात हजार से ग्यारह हजार फीट की ऊँचाई तक प्राप्त होता है।

उपयोगी अंग--पत्र और बीज,

रस--कटु तिक्त **वीर्य**—उष्ण **विपाक**--कटु

गुण--रुक्ष, ग्राही, गुरु, मादक **दोषशमन**--कफ

श. स. प्रभाव—मस्तिष्क, आन्त्र, और प्रजननसंस्थान।

योग—

टिंक्चर ऑफ हॉयोसाइमस

मात्रा—२ से ५ रति

रोगोपयोग—कुक्कुरकास; वातव्याधि, दन्तपीड़ा, श्वास, उदरवेदना,

विशेष–(१) यह अजवायन वर्ग की वनस्पति नहीं है किन्तु यह इसका व्यवहारिक नाम है। वस्तुत: यह धतूरा वेलाडोना आदि विषैली वनस्पतियों के वर्ग में सम्मिलित है।

(२) इसकी गुणों में Atropine और Belladonna से बहुत समता है।

(३) यह वनस्पति मात्रा प्रमाणानुसार लेना चाहिए अन्यथा हानिकारक है। यह बालकों के लिये उत्तम और वृद्धोंके लिये हानिप्रद है।

(४) कहीं २ यह अफीम के प्रतिनिधि के रुप में काम में ली जाती है विशेषत्त: बालरोगों में उपशामक रुप में काममें लेते हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अजवायन ख़ुरासानी

चित्र संख्या ८

HYOCYAMUS NIGER, LINN. (Solanaceae)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

नाम-- चित्रसंख्या-९

अडूसा।

(१) संस्कृत-वासा। (२) हिन्दी-अडूसा
(३) गुजराती-अरडूसी (४) मराठी-अडुळसा
(५) अंग्रेजी-Malabar Nut (६) लेटिन-Adhatoda vasica, Nees.

नैसर्गिकवर्ग-Acanthaceae

वानस्पतिक वर्णन-यह चार से छः फीट ऊंची वनस्पति है।

मूल-साधारण

पुष्प-श्वेत, फ़ीके जामुनी या भूरें छिटें युक्त

तना- कोमल और हलकेवर्णयुक्त

फल-चार बीजी, पौन इंच लम्बे

शाखा—एक दूसरे के सम्मुख ऊंची चढतीं हुई।

पत्र-लम्बे और अमरूद के पत्तों से मिलते जुलते।

प्राप्तिस्थान-यह भारत मे बहुत प्रसिद्ध है और चार हजार फीटकी ऊंचाई तक सर्वत्र प्राप्त होता है।

उपयोगी अंग-पचांग

रस-तिक्क कषाय

वीर्य-शीत

विपाक-कटु

गुण-कफच्छेदक, स्वर्य, लघु

दोषशमन-कफपितहर और वातल

श. स. प्रभाव-फुफ्फुस

योग—
वासादिघृत (क्षये)
वासावलेह- (कासे)
वासासव-(कासे)
गोदन्तीभस्म (ज़ीर्णकासें)

रोगोपयोग-
कास **Bronchitis**
श्वास, ज्वर; रक्तपित; क्षय
Bright's Disease

मात्रा चूर्ण- ५ से १० रत्ति

अनुपान-शहद, सैधव या पिपलीचूर्ण

विशेष —

(१) यह वनस्पति क्षय के लिये अनुपयोगी है-(कर्नल चोपरा और घोष)

(२) इसमें उपक्षार (Alkaloid), तिक्तक्षरीयतत्व और तैल-ये तीन प्रधान तत्व प्राप्त होतें हैं।

(३) आयुर्वेद, र्वणितद्रिव्य वनस्पतिरूप प्रशंसा-

वासायां विद्यमानाया; माशायां जीवितस्य च।
रक्तपित्ती; क्षयी, कासी किमर्थमवसीदपि॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अडूसा चित्र संख्या. ९.

ADHATODA VASICA, NEES. (Acanthaceae)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अतिबला

नाम **चित्रसंख्या-१०**

(१) संस्कृत--अतिबला (२) हिन्दी--अतिबला, कंघी

(३) गुजराती--कंसकी (४) मराठी—मुद्रा

(५) अंग्रेजी--Indian malow (६) लेटिन-Abutilon indicum, G. Don

नैसर्गिक वर्ग–Malvaceae-

वानस्पति-वर्णन–यह स्निग्ध रूऐंदार चारसे आठ फीट ऊंचा वृक्ष होता है।

मूल–ऊपर से भूरी और भीतर से श्वेत; उग्रगन्धयुक्त

पुष्प–पीतवर्णयुक्त

तना–रक्तता लिये हुए फीका; सूक्ष्म रोयेंदार

फल–कंघी समान समान्तर रेखा युक्त

शाखा–कुल लम्बी जामुनीवर्ण की छायायुक्त

बीज–स्निग्ध; कृष्णाभ भूरेवर्णयुक्त

पत्र–शहतूत पत्रों समान आरेदर, मृदुरोमश

प्राप्तिस्थान–यह उष्णजलवायुवाले प्रदेशों में प्राय; सर्वत्र प्राप्त होती है।

उपयोगी अंग–पचांग

रस–कटुतिक्त **वीर्य**–कटु **विपाक**–कटु

गुण–बल्य; धातुपौष्टिक **दोषशमन**–वात

श. स. प्रभाव–मूत्राशय **रोगोपयोग**–

योग–

माषबलादिक्वाथ (विषमज्वर)

बलातैल (व्रण)

कृमि; दाह; तृष्णा; पूयमेह; मूत्रल कृच्छ्र, रक्तमूत्र सूतिकारोग, विष, विद्रधि व्रण

मात्रा--क्वाथ-४ से ६ तोला

विशेष-(१) अतिबला के बीजों का व्यवहारिक रूपसे बीजबंद कहा जाता है

(२) इसके बीज नपुंसकत्व में लाभकारी है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अतिबला

चित्र संख्या. १०

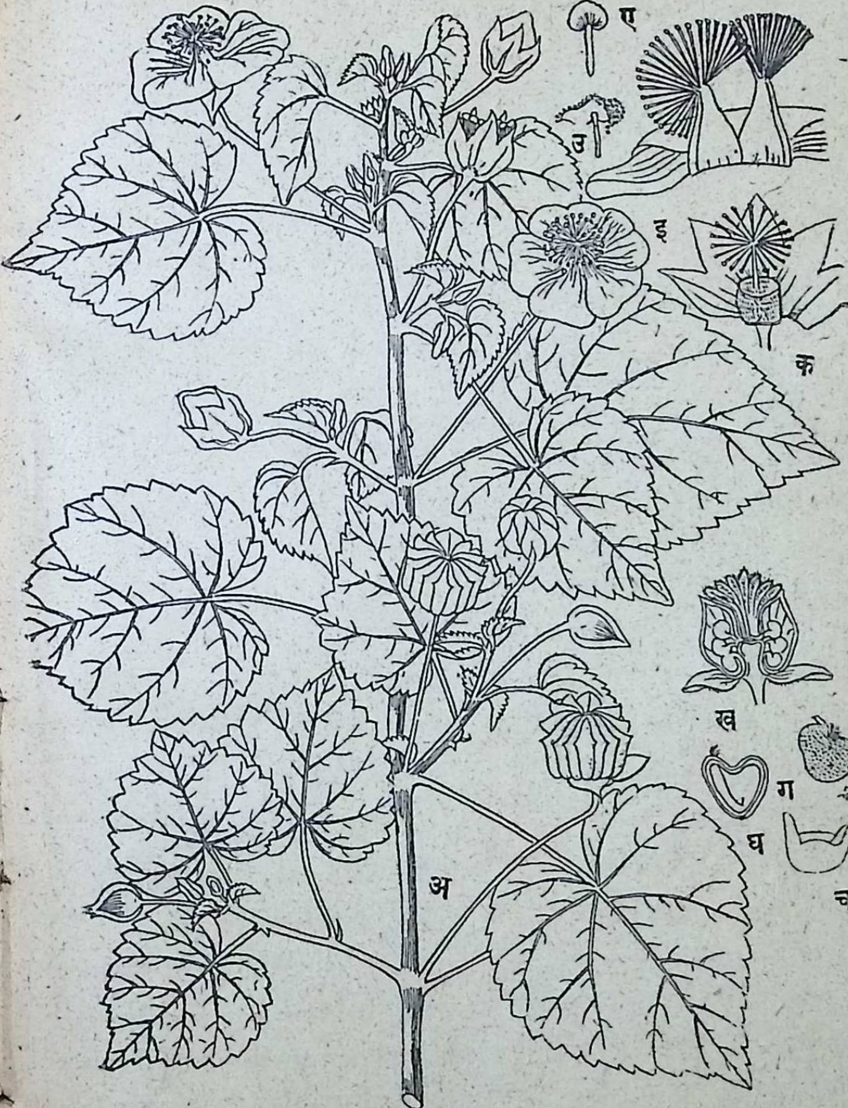

ABUTILON INDICUM, G. DON. (Malvaceae)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अतीस

नाम — **चित्रसंख्या–२१**

(१) संस्कृत–अतिविषा (२) हिन्दी –अतीस

(३) गुजराती–अतिविषनी कली (४) मराठी –अतिविष

(५) अंग्रेजी–Indian Atees (६) लेटिन-Aconitum heterophyllum, Wall.

नैसर्गिक वर्ग— anunculaceae

वानस्पतिक वर्णन–यद एक से तीन फीट ऊंची द्विवषायु क्षुप जातिकी वनस्पति होती है।

मूल–द्विवर्षायु लम्बगोल कन्द

पुष्प–एक इंचसे अधिक लम्बे बैंगनी हरित वर्णयुक्त, और पुष्पशिराओं का वर्ण गहरा बैंगनी होता है।

तना–एक से तीन फीट ऊंचा.

फल–पंचकोषीय

शाखा-साधारण, गोल, मध्यमाकारयुक्त

पत्र–निम्नपत्र गोल या पर्याप्त अण्डाकार, हृदयाकृति, पंचदलीय, तीक्ष्ण दंतयुक्त

प्राप्तिस्थान–यह हिमालय में कुमायूँ से हसौरा तक, शिमला और उसके निंकटवर्त्ती प्रायः सब प्रदेशों में प्राप्त हाता है।

उपयोगी अंग–मूलकन्द

रस–कटुत्तिक्त **वीर्य**–उष्ण **विपाक**—कटु

गुण-लघु, ग्राही, दीपन पाचन, कटुपौष्टिक **दोषशमन**–कफपित

श. स. प्रभाव–पाचन संस्थान

योग–

अतिविषादिचूर्ण (ज्वरे)

अतिविषादि अर्क (बालरोगे)

रोगोपयोग–कास, वमन, अर्श, शूल आमातिसार. कृमि; विषमज्वर, बालरोग

मात्रा–अर्क–१ से १० बूंद चूर्ण ५ से ३० रत्ति तक

अनुपान-जल माँका दुग्ध या शहद

विशेष-(१) इसका ढाईड्रामतककी मात्रा निरापराध होती है–कर्नलचोपरा

(२) यह वर्ण भेद से–श्वेत, कृष्ण और रक्त–तीन प्रकार का होता है।

(३) इसमें Atisine, Aconite Acid और Tannic Acid आदि क्षारीय तत्व होते हैं।–

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अतीस

चित्र संख्या ११

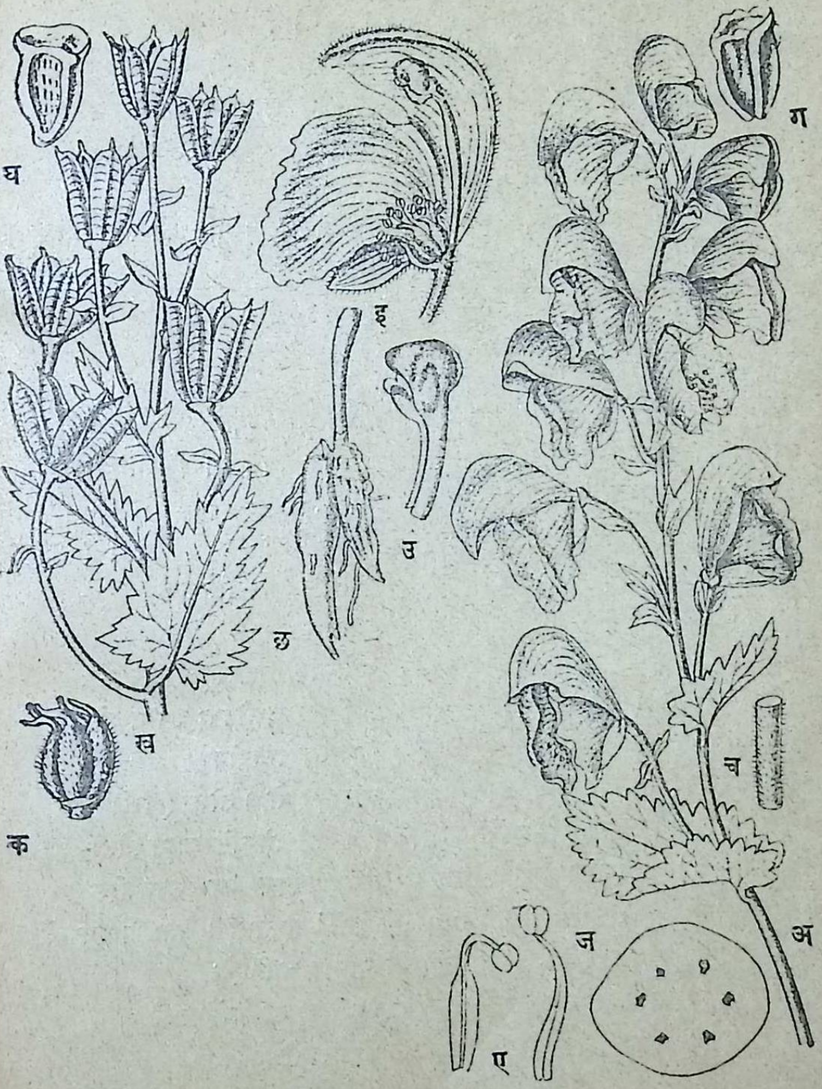

ACONITUM HETEROPHYLLUM, WALL,
(Ranunculaceae)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अदरक

नाम **चित्रसंख्या–१२**

(१) संस्कृत—आर्द्रिका, शुण्ठी. (२) हिन्दी—अदरक
(३) गुजराती—आदु; शूण्ठ (४) मराठी—आलें, सूंठ
(५) अंग्रेजी—Ginger (६) लेटिन—Zingeber officinale, Rosc.

नैसर्गिक वर्ग–Scitaminaceae

वानस्पतिक वर्णन–यह लगभग एक हाथ ऊंची क्षुपजाति की वनस्पति है।
मूल–बहत् कन्द युक्त
तना—पत्रावृत, साधारण
पत्र—संकीर्ण, स्निग्ध १–२ सें० भी चौड़े
शाखा—साधारण गौल
पत्र—स्निग्ध नीले, बैंगनी या कृष्णाभ-बैंगनी औष्ठयुक्त
प्राप्तिस्थान–यह भारत में बहुत प्रसिद्ध है और सवत्र प्राप्त होती है।
उपयोगी अंग–कंद
रस–कटु **वीर्य**–उष्ण **विपाक**–मधुर
गुण–लघु, दीपन, स्निग्ध, स्वर्य **दोषशमन**–वातकफ
श. स. प्रभाव–महास्रोत्तस् **रोगोपयोग**–
योग— अतिसार, उदरशूल, विबन्ध,
सौभाग्यशुण्ठी (सूतिकारोग) आनाह, जलोदर; वमन, शोथ
आद्रिकावलेह (श्वास कास) कामला, दन्तरोग
शुठीपुटपाक (आमदोष) **मात्रा**–३ से १ तोला (अर्क)

वानस्पतिक विकृतियां–इसकें कन्द में (Rot) विकृति प्राप्त होती है।

विशेष–(३) इसकी मूलकन्दत्वचा में एक प्रकार का उडनशील (Aromatic Volatile oil) हाता है। अतः प्रयाग कें समय इसकी त्वचा नही निकालना चाहिए।

(२) औषधोपयोग के लिये कोचीन की शुण्ठी सर्वोतम है।

(१) इसकी चैत्र बैसाख में खेती की जाती हैं।

"वात पित कफभानां, शरीरवनचारिणां
एक एव निहंत्यत्रं, लवणार्द्रक केंसरी"

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चित्र संख्या १२

अदरक (शुण्ठी)

ZIGEBER OFFICINALE, ROSC.

(Scitaminaceae linn)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अनार

नाम— **चित्रसंख्या—१३**

(१) संस्कृत—दाडिम (२) हिन्दी—अनार

(३) गुजराती—दाड़म (४) मराठी—डाळिंब

(५) अंग्रेजी—pomegranate (६) लेटिन—Punica granatum, Linn.

नैसर्गिक वर्ग—Punicaceae.

वानस्पतिक वर्णन-यह वृक्ष जातिकी वनस्पति है जो उद्यानों में प्रायः सर्वत्र मिलती है।

मूल—साधारण

पुष्प— ३.८ से ५.१ सें. मीं. लम्बे रक्त वर्णयुक्त

तनेकी त्वचा—स्निग्ध, भूरीपतली, कहीं २ कंटकयुक्त।

फल- कठोर, रक्तवर्णयुक्त (scarlet) इनका ३.८ से ७.५ सें. मीं. व्यास होता है।

शाखा—साधारण गोल, स्निग्ध

पत्र—२.५ से ६.३ से भी लम्बें, ऊपरी भाग चमकीला और निचला भाग गहरा हरा होता है।

प्राप्तिस्थान—यह भारत में प्रसिद्ध है और सर्वत्र प्राप्त होती है।

उपयोगी अंग—फल, और फलत्त्वक्

रस—अम्ल; मधुर **वीर्य**—उष्ण, शीत (मधुर) **विपाक**—मधुर

गुण—पाचक, संग्राही **दोषशमन**—त्रिदोष (मधुर) कफ (अम्ल)

श.स. प्रभाव—पाचनसंस्थान **रोगोपयोग**—ज्वर, तृष्णा, दाह बालातिसार; उदर; कृमिघ्न; कामला, रक्तातिसार, प्रदर; आमातिसार *Tape Worm* नासारक्त स्राव

योग—

दाडिमाष्टक चूर्ण—(अतिसार)

दाडिमाद्यघृत (अतिसार, गलरोग)

दाडिमपुटपाक (आमातिसार)

मात्रा—चूर्ण–२ से ४ माशा

विशेष--

(१) रस भेद से यह—मधुर, मधुराम्ल और अम्ल—तीन प्रकार का होता है। सबमें **'बेदाना'** श्रेष्ठ होता है।

(२) इसके सुखाये हुए बीजों को अनारदाना कहते हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चित्र संख्या १३

अनार

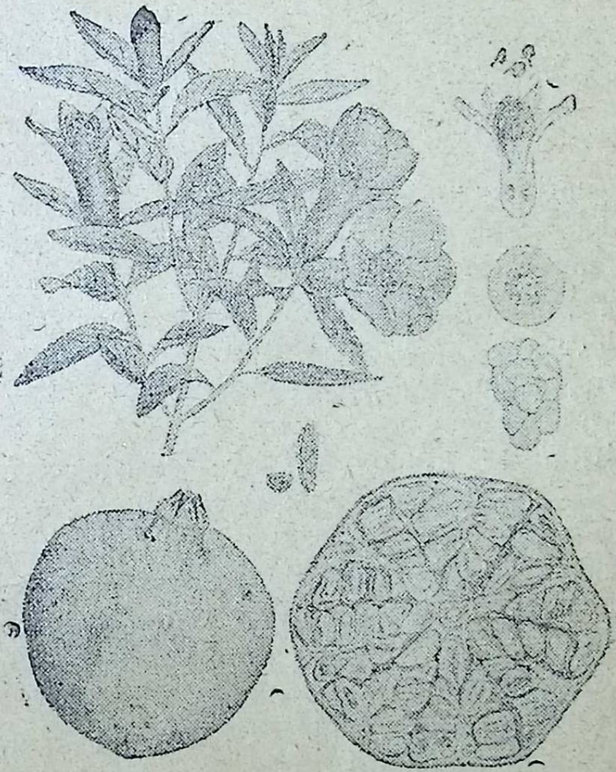

PUNICA GRANATUM, LINN.
(Punicaceae)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अनन्तमूल

नाम— **चित्रसंख्या—१४**

(१) संस्कृत—सारिवा (२) हिन्दी—अनन्तमूल
(३) गुजराती—उपलसरी (४) मराठी—ऊपरसाल
(५) अंग्रेजी-Indian Sarsaparilla (६) लेटिन—Hemidesmus indicus, R. Br.

नैसर्गिक वर्ग—Asclepidaceae

वानस्पतिक वर्णन—यह ५ से १५ फीट लम्बी गहरे रक्तवर्ण की लता जाति की है।

मूल—लम्बगोल, टेढीमेढी
मूलत्वक्—रक्तवर्ण सुगन्धयुक्त

पुष्प—श्वेत वर्णयुक्त छोटे, पत्रकाणोद्भूत

तना—साधारण, कृष्णाभरक्त

फल—युग्मशीम्बी, फटनेपर रूई निकलती है।

शाखा—बारीक कृष्णाभरक्त

निर्यास—पत्तोंको तोडनेसे प्राप्त होता है।

पत्र—३ से ४ अंगुल लम्बे जामुन जैसे; मध्य में श्वेत रेखायुक्त

प्राप्तिस्थान—दक्षिण भारत, मध्य भारत, बंगाल और लंका में प्रायः सर्वत्र प्राप्त होती है।

उपयोगी अंग—मूल

रस—मधुरतिक्त **वीर्य**—शीत **विपाक**—मधुर

गुण—मूत्राल, रक्तशोधक, संग्राही, स्वेदल।

दोषशमन—त्रिदोष

श. स. प्रभाव—रक्त संस्थान

रोगोपयोग—त्वचारोग **रक्तरोग** आमवत; ज्वर, अतिसार, मूत्रावरोध दन्तरोग Rickets

योग
सारिवादिवटी (कर्णरोगे)
सारिवाद्यारिष्ट (रक्तरोगे)
सारिवाद्यासव (रक्तरोगे, वातरक्ते)
अनन्तमूलादी चूर्ण (प्रमेहे; जीर्णज्वरे)
सार्सापरिला (रक्तरोगे)

मात्रा—४ से ६ माशा (चूर्ण)
१ से २॥ तोला (आसवारिष्ट)

अनुपान—दुग्ध

विशेष-(१) यह वर्ण भेदसे-श्वेत (गोरासर) और कृष्ण (कालीसर)=दो प्रकार की होती है।

(२) जिन रोगों में केवल सारिवा का उल्लेख हो वहां अनन्तमूल, और जिनमें 'सारिवाद्वय' हो-वहां कृष्ण सारिवा और अनन्त मूल दोनो समझना चाहिए

(३) **प्रतिनिधि वनस्पति**—उशबा

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अनन्तमूल (सारिवा) चित्र संख्या. १४.

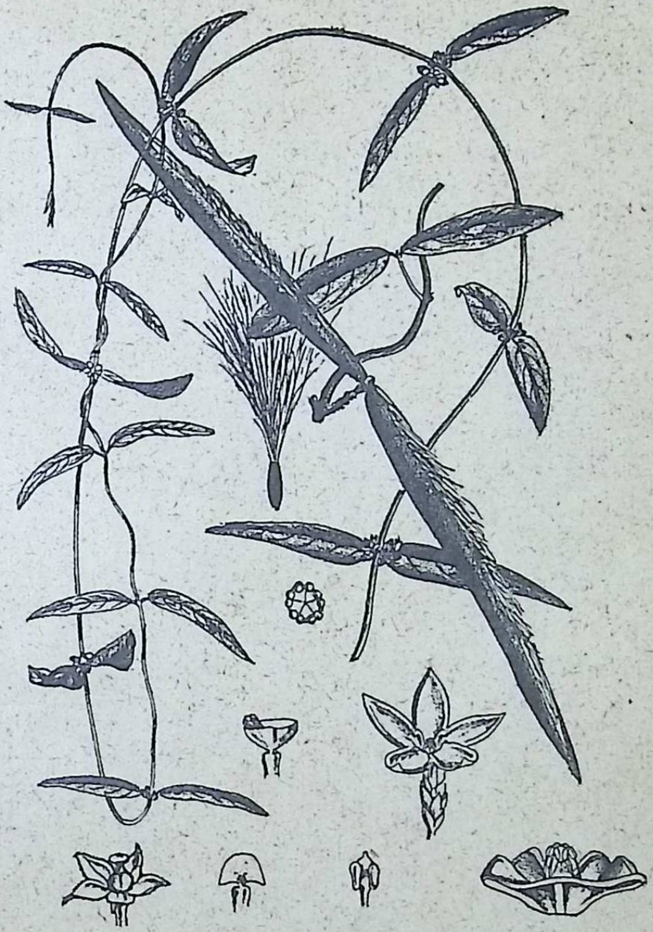

HEMIDESMUS INDICUS, R. BR.
(Asclepiadaceae)

" Indian Sarsaparilla is said to be more useful than the American sarsa root as an alterative tonic"
–Indian Maetria Medica by Nadkarni.

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अपराजिता

नाम **चित्रसंख्या-१५**

(१) संस्कृत—अपराजिता (२) हिन्दी—अपराजिता
(३) गुजराती—गरणी (३) मराठी—गोकर्णी
५) अंग्रेजी—Megorian (६) लेटिन—Clitoria ternatea, Linn.
नैसर्गिक वर्ग—Papilionaceae

वानस्पतिक वर्णन—यह बहुवार्षियु आरोहिणी लता जाति की वनस्पति है।

मूल—साधारण
पुष्प—गाय के कर्ण समान आकारवाले नीले वर्णयुक्त, दो इंच लम्बे और डेढ इंच चौड़े सुन्दर
तना—साधारण गोल
फल—चपटा; उड़दके समान काले बीजयुक्त
शाखा—मध्यमाकारयुक्त साधारण
पत्र—संयुक्त; विषमभग्न; एक ओर सात, वनमूंग के पत्तों के समान किन्तु कुछ बड़े होते हैं।
प्राप्तिस्थान—यह भारत. में प्रायः सर्वत्र प्राप्त होता है।
उपयोगी अंग—मूल और बीज
रस—कषाय तिक्त
वीर्य—शीत **विपाक**—कटु
गुण—विषघ्न, कण्ठ्य, चक्षुष्य
दोषशमन—त्रिदोष
श. स्र. प्रभाव—सर्वशरीर, प्रधानतः प्लीहा, यकृत और मस्तिष्क
योग—
सिन्धुवारादि मे इसका प्रयाग किया जाता है।
रोगोंपयोग—कुष्ठ, मूत्ररोग; कर्ण. नेत्ररोग अर्बुद, शोथ जलोदर, परिणामशूल, गर्भपात जीर्णकास, यकृतप्लीहावृध्दि
मात्रा १०से २० रत्ति(बीज चूर्ण)

विशेष
(१) इसकी वर्णभेद से—श्वेतपुष्पा और नीलपुष्पा–दोजातियाँ होती हैं
(२) आजकल कालादाना और अपराजिता कें बीज को एक ही द्रव्य मानते है किन्तु यह भ्रमात्मक है। इनके निम्नप्रकार से विभेदक लक्षण प्राप्त होते हैं।
(अ) कालादाना—गात्र और वर्ण रूक्ष कृष्ण
(आ) अपराजिता—गात्र और वर्ण स्निग्ध कृष्ण

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अपराजिता

चित्र संख्या. १५.

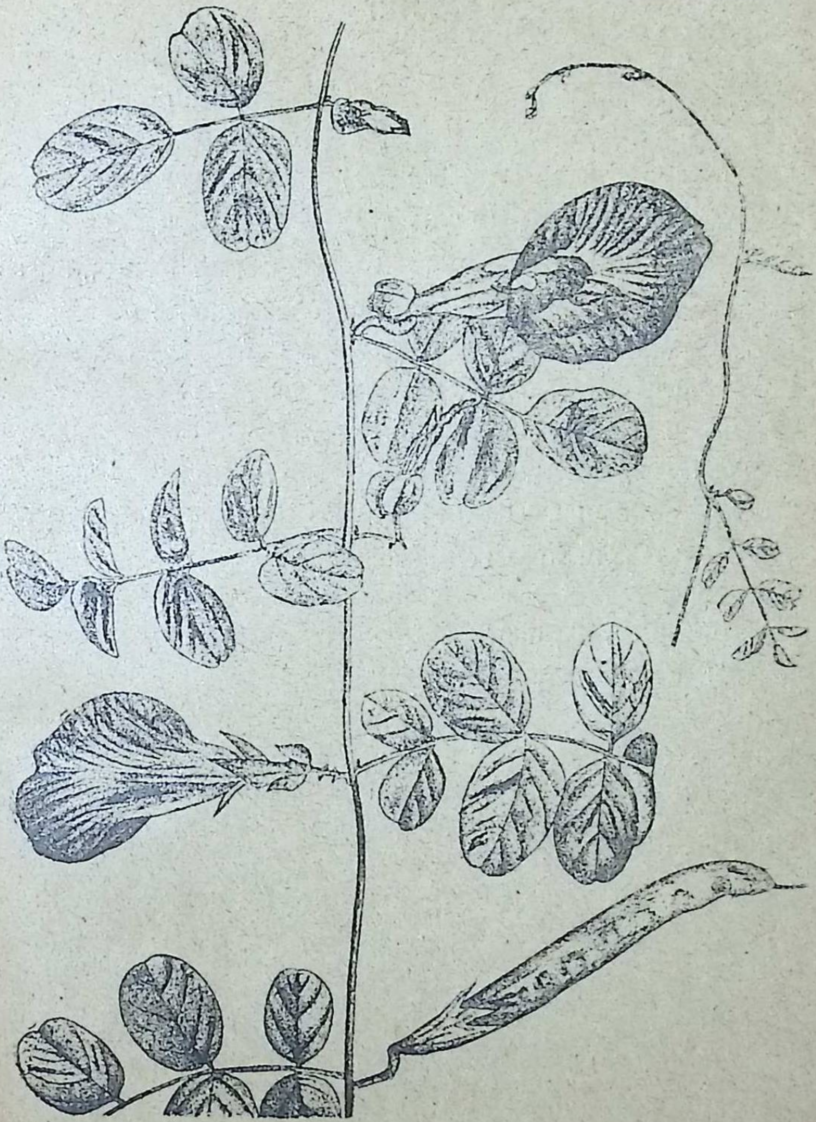

CLITORIA TERNATEA, LINN. (Papilionaceae)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अपामार्ग

नाम **चित्रसंख्या-१६**

(१) संस्कृत–अपामार्ग (२) हिन्दी–अपामार्ग, चिरचिरा

(३) गुजराती–अघेडी (४) मराठी–आघाड़ा

(५) अंग्रेजी-Rough Calf ftree (६) लेटिन–Achyrathes aspera,

नैसर्गिक वर्ग–Amaranthace

वानस्पतिक वर्णन–यह क्षुप जाति की एकसे तीन हाथ ऊंची वनस्पति है। जो विशेषत: वर्षा ऋतु में उत्पन्न हाती है।

मूल–साधारण **पुष्प**—श्वेत छोटे

तना–रक्ताभ (रक्त) श्वेत (श्वेत) **फल**–बीज सूक्ष्म

शाखा-रक्त; श्वेत (क्रमश: दोनों जातियों का वर्ण)

पत्र-गोलाकार नुकीले, मध्यमंजरी हरिताभ श्वेतवर्णयुक्त

प्राप्तिस्थान–यह भारत में बहुत प्रसिद्ध है और प्राय: सर्वत्र प्राप्त होती है।

उपयोगी अंग–पंचांग और क्षार

रस–कटुतिक्त **वीर्य**-उष्ण **विपाक**–कटु

गुण–मूत्रल, वामक, सर, तीक्ष्ण **दोषशमन**–कफवातहर, पितवर्धक

श. स. प्रभाव–श्वांसोच्छावास और मूत्राशयसंस्थान

योग—	**रोगोपयोग**—
अपमार्गक्षार (जलोदर)	रक्तातिसार, अर्श, शिरौरुजा,
अपामार्ग अवलेह (उदरशोथ)	जलोदर वृकशोथ,
अपामार्गासव (श्वास)	यकृतवृद्धि, श्वास

मात्रा–मूल और बीज चूर्ण-६ माशा से १ तोला, क्षार २ से ४ रति

विशेष

(१) इसकी वर्णभेद से-श्वेताभ और रक्ताभ–दो जातियां होती है।

(२) इसमें चूना १३%,लोह ४ %; क्षार ३० % , सोराक्षार ७%; नमक २० % ; गॅन्धक २ % ; मज्जाततु; उपयोगीक्षार ३ % प्राप्त होता है। ये तत्व इसकी पत्र की अपेक्षा मूल भस्म से विशेष मात्रा में प्राप्त होतें हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अपामार्ग

चित्र संख्या १६

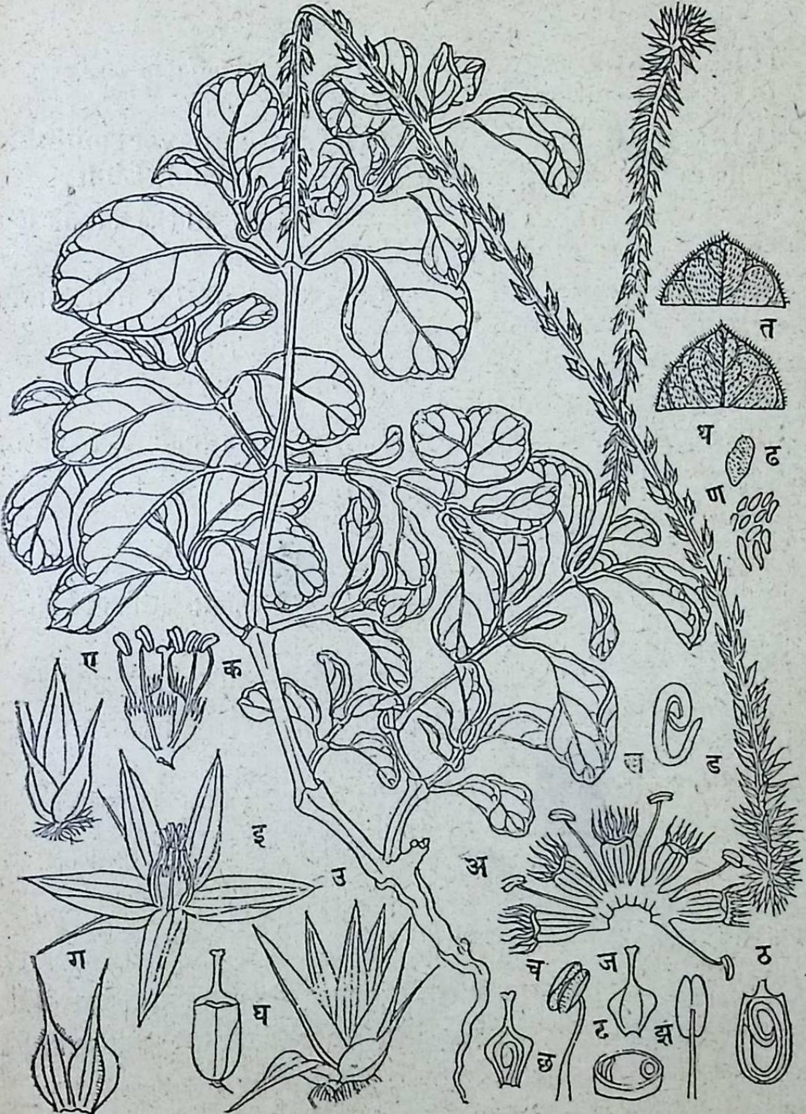

ACHYRANTHES ASPERA, LINN. (Amaranthace)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अफीम

नाम **चित्रसंख्या–१७**

(१) संस्कृत—अहिफेन (२) हिन्दी—अफीम
(३) गुजराती—अफीण (४) मराठी—अफु
(५) अंग्रेजी–Opium. (६) लेटिन–Papaver sominiferum, Linn.

नैसर्गिक वर्ग–Papaveraceae

वानस्पतिक वर्णन–यह तीन से चार फीट ऊंची क्षुप जाति की वनस्पति है। पौष या माघ में इसके पुष्प आते हैं।

मूल—सूक्ष्म साधारण **पुष्प**-श्वेतरक्त और कृष्ण या नीलाभश्वेत
तना—कोमल हरित, रोमश, स्निग्ध **फल**–बड़े, विषमकोषीय
शाखा—एकाकी
पत्र—काण्डलग्न, विषम दन्ताकार
प्राप्तिस्थान-पूर्व और दक्षिण भारत, रूहेंलखण्ड और प्रधानतः उष्ण प्रदेशों में प्रायः सर्वत्र प्राप्त होती हैं।

उपयोगी अंग–बीज, त्वक्, फल और निर्यास
रस–तिक्त कषाय **वीर्य**–उष्ण **विपाक**–कटु
गुण–सूक्ष्म, स्तंभक, वेदनास्थापक **दोषशमन**–कफघ्न; कफपित्तवर्धक।
श. स. प्रभाव–आन्त्र और वातसंस्थान

योग—
अहिफेनासव (विसूचिका)
निद्रोदयबटी (सर्ववेदना)
कर्पूररस (विसूचिका)
महावात्त राजरस (वातरोग)
दुग्धवटी (गर्भरोग)

रोगोपयोग—शोक, विषमज्वर अतिसार; **विसूचिका**; सर्ववेदना, गर्भस्राव

मात्रा–५ से १५ बिन्दु (आसव)
१ से २ रति (वटी)
१ से २ रति (रस)

विशेष—
(१) यह पोस्तदाना का निर्यास है।
(२) अफीम की न्यूनतम मात्रा पाव रति से आधा रति, मध्यम मात्रा आधा रति से डेढ़ रति और उत्तम (बड़ी) मात्रा डेढ़ से दो रति तक मानी जाती है। इसको बलाबल और वय के अनुसार देना चाहिए।
(३) इसमें Morphine और Narcotine ये दो प्रधान तत्व हैं।
(४) **दर्पघ्न**–अरीठा, नीमका क्वाथ और तम्बाकू

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अफीम

चित्र संख्या १७

PAPAVER SOMINIFERUM, LINN. (Papaveraceae)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अमलतास

चित्रसंख्या–१८

नाम

(१) संस्कृत–आरग्वध (२) हिन्दी–अमलतास

(३) गुजराती–गरमालो (४) मराठा–बाहवा

(५) अंग्रेजी–Purging Cassia (६) लेटिन–Cassia fistula, linn.

नैसर्गिक वर्ग–Caesalpiniaceae

वानस्पतिक वर्णन–यह छोटी जाति का वृक्ष है। विशेष ऊंचा नहीं होता है।

मूल–साधारण

पुष्प–पीतवर्ण युक्त

तना–तीनसे चार फीट गोल

फल–गोल, डेढसे दो फीट लम्बे कृष्ण वर्णयुक्त होते हैं। यें शीतकाल में पकते है। इसमें छोटे-छोटे खण्ड बने होते है जिनमें कृष्णाभ वर्णका आर्द्रता लिये हुए गुदा निकलता है।

शाखा–साधारण गोल, इसमेंसे एक प्रकार का रस निकलता है जो जमने के पश्चात गोद से मिलता है।

पत्र–संयुक्त

प्राप्तिस्थान–यह भारत में वहुत प्रसिद्ध है और प्रायः सर्वत्र प्राप्त होता है।

उपयोगी अँग मूल; पत्र और फलमज्जा

रस–मधुरतिक्त

वीर्य–शीत **विपाक**–कटु

गुण–गुरु, मृदुरेचक

दोषशमन–त्रिदोष; प्रधानतः कफपित

श स. प्रभाव–आन्त्र

रोगोपयोग—

कुष्ठ, कण्डु; ज्वर, **त्वचारोग** हृद्राग, कर्णरोग; **सुखप्रसव**

योग—

आरग्वधादि तैल (शोथ)

अमलतासादि अवलेह (मंदाग्नि)

अमलतासारिष्ट (उदररोग)

मात्रा–३ से ८ माशा तक

विशेष– (१) यह निर्बलरोगी और गर्भवतीस्त्री को मृदुविरेचन्न की दृष्टि से उपयोगी है।

(२) इसमे मधुरगन्धयुक्त श्याम और पीतवर्ण का उडनशील तैल पाया जाता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अमलतास

चित्रसंख्या १८

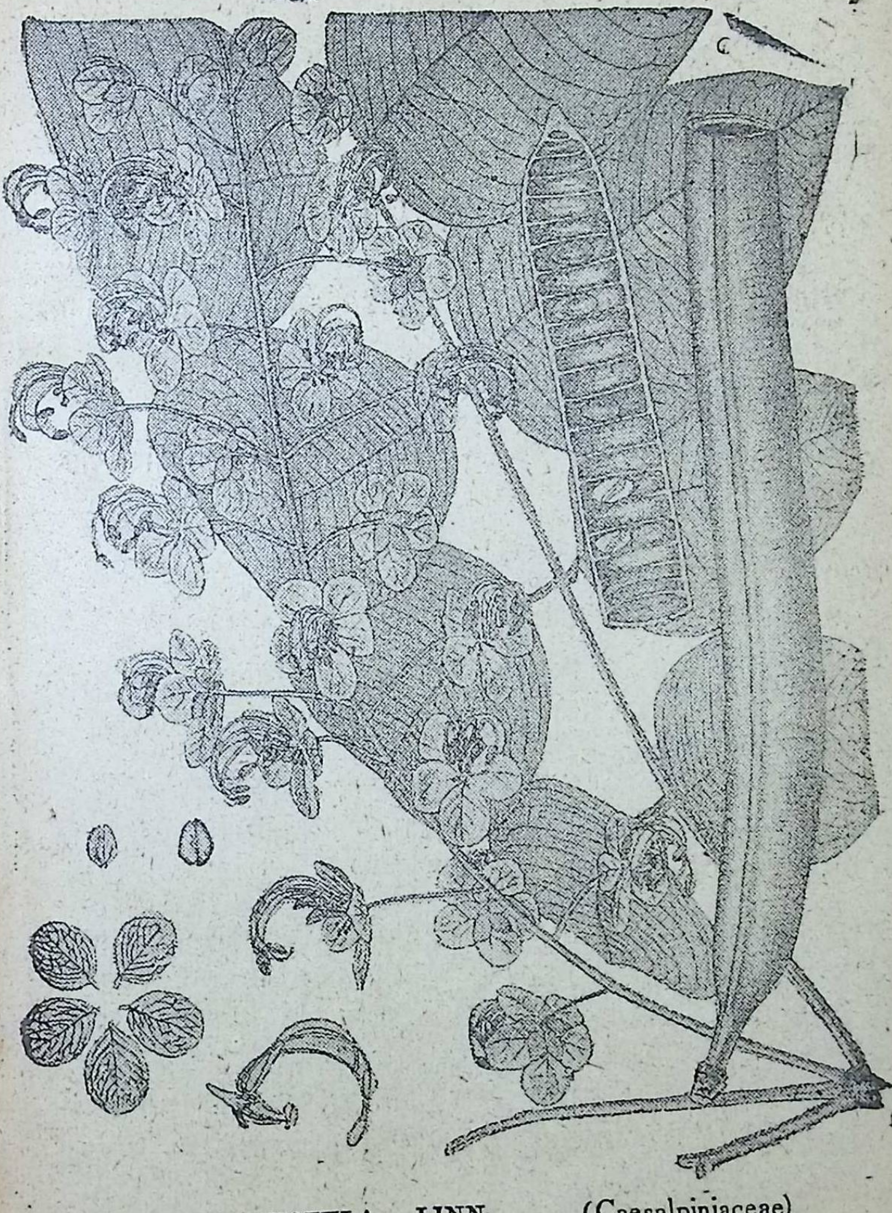

CASSIA FISTULA, LINN. (Caesalpiniaceae)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अमलवेंत

नाम **चित्र संख्या—१९**

(१) संस्कृत—अम्लवेंतस् (२) हिन्दी—अमलवेंत

(३) गुजराती—अमलवेंत (४) मराठी—चुका

(५) अंग्रेजी--Common Sorrel (६) लेटिन–Rumex vesicarius, Linn.

नैसर्गिक वर्ग—Polygonaceae

वानस्पतिक वर्णन—यह हलके हरीत वर्णकी मध्यमा मकार एक वर्षजीवी वनस्पति है।

मूल—साधारण **पुष्प**--श्वेत

तना—किंचित् स्निग्ध **फल**–हरीतवर्ण (अपक्व) और पीत (पक्व) वर्णयुक्त गोल

शाखा— गोल, कहीं कहीं चतुष्कोणीय

पत्र—तीक्ष्ण नुकीले

प्राप्तिस्थान—यह भारत में प्रायः सर्वत्र प्राप्त होता है।

उपयोगी अंग—पत्र

रस–अत्यम्ल कषाय **वीर्य**–उष्ण **विपाक**—अम्ल

गुण–लघु, रुक्ष, दीपन, संकोचक **दोषशमन**–कफवातहर; पित्तवर्धक

श. स्र. प्रभाव—पचन संस्थान

रोगोपयोग—

प्लीहारोग, उदावर्त; हिचकी; **आनाह;**

कास, **आमातिसार**, अजीर्ण, गुल्म

विशेष--(१) चरक मतानुसार यह सर्प दंश और बिच्छू के विषनाश करने केलिये उपयोगी है। परन्तु केस और मस्कर की खोज के अनुसार यह चिकित्सा लाक्षणिक और विषनाश दोनों उपचारोंमें निरुपयोगी है।

(२) इसकी ' अमलवेंत ' और ' वेंती ' नामसे दो जातियां होतीहै।

(३) इसके बीज पंसारियोंके यहां " तुख्म हमाज " के नामसे मिलते है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चित्रसंख्या १९

अमलवेंत

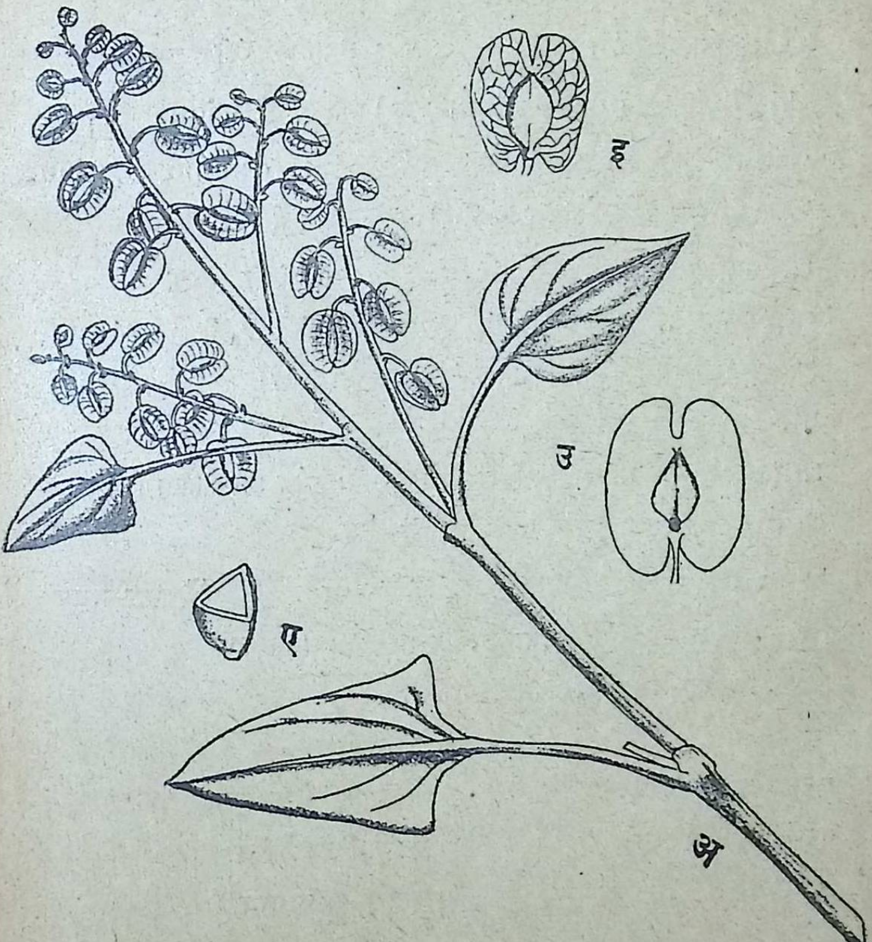

RUMEX VESICARIUS, LINN.
(Polygonaceae)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अरण्ड

नाम— **चित्रसँख्या–२०**

(१) संस्कृत–एरण्ड (२) हिन्दी–अरण्ड

(३) गुजराती–एरंडो (४) मराठी–एरंडी

(५) अंग्रेजी–Castor oil Plant (६) लेटिन—Ricinus communis, Linn.

नसर्गिक वर्ग–Euphorbiaceae

वानस्पतिक वर्णन–यह गुल्म जातिकी वनस्पति है।

मूल—सूक्ष्म | **पुष्प**—एकलिंगी
तना—स्निग्ध, हरित | **फल**—कटंकयुक्त, द्विकोषीय
शाखा—हरिताभ श्वेत, मध्यमाकारी | **बीज**—मांसल
पत्र—चौडे, विषमभग्न | **निर्यास**—तैल

प्राप्तिस्थान–यह भारत में प्रसिद्ध है और प्रायः सर्वत्र प्राप्त होता है।

उपयोगी अंग–मूल, त्वक्, पत्र और तैल

रस–मधुरतिक्त **वीर्य**–उष्ण **विपाक**–मधुर

गुण–गुरु विरेचक, संततिनिग्राहक, **दोषशमन**–वात कफ

श. स. प्रभाव–आन्त्र और वातसंस्थान

योग—

एरण्डपाक (प्लीहोदर)

एरण्डतैल (विरेचन)

रोगोपयोग—

आमवात, **शोथ**, गुल्म

वातव्याधि **चर्मरोग**

प्लीहोदर, कामला

मात्रा–२ से ४ माशा (चूर्ण) १से२ एक तला (तैल)

विशेष— (१) इसकी–रक्त और श्वेत– दो जातियां होती हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अरण्ड

चित्र संख्या २०

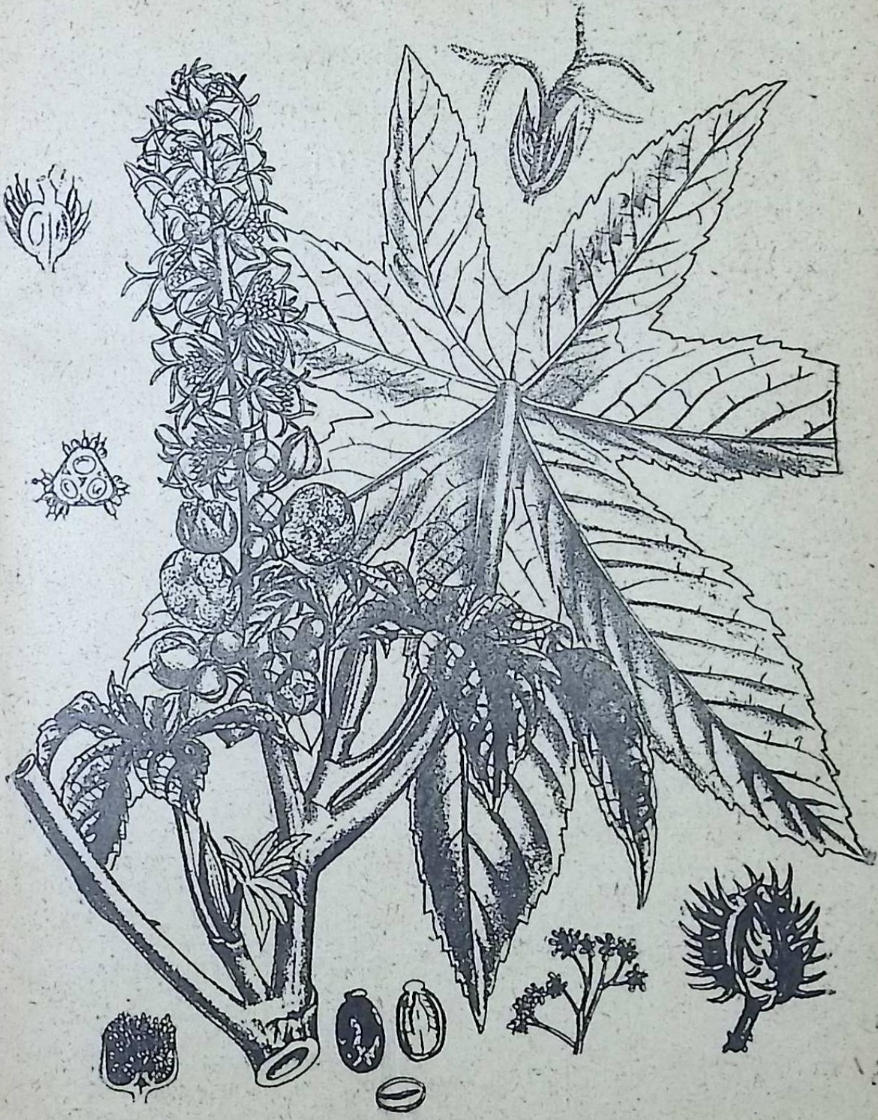

RICINUS COMMUNIS, LINN.
(Euphorbiaceae)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अरणी

नाम **चित्रसंख्या—२१**

(१) संस्कृत-अग्निमन्थ (२) हिन्दी-अरणा

(३) गुजराती-अरणी (४) मराठी-एरण

(५) अंग्रेजी—Wind killer (६) लेटिन-Clerodendron phlomoides, linn.

नैसर्गिक वर्ग-Verbenaceae

वानस्पतिक वर्णन-यह दो से तीन गज ऊँची गुल्म जाति की वनस्पति है

मूल-मोटी भुरेवर्णयुक्त सुगन्धित **पुष्प**-सुगन्धित, श्वेतवर्णयुक्त गच्छेदार

तना-श्वेताभ हरित **फल**-कृष्णवर्ण, चार बीजयुक्त

शाखा-कहीं कहीं कन्टकयुक्त साधारण गोल

पत्र-गोल, सूक्ष्म, १ से २ इंच लम्बे

प्राप्तिस्थान-भारत के शुष्क प्रान्तोंमें, लंका और बिलोचिस्तानमें प्राय: सर्वत्र प्राप्त होती है।

उपयोगी अंग-पंचाग, प्रधानत: मूल त्वक्

रस-मधुर कटुतिक्त कषाय **वीर्य**-उष्ण **विपाक**—मधुर

गुण-अग्निदीपक, सारक, पौष्टिक **दोषशमन**-वातकफहर

श. स. प्रभाव-समस्त शरीर-प्रधानत: त्वचा, और गर्भाशय

योग—

दशमूलादिक्वाथ-(सूतिकारोग)

रोगोपयोग—

पाण्डु; शोथ; अग्निमांद्य, विबन्ध, ज्वर; रक्तविकार; हृद्‌दौर्बल्य **सूतिकारोग**; अत्यार्तव **मक्कलशूल**

विशेष (१) इसकी वर्णभेद से श्वेत और कृष्ण-छोटी और बड़ी—दो जातियाँ होती हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चित्र संख्या २१

अरणी

CLERODENDRON PHLOMOIDES, LINN.

(Verbenaceae)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अरलू

नाम **चित्रसंख्या--२२**

(१) संस्कृत–श्योनाक (२) हिन्दी–अरलू सोनापाठा

(३) गुजराती–टटू (४) मराठी–टेंटू

(५) लेटिन-Oroxylum indicum, (Linn.) Vent.

नैसर्गिक वर्ग–Bignoniaceae

वानस्पतिक वर्णन—यह नीम के समान ऊंचा वृक्ष होता है

मूल—साधारण

तना—सीधा, मध्यमाकार

शाखा—एक से तीन फीट लम्बी

पत्र–चारसे आठ इंच लम्बे गहरे कटेहुए कंगुरेदार

पुष्प—पीताभ हरीत

फल—लगभग दो फीट लम्बी तलवार के आकार कीं, इसमें रुई व दाने निकलते हैं।

प्राप्तिस्थान—पश्चिमी शुष्क प्रदेश को छोड भारत लंका और मलाया में प्राय: सर्वत्र प्राप्त होता है।

उपयोगी अंग—मूलत्वक्

रस—तिक्त, कषाय **वीर्य**—शीत **विपाक**—कटु

गुण—ग्राही, स्वेदल, आमपाचक, कण्डूघ्न **दोषशमन**—त्रिदोष

श स. प्रभाव—सर्वशरीर

योग—

अरल्वादिक्वाथ (ज्वर, अतिसार)

रोगोपयोग–

कास सन्निपातिकज्वर

अतिसार, आमवात, उपदंश

कर्णशूल, प्रसूतिजन्यदौर्बल्य

मात्रा–१० से २० रति (चूर्ण)

विशेष (१) राज निघण्टु ने इसका अतिसार का महौषधीरुप वर्णन किया है:—

"पुटपाक विधानेन, रसो निष्कास्य रक्षितः।
चिरंतनमतिसारं, नाशयेदिति कीर्त्तितम्॥"

(२) यह 'सेलोंल' के समान गुणकारी है।

(३) "The bark and the pads are of value in dyeing and tanning"-*G. F. Dastur*.

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अरलू चित्र संख्या २२

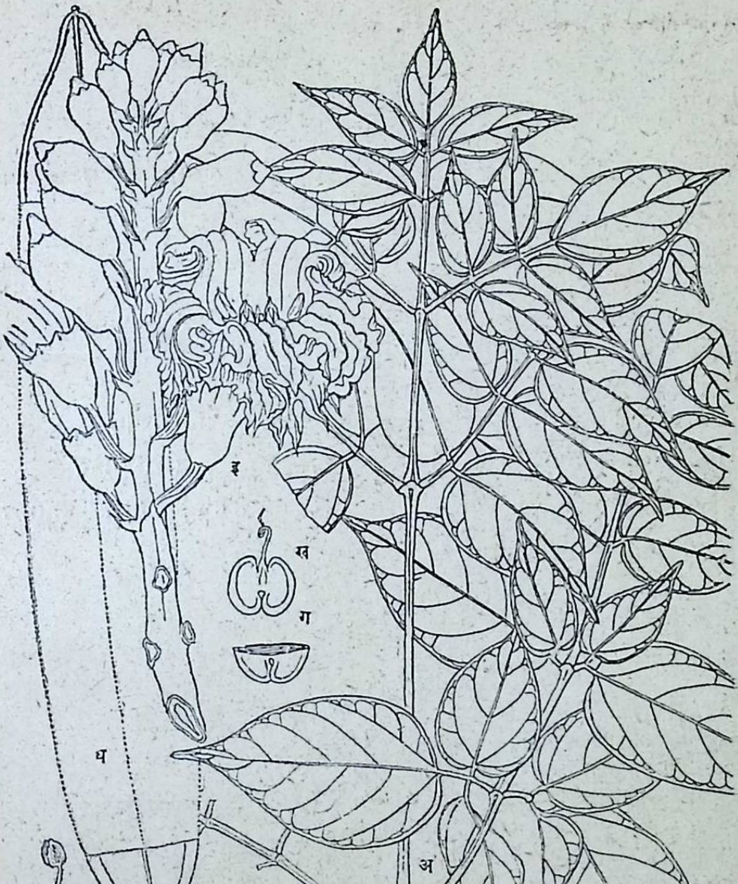

OROXYLUM INDICUM, LINN.
(Bignoniaceae)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अरिमेद

नाम **चित्रसंख्या-२३**

(१) संस्कृत–अरिमेद (२) हिन्दी–दुर्गंधखैर

(३) गुजराती–गन्धिलोखैर (४) मराठी–घाणेराखैर

(५) अंग्रेजी–Sponge Tree (६) लेंटिन-Acacia farnesiana, Willd.

नसर्गिक वर्ग–Mimosaceae

वानस्पतिक वर्णन–यह बबूल के समान वृक्ष जाति की वनस्पति होती है।

मूल–साधारण **पुष्प**–छोटे

तनकीत्वक्–खर और चटकी हुई **फल**–छोटा

शाखा–टेढे मेढे हलके बादामी धब्बेंयुक्त **निर्यास**–पीताभश्वेत

पत्र–कंटकयुक्त आंवले के समानर पत्र किन्तु उनसे बड़े आकारयुक्त

प्राप्तिस्थान–यह भारत में बहुत प्रसिद्ध आर प्राय: सर्व प्राप्त होता है। उष्ण जलवायु में अधिक होता है।

उपयोगी अंग–त्वक्

रस–कषाय तिक्त **वीर्य**–उष्ण **विपाक**–कटु

गुण–तीक्ष्ण, बलवर्द्धक, कामोद्दीपक **दोषशमन**–कफ

श. स. प्रभाव–समस्त शरीर

योग— **रोगोपयोग**—

अरिमेदादितैल (मुखरोग) मुखरोग, दन्तरोग, रक्तविकार पूयमेह; अतिसार,

मात्रा–१ से ४ माशा (चूर्ण)

विशेष-(१) इसके पत्रों में मनुष्य की विष्टा के समान दुर्गन्ध आती है। अत: इसे 'विटगन्धी' भी कहते हैं।

(२) फिलिपाइन द्वीपसमूह में इसके त्वकके क्वांथको प्रदररोग में बहुतायत से प्रयोग किया जाता है।

(३) इसमे Essential oil या Violatile oil होता है। (कर्नल चोपरा)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अरिमेद

चित्र संख्या २३

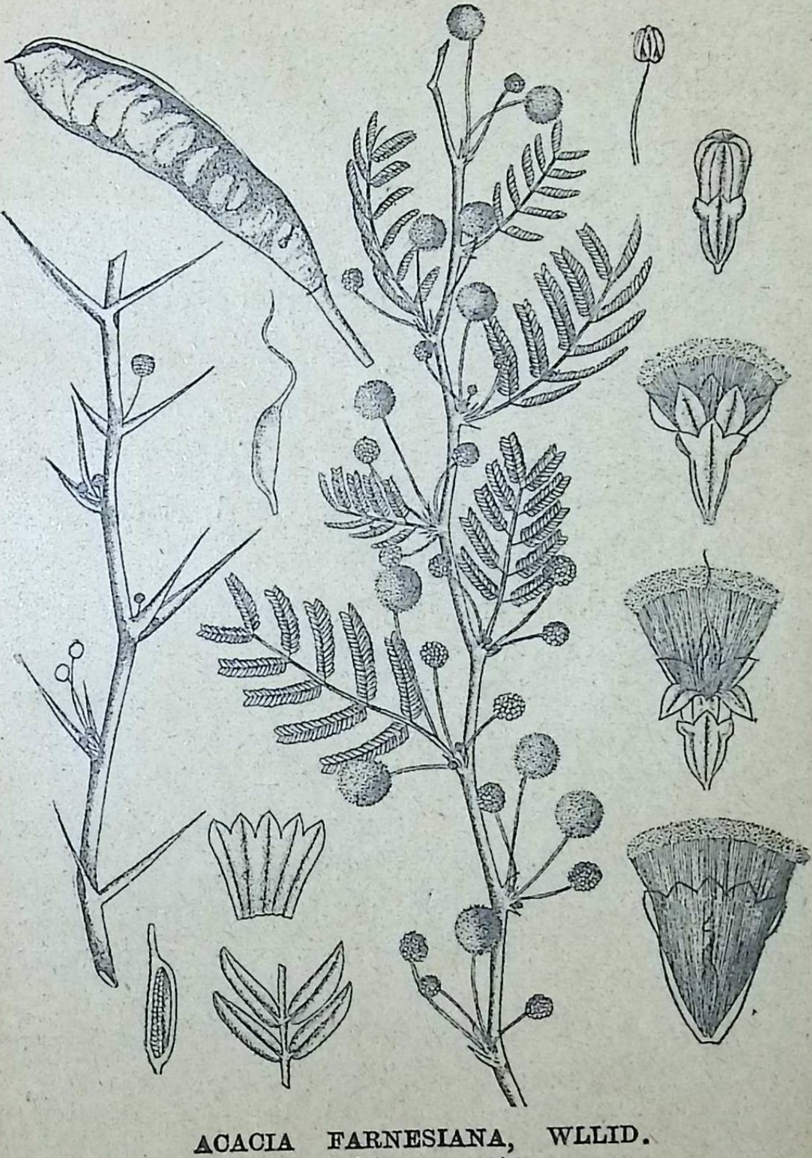

ACACIA FARNESIANA, WLLID.
(Mimosaceae)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अरीठा

नाम **चित्रसंख्या–२४**

(१) संस्कृत–अरिष्टक (२) हिन्दी–अरीठा

(३) गुजराती–अरीठा (४) मराठी–रिठा

(५) अंग्रेजी–Soap nut (६) Spindus trifoliatus,linn.

नैसर्गिक वर्ग–Sapindaceae

वानस्पतिक वर्णन–यह २० से ३० फीट ऊंचा वृक्ष होता है।

मूल–साधारण

तना–भुरा

शाखा–मध्यमाकार साधारण

पुष्प–श्वेत, आश्विन-कर्तिक में आते हैं।

फल–तीनधारयुक्त,(पौष मांघ में पकते है)

बीज–बीजों की गिरी खाने में पहले मीठा फिर कड़वी लगती है।

पत्र–संयुक्त, समदल; गुलर के पत्तों के समान बड़े।

प्राप्तिस्थान–यह भारत में प्रसिद्ध है और प्राय: सर्वत्र प्राप्त होता है।

उपयोगी अंग–फल और बीज

रस–तिक्त **वीर्य**–कटु **विपाक**–उष्ण

गुण–वामक, लघुस्निग्ध, लेखन, गर्भपातक **दोषशमन**–त्रिदोष; विशेषत: वात

श. स. प्रभाव–अमाशय

रोगोपयोग—

कुष्ठ, कण्डु; **विषवमनार्थ** शोथलेप रक्तार्श; आर्तवरोग

विशेष–(१) इसकी दो जातियाँ होती है। एक को साबुन के स्थान में प्रयोग किया जाता है। दूसरी जातिके अरीठे के बीजों का तैल निकाला जाता है।

(२) इसमें N Eicosanic acid विशेष प्राप्त होता है। इसमें साबुन ११%; शर्करा १०% और लुआब इसके बीजों में तैल ३०% होता है।

(४) विशेष मात्रा में यह रेचक और वामक है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अरीठा

चित्र संख्या २४

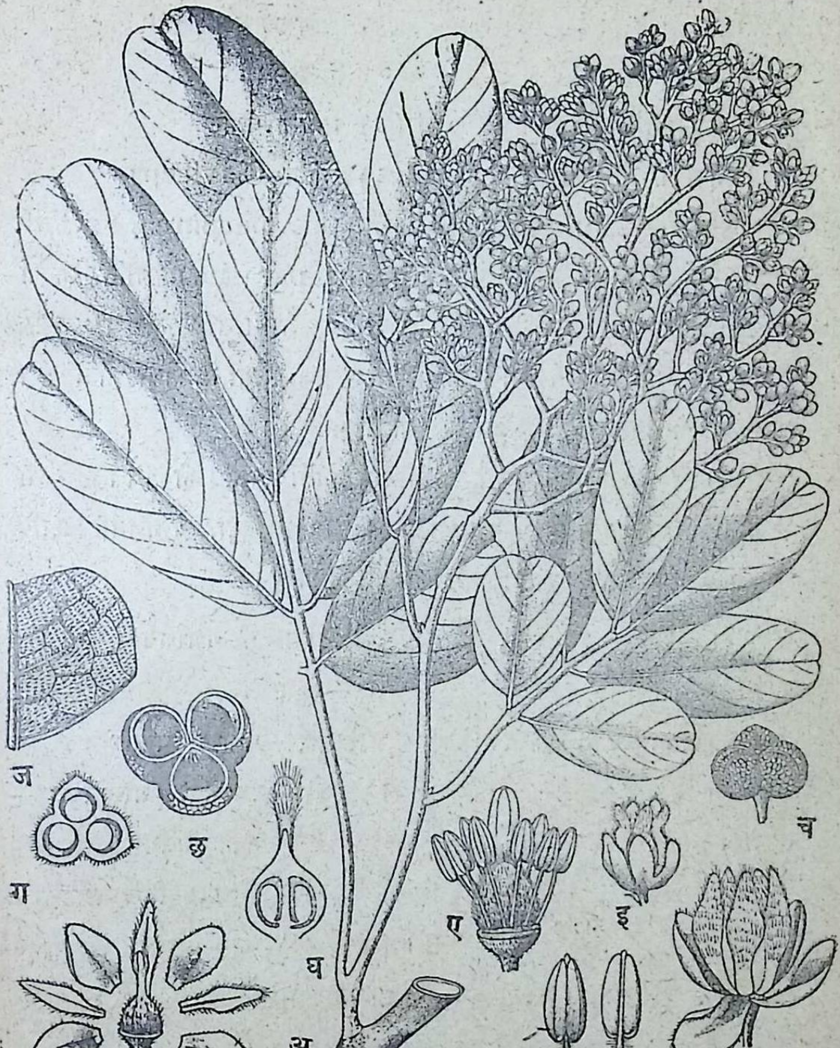

SPINDUS TRIFOLIATUS, LINN. (Sapindaceae)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अर्गट

नाम **चित्रसंख्या—२५**

(१) संस्कृत–अर्भक (२) हिन्दी–अर्गट

(३) गुजराती–अर्गट (४) मराठी–अर्गट

(५) अंग्रेजी–Ergot (६) लेटिन–Claviceps purpurea, Fr Tul.

नैसर्गिक वर्ग—Fungi

वर्णन—यह एक छत्रक पराश्रयी (Fungus parasite) जाति की है जो निवारीका से प्राप्त होती है। यह आधा से एक इंच लम्बा, रक्ताभ भूरेवर्ण का, कुछ वक्र और साधारणत: त्रिकोणी होती है। यह दुर्गन्धयुक्त अप्रिय स्वादवाला होती है।

प्राप्तिस्थान–यह भारत में जौ, गेहूँ और प्रधानत: मक्का की विशेष खेती होनेवाले प्रदेशों में पाया जाता है। आस्ट्रिया, बेलजियम आदि देशों मे विशेषत: काम में लाई जाती है।

उपयोगी अंग—कृमिकोष, **श. स. प्रभाव**—गर्भाशय

रस—कटु, किंचित् तिक्त; **वीर्य**—उष्ण **विपाक**—कटु

गुण–रक्तस्रावरोधक; संकोचक **दोषशमन**—कफघ्न, वातल

योग— **रोगोपयोग**–गर्भाशयी मांसपेशिय—संकोचनियमन, **प्रसव-विकार** विलम्बप्रसूती

तरलसार योग

मात्रा—१० से २० बिन्दु

विशेष—(१) औषधोपयोगी अर्गट निवारिका घास (Rye) के बीजकोष से प्राप्त होती है।

(२) यह विषैली औषधद्रव्य है किन्तु विषप्रभाव विशेष घातक नहीं होता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अर्गट चित्र संख्या २५

CLAVICEPS PURPUREA, FR TUL (Fungi)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अर्जुन

चित्रसंख्या--२६

नाम

(१) संस्कृत—अर्जुन
(२) हिन्दी—अर्जुन
(३) गुजराती-अर्जुन
(४) मराठीसारड़ा
(५) अंग्रेजी— Arjuna
(६) लेटिन–Terminalia Arjuna, W.&A.

नैसर्गिक वर्ग—Combretaceae

वानस्पतिक वर्णन—यह साठ से अस्सी फीट ऊंची वृक्ष जातिकी वनस्पति है।

मूल—साधारण

पुष्प—हरिताभ श्वेत, छोटे; पुष्प वैशाख जेष्ठ मास में आते हैं।

तना—दस से बीस फीट गोल;बाह्य-त्वक् श्लक्ष्ण पीताभ कपिश

फल—पाँच से छः धारयुक्त कमरखके फल समान। ये शीतकालमें पक्व होते हैं।

पत्र—संयुक्तदलीय जिह्वाकार; उर्ध्वभाग पीताभ हरित,

निर्यास—स्वच्छ पारदर्शक

प्राप्तिस्थान—यह हिमालय की तलहटी, बर्मा, बंगाल और मध्यप्रान्त में प्रायः सर्वत्र प्राप्त होती है।

उपयोगी अंग—त्वक्

रस—कषाय

वीर्य—शीत

विपाक—कटु

गुण—हृद्य, रसायन, ग्राही

श. स. प्रभाव—हृदय और फुफ्फुस

रोगोपयोग—रक्तपित, शुक्रमेह रक्तातिसार, मूत्राघात,हृद्रोग,क्षयकास

योग—
अर्जुनादिचूर्ण (हृद्रोग)
अर्जुनारिष्ट (हृद्फुफ्फुसरोग)

मात्रा—१/२ से १ तोला

विशेष—(१) इसकी त्वचा से खाकी रंग बनाया जाता है।

(२)इसकी त्वचा में सबसे विशेष शल्कि (Tannin) प्राप्त होता है। गिरे हुए की अपेक्षा वृक्ष-लग्न फलों में शल्कि-मात्रा विशेष होती है।

(३) "The Leaves are fed to tassar silk worms."

—*Dastur*

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अर्जुन

चित्र संख्या. २६

TERMINALIA ARJUNA, W. & A.
(Combretaceae)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अलसी

नाम **चित्रसंख्या**—२७

(१) संस्कृत—अतसी (२) हिन्दी—अलसी

(३) गुजराती—अलसी (४) मराठी—अलशी

(५) अंग्रेजी—Linseed (६) लेटिन—Linum usitatissimum, Linn.

नैसर्गिक वर्ग-Linaceae.

वानस्पतिक वर्णन—यह दो से चार फीट ऊंची एक वर्षायु क्षुप जाति का वनस्पति है।

मूल—साधारण छोटी

पुष्प-शाखाग्रोद्भूत आसमानी वर्णयुक्त

तना-एकाकी गोल कहीं २ चतुष्कोणीय

बीज—गहरे कपिश वर्णयुक्त, स्निग्ध

शाखा-साधारण मध्यमाकारी

पत्र—३.८ से० मी० तक लम्बे, छोटे, एकाकी, अखंड

प्राप्तिस्थान—यह भारतवर्ष में छः हज़ार फीट की ऊंचाई तक प्रायः सर्वत्र प्राप्त होते है।

उपयोगी अंग—बीज

रस—मधुरतिक्त **वीर्य**—उष्ण **विपाक**—कटु

गुण—गुरु, स्निग्ध, विरेचक

दोषशमन—वातहर, पित्तप्रकोपक

श. स. प्रभाव—आन्त्र

रोगोपयोग-क्षयकास, शोथ, त्वक्रोग कर्णरोग, पूयमेह, व्रण.

विशेष-(१) इसके बीजों में ३०% से ४०% तैल (Fixed oil), ६% निर्यासोद (Mucilage) रहता है।

(२) प्रदाहीव्रणोंपर इसका निर्यासीलेप (Poultice) लाभप्रद है।

(३) इसके तैल में चूने का जल मिलाने से Carron मिश्रण बनता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अलसी

चित्र संख्या २७

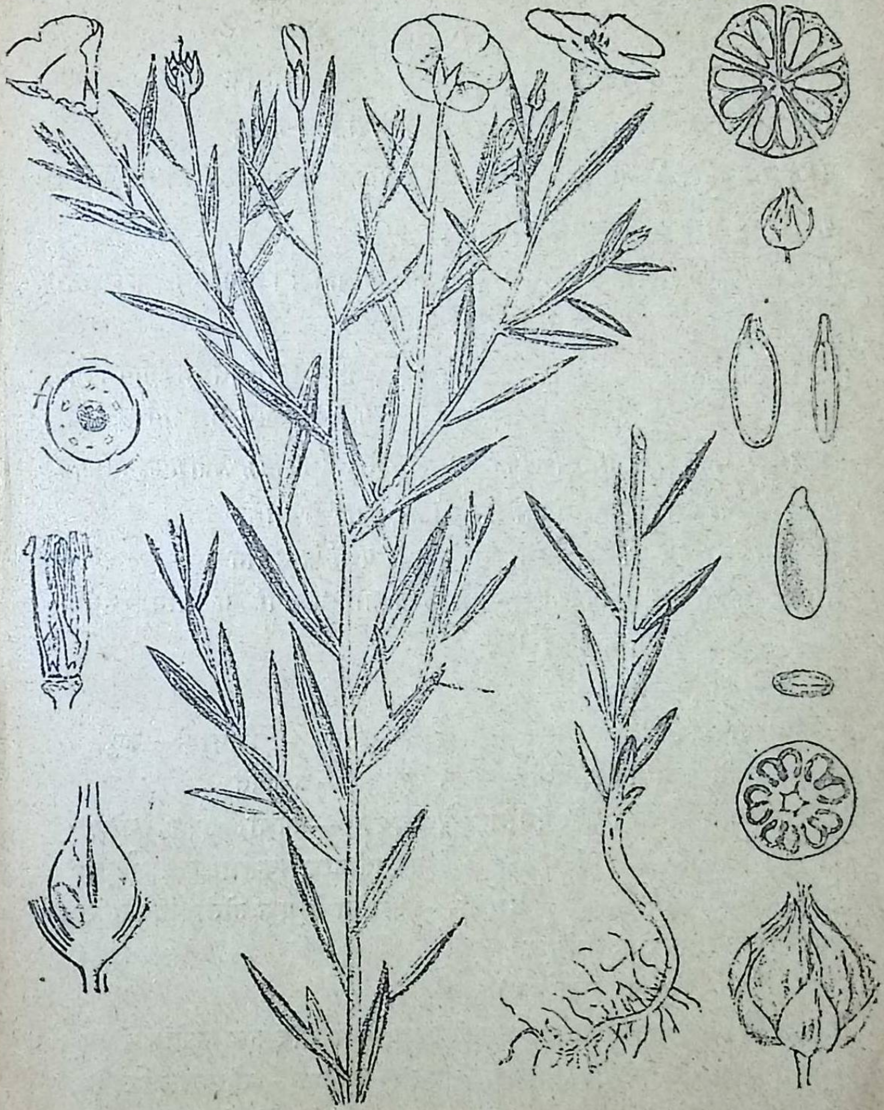

LINUM USITATISSIMUM, LINN
(Linaceae)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अशोक

नाम **चित्रसंख्या**—२८

(१) संस्कृत—अशोक (२) हिन्दी—अशोक

(३) गुजराती—अशोक (४) मराठी—अशोक

(५) अंग्रेजी—Ashoka (६) लेटिन–Saraca indica, Linn.

नैसर्गिक वर्ग—Caesalpiniaceae

वानस्पतिक-वर्णन—यह वृक्ष जाति की वनस्पति है। आमके वृक्ष के बराबर इसकी ऊंचाई होती है।

मूल—साधारण

पुष्प—अनेक, सुगन्धित नारंगीवर्णयुक्त, ये वसंत ऋतु में आते हैं।

तना–मोटा, गोल, विभग्नत्वकयुक्त

फल–हरित (अपक्व), रक्ताभकृष्ण (पक्व)

शाखा–स्निग्धता लिये हुए होती है।

बीज—चार से आठ

पत्र—१५ से २५ सें. मी. लम्बे, रामफल के पत्तों के समान।

प्राप्तिस्थान—यह पूर्वीयबंगाल, बर्मा, लंका और मलाया में प्रायः सर्वत्र प्राप्त होता है।

उपयोगी अंग—त्वक्

रस—कषायतिक्त **वीर्य**—शीत **विपाक**—कटु

गुण—ग्राही, रक्तशोधक, वर्ण्य, **दोषशमन**—कफपित

श. स. प्रभाव—आन्त्र और गर्भाशय

रोगोपयोग—अपची, दाह, शोथ, रक्तातीसार, **रक्तप्रदर, गर्भस्राव.**

योग— **मात्रा**—छः माशा से एक तोला (आसवारिष्ट)

अशोकारिष्ट (सोमरोग, गर्भस्राव)

अशोकादिघृत (श्वेत या रक्तप्रदर)

विशेष—(१) सुश्रुत मतानुसार इसकी त्वक्, पुष्प और फल सर्पदंश में उपयोगी है किन्तु इसमें विषघ्न गुणाभाव है– महेस्कर और केस।

(२) इसमें उपयोगी क्षारीयतत्व (Alkaliod) और उत्पत तैल (Essential oil) का नितान्त अभाव होता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अशोक

चित्र संख्या. २८.

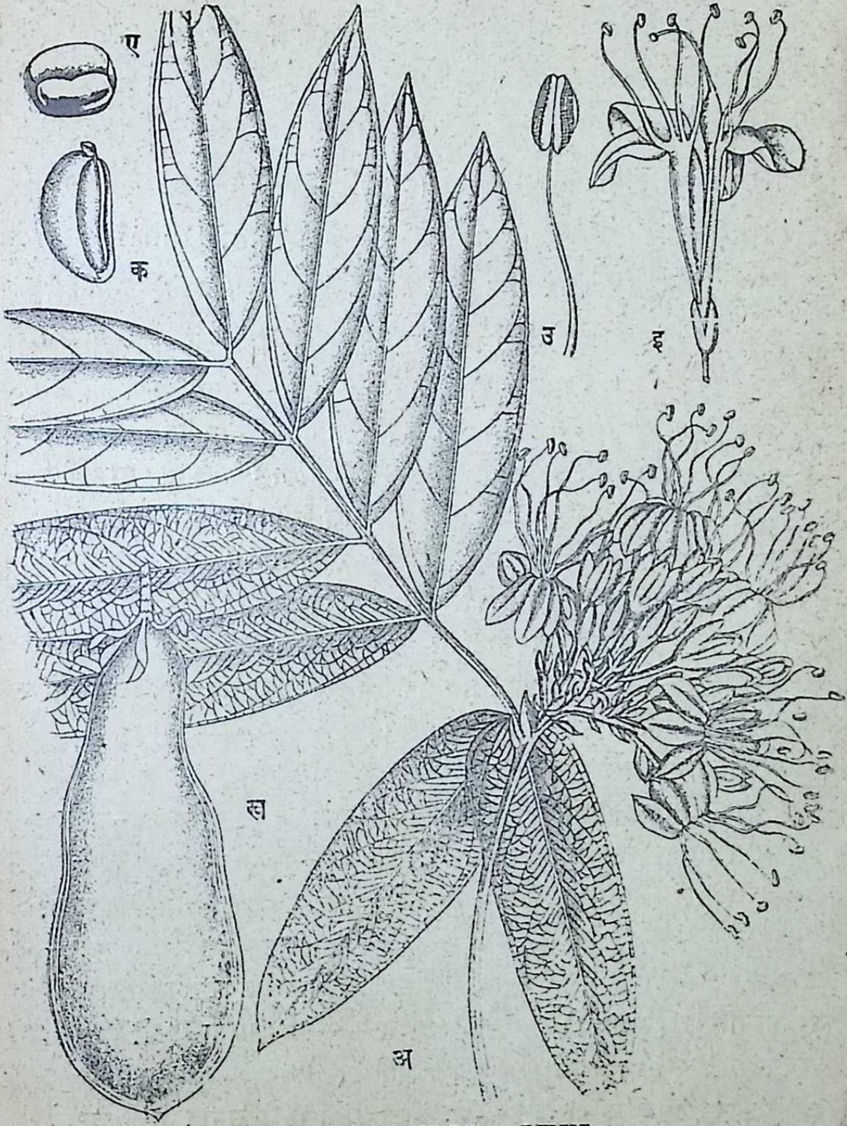

SARACA INDICA, LINN.
(Caesalpiniaceae)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

असगंध

नाम **चित्रसंख्या—२९**

(१) संस्कृत—अश्वगंधा (२) हिन्दी—असगन्ध

(३) गुजराती—आसंध (४) मराठी—आस्कन्द

(५) अंग्रेजी—Rape seeds (६) लेटिन-Withania somnifera, Dunal.

नैसर्गिक वर्ग—Solanaceae

वानस्पतिक वर्णन—यह दो से तीन फीट ऊंची गुल्म जाति की वनस्पति है जो वर्षा ऋतु में उत्पन्न होती है। कहीं कहीं बारहों मास प्राप्त होती है।

मूल—एक फुट तक लम्बी, कटु

पुष्प-रक्त या हरिताभपीत वर्णयुक्त; ये वर्षाकाल के अन्त या शीत काल के प्रारंभ में निकलते हैं।

तना—साधारण गोल

फल—रक्त, स्निग्ध

शाखा-क्रम रींगणी समान, एकाकी

बीज—पीत

पत्र—किंचित् अण्डाकार; पत्रनाडीं छः

प्राप्तिस्थान—भारत के शुष्कप्रधान प्रदेशोंमें, बिलोचिस्तान और लंका में प्रायः सर्वत्र प्राप्त होती हैं।

उपयोगी अंग—मूल

रस—मधुर, तिक्तकषाय

वीर्य—उष्ण

विपाक-मधुर

गुण-बल्य, पौष्टिक, स्तन्यवर्धक, रसायन

दोषशमन—त्रिदोष

श. स. प्रभाव—समस्त शरीर

रोगोपयोग-बालशोष, मानसिकरोग, शुक्रसंबंधीरोग, वातव्याधि क्षतक्षय

योग—

अश्वगन्धारिष्ट (शुक्रदोष)

अश्वगन्धादि चूर्ण (वातरोग)

मात्रा—२ से ४ माशा (चूर्ण)

विशेष-(१) "इसके बीजों को W. Coagulans के समान दूध जमाने के काममें लिया जाता है"—कर्नल बसु

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

असगंध चित्र संख्या २९

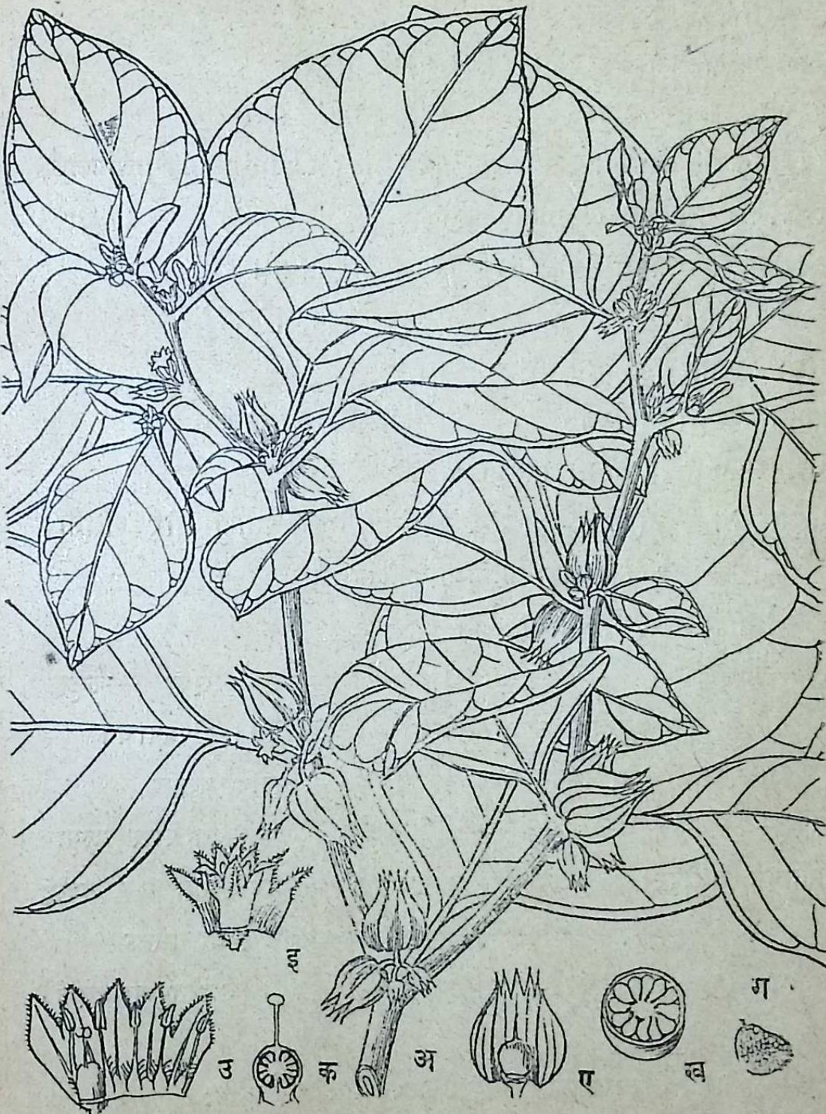

WITHANIA SOMNIFERA, DUNAL Solanaceae)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

आक

नाम **चित्रसंख्या—३०**

(१) संस्कृत–अर्क (२) हिन्दी–आक

(३) गुजराती -आकड़ो (४) मराठी–रुई

(५) अंग्रेजी–Mudar (६) लेटिन–Calotropis procera, R.Br.

नैसर्गिक वर्ग—Asclepiadeae.

वानस्पतिक वर्णन—यह गुल्म जाति का वनस्पति है।

मूल—साधारण **पुष्प**—श्वेत या रक्त

तना—कोमल गोल

शाखा—छोटी साधारण **बीज**—हलका कपिश

पत्र—५.७ से १५ सें. मी. विस्तृत

प्राप्तिस्थान—भारत के उष्ण शुष्क प्रदेशों में, लंका, मलाया और दक्षिणी चीन में प्राय: सर्वत्र प्राप्त होती है।

उपयोगी अंग—मूल, पत्र और पुष्प

रस—तिक्तकटु **वीर्य**—उष्ण **विपाक**—कटु

गुण–तीक्ष्ण, सर; मूलत्वक्–स्वेदल, वामक, पुष्प (श्वेत)–दीपनपाचन क्षीर–रेचक, सर, गर्भपातक **दोषशमन**—त्रिदोष, वातल

योग—

अर्कलवण (जलोदर)

रोगोपयोग—अर्श, कास, श्वास, गुल्म, जलोदर, प्लीहावृद्धि, दद्रु, विसूचिका

मात्रा—४ रति से १ माशा तक

विशेष—(१) इसकी पुष्पवर्ण भेद से–रक्तपुष्पा (अर्क) और श्वेतपुष्पा (अलर्क)

(२) "शिलागंधार्क दुग्धाक्ता:, स्वर्णाद्या: सर्वधातव:।
म्रियते द्वादश पुटै:, सत्यं गुरु वचो यथा॥"

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

आक चित्र संख्या ३०

CALOTROPIS PROCERA, R. BR. (Asclepiadeae)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

आँबाहल्दी

नाम **चित्र संख्या—३१**

(१) संस्कृत–आम्रहरिद्रा, वनहरिद्रा (२) हिन्दी–आँबाहल्दी

(३) गुजराती–आँबहलद (४) मराठी–आबेंहलद

(५) अंग्रेजी–Long zedoary. (६) लेटिन–Curcuma aromatica, Salisb.

नैसर्गिकवर्ग—Scitamineae.

वानस्पतिकवर्णन—यह काण्डरहित द्विवर्षायु क्षुप जाति की वनस्पति है।

मूल—कन्द, पाण्डु पीताभश्वेत, लम्बी दूर तक विस्तृत गन्धयुक्त **पुष्प**—पीताभ श्वेत

शाखा—साधारण गोल

पत्र—एक से दो फीट लम्बें, निम्नभाग स्निग्ध किंचित् बैंगनीवर्णयुक्त हरे।

प्राप्तिस्थान—यह भारत में पूर्वी हिमालय प्रदेश, बंगाल और पश्चिमी प्रायद्वीप में प्रधानतः प्राप्त होती है।

उपयोगी अंग—कन्द

रस—अम्ल **वीर्य**—शीत **विपाक**—अम्ल

गुण—दीपन, लघु, सारक **दोषशमन**—त्रिदोषहर, वातकारक

श. स. प्रभाव—सर्वशरीर

रोगोपयोग—सर्पविष, शिरःशूल, उदरशूल, श्वास, हिक्का, कास, वातरक्त, अभिघातजशोथ

मात्रा—चूर्ण १–१/२ से ३ माशा

अनुपान—जल

विशेष—(१)इसका कन्द हल्दी या शलगम के समान होता है किन्तु इसकी गन्ध हल्दी की अपेक्षा तेज, कपूर के समान होती है।

(२)इसमें उत्पत तैल (Essential Oil) प्राप्त होते हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

आँबाहल्दी

चित्र संख्या ३१

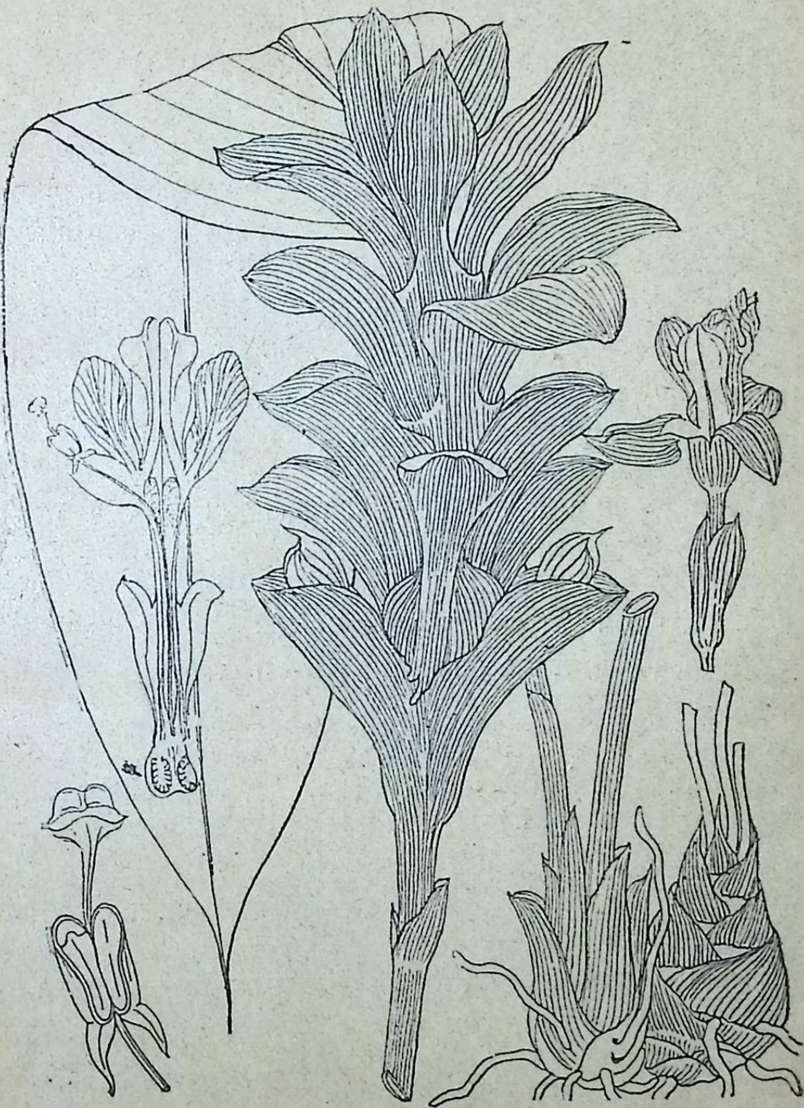

CURCUMA AROMATICA, SALISB
(Scitamineae)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

आँवला

नाम **चित्रसंख्या—३२**

(१) संस्कृत—आमलकी (२) हिन्दी-आँवला
(३) गुजराती—आमळा (४) मराठी—आंवळा
(५) अंग्रेजी—Emblic Myrobalan. (६) लेटिन-Emblica officinalis, Gaertn. (syn. phyllanthus emblica; Linn.)

नैसर्गिक वर्ग-Euphorbiaceae.

वानस्पतिक वर्णन-यह छोटा या मध्यमाकारी वृक्ष जाति की वनस्पति है।

मूल—साधारण
पुष्प—छोटे हरिताभ पीत, एकलिंगी
तना—स्निग्ध, हरिताभ भूरी
फल-पीत, मांसल, पौन इंच व्यासयुक्त
शाखा-साधारण गोल
बीज—षट् बीजी (पक्व)
पत्र—आधा इंच लम्बें, स्निग्ध

प्राप्तिस्थान—यह भारत में प्रायः सर्वत्र प्राप्त होता है। उत्तर प्रदेश में सबसे अधिक होता है।

उपयोगी अंग—परिपक्व फल

रस—लवणरहित शेष छः **वीर्य**-शीत **विपाक**—मधुर

गुण-लघु, दीपन, पाचन, वृष्य, रसायन **दोषशमन**—त्रिदोष

श. सं. प्रभाव-सर्वशरीर

योग—
च्यवनप्राशावलेह (स्मृति, संभोग-सामर्थ्य)
त्रिफलाचूर्ण (पाचन, अरुचि)
ब्राह्मरसायन (तीव्रकान्ति)
धात्रीलोह (परिणामशूल)
महातिक्त-घृत (रक्तपितविकार)

रोगोपयोग-मूत्रकृच्छ्र, अतिसार, पुरुष प्रजनन अवयवीरोग, अर्श, कास श्वास, वातव्याधि

मात्रा—चूर्ण २ से ४ माशा

अनुपान—जल

विशेष—(१) बनारस का आँवला भारत में सबसे उत्तम होता है। च्यवनप्राश में इसका प्रयोग करने से औषध-प्रभाव अच्छा प्राप्त होता है।

(२) इसके पत्रों में २२%; फलों में २८% और काण्डत्वक् में ९% शल्कि (Tannin) प्राप्त होता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

आँवला

चित्र संख्या ३२

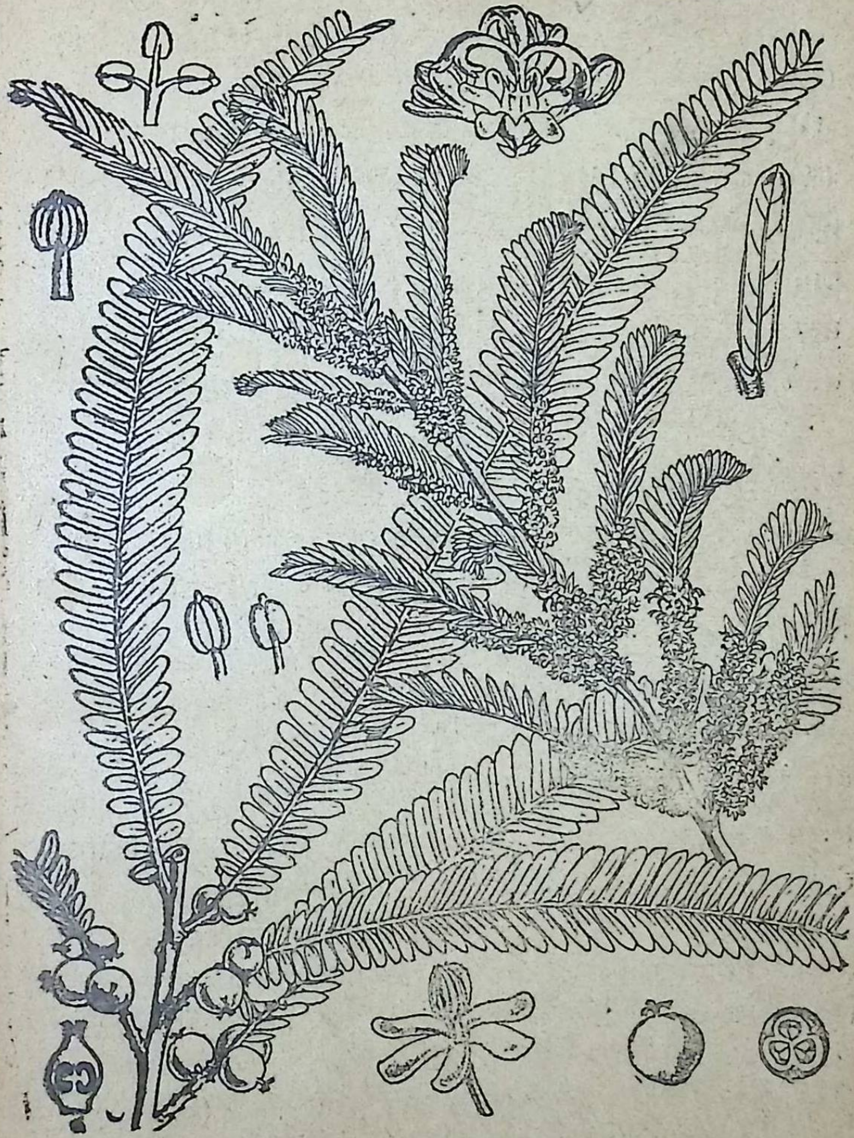

EMBLICA OFFICINALIS GAERTN SYN. PHYLLANTHUS EMBLICA, LINN (Euphorbiaceae)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

इंद्रजौ; कुटज

नाम **चित्रसंख्या**-३३

(१) संस्कृत-कुटजबीज (२) हिन्दी-इन्द्रजौ

(३) गुजराती-इन्द्रयव (४) मराठी—कुड़याचें बीज

(५) अंग्रेजी-Kurchi (६) लेटिन-Holarrhena antidysenterica, Wall.

नैसर्गिक वर्ग-Apocynaceae

वानस्पतिक वर्णन-यह चार से दस फीट ऊंची गुल्म जाति की वनस्पति है।

मूल-कठोर, पीताभश्वेत कटु

तना-कीत्वक्-लगभग आधा इंच मोटी भूरे वर्णयुक्त

शाखा-साधारण गोल

पत्र-चार से आठ इंच लम्बे, दो से चार इंच चौडे, आमने सामने

पुष्प-श्वेतवर्णयुक्त गुच्छेदार

फल-एक से दो फीट लम्बी, पाव इंच चौडी दो दो एक साथ संलग्न, रक्तवर्णयुक्त

बीज-हरित (अपक्व); गेहुंआ (पक्व) इन्हीं बीजों को 'इन्द्रजौ' कहते हैं।

प्राप्तिस्थान-यह भारत में प्रायः सर्वत्र प्राप्त होती है।

उपयोगी अंग-त्वक् और फल

रस-कटु कषाय; तिक्त (फल) **वीर्य**-शीत **विपाक**-कटु

गुण-रुक्ष, ग्राही, दीपनपाचन **दोषशमन**-पितकफ

श. स. प्रभाव-आन्त्र **रोगोपयोग**-अर्श, आमज्वर, अतिसार प्रवाहिका

योग-

कुटजावलेह (अतिसार)

कुटजारिष्ट (प्रवाहिका)

मात्रा-चूर्ण-१ से ४ माशा.

अनुपान-शीतोष्ण जल

विशेष-(१) इसकी वर्णभेद से श्वेत (मधुर) और कृष्ण (कटु)-दो जातियां होती है।

(२) शहद और केशर को इसके साथ मिलाकर पेसरी (Passary) बना योनि में रखने से गर्भाधान में उपयोगी है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

इन्द्रजौ, कुटज

चित्र संख्या ३२

HOLARRHENA ANTIDYSENTERICA, WALL. (Apocynaceae)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

इन्द्रायण

नाम **चित्रसंख्या**—३४

(१) संस्कृत—इन्द्रवारुणी (२) हिन्दी—इन्द्रायण

(३) गुजराती—इन्द्रवारुणी (४) मराठी—इन्द्रायण

(५) अंग्रजी-Bitter apple (६) लेटिन—Citrullus colocynthis, Schard.

नैसर्गिक वर्ग—Cucurbitaceae.

वानस्पतिक वर्णन—यह आरोहिणी बहुवार्षिक लता जाति की वनस्पति है।

मूल—बहुवार्षिक

तना—तान्त्वी, दोसे तान विभक्त-सूत्रयुक्त

पत्र—तरबूज के पत्तों के समान विभग्न, हरितपाण्डु।

पुष्प—एक लिंगी हलके पीले।

फल—हरा, पीत आर बाद में श्वेत

बीज—श्लक्ष्ण, लम्बगोल औरचपटे, पीताभ कपिश

प्राप्तिस्थान— भारत आर लंका में प्राय: सर्वत्र प्राप्त होती है।

उपयोगी अंग—मूल और फल

रस—कटुतिक्त **वीर्य**—उष्ण **विपाक**—कटु

गुण—रेचक **दोषशमन**—वातकफ

श. स. प्रभाव—आन्त्र

योग—

इन्द्रायणादि चूर्ण (कामला)

रोगोपयोग-प्लीहोदर, गुल्म, जलोदर, योनिशूल, मूत्ररोग, स्तनशोथ, नेत्ररोग, नष्टार्तव

मात्रा—मज्जा-१ से २ रति

मूलचूर्ण-२ से ४ रति

अनुपान-जल; गोमूत्र, ग्वारपाठा भिन्न अनुपान भेद से यह भिन्न-भिन्न रोगों में उपयोगी है।

विशेष-(१) यह उत्कृष्ट विरेचक है अत: इसे अकले में प्रयोग नहीं करना चाहिए

(२) इसके साथ एलुआ या पारे के मिश्रण से यकृतरोग में विशेष लाभप्रद है

(३) इसमें उपक्षार और Colocynthine नामक दो कटु पदार्थ प्राप्त होते हैं।

(४)-"वयसः परिपाकेऽपि यः खलः खल एव सः।

सुपक्वमपि माधुर्यं नोपयातान्द्रवारुणम्॥"

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

इन्द्रायण

चित्र संख्या ३४

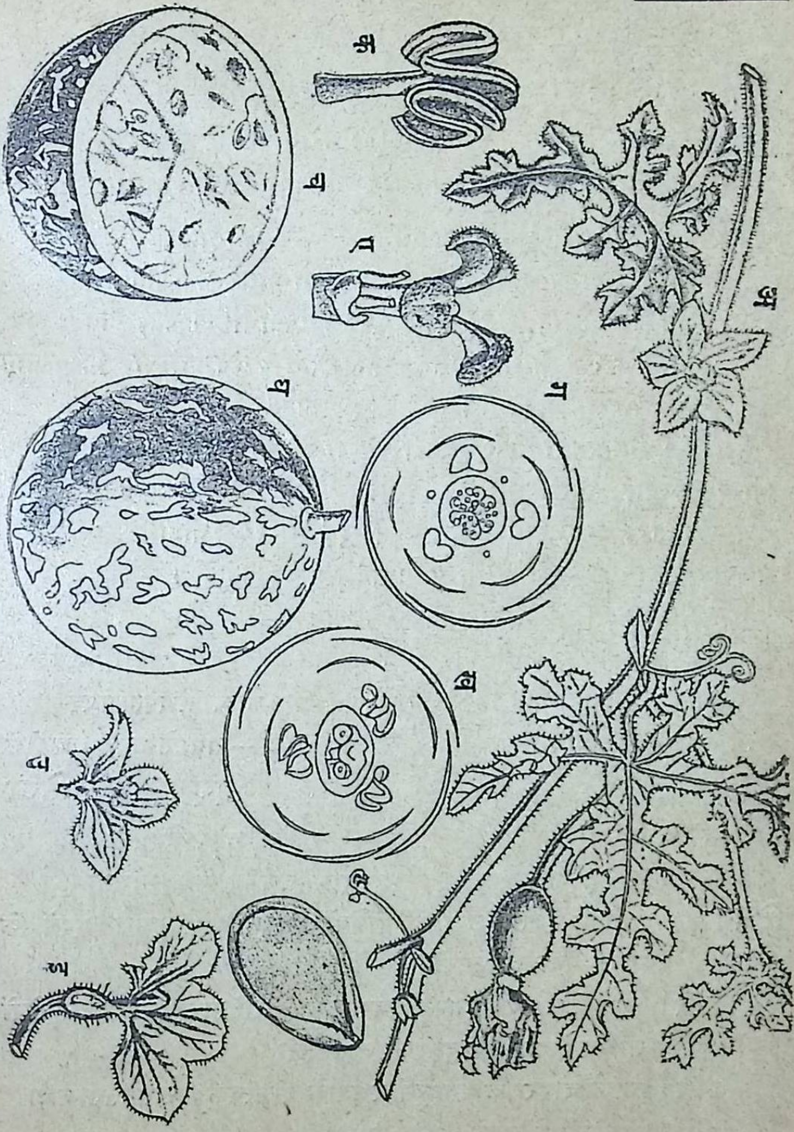

CITRULLUS COLOCYNTHIS, SCHAR.D (Cucurbitaceae)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

इमली

नाम **चित्रसंख्या-३५**

(१) संस्कृत–अम्लिका (२) हिन्दी–इमली

(३) गुजराती–आंवली (४) मराठी–चिंच

(५) अंग्रेजी–Tamarind tree (६) लेटिन–Tamarindus indica, Linn.

नैसर्गिक वर्ग-Caesalpiniaceae

वानस्पतिक वर्णन—यह वृक्ष जाति की बहुत प्रसिद्ध वनस्पति है।

मूल-लम्बी, विषमभग्न, सूत्रयुक्त, कभी २ ये मूलसूत्र सौ फुटसे भी विशेष लम्बे होते है।

पुष्प—रक्ताभछिद्रोयुक्त, पीत

फल–२ से ६ इंच लम्बा, निम्न भाग पतली

तना-मोटा,सीधा,त्वचा-मोटी,खुरदरी

बीज—३ से १२

शाखा-लम्बी, कोमल

पत्र–एकान्तर, भग्न, ३ से ६ इंच लम्बे $१\frac{1}{2}$ से $१\frac{3}{4}$ चौडा

प्राप्तिस्थान–यह भारतवर्ष में प्राय: सर्वत्र प्राप्त होती हैं।

उपयोगी अंग-बीज, फल, फलत्वक् और पत्र

रस–अम्ल मधुर **वीर्य**-उष्ण **विपाक**–अम्ल

गुण–सारक, पाचक, ग्राही, उपलेपक **दोषशमन**–कफवात, पितकारक

श. स. प्रभाव—पाचन संस्थान **रोगोपयोग**—आमातिसार, शुक्ररोग, हृद्दाह, रक्तातिसार, प्रदाहिशोथ,

योग—

अम्लिकापानक (हृददाह)

अम्लिकामंथ (शुक्ररोग)

मात्रा—चूर्ण–२ से ४ माशा

विशेष–(१) लंका में यकृताप्लिहा की ग्रंथियों (अर्बुदों) में इसके पुष्पों के मोदक बनाकर उपयोग करते है।

(२) कम्बोडिया में इसकी त्वक् का अतिसार और दन्तरोगों संकोचकरूप से व्यहृत की जाती है।

(३) कर्नल चोपरा के मतानुसार इसके बीजत्वक्, रक्तातिसार व प्रवाहिका में बहुत ही उत्तम हैं।

(४) अपक्व इमली का कदापि सेवन नहीं करना चाहिए।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चित्र संख्या ३५

इमली

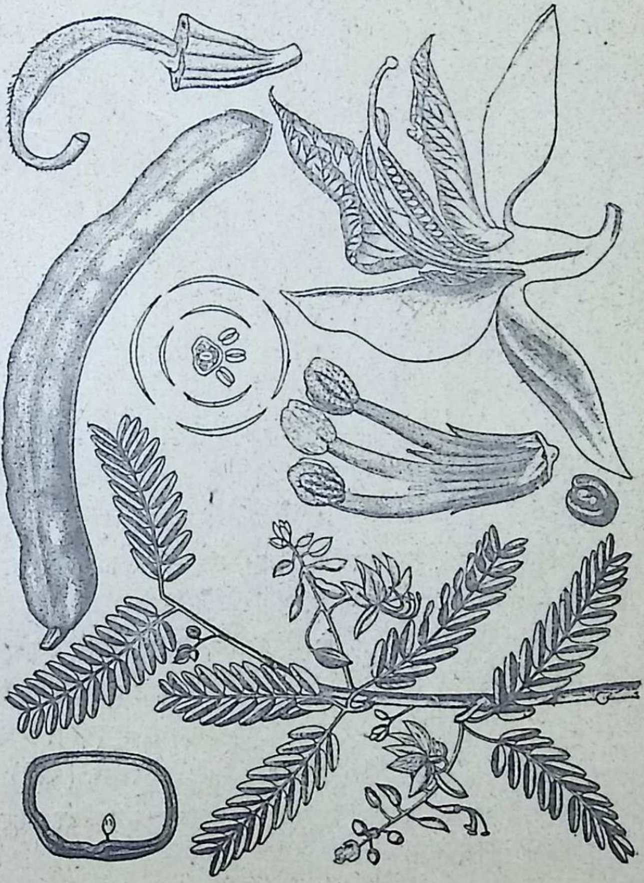

TAMARINDUS INDICA, LINN.

(Caesalpiniaceae)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

इलायची

नाम **चित्रसंख्या-३६**

(१) संस्कृत—एला (२) हिन्दी—इलायची

(३) गुजराती—एलची (३) मराठी—वेलची

(५) अंग्रेजी—Cardamomum. (६) लेटिन—Elettaria cardamomum, Maton.

नैसर्गिक वर्ग—Scitamineae.

वानस्पतिक वर्णन—यह सर्वदा हरित रहनेवाली ४ से ८ फ़ीट ऊंची गुल्म जाति की वनस्पति है।

मूल—मांसल,

पुष्प—किंचित् नीललोहिताभवर्णयुक्त छोटे, पंखडियों के ओष्ठ श्वेत

तना—पत्रावृत, इसका निम्न भाग छिद्रिष्ठ आवरणंयुक्त

फल—गुच्छदार

शाखा—साधारण छोटी

बीज—बहु बीजी

पत्र—अनुवृन्तीय, लम्बगोल, भल्लाकार

प्राप्तिस्थान—भारत में मलाबार के पश्चिमी घाटों में, और लंका में प्राप्त होती है।

उपयोगी अंग—बीज

रस—कटुतिक्त **वीर्य**—शीत; उष्ण (स्थूला) **विपाक**—कटु

गुण—मूत्रल, कफनिष्कासक, दीपनपाचन, **दोषशमन**—वातकफ, पित्तवर्धक

श. स्. प्रभाव—वृक्क और फुफ्फुस

योग—

एलादि वटी (मुखरोग)

रोगोपयोग—कास, श्वास, वमन, मुखरोग मूत्राकृच्छ्र वस्तिरोग अर्श अजीर्ण, हृद्रोग, त्रिसूचिका,

मात्रा—२ से ४ माशा (चूर्ण)

विशेष—(१) इसके उत्पति दृष्ट्या मलाबारी, मैसूरी, मेंगलोरी और लंका की इलायची ये चार भेद होते हैं।

(२) इसमें एक प्रकार का उत्पत-तैल प्राप्त होता है।

(३) यह बिच्छू के डंक में उपयागी है—कर्नल चोपरा।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

इलायची चित्र संख्या ३६

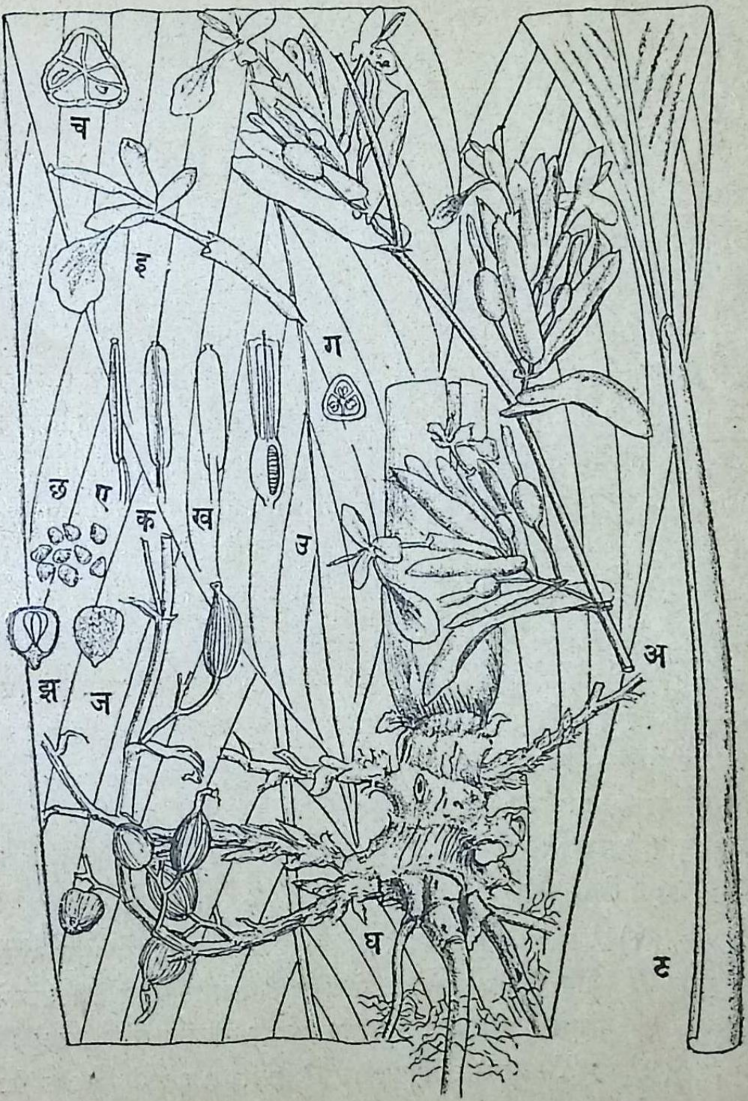

ELETTARIA CARDAMOMUM, MATON.
(Scitamineae)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

इसबगोल

नाम **चित्रसंख्या—३७**

(१) संस्कृत—ईसद्गोल (२) हिन्दी—इसबगोल

(३) गुजराती—इसबगोल (४) मराठी—इसबगोल

(५) अंग्रेज़ी—Isphagl seed (६) लेटिन—Plantago ovata, Forsk.

नसर्गिक वर्ग—Plantaginaceae.

वानस्पतिक वर्णन—यह काण्डरहित लगभग एक गज ऊंची क्षुप जाति की वनस्पति है।

मूल—साधारण छोटी

पुष्प—पीताभश्वेत

शाखा—वारीक इनके सिरे पर गेहूँ की भाँति फल लगता है जिनमें बीज मिलते हैं।

बीज—पीताभकपिश, इनपर सूक्ष्म श्वेत आवरण होता है। इसके निकालने पर इसवगोल की भूसी मिलती है।

पत्र—७.५ से २३ सें. मी. लम्बे, ६ मी. मी चौड़े, तीनपत्र नाडीयुक्त

प्राप्तिस्थान—यह भारत में पंजाव, सतलज के पश्चिमी पहाड़ी प्रदेशों में, सिन्ध और बिलोचिस्तान में प्रायः सर्वत्र हाता है।

उपयोगी अंग—बीज और बीजत्वक्

रस—मधुर **वीर्य**—शीत **विपाक**—मधुर

गुण—सर, स्नेहन, पिच्छिल **दोषशमन**—पित

श.स. प्रभाव—आन्त्र

रोगोपयोग—अतिसार, आन्त्रक्षत
रक्तातिसार, आमातिसार
रक्तार्श श्वास, पितोन्माद

विशेष--(१) इसको पीसकर उपयोग में नहीं लेना चाहिए। ऐसा माना जाता है कि इसके पीसनें से यह विषैला हो जाता है। जल में भिगोकर या भूसी निकालकर काम में लाना श्रेयस्कर है।

(२) "The mucilage of P. ovata seeds acts in very much the same way as liquid paraffin" R.N. Chopra.

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

इसबगोल

चित्रसंख्या ३७

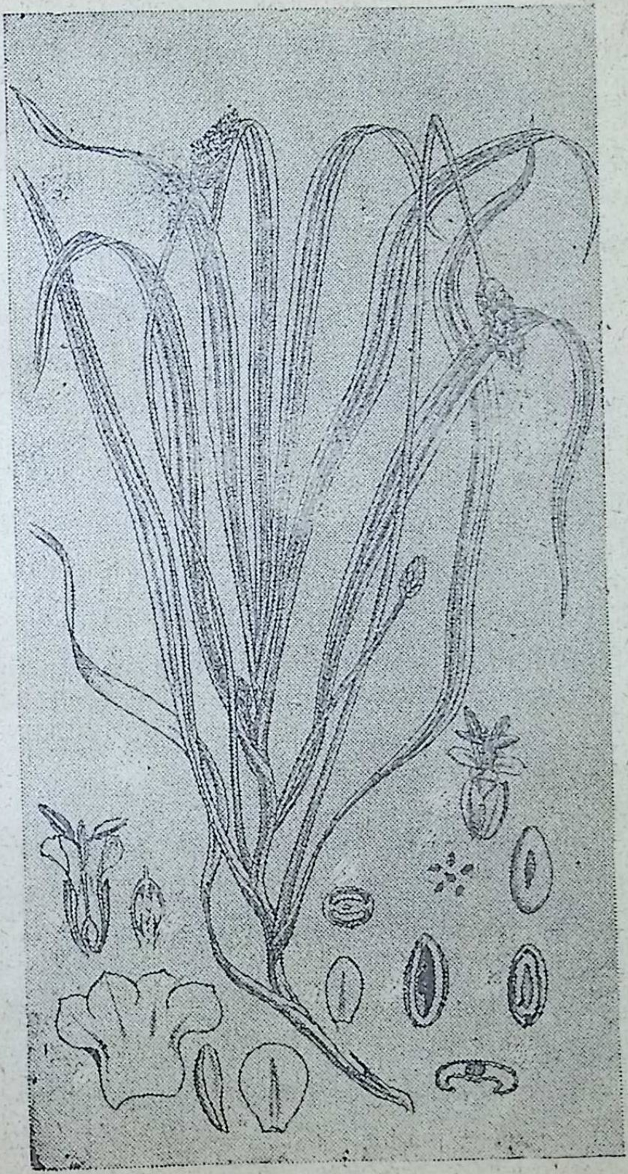

PLANTAGO OVATA, FORSK. (Plantaginaceae)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

उलटकम्बल

नाम **चित्रसंख्या**-३८

(१) संस्कृत-पिशाचकार्पासी (२) हिन्दी-उलटकंबल

(३) गुजराती-उलटकंबल (४) मराठी-उलटकंवल

(५) अंग्रेजी-Devil's, cotton. (६) लेटिन-Abroma augusta, Linn.

नैसर्गिकवर्ग-Sterculiaceae.

वानस्पतिक वर्णन-यह छोटी मध्यमाकारी गुल्म जातिकी वनस्पति है।

मूल-साधारण

पुष्प-छोटे रक्तवर्ण, और पांच सेन्टीमीटर व्यास युक्त

तना-इससे सन के समान रेशे निकलते हैं।

फल-छत्राकार;ये ग्रीष्मऋतुमें आते हैं।

शाखा—साधारण मध्यमाकारी

बीज-पीतवर्ण युक्त, रुईदार आवरण, वृतीय,

पत्र-लम्बे, उर्ध्वभाग निम्नभाग की अपेक्षा संकीर्ण, ३ से ७ पत्र नाड़ीयुक्त

प्राप्तिस्थान-यह भारत के उष्ण प्रधान देशों में, जावा, फिलिपाइन्स और चीन में प्राय: सर्वत्र प्राप्त होती है।

उपयोगी अंग-मूल त्वक्

रस-कटु **वीर्य**-उष्ण **विपाक**-कटु

गुण-रसायन, आर्तवप्रवर्तक

दोषशमन-वातकफ

श. स. प्रभाव-गर्भाशय

रोगोपयोग-आर्तवरोग, गर्भाशय रोग कष्टार्तव

मात्रा -चूर्ण-१ से ३ माशा

क्वाथ ३ से ५ तोला

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चित्रसंख्या ३८

उलटकंबल

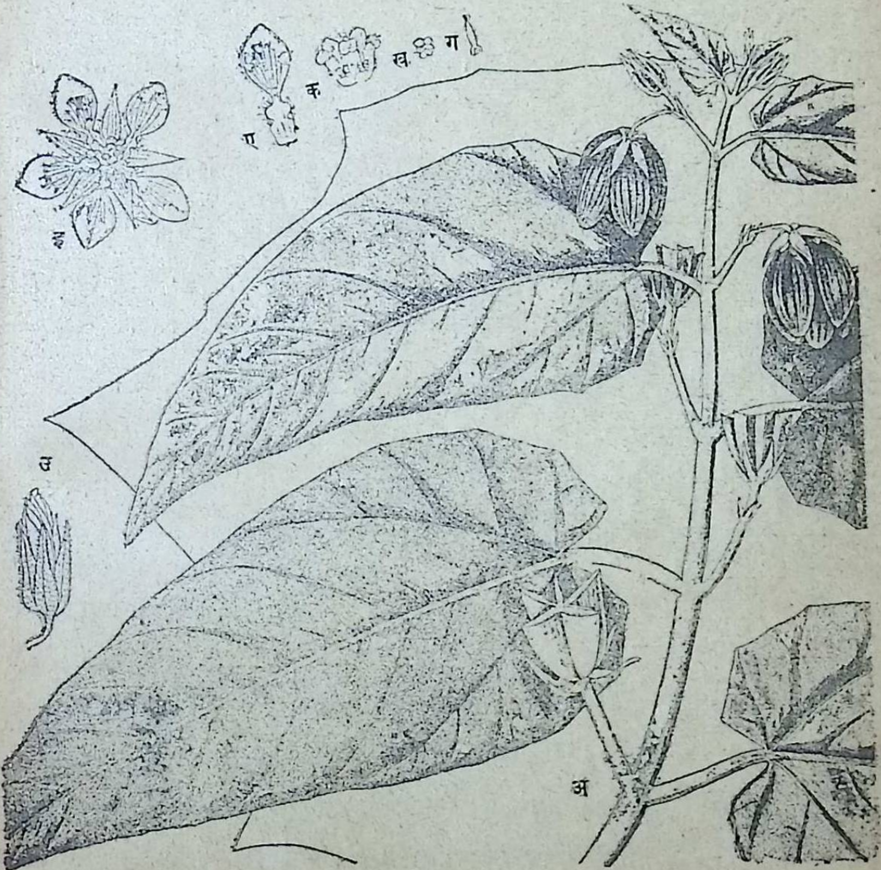

ABROMA AUGUSTA, LINN.

(Sterculiaceae)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

उशबा

नाम **चित्रसंख्या-३९**

(१) हिन्दी—उशबा
(२) गुजराती—उशबा
(३) मराठी—घोटवेल
(४) लेटिन—Smilax zeylanica, Linn.

नैसर्गिक वर्ग-Liliaceae.

वानस्पतिक वर्णन—यह विशाल कंटकयुक्त आरोहिणी लता जाति की वनस्पति है।

मूल-छोटी, साधारण, रक्ताभ,
पुष्प—बहु, गुच्छदार, एकलिंगी

तना—स्निग्ध, कंटकयुक्त
फल—मटर के समान आकारयुक्त, हरित (अपक्व), रक्त (पक्व)

पत्र—एकान्तर, चमकीले, श्लक्ष्ण, पत्रनाडी ५ से ७, चौडे, नौंकदार

प्राप्तिस्थान—यह भारत और जावा में प्रायः सर्वत्र प्राप्त होती है।

उपयोगी अंग-मूल

रस—किंचित् मधुर **वीर्य**--शीत **विपाक**-मधुर

गुण-स्वेदजनन, मूत्रजनन, पौष्टिक, और रसायन
दोषशमन-कफ

श. स. प्रभाव--मूत्राशय, और जननेन्द्रिय

रोगोपयोग—उपदंश की द्वितीयावस्था; सन्धिवात, अस्थिशोथ, पूयमेह त्वग्रोग, फिरंगरोग **मात्रा**-१ से २ तोला (क्वाथ)

विशेष—(१) कभी कभी यह पूयमेह की चिकित्सा में Sarsaparilla के प्रतिनिधिरुप में व्यहृत होती है।

(२) छोटा नागपुर में यह वनस्पति प्रवाहिका मे प्रयुक्त की जाती है

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चित्र संख्या ३९

उशवा

SMILAX ZEYLANICA, LINN.
(Liliaceae)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

कंगुनी

नाम **चित्रसंख्या**–४०

(१) संस्कृत–ज्योतिष्मति (२) हिन्दी–कंगुनी
(३) गुजराती–काँगोनी (४) मराठी –मालकंगी
(५) लेटिन-Celastrus paniculata, Willd.

नैसर्गिक वर्ग—Celastraceae.

वानस्पतिकवर्णन––यह आरोहिणि जाति की वनस्पति है और वृक्षों पर बहुत उंचाई तक चढ़ती है।

मूल––गहरी, मूलत्वक् ऊपर से भूरी और भीतर से पीत

पुष्प—१से ६ पुष्प, व्यास-१।४ से १।२ इंच, हरित वर्णयुक्त

फल–हरित (अपक्व) पीत (पक्व)

शाखा-मोटी; पीता या श्वेत साधी फटी हुई, कोमल शाखायें पेंसिल के समान मोटी भूरे रक्तवर्ण युक्त

बीज—१–१।२ से २ रेखा लम्बे और १।२ से १ रेखा चौड़े फीके भूरेवर्ण की गिरी और पीतवर्ण का प्रत्युंकर युक्त

पत्र–एकान्तर २ से ५ इंज लम्बे, १ से ३ इंज चौड़े, उर्ध्वभाग हरित अधोभाग फीका।

प्राप्तिस्थान–यह भारत में हिमालय में ६,००० फीट की ऊँचाईपर पहाड़ी प्रदेशों में, बम्बई, दक्षिणी गुजरात, मध्यभारत, लंका और वर्मा में प्राय: सर्वत्र प्राप्त होता है।

उपयोगी अंग–बीज और बीज तैल

रस—कटु तिक्त **वीर्य**–उष्ण **विपाक**—कटु

गुण-–वामक, मेधावर्द्धक, तीक्ष्ण **दोषशमन**–वातकफ हर

श. स. प्रभाव-–आमाशय और मस्तिष्क

योग–ज्योतिष्मत्यादि तैल

रोगोपयोग–स्मृतिभ्रंश, 'बेरीबेरी' जलोदर, गर्भपात मूत्रवृद्धि, कफजश्वास श्वेतकुष्ठ.

मात्रा–१।२ से १ तोला (तैल)

विशेष—

(१) इसका!तैल पातालयन्त्र क्रिया द्वारा तैयार किया जाता है।

(२) इसमें तैल Alkaloid, glucocide और कुछ वर्णयुक्त द्रव्य प्राप्त होते हैं।—कर्नल चोपरा

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

कंगुनी

चित्र संख्या ४०

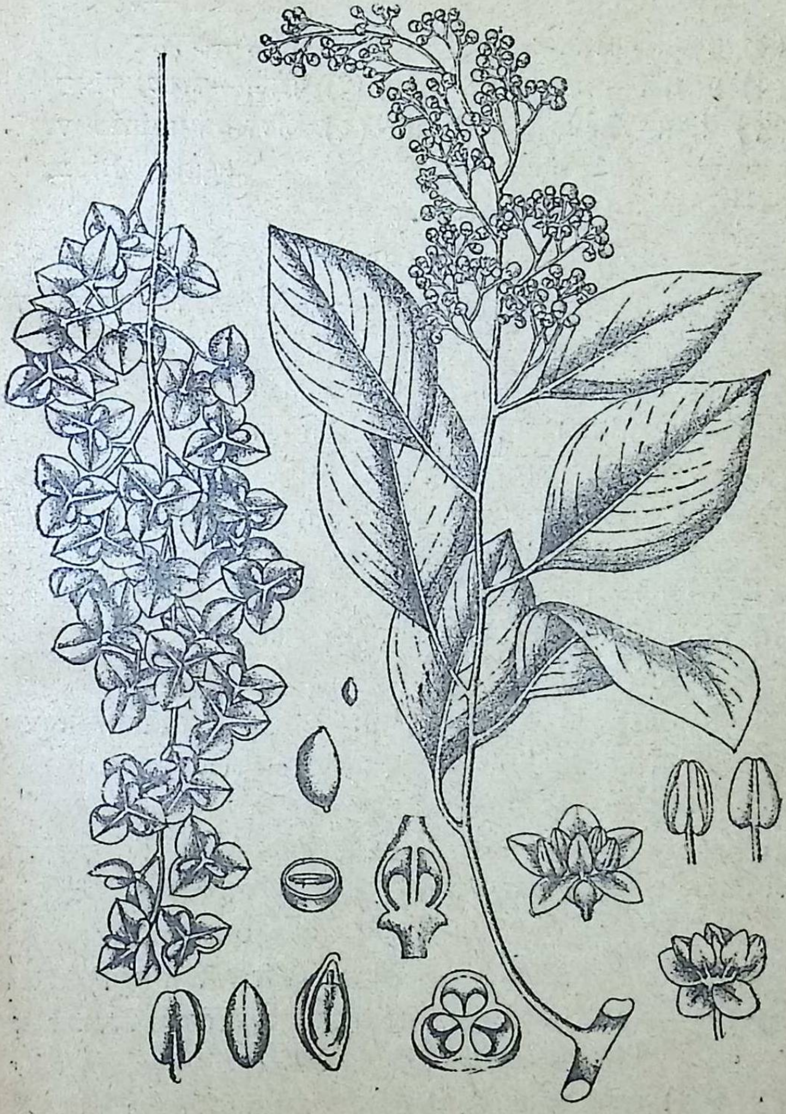

CELASTRUS PANICULATA, WILLD.
(Celastraceae)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

कचनार

नाम **चित्र संख्या—४१**

(१) संस्कृत—कांचनार हिन्दी—कचनार
(३) गुजराती—चम्पाकाटी (४) मराठी—कोरल, कांचन
(५) अंग्रेजी-Variegated mountain ebony (६) लेटिन-**Bauhinia variegata, Linn.**

नैसर्गिक वर्ग—Papilionaceae.

वानस्पतिक वर्णन—यह १५ से२० फीट तक ऊंची वृक्ष जातिकी वनस्पति है

मूल–साधारण, पृथ्वी में गहरी उतरी हुई होती है ।

पुष्प–दो इंच लम्बे, विस्तृत श्वेत पीत और रक्तवर्णयुक्त सुगन्धित

तने की त्वक्—१ इंच मोटी, भूरेऔर श्वेत वर्णयुक्त

फल–लम्बा हरिताभ, कटुरस वाला होता है ।

शाखा— कोमल, अधोनत

पत्र—चौड़े, हरित, नीचे के पत्र परस्पर संयुक्त, ऊपर के अलग अलग होते हैं । पौष माह में इसके पत्ते गिरने लगते हैं और जेष्ठ मास तक नवीन पत्र आते हैं ।

प्राप्तिस्थान्—यह भारत में प्रायः सर्वत्र प्राप्त होती है ।

उपयोगी अंग—त्वक्

रस–कषाय मधुर **वीर्य**–शीत **विपाक**—मधुर

गुण–रुक्ष, ग्राही, रक्तशोधक **दोषशमन**–कफपित

श. स. प्रभाव—रक्त

योग—
कांचनार गुग्गुल (गण्ड माला, अपचि)

रोगोपयोग—आन्त्र कृमि, दन्तरोग, गण्डमाला, अपचि, यकृत-प्रदाह,

मात्रा—२ से ४ माशा (चूर्ण)

विशेष—(१) इस पेड़ से एक प्रकार का कपिश वर्ण का निर्यास निकलता है जिसे जल में डालने से फूल जाता है ।
(२) इसकी त्वचा रंग बनाने के काम में ली जाती है ।
(३) यह पुष्प वर्ण भेद से-श्वेत; पीत और रक्त-तीन प्रकार का होती है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चित्रसंख्या ४१

कचनार

BAUHINIA VARIEGATA, LINN.

(Papilionaceae)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

कचूर

नाम **चित्र सँख्या–४२**

(१) संस्कृत–सटी (२) हिन्दी–कचूर

(३) गुजराती–षट् कचूर (४) मराठी–कचोरा

(५) अंग्रेजी–Zedoary (६) लेटिन–Curcuma zedoaria, (Rose).

नैसर्गिक वर्ग–Scitamineae.

प्राप्तिस्थान–यह ऊतरीय हिमालय प्रदेश, चटगांव में और भारत के अन्य प्रदेशों में इसकी सर्वत्र खेती की जाती है।

उपयोगी अंग–कन्द

रस–कटु तिक्त **वीर्य**–उष्ण **विपाक**–कटु

गुण—दीपन, रुच्य, ग्राही, कफच्छेदक, स्वर्य **दोषशमन**–वातकफ

श. स्त्र. प्रभाव–फुफ्फुस और महास्रोतस्

योग—

शट्यादि क्वाथ (मुखरोग)

शट्यादि चूर्ण (गुल्म; अजीर्ण)

रोगोपयोग –मुखरोग, अर्श, श्लेष्मल कास, अजीर्ण गुल्म, प्रसूतिजन्य दौर्बल्य, सूतिकारोग

मात्रा–२ से ४ माशा (चूर्ण)

वानस्पतिक विकृतियां—इसके कन्द में विकृति प्राप्त होती है। किन्हीं-किन्हीं कन्दों में रेशे होने से वह अनुपयोगी होती है।

विशेष—(१) इसमें 'उत्पत तैल' प्राप्त होता है–कर्नल चोपरा

(२) यह श्वेतप्रदर और पूयमेह में बहुत ही लाभप्रद है–रीड़

(३) "The corms are chewed by Combodian mothers who than apply them together with their saliva to the head and body of children suffering from convulsions."—*Basu & kirtikar*

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

कचूर

चित्र संख्या ४२

CURCUMA ZEDOARIA, (ROSE)
(Scitamineae)

वानस्पतिक वर्णन—यह क्षुप जाति की वनस्पति है। यह हल्दी के खेतों में उत्पन्न होती है।

मूल—कन्द, आंबाहल्दी के समान, हलका पीत वर्णयुक्त तान्त्वि, कपूर के समान गन्धयुक्त

पुष्प-पीत, गुच्छेदार

फल-गोलाकार, श्लक्ष्ण

बीज—श्वेत स्निग्ध

पत्र—चार से छः, पत्रके दोनों पृष्ठ स्निग्ध और बैंगनीवर्ण लिये हुए होते हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

कटेरी

नाम **चित्र संख्या–४३**

(१) संस्कृत—बृहती (२) हिन्दी—कटेरी (बड़ी)

(३) गुजराती—उभीरिंगणी (४) मराठा—डोरलें

(५) अंग्रेजी–Indian night shade. (६) लेटिन–Solanum indicum, Linn.

नसर्गिक वर्ग–Solanaceae.

वानस्पतिक वर्णन–यह चार से आठ फीट ऊंची बेंगन सदृश क्षुप जाति की वनस्पति है।

मूल—लम्बी, अगुष्ठाकारी, विभग्न बाह्यवर्ण पीताभ कपिश, अन्तर्वर्ण श्वेत और उग्रगंधयुक्त

पुष्प—पत्रों के सम्मुख निकलते हैं, १ से १–१।२ इंच व्यासयुक्त

तना—कपिश, मोटा, दानेदार (त्वक्)

फल—आंवले के समान, कृष्ण धब्बेयुक्त (अपक्व), पीत (पक्व)।

शाखा—बिल्ली के नांखुन के समान कंटकयुक्त

बीज—पीताभ कपिश वर्णयुक्त

पत्र—एकान्तर, एक ही पत्रग्रंथि पर २ से ३ पत्र निकलते हैं। दोनों पृष्ठ श्लक्ष्ण हरितवर्ण युक्त होते हैं।

प्राप्तिस्थान–यह भारत में प्रायः सर्वत्र प्राप्त होती है।

उपयोगी अंग–पंचाग

रस-तिक्त कटु **वीर्य**–उष्ण **विपाक**–कटु

गुण–ग्राही, स्वेदल **दोषशमन**–वातकफहर, पित्तवर्धक

श स. प्रभाव–फपफुस और त्वचा

योग—

दशमूलादि क्वाथ

रोगोपयोग—वातरोग, श्वासकास, अग्निमांद्य, **कफरोग**, शोथ, **मूत्राघात**

मात्रा–२ से ४ माशा

विशेष—इसकी मूल कफरोगों में विशेष व्यहृत होता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

कटेरी चित्र संख्या ४३

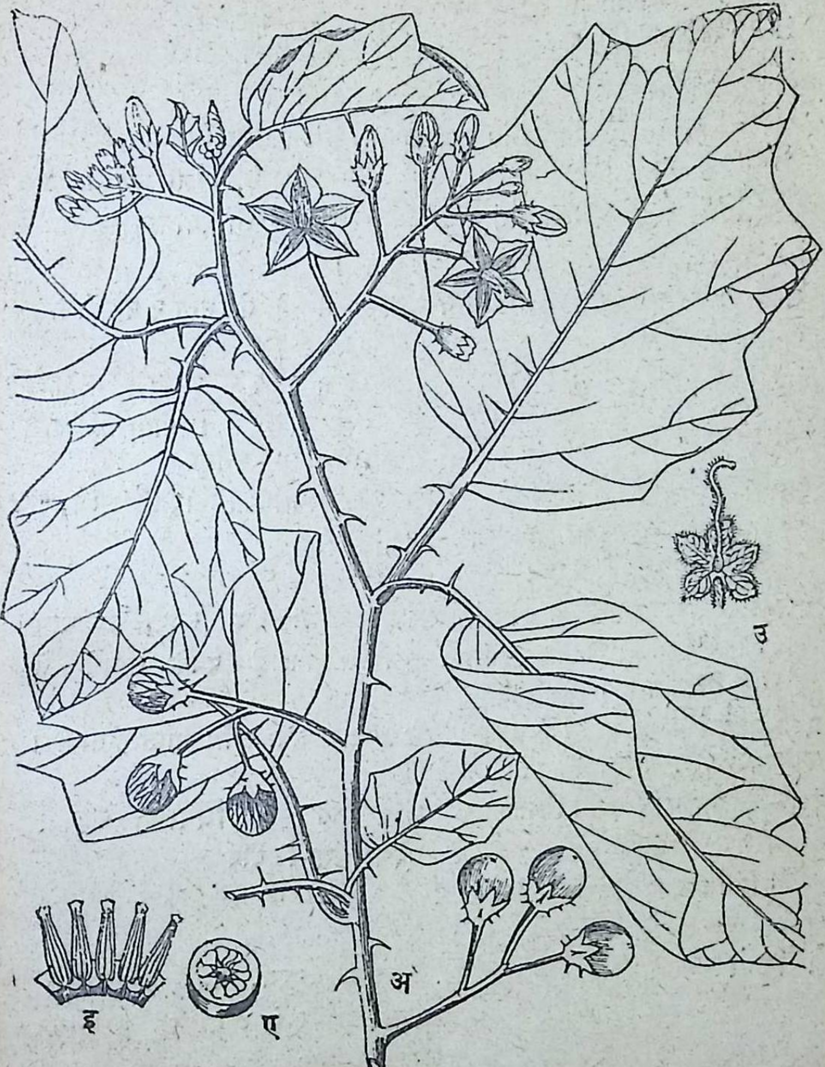

SOLANUM INDICUM, LINN.
(Solanaceae.)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

कडवी तोरई

नाम **चित्र संख्या—४४**

(१) संस्कृत–कोशातकी (२) हिन्दी–कड़वी तोरई

(३) गुजराती– तोरई (४) मराठी–कडुदोडकी

(५) अंग्रेजी-Actingled cucember. (६) लेटिन–Luffa acutangula, Roxb. (Luffa amara)

नैसर्गिक वर्ग-Cucurbitaceae.

वानस्पतिक वर्णन–यह लता जाति का वनस्पति है जो वर्षाऋतुमें खेतों में विशेष उत्पन्न होती ।

मूल–छः से दस इंच लम्बी, विभग्न पीताभ श्वेतवर्णयुक्त

पुष्प–एकलिंगी, ये भिन्न २ पत्रकोणोंसे नकलते हैं

फल– ३ से ६ इंच लम्बा, १।२ इंच मोटा होता है । पीताभरोयेंदार सुखने पर भूरेवर्णयुक्त

शाखा–पीताभनील, पेन्सिल के समान मोटी और भीतरका भाग सछिद्र होता है ।

बीज–भूरेकृष्णवर्णयुक्त १।२ इंच लम्बे, १।४ इंच चौड़े,

पत्र–एकान्तर, कहीं-कहीं श्वेत रेशेदार चार से छः इंच लम्बे, उर्ध्वभाग फीका हरा और ऊपर का भाग गहरा हरा होता है। पत्रके सामने से तंतु निकलते हैं ।

प्राप्तिस्थान—यह भारत में बहुत प्रसिद्ध है आर प्रायः सर्वत्र प्राप्त होती है ।

उपयोगी अंग–पंचाग

रस–किंचित कटु, कषाय तिक्त **वीर्य**–शीत **विपाक**—कटु

गुण–रेचक, वामक, नासाविरेचक, स्निग्ध **दोषशमन**–f दोष

श. स. प्रभाव–आन्त्र

रोगोपयोग—यकृतरोग, कुष्ट, अर्श, कामला, गुल्म, प्रमेह, उदररोग

मात्रा–चूर्ण-२ से ४ माशा

अनुपान–जल

विशेष—(१) यह श्रेष्ठ वामक वनस्पति है।

(२) इसमें तैल (fixed oil) की मात्रा विशेष हाती है

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

कड़वी तोरई चित्र संख्या ४४

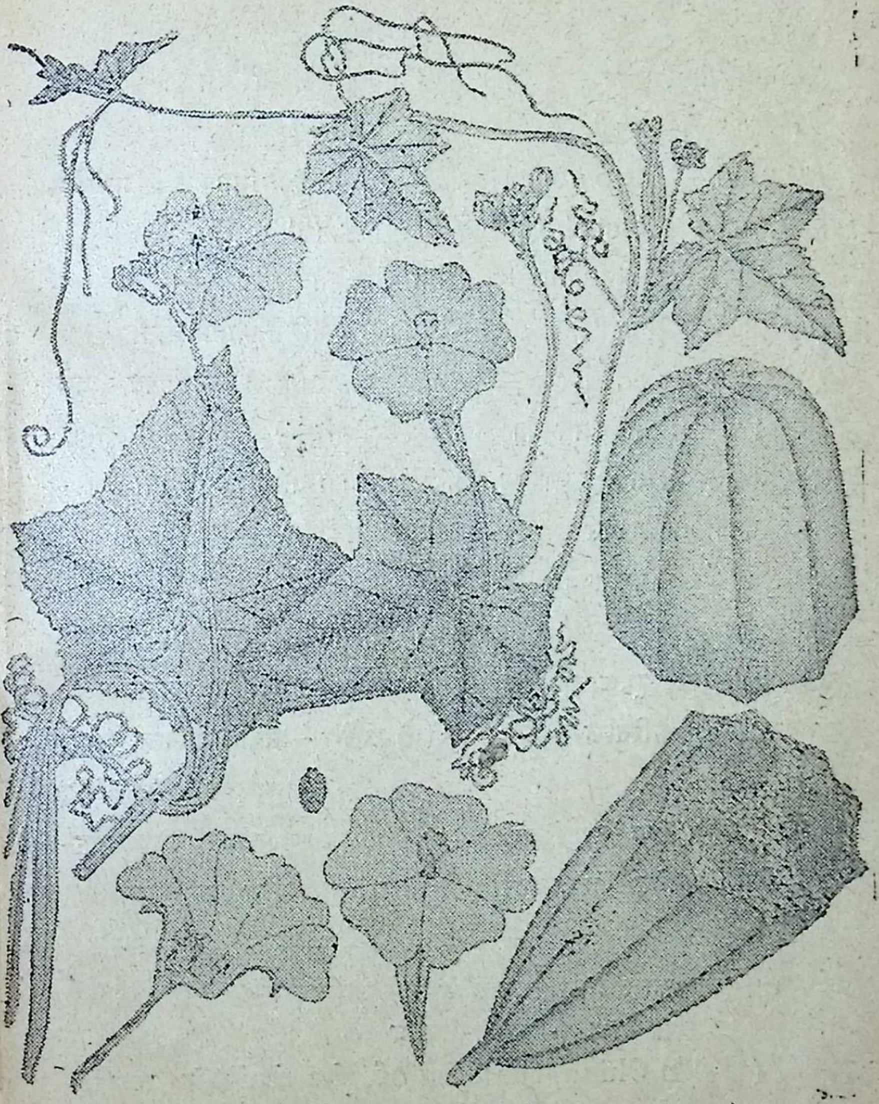

LUFFA ACUTANGULA, ROXB (LUFFA AMARA)
(Cucurbitaceae)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

कद्दू

नाम **चित्रसंख्या**–४५

(१) संस्कृत–कुष्माण्ड (२) हिन्दी–कोहला, कद्दू
(३) गुजराती–कोहळुं (४) मराठी–कोहका
(५) अंग्रेजी–White gourd (६) लेटिन–Benincasa hispida, (Thumb).

नैसर्गिक वर्ग-Cucurbitaceae

वानस्पतिक वर्णन–यह प्रसारिणी लता जाति की वनस्पति है।

मूल-साधारण छोटी
शाखा–पतला चतुष्कोणीय
पत्र-११. ५ सें. मी. व्यासयुक्त
पुष्प—एकलिंगी, पीताभश्वेत
फल–भूरे और श्वेतवर्णयुक्त, बडे ३० से ४० से. मी. लम्बें, रोमश

प्राप्तिस्थान–भारत के उष्ण प्रधान प्रदेशों में प्राय: सर्वत्र प्राप्त होती है।

बीज–चपटे, पीताभश्वेत

उपयोगी अंग—फलमज्जा

रस-मधुर **वीर्य**—शीत **विपाक**–मधुर

गुण–वृष्य, मेघ्य, मूत्रल, गुरु

श. स. प्रभाव–मस्तिष्क

योग—

कुष्माण्ड खण्ड (रक्तपित)
कुष्माण्डावलेह (क्षय, कास)

दोषशमन–वातपितहर, कफवर्धक

रोगोपयोग—आमाशयीप्रदाह, अर्श, मूत्रकृच्छ, रक्तपित, अपस्मार, **मानसिक-रोग**, क्षय, कास

मात्रा—४ माशा से १ तोला तक

विशेष-(१) इसका तैल स्नायुमण्डल के लिये लाभप्रद है
(२) **प्रतिनिधि वनस्पति**–तरबूज
(३) "In China, the rind of the fruit is regarded as a cooling medicine."—*Kirtikar and Basu.*

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चित्र संख्या ४५

कद्दू

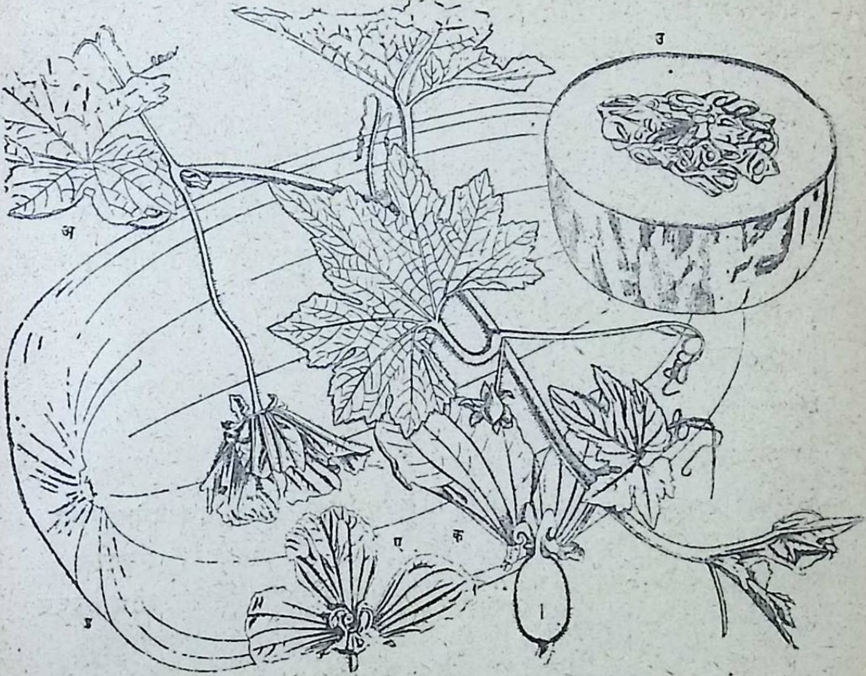

BENINCASA HISPIDA, (THUMB)

(Cucurbitaceae.)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

कंटकरंज (कुबेराक्ष)

नाम **चित्रसंख्या**–४६

(१) संस्कृत–कुबेराक्ष (२) हिन्दी–कंटकरंज

(३) गुजराती–काचका (४) मराठी–सागरगोटा

(५) अंग्रेजी–Indian beech (६) लेटिन–Pongamia glabra, Vent.

नैसर्गिक वर्ग–Papilionaceae.

वानस्पतिक वर्णन–यह एक कण्टकयुक्त लता जाति की वनस्पति है।

मूल–साधारण **पुष्प**–अनेक, पीताभ श्वेत

शाखा–सघन और परस्पर मिली हुई। **फल**–दो से तीन इंच लम्बे, डेढ इंच चौड़े चपटे, बारीक।

पत्र–लम्बगोल **बीज**—कठोर त्वचायुक्त खाकीवर्णवाले

प्राप्तिस्थान–यह भारत में प्राय: सर्वत्र प्राप्त होती है।

उपयोगी अंग–त्वक् और तैल

रस–तिक्त कषाय **वीर्य**– उष्ण **विपाक**–कटु

गुण–तीक्ष्ण, कृमिघ्न, **दोषशमन**–पितकफ

श स. प्रभाव–त्वचा

योग— **रोगोपयोग**—अर्श, व्रण प्रमेह, कृमि, श्वेतप्रदर, **त्वग्रोग** उदरशूल, यकृतरोग, शोथ, ज्वर

करजारिष्ट (यकृतवृद्धि)

ज्वरनाशक चूर्ण (मलेरिया ज्वर)

उदरशूलनाशक चूर्ण (उद्ररोग)

मात्रा–१ से २ तोला (अरिष्ट)

अनुपान–जल या मधु

विशेष–(१) इसके बीजों में प्राप्त 'कटु तत्व' का दस से बीस सेन्टीग्राम तक सविराम ज्वरों में दिया जाय तो यह Quinine salt के समान गुणकारी है।

(२) इसके बीजों में २५.१३%तैल, १.९ कटुतत्व, ६.८% शर्करा आर ४.७ % लवण प्राप्त होते हैं।"

(३) यह पर्यायिक ज्वर में बहुत ही लाभप्रद है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

कंटकरंज (कुबेराक्ष) चित्रसंख्या ४६.

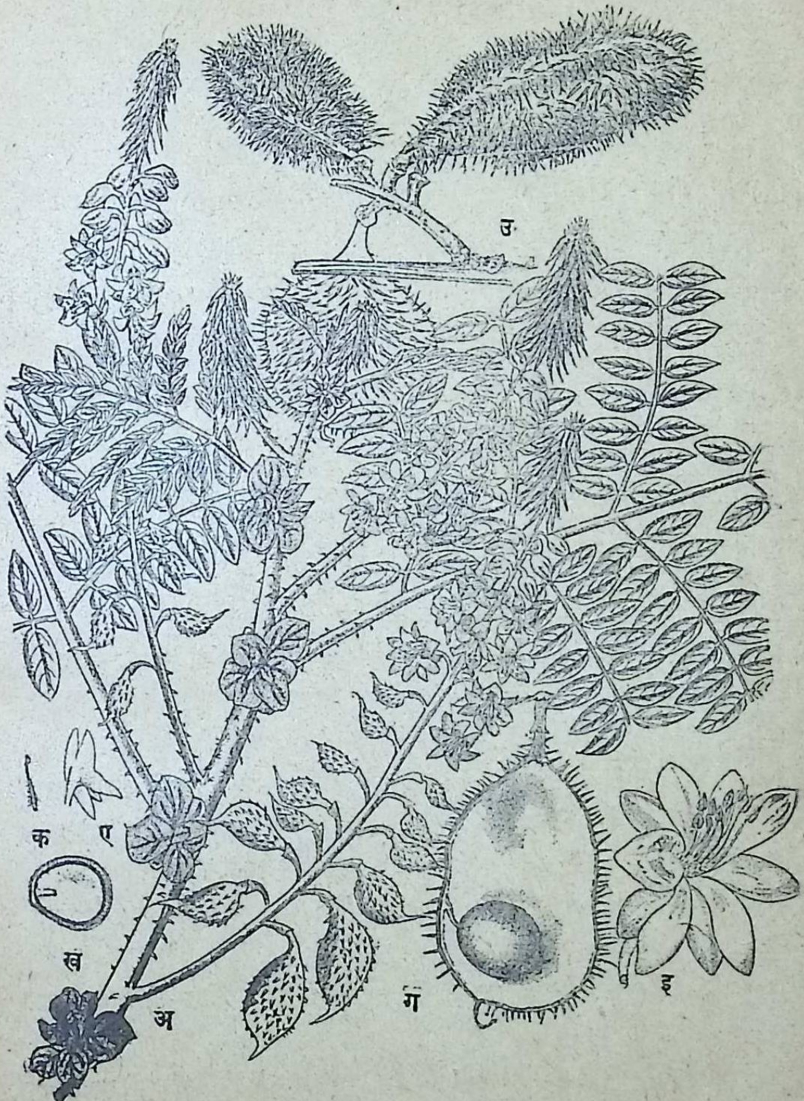

PONGAMIA GLABRA, VENT.
(Papilionaceae)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

कनेर

नाम **चित्र संख्या-४७**

(१) संस्कृत–करवीर (२) हिन्दी–कनेर

(३) गुजराती–कणेर (४) मराठी–कण्हेर

(५) अंग्रेजी–Oleander (६) लेंटिन–Nerium odorum, (Soland)

नैसर्गिक वर्ग–Apocynaceae.

वानस्पतिक वर्णन–यह गुल्म जाति की सर्वदा हरित रहने वाली वनस्पति है।

पुष्प–रक्त, श्वेत, गुलाबी

तना–मध्यमाकारी, स्निग्ध स्वेत **बीज** १.३ से. मी. लम्बे भूरे वर्णयुक्त

शाखा–स्निग्ध, हरिताभ श्वेत, साधारण रोमश

पत्र-तीन, तीक्ष्ण नोकदार १० से १५ से. मी. लम्बे

प्राप्तिस्थान—यह भारत, चीन और जापान में प्राय: सर्वत्र प्राप्त होती है।

उपयोगी अंग–पंचांग; प्रधानतः मूल

रस–तिक्त कटु कषाय **वीर्य**–उष्ण **विपाक**–कटु

गुण–चक्षुष्य, ग्राही **दोषशमन**-वात कफ

श. स. प्रभाव–मस्तिष्क

योग– **रोगोपयोग**—कण्डू, अर्श, ज्वर, प्रमेह नेत्रप्रकोप, त्वग्रोग

करवीर तैल (त्वग्रोग)

मात्रा—१ से ४ रति (चूर्ण)

विशेष-(१) यह विषैली वनस्पति है अतः प्रयोग के समय मात्रा शुद्धाशुद्धिका ध्यान रखना आवश्यक है।

(२) पुष्पवर्ण भेदसे इसकी–श्वेत, रक्त और पीत–तीन जातियाँ होती हैं।

(३) पीत जाति (Thevetia Neriefolia) की कनेर की हृदय पर 'डिजिटेलिस' के समान होती है। यद्यपि यह हृदय को बल प्रदान करती है किन्तु अधिक मात्रा में प्राणघातक है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

कनेर चित्र संख्या ४७

NERIUM ODORUM, (SOLAND)
(Apocynaceae.)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

कपास

नाम **चित्र संख्या-४८**

(१) सस्कत-कार्पास (२) हिन्दी-कपास

(३) गुजराती-कपास (४) मराठी-कापूस

(५) अंग्रेंजी-Levant cotton plant (६) लेटिन-Gossypium herbaceum, Linn-

नैसर्गिक वर्ग-Malvaceae.

वानस्पतिक वर्णन—यह ३ से ४ फीट ऊंची क्षुप जाति की वनस्पति है।

मूल—जमीन में गहरी जाती है, वाह्य भाग कृष्ण और अन्तर्भाग श्वेत वर्णयुक्त, सुगन्धित, कषाय

पुष्प—पीत और रक्तवर्णयुवत, पत्र कोणीय १ से १-१।२ इंच लंबा २ से ३ इंच व्यासयुक्त, सुगन्धित

तना—साधारण गोल)रसयुक्त

फल—३ से ४ खंड युक्त, हरित (अपक्व) रक्ताभ (पक्व)

।—हरित

बीज-कृष्णवर्णयुवत, कठोर, १।४ इंच लंब

प्राप्तिस्थान—भारतवर्ष में यह प्राय: सर्वत्र प्राप्त होती है।

उपयोगी अंग—पंचांग

रस—मधुर **वीर्य**—शीत **विपाक**—मधुर

गुण—लघु, वल्य, स्तन्यजनन, , ग्राही अपलेपक

दोषशमन— वात

प्रभाव—गर्भाशय और नाडी संस्थान

रोगोपयोग-श्रम, दाह मूर्च्छा, **पूयस्राव** रक्तस्राव, आर्तवदोष, मूत्रदाह, **श्वेतप्रदर**

मात्रा-२ से ४ माशा

विशेष-(१) वर्णभेद से कपास-श्वेत और कृष्ण-दो प्रकार का होता है।

(२) यह धतूरे के विष में लाभप्रद है।

(३) इसके मूलत्वक की क्रिया गर्भाशय पर 'अर्गट' के समान होती है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

कपास

चित्र संख्या ४८

GOSSYPIUM HERBACEUM, LINN. (Malvaceae.)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

कपीला

नाम चित्रसंख्या—४९

(१) संस्कृत—कम्पिलक (२) हिन्दी—रोहिना, कपीला

(३) गुजराती–कपीलो (४) मराठी–कपिला

(५) अंग्रेजी—Kamala (६) लेटिन–Malloto philipinensis, (Muell)

नैसर्गिक वर्ग—Euphorbiaceae

वानस्पतिक वर्णन—यह बीस से तीस फीट ऊंची वृक्ष जाति की वनस्पति है।

मूल—साधारण मोटी

तना—तीन से चार फीट गोल; इसकी त्वक् १।४ इंच मोटी होती है।

शाखा—प्रायः मूल से निकलती है।

पत्र–गूलरके पतोंके समान, किन्तु उनसे कुछ छोटे

पुष्प—श्वेत, पीत वर्णयुक्त

फल—मकोय के समान, ये ग्रीष्मकाल में पकते हैं। इनको रक्तवर्णके होते ही तोड़कर कूटकर कपीला प्राप्त करते हैं

प्राप्तिस्थान—यह हिमालय में काश्मीर से पूर्वकी ओर तथा बंगाल और बर्मा तक और सिन्धसे दक्षिणी लंका तक प्रायः सर्वत्र प्राप्त होते हैं।

उपयोगी अंग—फलपराग

रस—कटु **वीर्य**—उष्ण **विपाक**—कटु

गुण—रेचक, व्रणशोधक, रोपक **दोषशमन**—पित कफ

श. स. प्रभाव—आन्त्र

योग—

काम्पिलक चूर्ण

मात्रा—३ से ८ माशा

रोगोपयोग-उदरकृमि, गुल्म, विबन्ध, कफोदर, व्रण, दद्रु

अनुपान—दूध, दहि या शहद

विशेष—(१) यह शीतल जल में अघुलनाशील है और अलकोहल और ईथर में पूर्णतया घुल जाता है।

(२) इसमें सबसे महत्वपूर्ण तत्व Rottlerin रहता है। इसके अतिरिक्त Isorottlern नामक तत्व भी इसमें प्राप्त होता है।

(३) केस और महस्कर के अनुसन्धानुसार यह वनस्पति उदर कृमिघ्न के लिये अनुपयुक्त है।

(४) दर्पघ्न वनस्पति—मस्तगी, अनीसूत और सुनारा

(५) प्रतिनिधि वनस्पति—वायविडंग

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चित्र संख्या ४९

कपीला

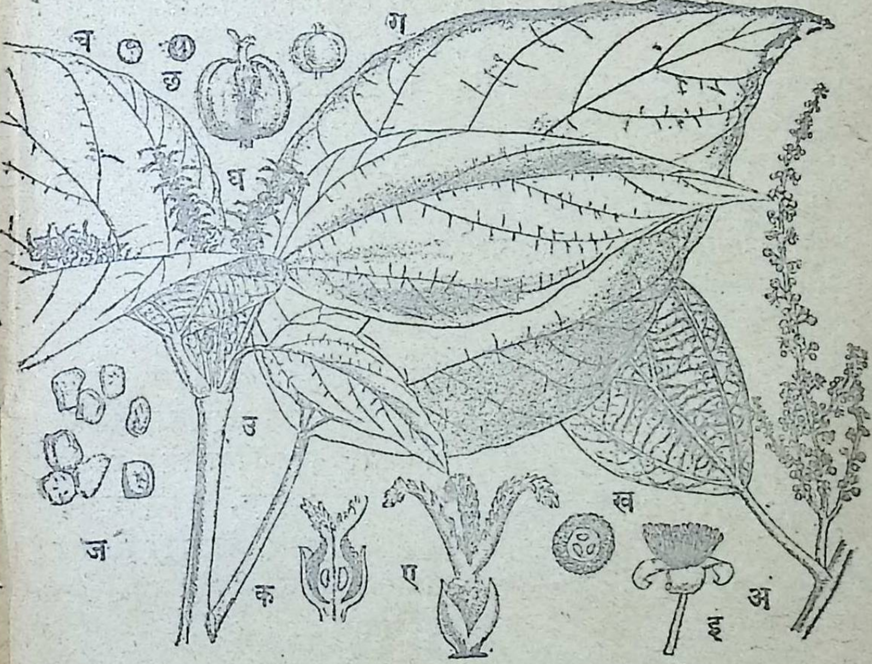

MALLOTO PHILIPINENSIS, (MUELL)
(Euphorbiaceae)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

कपूर

नाम **चित्र संख्या—५०**

(१) संस्कृत—कर्पूर (२) हिन्दी—कपूर

(३) गुजराती—कपूर (४) मराठी—कापूर

(५) अंग्रेजी—Camphor. (६) लेटिन–Cinnamum camphora, F. Nees.

नैसर्गिक वर्ग—Lauraceae,

वानस्पतिक वर्णन—यह वृक्ष जाति की वनस्पति के निर्यास से प्राप्त होता है। इसके पेड तजजाति में सम्मिलित किये जाते हैं। यह सर्वदा हरित रहनेवाली वनस्पति होती हैं।

मूल—साधारण

तना-कीत्वक्–विषम, बाह्यावरण खुरेदारा, अन्तविरण श्लक्ष्ण

शाखा—साधारण

पत्र—साधारण, एकान्तर, पीताभहरित

पुष्प—पीताभश्वेत या रक्ताभश्वेत

फल—मटर के समान

बीज—कपूर समान सुगंधयुक्त, छोटें,

प्राप्तिस्थान—यह चीन और जपान में अधिकत: प्राप्त होता है।

उपयोगी अंग—सार

रस—मधुरतिक्त

वीर्य—शीत **विपाक**—कटु

गुण—सुगन्धित, स्वेदल, उत्तेजक, चक्षुष्य लेखन

दोषशमन—कफपित्तहर, वातोत्तेजक

रोगोपयोग–मुखदोर्गन्ध **विसूचिका,** उदरशूल, हृददार्बल्य प्रमेह, पूयमेंह, **ज्वरातिसार**

श. स. प्रभाव—वातसंस्थान

योग—

कर्पूरासव (विसूचिका)

अर्ककपूर (विसूचिका)

अमृत बिंदु (अजीर्ण, अतिसार)

मात्रा—१० से २० बूंद (आसव)

अनुपान—जल

विशेष-(१) भारतवर्ष में उन्नीसवीं शताब्दी के लगभग एक पेड के द्वारा कर्पूर प्राप्त करने का प्रयत्न किया था।

(२) शुद्ध कर्पूर परीक्षा—

प्रथम कपूर को किसी पतले कागज में लपेट कर जलाने पर यदि वह यकायक जल उठे तो असली समझना चाहिए।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

कपूर

चित्र संख्या ५०

CINNAMUM CAMPHORA, F. NEES. (Lauraceae)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

कपूरकचरी

नाम **चित्रसंख्या—५१**

(१) संस्कृत–अम्लहरिद्रा (२) हिन्दी–कपूरकचरी

(३) गुजराती–कपूरकाचरी (४) मराठी–कापूरकाचरी

(५) लेटिन- Hedychium spicatum, Ham.

नैसर्गिक वर्ग—Scitamineae.

वानस्पतिक वर्णन—यह लता जाति की वनस्पति है ।

मूल सुगन्धित कन्दसमान, **पुष्प**–पीताभ श्वेत

शाखा-गोल, हरित, श्लक्ष्ण, कहीं रोमश **फल**–श्लक्ष्ण, गोल

पत्र–लम्बे बर्छाकारी, स्निग्ध

प्राप्तिस्थान–यह हिमालय की तलहटियों में, नैपाल और कुमाऊं में पाचहजार फीट की ऊंचाई तक सर्वत्र प्राप्त होते हैं।

उपयोगी अंग—कन्द,

रस—कटु, तिक्त कषाय; **वीर्य**—शीत **विपाक**—कटु

गुण–तीक्ष्ण **दोषशमन**—वातकफ, पित्तकारक

श. स. प्रभाव—सर्वशरीर

रोगोपयोग–कास, श्वास, मूत्रसंस्थान्धिरोग

मात्रा—चूर्ण२ से ६ मांशा

विशेष—(१) इस वनस्पति की मूल को पृथ्वी से निकाल कर उष्ण जल में कुछ गर्म कर काम में लेते हैं ।

(२) इसमें उत्पत तैल की मात्रा विशेष प्राप्त होती है ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

कपूरकचरी

चित्र संख्या ५१

HEDYCHIUM SPICATUM, HAM,
(Scitamineae)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

कबावचीनी

नाम चित्रसंख्या—५२

(१) संस्कृत—कंकोल (२) हिन्दी-कबाबचीनी, शीतळचीनी
(३) गुजराती—चणक कबाब (४) मराठी—कंकोळ
(५) अंग्रेजी—Chueb piper, (६) लेटिन-Piper cubeba, Miquel.
नैसर्गिक वर्ग-Piperaceae

वानस्पतिक वर्णन-यह पराश्रयी क्षुप जाति की वनस्पति है।

मूल—साधारण
तना—चतुष्कोणीय श्लक्षण
पत्र—साधारण एकान्तर छोटे
पुष्प—पीताभश्वेत
फल-छोटी कृष्णाभश्वेत
बीज—गोल और मिर्च की भाति

प्राप्तिस्थान—यह भारत, सुमात्रा ओर मलाया द्वीपसमूहों में प्रायः सर्वत्र प्राप्त होती है। प्रधानतः इसकी उत्पति जावा में होतों है।

उपयोगी अंग—फल
रस-कटु तिक्त **वीर्य**-उष्ण **विपाक**-कटु
गुण-तीक्ष्ण, मूत्रहमिहर, लघु, दीपन, **दोषशमन**-कफवात
श. स. प्रभाव-वृक्क

योग—
(१) कंकोल चूर्ण १० ग्रेन—
फिटकरी ५ ग्रेन
दोनों का मिश्रण (कष्टसाध्यपूयमेह)

(२) कंकोल—१० ग्रेन
मोदका जल-३० बूंद और
त्वक् जल—१ औंस
} बालकास, स्वर भंग

रोगोपयोग-मूत्रावरोध, स्वरभंग, मूत्रवृद्धि, आमातिसार, शुक्रसम्बधीरोग, पूयमेह, कफवात और आमरोग

मात्रा—२ से ४ माशा (चूर्ण),
४ से ९ माशा (क्वाथ)
५ से २० बिन्दू (तैल)

अनुपान-जल, और तक्र रोगाबलाबलानुसार

विशेष-(१) इसमें १०%से १५%तक उत्पत तैल प्राप्त होता है। इस तैल में चिताकर्षक सुगन्ध होती है।
(२) प्रतिनिधि वनस्पति-दालचीनी, और इलायची, अकरकरा पीपली (यकृतरोग)
(३) दर्पनाशक वनस्पति-संदल, और गुलाब

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

कबावचीनी

चित्र संख्या ५२

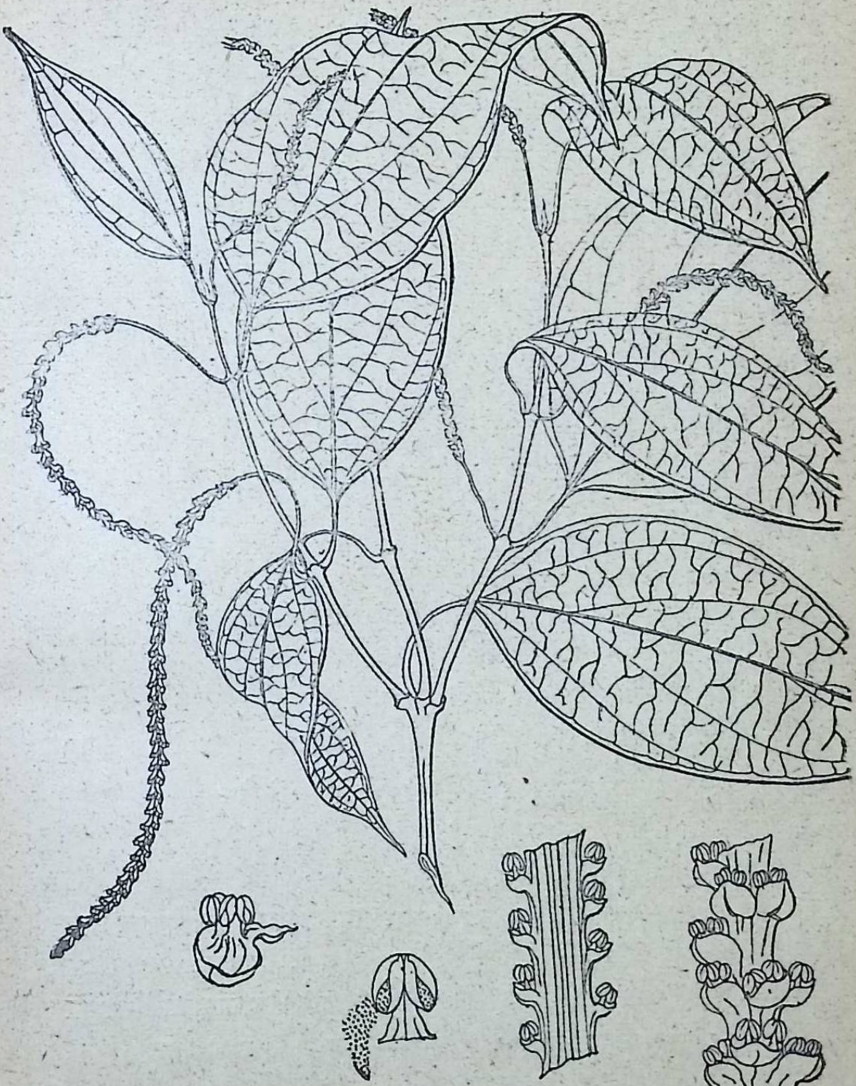

PIPER CUBEBA, MIGUEL.
(Piperaceae)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

कम्भारी (गम्भारी)

नाम **चित्रसंख्या—५३**

(१) संस्कृत—काश्मरी (२) हिन्दी—कंभारी
(३) गुजराती—शिवण (४) मराठी—शिवण
(५) अंग्रेजी—Comb teak (६) लेटिन-Gmelina arborea, Roxb.

नैसर्गिक वर्ग—Verbenaceae.

वानस्पतिक वर्णन—यह साठ फीट ऊंची वृक्ष जाति की वनस्पति है ।

मूल—साधारण **पुष्प**-पीत

तना—सीधा; लगभग छः फीट गोल, त्वक श्वेत और कपिश वर्णयुक्त **फल**—इक इंच लम्बा मोटा और श्लक्ष्ण पीत (पक्व) लगभग १ इंच लम्बे

शाखा-गोल कहीं २ चतुष्कोणीय

पत्र—स्निग्ध पीताभ हरित, पत्रनाल-२ से ३ इंच लम्बी

प्राप्तिस्थान—यह भारत लंका, और फिलिपाइन द्वीपसमूह में प्रायः सर्वत्र प्राप्त होती हैं ।

उपयोगी अंग—फल, मूल त्वक् और फल

रस—मधुर, तिक्त, कषाय **वीर्य**—उष्ण **विपाक**—मधुर

गुण-दीपन, भेदन, मेध्य, रसायन (मूलत्वक्)संग्राही वातल (उष्ण); बृंहण, शुक्रल, मूत्रल (फल) **दोषशमन**—त्रिदोष

श. स. प्रभाव—महस्रोतस् **रोगोपयोग**-तृष्णा, दाह, रक्तपित्त, क्षय, ज्वर, अर्श, विबन्ध, मूत्रकृच्छ्र, कृमिरोग, वातपित, पैत्तिकज्वर

योग—

दशमूलादि क्वाथ (वातरोग) **मात्रा**—(चूर्ण) २ से ४ माशा

विशेष-(१)

"हृद्यं विबन्धघ्नं पित्तसृग्वात नाशनम् ।
केश्यं रसायनम् मेध्यं काश्मर्यं फलमुच्यते ।।"—सुश्रुत

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

कम्भारी (गम्भारी) चित्र संख्या-५३

GMELINA ARBOREA, ROXB. (Verbe naceae)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

करंज

नाम **चित्र संख्या—५४**

(१) संस्कृत–करंज, पूतिकरंज (२) हिन्दी–करंज

(३) गुजराती–करंज (४) मराठी–घाणेरा करंज

(५) अंग्रेजी–Indian beech (६) लेटिन–Pongamia glabra; Vent.

नैसर्गिक वर्ग–Leguminosae.

वानस्पतिक वर्णन–यह ५० से ६० फीट ऊंची वृक्ष जाति की वनस्पति है।

मूल—साधारण सूत्रवत्

तने-की-त्वक्-कोमल, कपिश, ग्रंथियुक्त

शाखा–साधारण गोल

पत्र—श्लक्ष्ण, हरितवर्णयुक्त, ५ से ४ इंच लम्बे, पत्र संख्या में ५ से ९.

पुष्प—नीले, श्वेत और बैंगनी

फल—मोटी, कठोर, २ इंच लम्बी और १ इंच चौड़ी

बीज—एक या दो

प्राप्तिस्थान—यह भारत में प्रायः सर्वत्र प्राप्त होता है। मध्य और दक्षिण भारत में यह बहुतायतसे प्राप्त होताहै।

उपयोगी अंग—त्वक् और तैल

रस—तिक्त कषाय

गुण—तीक्ष्ण, कृमिघ्न

श. स. प्रभाव—त्वचा

वीर्य—उष्ण **विपाक**—कटु

दोषशमन–पितकफ

रोगोपयोग–अर्श, त्वग्रोग, जलोदर, मूत्ररोग, अर्बुद

योग—

करंजादि चूर्ण (उदररोग)

करंजादि तैल (त्वग्रोग)

मात्रा–चूर्ण २ से ६ माशा

विशेष-(१) इसके बीजों से कपिशवर्ण तैल निकलता है।

(२) इससे एक विशिष्ठ प्रकार का निर्यास (गोंद) भी प्राप्त होता है।

(३) इसमें कफ निसारक गुणों के कारण श्वासनालिका प्रदाह और कुक्कुर कास में बहुत लाभप्रद है।

(४) इसके बीज 'मत्स्य-विष' (Fish poison) के उपयोग मे लेते है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चित्र संख्या ५४

करंज

PONGAMIA GLABRA, VENT.

(Leguminosae)

National Ayurvedic Library
Punjabi Bagh, New Delhi-26
00 1774

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

कलुंबो

नाम चित्र संख्या–५५

(१) संस्कृत–कपोल वदी (२) हिन्दी–कलुंव

(३) गुजराती–कलूंबो (४) मराठी–कलस का वदा

(५) लेटिन-Jateorhiza palmata, Miers.

नैसर्गिक वर्ग—Menispermaceae.

वानस्पतिक वर्णन–यह एक लता जाति की वनस्पति है।

मूल–मांसल पुष्प- पीताभ श्वेत

तना—श्लक्षण चतुष्कोणीय फल–छोटे माँसल, गोल

पत्र–एकान्तर पत्राग्र नत.

प्राप्तिस्थान–यह प्रधानतः दक्षिण अफ्रिका में उत्पन्न होती है।

उपयोगी अंग–मूल

रस—कटु वीर्य–उष्ण विपाक—कटु,

गुण—वल्य, कटु पौष्टिक अग्निवर्द्धक दोषशमन–कफ,पित सारक

श. स. प्रभाव–पाचन संस्थान

रोगोपयोग–गर्भावस्था में वमन, आन्त्रदाह, प्रवाहिका आमावदिपक विकार

मात्रा—चूर्ण २ से ४ माशा अनुपान–उष्ण जल

विशेष–(१) यह वनस्पति प्रधानतः अफ्रिका के लोग प्राचीन काल से परिचित थे वहां से यह पूर्तगाल निवासियों द्वारा यरोप में प्रचारित हुई वहां से मद्रास बंगाल और कलकत्ता में लाई गई।

(२) यह वालका के दन्तोद्भेक काल में होने वाली प्रवाहिका में विशेष लाभप्रद है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

कलुंबो

चित्र संख्या ५५

JATEORHIZA PALMATA, MIERS.
(Menispermaceae):

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

कमल

नाम **चित्र संख्या—५६**

(१) संस्कृत–पद्म (२) हिन्दी–कमल

(३) गुजराती -कमल (४) मराठी–कमल

(५) अंग्रेजी–Lotus (६) लेटिन–Nelbium speciosum, willd.

नैसर्गिक वर्ग–Compositae.

वानस्पतिक वर्णन–यह जल में उत्पन्न होने वाली क्षुप या लता जाति का वनस्पति है।

पुष्प–श्वेत, रक्तभानील, पुष्पकेशर पीतवर्णयुक्त

तना–छोटी,

शाखा—लता समान प्रसृरणशील; इनको पद्मकोश कहते हैं
इसको मृणाल भी कहते हैं, इसका कोमल मध्यभागरिक्त उपर का भाग रोमश।

इनको कमलगट्टे कहते है।

पत्र—गोल, बडे, आकके पत्तां के समान, प्याले के आकारयुक्त, जलमें तैरते हुए होते हैं।

प्राप्तिस्थान–यह भारत में प्रायः सर्वत्र प्राप्त होता हैं।

उपयोगी अंग–पंचाग; प्रधानतः पुष्प और फल

रस—मधुर तिक्त **वीर्य**—शीत **विपाक**—मधुर

गुण–शीतल; बीज-पौष्टिक गर्भस्थापक **दोषशमन**—कफपितहर

श. स. प्रभाव—शरीरतापकेन्द्र **रोगोपयोग**-मूत्रकृच्छ, वमन, विसर्प, पैतिकरोग, अतिसार, विसूचिका

योग—

उत्पलादिघृत (गर्भपात)

विशेष— **मात्रा**–२ से ६ माशा (पुष्प चूर्ण)

(१) कमल पुष्पवर्ण भेदसे–श्वेत, रक्त और नील–तीन प्रकार का होता है।

(२) इसमें तीन उपक्षार और Nelumline नामक तत्व प्राप्त होता है

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चित्र संख्या ५६

कमल

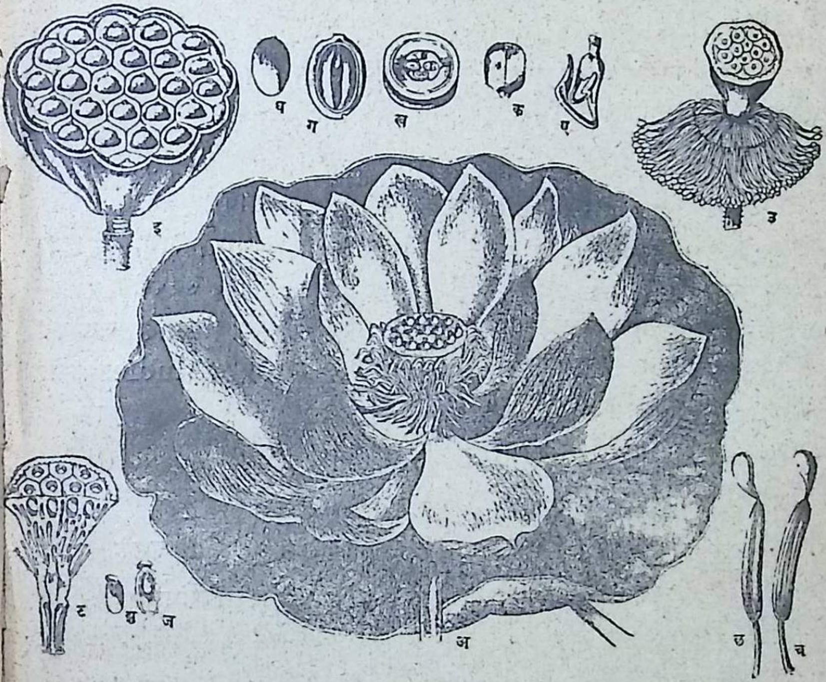

NELUMBIUM SPECIOSUM, WILLD
(Compositae)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

कसौंदी (कास)

नाम **चित्रसंख्या—५७**

(१) संस्कृत—कासमर्द (२) हिन्दी—कसौंदी

(३) गुजराती—कासुंद्रो (४) मराठी—कासविंदा

(५) अंग्रेजी-Round podded cassia (६) लेटिन-Cassia occidentalis, linn.

नैसर्गिक वर्ग—Caesalpiniaceae.

प्राप्तिस्थान—यह भारत में प्राय: सर्वत्र प्राप्त होती है।

उपयोगी अंग—पंचांग; विशेषत: पत्र और बीज.

रस—तिक्त मधुर **वीर्य**—उष्ण **विपाक**-कटु

गुण-पाचन, कंठशोघ्न, मूत्रजनन, बल्य **दोषशमन**—त्रिदोष

श.स. प्रभाव—आन्त्र **रोगोपयोग**—अजीर्ण, कास, हिक्का, श्वास, उदररोग, बाल-कुक्कुरकास, जलोदर (West Indies), प्रमेह

योग—

प्रवालभस्म (कुक्कुटकास)

मात्रा—प्रवालभस्म-१/४ से २ रति

पत्रचूर्ण—२ से ४ माशा

अनुपान—जल

विशेष-(१) इसके पत्रों में सनाय के समान विरेचन गुण है। इसके अन्य भागों की अपेक्षा बीजों में 'विरेचन' तत्व विशेष होता है।

(२) इसकी वर्णभेद से तीन जातियां होती हैं। उनमें काली कसौंदी (Cassia purpurea, linn) अन्न जातियों से गुणदृष्ट्या वहुत महत्वपूर्ण है।

(३) इसमें प्रधानत: निम्नांकित चार रसायनिक तत्व प्राप्त होते हैं—(क) Emodin (ख) Oxymethyl anthraquinones ग) Toxal bumin.

८

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

कसौंदी (कास)

चित्र संख्या ५७

CASSIA OCCIDENTALIS, LINN. (Caesalpiniaceae)

वानस्पतिक वर्णन—यह ३ से ६ फीट ऊंची क्षुप जाति की वनस्पति है। जो वर्षाऋतुमें विशेष उत्पन्न होती है। इसका क्षुप चकवड से मिलता जुलता होता है।

मूल—क्षुद्र

तना—साधारण गोल

शाखा—कोमल, रेखायुक्त

पुष्प—पीतवर्ण

फली—४ से ५ इंच लम्बी, मोटी और चपटी होती हैं।

बीज—संख्या में १० से २० होते हैं।

पत्र—संयुक्तदल, पत्रक्रम एकान्तर, गाल, वर्छाकार, उर्ध्वभाग श्लक्षण, अघोभाग खर

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

काकडा सिंघी

नाम **चित्र संख्या–५८**

(१) संस्कृत–कर्कट श्रृंगी (२) हिन्दी–काकडा सिंघी

(३) गुजराती–काकडा (४) मराठी–काकडा

(५) अंग्रेजी–Crabs claw. (६) लेटिन–Rhus succedanea, linn.

नैसर्गिक वर्ग–Anacardiaceae

वानस्पतिक वर्णन–यह ४० फीट या उससे ऊंची वृक्ष जाति की वनस्पति है।

मूल–नवीन मूल श्लक्षण

पुष्प–कृष्णनाडीयुक्त पत्रों से आधे लंबे.

तना–श्वेत त्वक्युक्त,

फल–हलके कपिश वर्णयुक्त

शाखा—मध्यमाकारी श्लक्षण

पत्र–काषयुक्त, पत्र म अभिमुख ६ से १५ सें. मीं. लम्बे

प्राप्तिस्थान—यह भारत में विशेषत: पंजाव और सीमाप्रांत में वहुतायत से प्राप्त होती है।

उपयोगी अंग–कृमिज कोष

रस–तिक्त कषाय **वीर्य**–उष्ण **विपाक**–कटु

गुण–कफच्छेदक, लघु **दोषशमन**–वातकफ

श. स. प्रभाव–फुफ्फुस **रोगोपयोग**–वमन, कास, श्वास, क्षयजकास, फुफ्फुसशोथ, अतिसार, बालरोग.

योग—

श्रृंगादि–चूर्ण (कास)

मात्रा—४ से ८ रति

अनुपान—जल.

विशेष–(१) पंजाब में इस वृक्ष का व्यवहारिक नाम 'कक्कर' है।

(२) इसके पत्रा या पत्रावृन्त पर पितकोष के चिन्ह प्राप्त होते हैं। ये श्रृंगके आकारवाले होते हैं। किन्तु ये श्रृंग(Galls) आकार में एक दूसरेसे भिन्न होते हैं। इन्हींको काकडा सिंघी कहते हैं। ये अंगुर रक्ताभ कपिश वर्णयुक्त, १ से २ इंच लम्बी और १/२ से १ इंच चौडी होता है। इनमें तारेपीन के तैल समान गन्ध आती है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

काकडा सिंघी

चित्र संख्या. ५८.

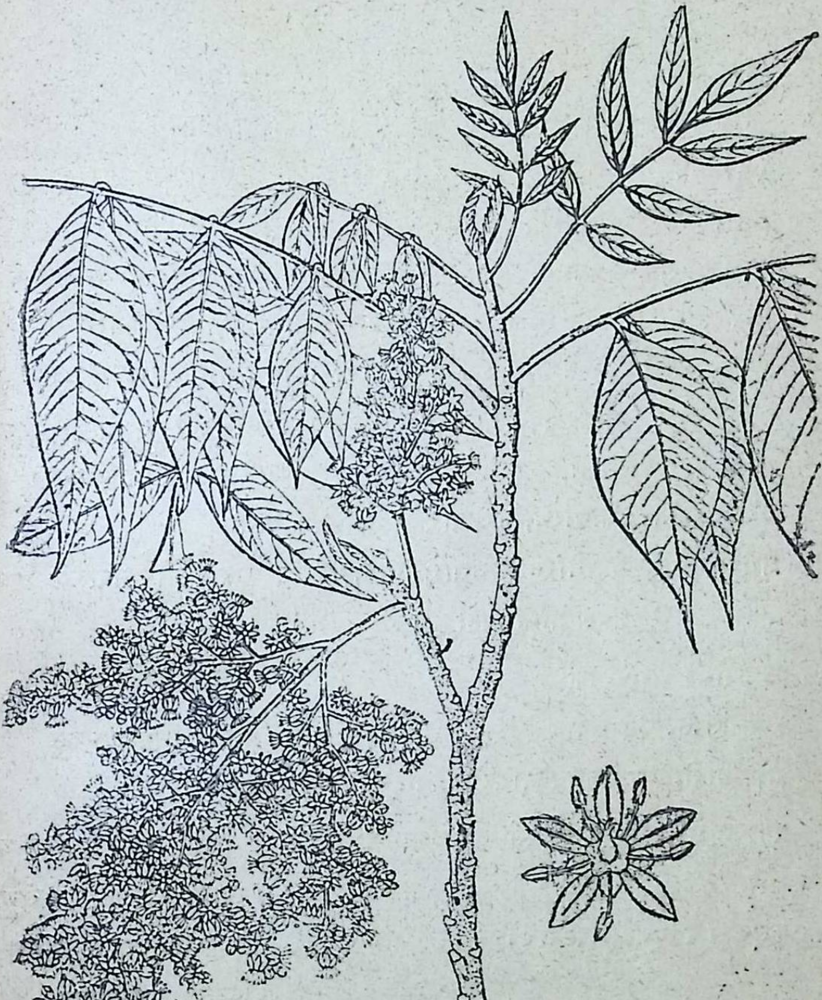

RHUS SUCCEDANEA, LINN.

(Anacardiaceae)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

कायफल

नाम **चित्रसंख्या-५९**

(१) संस्कृत-कटफल (२) हिन्दी-कायफल

(३) गुजराती-कायफल (४) मराठी—कायफल

(५) अंग्रेजी-Boxmyrtte (६) लेटिन-Myrica nagi, Thunb.

नैसर्गिक वर्ग-Myricaceae

वानस्पतिक वर्णन-यह सर्वदा हरित रहनेवाली वृक्ष जाति की वनस्पति है।

मूल-साधारण

तना-कीत्वक्-रक्ताभ, गुरु, उग्रगंध और कपिश वर्णयुक्त

शाखा-गोल, श्लक्ष्ण,

पत्र-एकान्तर, साधारण, गुच्छदार

पुष्प-रक्ताभश्वेत, मध्यमाकारी

फल-किंचित् मांसल,१।४ से १।२ इंच लम्बे, खिरनी के आकारयुक्त अण्डाकार, रक्ताभ,एकखण्डी

बीज-एक बीजी

प्राप्तिस्थान-यह भारत में उत्तार पंजाब, गडवाल, कुमायुँ और नेपालमें प्रायः सर्वत्र प्राप्त होता है।

उपयोगी अंग-त्वक्

रस-तिक्त, कटु कषाय **वीर्य**-उष्ण **विपाक**-कटु

गुण-ग्राही,उष्ण,क्षवजनक,शिरोविरेचन **दोषशमन**-वातकफ

श. स. प्रभाव-मुखःकी श्लैष्टिक कला

रोगोपयोग-प्रतिश्याय,मुखकण्ठशोथ, श्वास, दन्तरोग, कर्णरोग, व्रण; अतिसार, अपस्मार, बन्ध्यत्व, ग्रघ्रसीरोग.

योग-

कट्फलादि चूर्ण (अपस्मार)

मात्रा-१ से २ माशा.

अनुपान-जल (क्वाथ)

विशेष-(१) इसकी त्वक् चूर्ण का क्वाथ बना उपयोग में लिया जाता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

कायफल

चित्र संख्या ५९

MYRICA NAGI. THUNB.

(Myricaceae)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

कालमेघ

नाम **चित्रसंख्या–६०**

(१) संस्कृति—यवतिक्ता (बंगाल) (२) हिन्दी—कालमेघ

(३) गुजराती—लीलूंकरियात् (४) मराठी—ओंलकिरायल

(५) अंग्रेजी–The creat (६) लेटिन—Andrographis paniculata, Nees.

नैसर्गिक वर्ग–Acanthaceae.

वानस्पतिक वर्णन—यह १ से ३ फ़ीट ऊंची क्षुप जाति की वनस्पति है।

मूल-२से ५इंच लंबी, किंचित् सुगंधयुक्त, **पुष्प**-द्विओष्टीय, छोटे, कपिश वर्णयुक्त

तना—हरिताभश्वेत, **फल**-पीताभकपिश, १।२इंच लम्बा, और १।८ इंच चौडा, श्लक्ष्ण.

पत्र—पर्णविन्यास अशिमुख, संयुक्तदल उपपत्र रहित.

प्राप्तिस्थान—यह भारत मे बंगाल में प्रधानतः प्राप्त होती है।

उपयोगी अंग-पंचाग

रस—तिक्त कटु **वीर्य**--उष्ण **विपाक**-कटु

गुण-मृदुरेचक, रक्तशोधक, पाचक, स्निग्ध, गुरु **दोषशमन**-त्रिदोष

श. स. प्रभाव--सर्वशरीर; प्रधानतः यकृत

योग—

आलुईयोग (बालातिसार:, वमन)

कालमेघासव (जीर्णज्वर, यकृत-प्लीहावृद्धि)

रोगोपयोग-जलोदर, जीर्णज्वर, विषम ज्वर, यकृतिप्लीहावृध्दि,

मात्रा–चूर्ण—५ से १० रति

(क्वाथ) २ से ४ तोला,

स्वरस १ से ४ माशा

विशेष—(१) इसको कहीं कहीं Quinine के प्रतिनिधिरुप में उपयोग में लिया जाता है किन्तु इसके गुण इतने प्रभावशाली नहीं होतेहै।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चित्र सख्या. ६०

कालमेघ

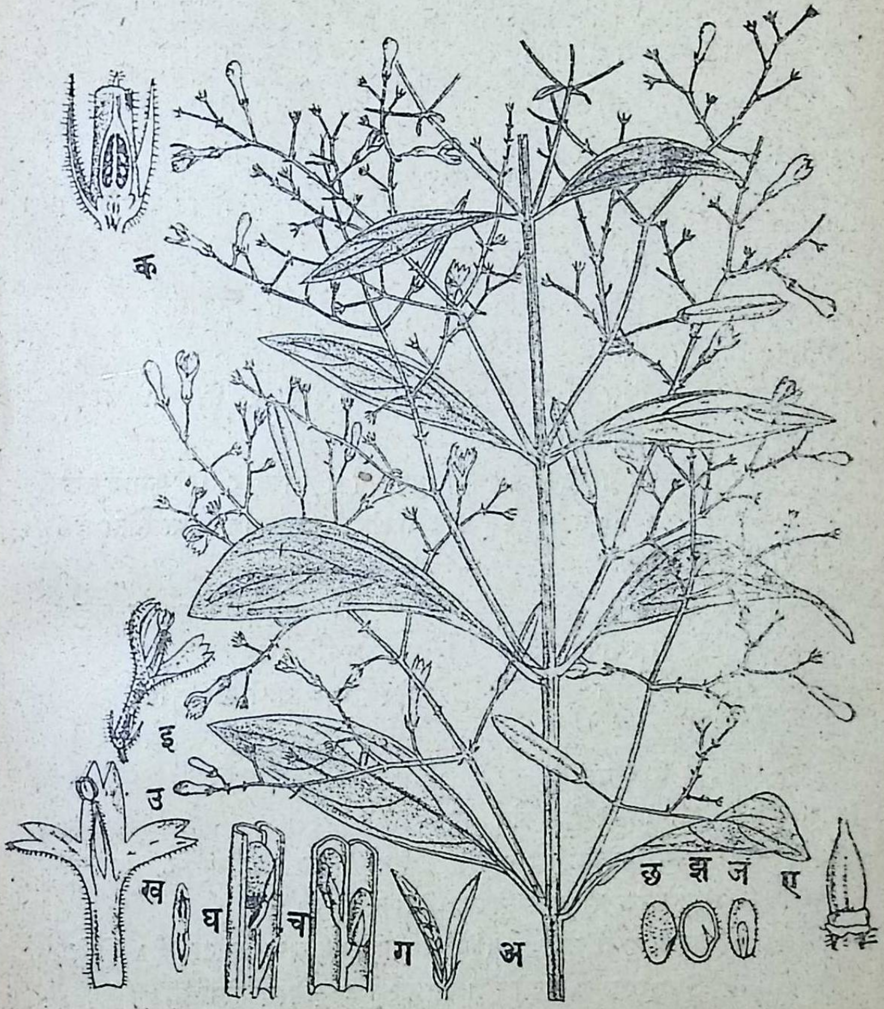

ANDROGRAPHIS PANICULATA, NEES.

(Acanthaceae)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

किरमानी अजवायन

नाम **चित्रसंख्या-६१**

(१) संस्कृत-खुरपुष्पिका (२) हिन्दी-किरमानी अजवायन

(३) गुजराती-छुहरी अजमोदा (४) मराठी-किरमानी ओंवा

(५) अंग्रेजी-Worm seed (६) लेटिन-Artemisia maritima, linn.

नैसर्गिक वर्ग-Compositae.

वानस्पतिक वर्णन-यह ३० से ४५ सें. मीं. ऊंची क्षुप जाति का वनस्पति है।

मूल-साधारण, छोटी **पुष्प**—पीत

तना-कीत्वक्-खुरदरी, तंतुयुक्त, **बीज**—छोटे दाने, कृष्णाभ

शाखा-श्वेतवर्ण युक्त.

पत्र-एकान्तर, क्वचित् अभिमुख, उपपत्ररहित, १.३ से ५ सें. मी. लम्बे. किंचित् कपिशवर्णयुक्त

प्राप्तिस्थान—यह भारत में पश्चिमी हिमालय में काश्मीर से कुमायूँ तक ७००० से ११००० फीट की ऊंचाई तक सर्वत्र प्राप्त होता है।

उपयोगी अंग-पंचाग

रस-कटु तिक्त **वीर्य**-उष्ण **विपाक**-कटु

गुण-दीपन, वेदना स्थापन. **दोषशमन**-त्रिदोष

श. स. प्रभाव—आन्त्र **रोगोपयोग**-अजीर्ण, उदररोग, कृमि (गण्डूवपदाकारी)

मात्रा—चूर्ण ३ से ६ माशा

अनुपान—सेन्टोनीन-१ से ३ ग्रेन

विशेष-(१) इसमें विरेच्छ गुण नहीं हैं अतः इसके उपयोग के पश्चात् एरण्डतैल या अन्य विरेच्छ देना चाहिए।

(२) इसके पुष्पों में १.७५% क्षारीयतत्व प्राप्त होता है। जिसे Santonin कहते हैं। यह उत्कृष्ट कृमिघ्न होता है।

(३) इसका आयुर्वेदिक ग्रंथों में उल्लेख प्राप्त नहीं होता है। संभवतः यह अरब से भारत में आई हुई प्रतीत होती है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

किरमानी अजवायन

चित्र संख्या ६१

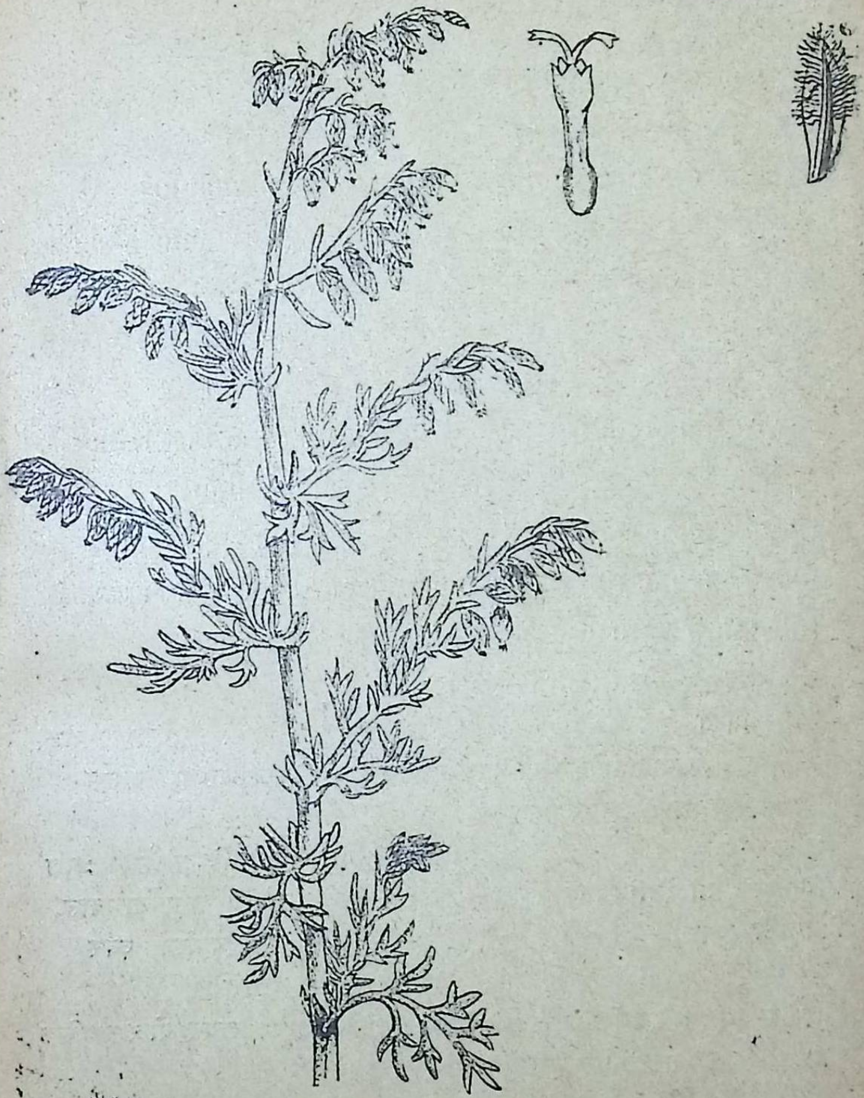

ARTEMISIA MARITIMA, LINN
(Campositae)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

कुचला

नाम **चित्रसंख्या-६२**

(१) संस्कृत—कपीलु, विषतिन्दुक (२) हिन्दी—कुचला

(३) गुजराती—झेरी कोचला (३) मराठी—काजरा

(५) अंग्रेजी—Nux vomica (६) लेटिन—Strychnos nuxvomica, Linn.

नैसर्गिक वर्ग—Loganaceae.

वानस्पतिक वर्णन-यह लगभग ४० फीट ऊंची वृक्ष जातिकी वनस्पति है।

मूल-साधारण

पुष्प-हरिताभ, शाखा के किनारे पर निकलते हैं।

तना—साधारग, गोल

फल-पीत वर्णयुक्त (पक्व); टेमरु के समान, मांसल.

शाखा—पतली, कठोर

बीज—गोल आर चपटे, रोमश.

पत्र-श्लक्ष्ण, पत्रक्रम अभिमुख, मसलने पर पातवणका दुर्गन्ध रस निकलता है,

प्राप्तिस्थान-यह भारत में प्रायः सर्वत्र प्राप्त होताहै।

उपयोगीअंग—फल (शुद्ध कियेहुए)

रस--तिक्त **वीर्य**-शीत **विपाक**-कटु

गुण-ग्राही, लघु,वातोतेतक,अग्निवर्धक **दोषशमन**—कफपितघ्न, वातल

श. स. प्रभाव—वातसंस्थान

योग—

अग्नितुण्डी बटी (अग्निमांद्य)

विषमुष्टी (ज्वर)

रोगोंपयोग-वातव्याधि,जीर्ण शिरःशय अग्निभास, आमवात, हृद्दौर्बल्य, ज्वर

मात्रा—२ से ४ रति

विशेष—(१) इसमें Strychinine और Brucine नामक दो रसायनिक तत्व प्राप्त होते हैं।

(२) यह विषैली वनस्पति है। अतः इसका शोधन करने के पश्चात् ही उपयोग में लाना चाहिए।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

कुचला

चित्र संख्या ६२

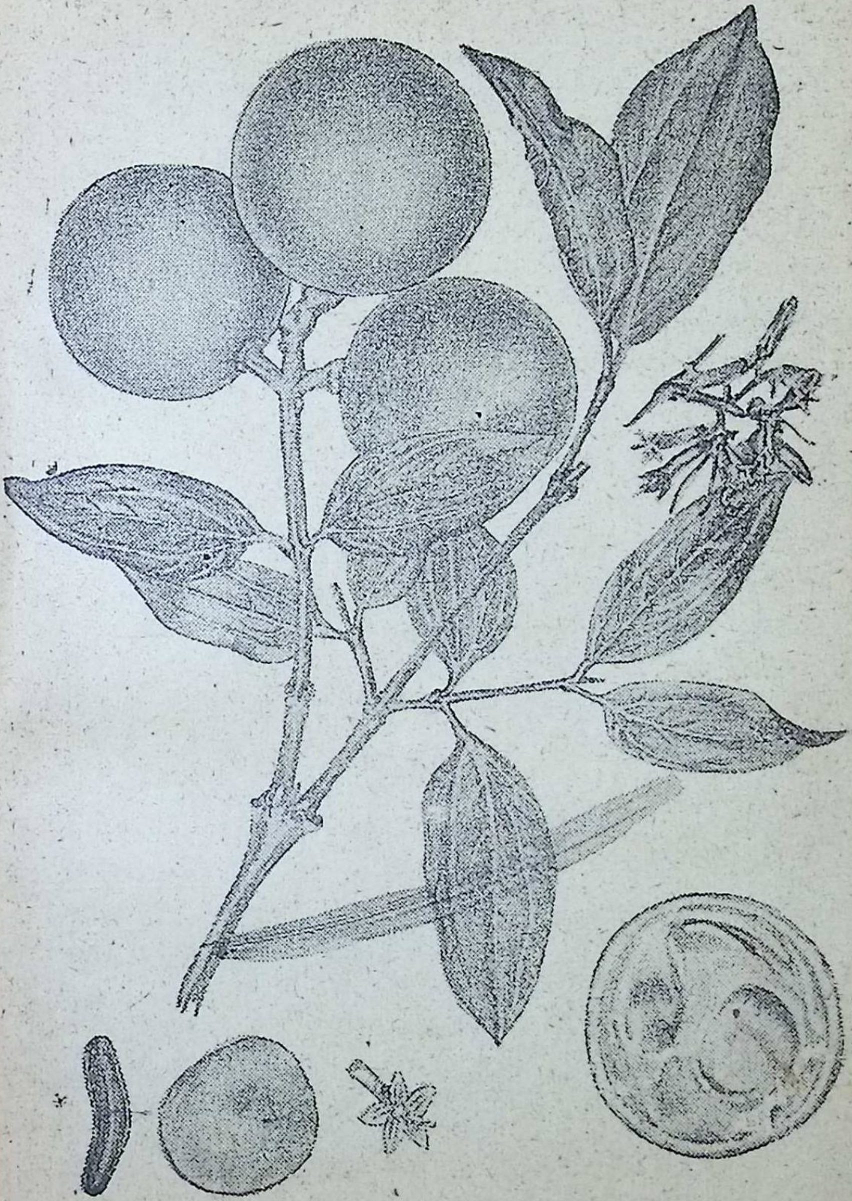

STRYCHNOS NUXVOMICA, LINN. (Loganaceae)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

कुटकी

नाम **चित्रसंख्या—६३**

(१) संस्कृत—कुटकी (२) हिन्दी—कुटकी

(३) गुजराती—कडू (४) मराठी—कडू कुटकी

(५) अंग्रजी-Kurroa. (६) लेटिन—Picrorhiza kurrooa, Benth.

नैसर्गिक वर्ग—Scrophulariaceae

वानस्पतिक वर्णन—यह क्षुप जाति की वनस्पति है।

मूल—१ से २ इंच लम्बी गहरे कपिश वर्ण युक्त. बाह्य पृष्ठ खुरदरा, सूक्ष्म ग्रंथि युक्त मत्स्याकारी.

पुष्प—नीले गुच्छदार

शाखा—श्लक्षण

फल—श्लक्षण छोटे

पत्र—एकान्तर, अण्डाकार, उपपत्ररहित, पुंकेशर चार

प्राप्तिस्थान—यह हिमालय के निकट काश्मीर से सिक्किम तक ७०० से १४०० फीट की ऊंचाई तक प्राप्त होता है।

उपयोगी अंग—मूल

रस—तिक्त कटु **वीर्य**—शीत **विपाक**—कटु

गुण—शीतल, पित्त-रेचक, यकृतोत्तेजक, भेदन, रुक्ष.

दोषशमन—कफपित्त

श. स. प्रभाव—आन्त्र और यकृत

योग—

बालभद्र चूर्ण (ज्वरातिसार)

कुटकी सत्व (विषम ज्वर)

रोगोपयोग—कामला, पाण्डु, ज्वरातिसार रक्तपित ज्वर, दाह, **विषमज्वर**

मात्रा—चूर्ण ५ से १० रति

अनुपान—क्वाथ—४ से ६ माशा

विशेष-(१) इसमें १६.६ % कटु तत्व होते है और Glucocide की मात्रा भी यथेष्ट रहती है।

(२) इसका प्रयीग विशेष मात्रा में करने से हानिकारक है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

कुटकी

चित्र संख्या ६३

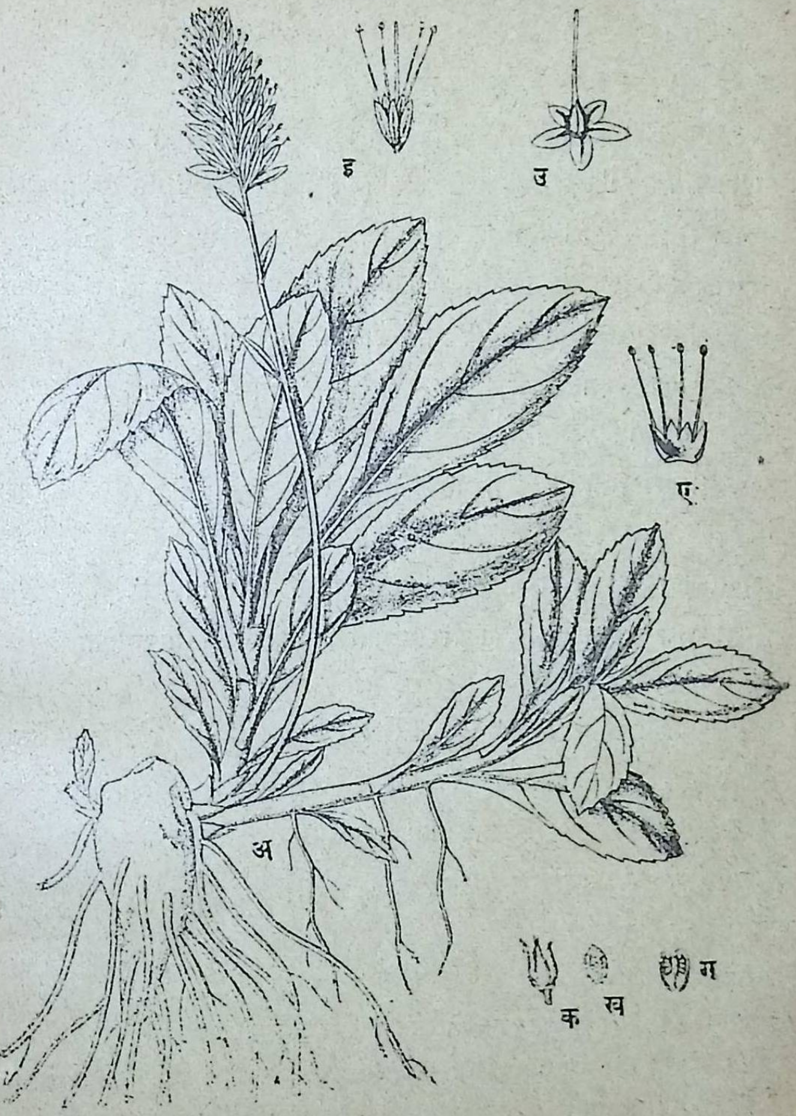

PICRORHIZA KURROO, ABENTH
(Scrophulariaceae)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

कुलिंजन

नाम **चित्रसंख्या–६४**

(१) संस्कृत–कुलंजन मलयवचा (२) हिन्दी–कुलेजन

(३) गुजराती–कुलिंजन (४) मराठी–कुलिंजन

(५) अंग्रेजी-The greater galangal (६) लेटिन-Alpinia galanga, Sw.

नैसर्गिक वर्ग—Scitaminaceae

वानस्पतिक वर्णन–—यह क्षुप जाति की वनस्पति है ।

मूल—अंगुष्ठ समान मोटी, बहुवार्षिक, सुगन्धित **पुष्प**—हरिताभ श्वेत

तना—साधारण गोल, श्वक्षण, पत्रावृत **फल**—रक्त

बीज—स्निग्ध छोटे

पत्र-एकान्तर; काण्ड परिवेष्ठित, उर्ध्वभाग हरित अधोभाग पीत,

प्राप्तिस्थान-यह भारत, लंका और मलाया में प्रायः सर्वत्र प्राप्त होता है ।

उपयोगी अंग–मूल

रस—कटु **वीर्य**–उष्ण **विपाक**—कटु

गुण-तीक्ष्ण, दीपन, पाचन, रुच्य, उत्तेजक **दोषशमन**–कफ

श. स. प्रभाव—सर्वशरीर प्रधानतः श्वासोच्छलम संस्थान

रोगोपयोग-कण्ठरोग, **मुखरोग**, आमाशयरोग, **कास**

मात्रा–१ से २ माशा

विशेष—(१) इसके मूलकन्द को आहारविषमें उपयोग में लेते हैं ।

(२) A decoction of this drug was tried in several cases of bronchial catarrh with beneficial effect—*Koman*.

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चित्र संख्या ६४

कुलिंजन

ALPINIA GALANGA, SW.

(Scitaminaceae)

९

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

कूठ

नाम **चित्र संख्या—६५**

(१) संस्कृत—कुष्ठ (२) हिन्दी— कूठ

(३) गुजराता—कूठ (४) मराठी—कुष्ठ

(५) अंग्रजा—The costus (६) लेटिन-Saussurea lappa, Clarke.

नैसर्गिक वर्ग-Compositae

वानस्पतिक वर्णन-यह छोटी दृढ़ वृक्ष जाति की वनस्पति है।

मूल— ३ इंच लम्बे, १/२ से १ इंच मोटे, विषमाकारी, भंगुर, तोडनेपर भीतरीभाग श्वेताभ वर्णयुक्त,

तना ६ से ७ फीट ऊंचा;

शाखा—साधारण, गोल

पुष्प—१ से १.५ व्यासयुक्त, नालरहित, गुच्छदार, गहरे बैंगनी वर्णयुक्त

फल—०.२५ इंच लम्बे, मुडे हुए, कपिश वर्णयुक्त।

पत्र— ऊर्ध्वपृष्ठ खुरदरा, निम्न पृष्ठ स्निग्धता लिये हुए, ६ से १२ इंच लम्बा पत्रधार विषम दन्ताकारी।

प्राप्तिस्थान— यह आठ से बाराह हजार फीट की ऊंचाई पर हिमालय के काश्मीर कांगडा आदि प्रदेशोंमें प्राप्त होता है।

उपयोगी अंग—मूल

रस—तिक्त कटु मधुर **वीर्य**—उष्ण **विपाक**—कटु

गुण—पाचक, कफच्छेदक, लघु **दोषशमन**—वातकफ

श. स. प्रभाव— फुफ्फुस, और वातसंस्थान

रोगोपयोग—श्वास, कास, वातकफज्वर, फुफ्फुसीय शोथ, त्वग्रोग, विसर्प

मात्रा—२ से १० रति

अनुपान-जल

विशेष-(१) यह पाश्चात्य प्रदेशों में सुगन्धित तैलादि बनाने के उपयोग में लिया जाता है।

(२) इसमें जन्तुघ्न (Insecticide) गुणों की मात्रा विशेष है।

(३) इसमें लगभग ३.५% राख प्राप्त होती है जिसमें maganese की मात्रा विशेष प्राप्त होती है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चित्र संख्या ६५

कूठ

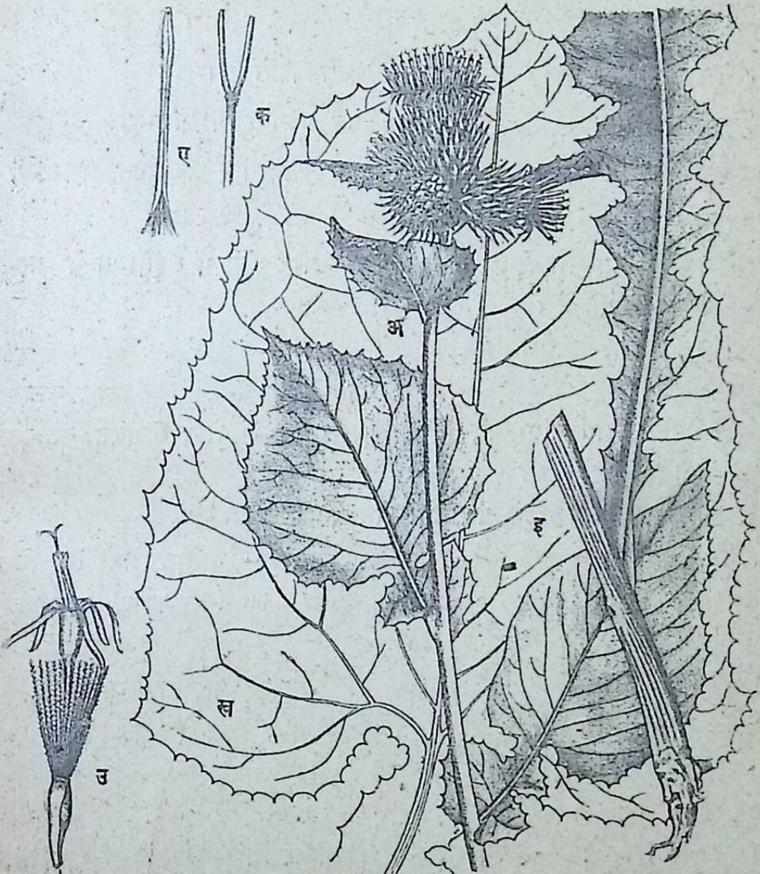

SAUSSUREA LÁPPA, CLARKE.

(Compositae)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

केशर

नाम **चित्रसंख्या—६६**

(१) संस्कृत—कुङ्कुम (२) हिन्दी—केशर

(३) गुजराती—केसर (४) मराठी—केशर

(५) अंग्रेजी—Saffron. (६) लेटिन—Corcus sativus, Linn.

नैसर्गिक वर्ग—Iridaceae.

वानस्पतिक वर्णन—यह क्षुप जाति की वनस्पति है।

तना—गोल छोटा

शाखा—पतली

पत्र—एकान्तर, पतले लम्बे,

पुष्प—गुलाबी, पत्रसंलग्न,

बीज—कोप तीन खण्डयुक्त, अधरस्थ,

प्राप्तिस्थान—यह भारत में काश्मीर, इरान और स्पेन में बहुतायत से प्राप्त होती है।

उपयोगी अंग—पुष्पगर्भसूत्र

रस—कटु तिक्त **वीर्य**—उष्ण **विपाक**—कटु

गुण—दीपन, पाचन, संग्राहक, कामोत्तेजक, लेखन

दोषशमन—त्रिदोष; विशेषतः वातकफ

श. स. प्रभाव—सर्वशरीर, प्रधानतः वातस्थान

योग—

स्तम्भनबटी

कामवर्धक बटी

रोगोपयोग—नेत्ररोग, शिरोरोग, विष, व्यंग, कृमि, उदरशूल, हृद्रोग, यकृतवृद्धि, रक्तपित, मूत्राघात, आर्तवस्रावदोष

मात्रा—५ से २० रति

अनुपान—जल

विशेष—(१) **परीक्षा**—केशर को Spirit में डालने पर उसके तन्तु, स्पीरिट, को रंगीन बना दे परन्तु स्वयम् के वर्ण में परिवर्तन न हो तो इसको शुद्ध समझना चाहिए।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चित्रसंख्या ६६

केशर

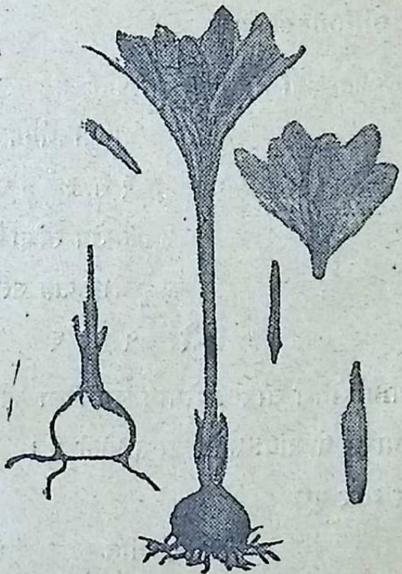

CORCUS SATIVUS, LINN.
(Iridaceae.)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

कौंच

नाम **चित्रसंख्या**—६७

(१) संस्कृत–कपिकच्छु (२) हिन्दी–कौंच बीज

(३) गुजराती– कवचाना बीज (४) मराठी-कुहिली

(५) अंग्रेजी-Cowage (६) लेटिन–Mucuna pruriens, D. C.

नैसर्गिक वर्ग–papilionaceae.

वानस्पतिक वर्णन-यह लता जाति की वनस्पति है

पुष्प–जामुनीवर्णयुक्त

फली–२ से ३ इंच लम्बी, रोमश, इनके रोग त्वचा के सम्पर्क में आनेसे कण्डु और दाह उत्पन्न हो जाती है।

शाखा–रोमश.

बीज–५ या ६

पत्र–त्रिदली, उर्ध्वभाग रोमश और अधोभाग चमकीला कपिशवर्णयुक्त

प्राप्तिस्थान-यह भारत में प्राय: सर्वत्र प्राप्त होती है।

उपयोगी अंग–बीज और मूल

रस–मधुर तिक्त **वीर्य**–शीत **विपाक**–मधुर

गुण–वृष्य, बृंहण, स्तन्य, गुरु **दोषशमन**–वातपितघ्न,

श. स. प्रभाव–प्रजनन अवयव

योग– **रोगोपयोग**–रक्तपित, वातरक्त, शुक्रदोष,

वानरी गुटिका (वाजीकरण)

मात्रा–चूर्ण-२ से ६ माशा

अनुपान-जल

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चित्र संख्या ६७

कौंच

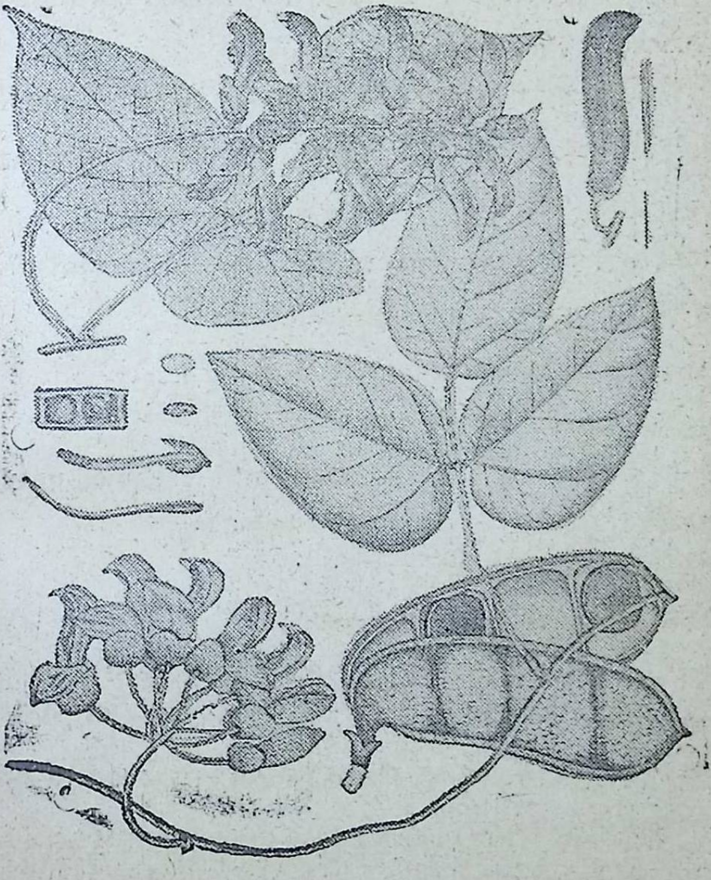

MUCUNA PRURIENS. D. C.

(Papilionaceae.)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

खरैंटी

नाम **चित्र संख्या—६८**

(१) संस्कृत—बला (२) हिन्दी—खरेंटी

(३) गुजराती—बला (४) मराठी—चिकणा

(५) अंग्रेजी-Heart leaved sida (६) लेटिन-Sida cordifolia Linn.

नैसर्गिक वर्ग-Malvaceae

वानस्पतिक वर्णन-यह १-१/२ से ३ फीट ऊंची क्षुप जातिकी वनस्पति है।

मूल-छोटी रेशेदार

पुष्प-पत्रकोणोद्भूत, पीत वर्णयुक्त

तना-कोमल, निर्बल

फल-पंचकोषीय, पंचबीजी

शाखा-पतली कहीं २ चतुष्कोणीय

बीज-गहरे कपिश या कृष्ण वर्णयुक्त

पत्र-एकान्तर, कोमल, हृदयाकृतियुक्त, पत्रपृष्ट-रोमश

प्राप्तिस्थान-यह भारत मे प्रायः सर्वत्र प्राप्त होता है ।

उपयोगी अंग-बीज, मूल और त्वक्

रस-मधुर कषाय **वीर्य**-शीत **विपाक**-मधूर

गुण-शीतल, वृष्य **दोषशमन**-पितवात

श. स प्रभाव-सर्वशरीर

रोगोपयोग-रक्तप्रदर, प्रमेह, शुक्रदोष

मात्रा—चूर्ण २ से ४ माशा

अनुपान—जल

विशेष-(१) बला के बीजों को बीजवन्द या बलदाणा कहते हैं।

(२) The Thongas of Portuguese East Africa use the plant as a childrens' remedy "

Kirtikar & *Basu*

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

कड़वी तोरई

चित्र संख्या ६८

SIDA CORDIFOLIA LINN.
(Malvaceae)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

खरजाल (पीलु)

नाम **चित्र संख्या**—६९

(१) संस्कृत—पीलु (२) हिन्दी-खरजाल (पीलु)

(२) गुजराती-खारीजाल (४) मराठी-पीलु

(४) अंग्रेजी-Tooth brush tree (६) लेटिन-Salvadora persica, Linu.

नैसर्गिक वर्ग—Salvadoraceae

वानस्पतिक वर्णन-यह १० से २० फीट ऊंची वृक्ष जाति की वनस्पति हैं।

मूल-पृथ्वी मे गहरी उतरी हुई विष्मभग्न

तना—साधारण गोल

शाखा-टेढीमेढी

पत्र-विन्यास अभिमुख, हरितवर्णयुक्त

पुष्प-पीताभहरित; ये पौष माघ मास में निकलते हैं।

फल-मांसल, कृष्णाभ रक्त

बीज १से $1\frac{1}{2}$ रेखा व्यास,उग्रगंधयुक्त

प्राप्तिस्थान—यह भारत के पंजाब, सिंध, गुजरात आदि रुक्षोष्ण प्रदेशों में बहुतायतसे प्राप्त होती है।

उपयोगी अंग—मूल, पत्र, त्वक् और बीज तैल

रस-तिक्त कटु **वीर्य**—उष्ण **विपाक**-कटु

गुण-तीक्ष्ण, स्निग्ध, सारक **दोषशमन**-कफवात

श. स. प्रभाव-सर्वशरीर, प्रधानतः संधियां

योग-

पिल्वादि तैल (सन्धिवात)

रोगोपयोग-रक्तपित,अर्श, बस्तिरोग प्लीहावृद्धि, सन्धिवात,

मात्रा-चूर्ण २ से ४ माशा

अनुपान-उष्ण जल.

विशेष-(१) इसके पत्र सनायके पत्रों के समान रेचक गुणविशिष्ट है।

(२) बीजों की तैल की क्रिया राई के समान होती है

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

खरजाल (पीलु) चित्र संख्या ३९

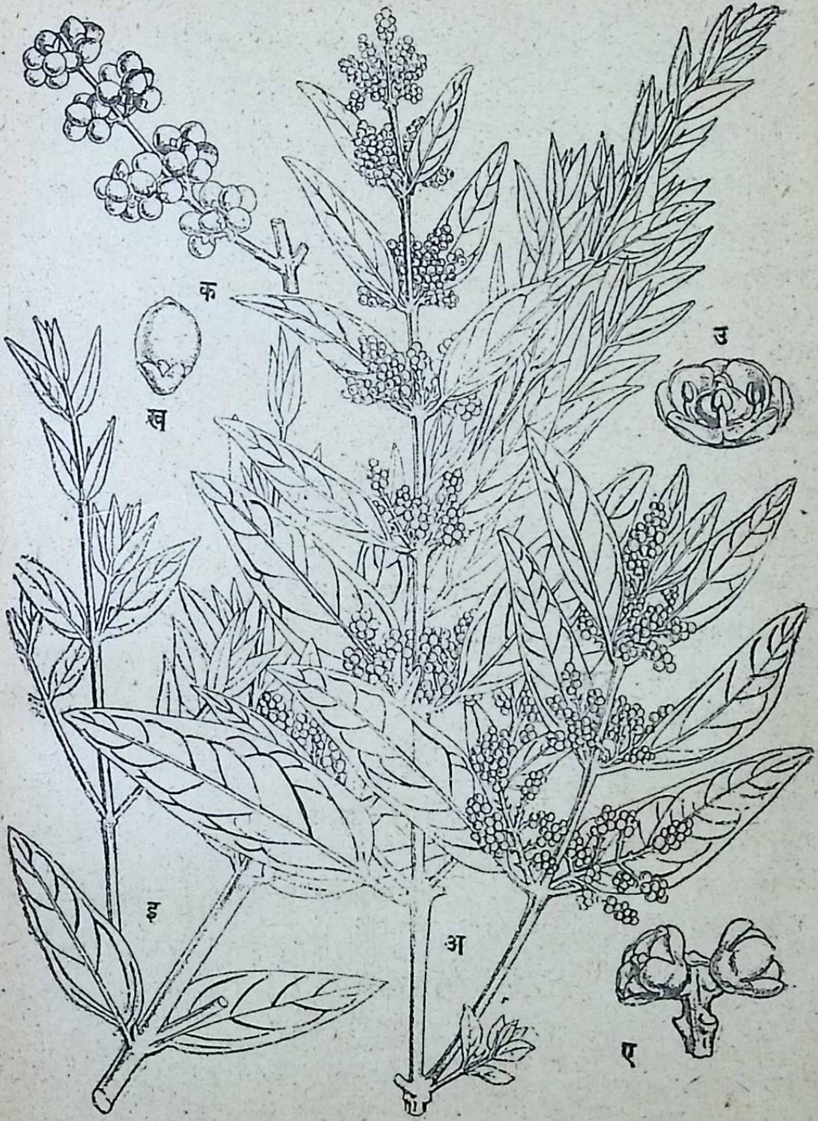

SALVADORA PERSICA. LINN. (Salvadoraceae)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

खैर [खादिर]

नाम **चित्रसंख्या-९०**

(१) संस्कृत-खदिर (२) हिन्दी-खैर

(३) गुजराती-खेर (४) मराठी-

(५) अंग्रेजी-Catecu tree (६) लेटिन-Acacia catechu, Willd

नैसर्गिक वर्ग-Mimosacaceae.

वानस्पतिक वर्णन-यह मध्यमाकारी वृक्ष जाति की वनस्पति है

मूल-मोटी, तान्त्वी

पुष्प-पीत, सूक्ष्म,

तना-गहरे कपिश वर्णयुक्त

फली-चपटी ८ से १२ बीजयुक्त, संधि स्थान से निकलती है और तल भाग में से संयुक्त होती है।

शाखा-खुरदरी, गहरे कर्पराक्वर्णयुक्त, स्निग्ध, चमकीला कंटकयुक्त,

पत्र-२ से ४ इंचे लम्बे पक्षाकारी, पर्णसंख्या ३० से ५० तक, दलयुक्त,

प्राप्तिस्थान-यह भारत में हिमालय से ५००० फीट की ऊंचाई तक और रूक्ष प्रधान जलवायुवाले प्रदेशों में सर्वत्र प्राप्त होता है।

उपयोगी अंग-सार काष्ठ

रस-तिक्त कषाय **वीर्य**-शीत **विपाक**-कटु

गुण-ग्राही, विशद, **दोषशमन**-पितकफ

श. स. प्रभाव-आन्त्र और रक्तधातु

योग-

खदिरादिष्ट (प्रमेह),

रोगोपयोग-कुष्ठ, **मुखरोग** त्वग्रोग **प्रमेह** विसर्प, शोथ, अतिसार,

मात्रा-चूर्ण १ से ४ माशा

अनुपान-जल

विशेष-(१) इसकी त्वचा चमडा रंगने के उययोग में ली जाती है,

(२) इससे चमकीला पीताभ निर्यास प्राप्त होता है।

(३) इससे कहां-कहीं प्राप्त होती है

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

खैर (खदिर) चित्र संख्या ७०

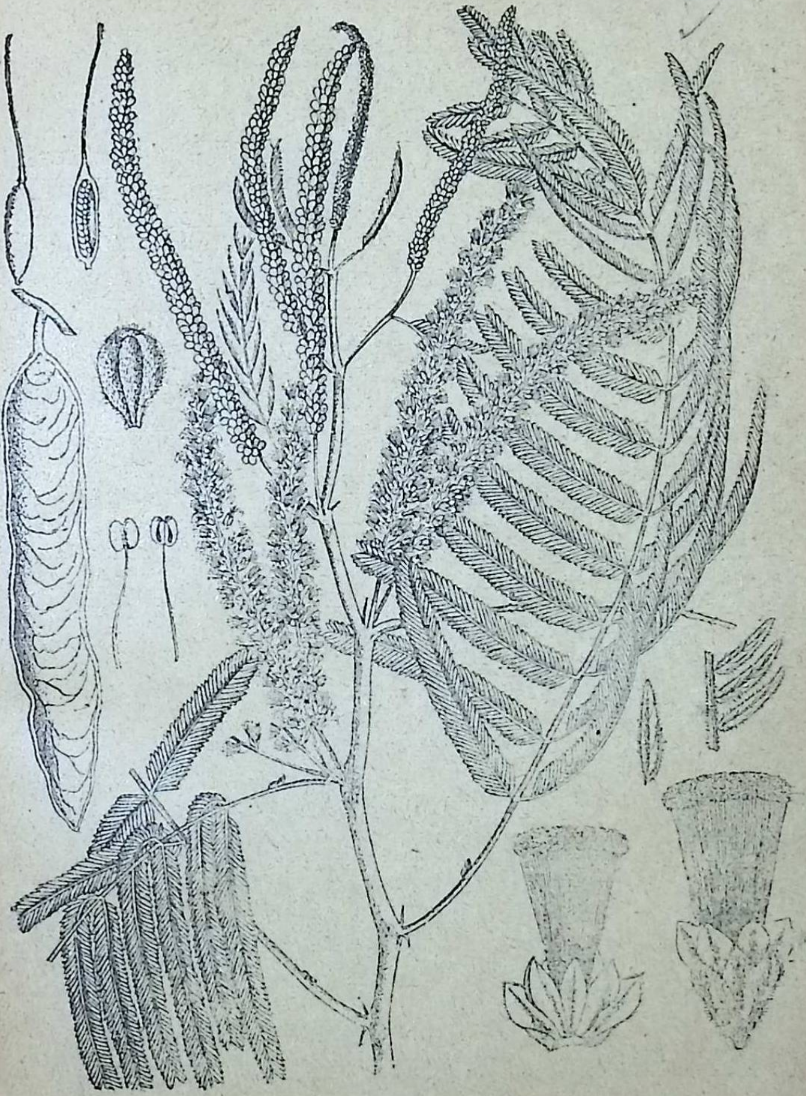

ACACIA CATECHU, WILLD.

(Mimosacaceae)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

गांजाभांग

नाम **चित्र संख्या—७१**

(१) संस्कृत—भंगा, विजया (२) हिन्दी—गांजाभांग
(३) गुजराती—भांग (४) मराठा—भांग
(५) अंग्रेजी—Hemp, (६) लेटिन—Canabis sativa, Linn.

नैसर्गिक वर्ग—Urticaeae.

वानस्पतिक वर्णन—यह एक वर्षायु क्षुप जाति की वनस्पति है।

मूल—छोटी सूत्रवत् **पुष्प**—छोटे गुच्छदार
शाखा—पतली कोमल **फल**—दानेदार, आवरणायः
बीज कोष—एक खण्डयुक्त

पत्र—विन्यास, एकान्तर, उपपत्रयुक्त, ७.५ से २० से. मी. व्यासयुक्त, उर्ध्वपत्र त्रिदली, निम्नपत्र द्विदली

प्राप्तिस्थान—यह भारत में प्रायः सर्वत्र प्राप्त होती है।

उपयोगी अंग—पत्र, निर्यास और बीज

रस—तिक्त कषाय **वीर्य**—उष्ण **विपाक**—कटु

गुण—दीपन, पाचन, लघु, ग्राही, रूक्ष्य, निद्राकारक

श. स. प्रभाव—आन्त्र और मस्तिष्क **दोषशमन**—कफवात

रोगोपयोग—रक्तप्रदर, अतिसार,
अग्निमांद्य, शुक्ररोग,
अर्श, प्रवाहिका,

मात्रा—(१) शुद्धभाग १ से २ रति
(२) शुद्ध चरस—१/४ रति
(३) शुद्ध गांजा-१/३ से १ रति

विशेष-(१)-इसके पत्र और बीजयुक्त मृदु शाखायों को भांग, मादा पुष्प की मंजरी को गांजा और शाखाओं पर जमे हुए राल समान पदार्थ को चरस कहा जाता है।

(२) **शोधन**—पहले भांग के पत्रों को जल में भिगोकर धूपमें सुखा दे। तत्पश्चात् घीमें भुनकर उपयोग में लेवें।

(३) यह विष द्रव्य है अतः इसके प्रयोग में सावधानी रखना वांछनीय है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

गांजाभाँग

चित्रसंख्या ७१

CANABIS SATIVA, LINN. (Urticaeae)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

गन्धप्रसारणि

नाम चित्रसंख्या—७२

(१) संस्कृत—प्रसारिणी (२) हिन्दी—गन्धप्रसारणि

(३) गुजराती—प्रसारणि (४) मराठी—चांदवेल

(५) लेटिन—Paederia foetida, Linn.

नैसर्गिक वर्ग—Rubiaceae.

वानस्पतिक वर्णन—यह प्रसारणि लता जाति की वनस्पति है।

पुष्प—नील लोहित वर्णयुक्त

फल—पंखाकार, पीत वर्णयुक्त, वर्तुलाकार

बीज—दानेदार, छोटे

पत्र—अभिमुख, त्रिकोणीय, भल्लाकार या लट्वाकार पत्रनाडी ४ से ५

प्राप्तिस्थान-यह भारत में पूर्वीय हिमालय में ५००० फीट की उंचाई तक प्राप्त होती है।

उपयोगी अंग—पंचांग

रस—तिक्त **वीर्य**—उष्ण **विपाक**-मधुर

गुण-सर, गुरु, वल्य, वामक, रेचक **दोषशमन**-त्रिदोष

प्र. स. प्रभाव-वातसंस्थान

योग— **रोगोपयोग**-वातशूल, आमवात, शोथ

प्रसारणादि तैल

मात्रा चूर्ण-२ से ४ माशा।

अनुपान-जल

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

गन्धप्रसारणि

चित्र संख्या ७२

PAEDERIA FOETIDA, LINN.
(Rubiaceae)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

गिलोय

नाम **चित्रसंख्या–७३**

(१) संस्कृत–गुडूची (२) हिन्दी–गिलोय

(३) गुजराती–गळो (४) मराठी–गुळवेल

(५) अंग्रेजी–Guduchi (६) लेटिन–Tinospora cordifolia, Miers.

नैसर्गिक वर्ग–Menispermaceae.

वानस्पतिक वर्णन–यह बहुवर्षायु आरोहिणी लता जाति की वनस्पति है।

मूल–अंगुष्टाकारी, त्वक् श्वेत, आवरणीयभाग कपिश

पुष्प–छोटे पीतवर्णयुक्त गुच्छदार, नियमित, पत्राकोणोद्भूत

तना–वृक्षारोही, हरितवर्णयुक्त, मांसल, बाह्यत्वक् श्वेताभ कपिश

फल–एक पुष्प से तीन फल निकलते हैं। हरित (अपक्व) रक्त (पक्व)

बीज–श्वेतवर्णयुक्त, मिरच के दाने के समान छोटे.

पत्र–एकान्तर, सादे, अखंण्ड, ४ से ६ इंच लम्बे, ३ से ५ इंच चौडे,

प्राप्तिस्थान–यह भारत में प्रायः सर्वत्र प्राप्त होती है।.

उपयोगी अंग–काण्ड, सत्व

रस–तिक्त कषाय कटु **वीर्य**–उष्ण **विपाक**–कटु

गुण–लघु, बल्य संग्राही, रसायन **दोषशमन**–त्रिदोष

श. स. प्रभाव–सर्व शरीर

योग–

अमृतारिष्ट (ज्वर)

गुडूचीसत्व (ज्वर)

गुडूच्यादि मोदक (राजयक्ष्मा)

गुडूच्यादि चूर्ण (पाण्डुरोग)

रोगोपयोग–त्वग्रोग, ज्वर, वमन, रक्तदोष, पाण्डु, कामला, प्रमेह, रक्तपित, वातरक्त

मात्रा चूर्ण-१ से ३ माशा
क्वाथ-३ से ८ तोला
सत्व-४ से १५ रति

विशेष–(१) संग्रहकाल–इसको ग्रीष्मऋतुमें वर्षाकाल से पूर्व संग्रह कर लेना चाहिए।

(२) इसको हमेशा ताजी ही व्यवहार में लाने से विशेष लाभप्रद है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

गिलोय

चित्र संख्या ७२

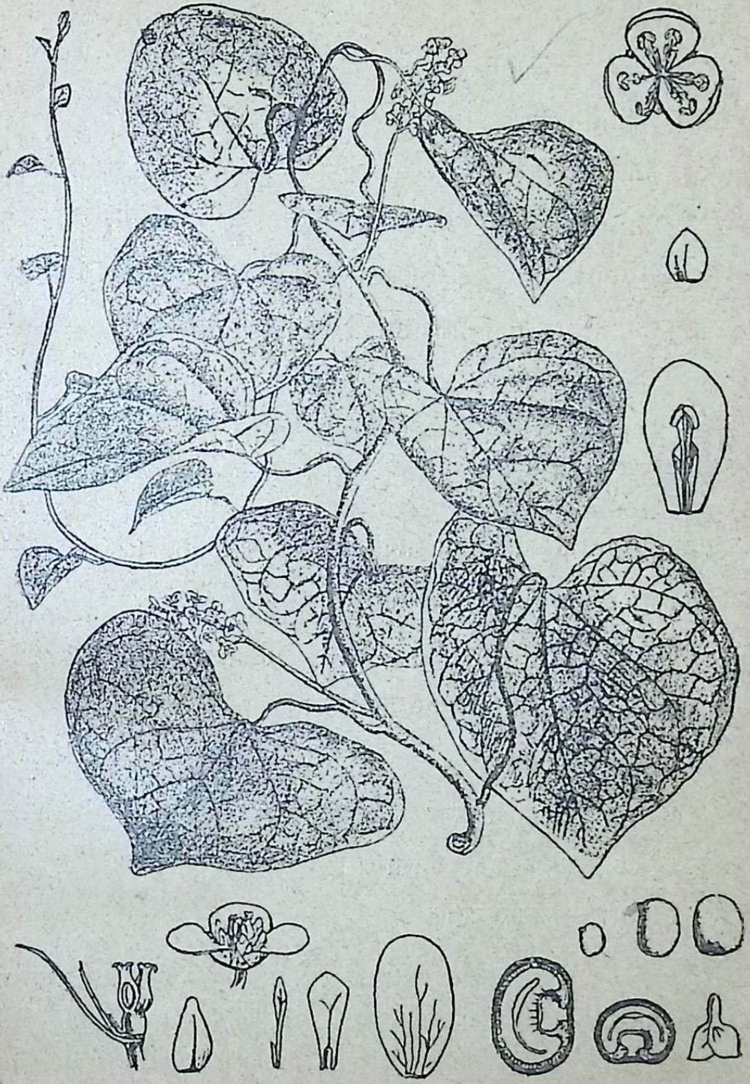

TINOSPORA CARDIFOLIA, MIERS.
(Menispermaceae)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

गूगल

नाम **चित्र संख्या—७४**

(१) संस्कृत—गुग्गुल (२) हिन्दी—गूगल

(३) गुजराती—गुगल (४) मराठी—गुग्गल

(५) अंग्रेजी-Guggula (६) लेटिन–Balsamodendron mukul, Hook.

नैसर्गिक वर्ग—Burseraceae.

वानस्पतिक वर्णन—यह ४ से १२ फीट ऊंची वृक्ष जाति की वनस्पति है ।

मूल–मोटी, लम्बी और विषमभग्न, रसयुक्त कपिशवर्ण

पुष्प–छोटे रक्तवर्णयुक्त

तना—६ इंच से एक फुट तक का व्यास

फल–मांसल, लम्बगोल, रक्तवर्णयुक्त.

शाखा— शाखाओं का अन्तिम भाग रक्ताभकपिश होता है ।

पत्र—संयुक्त, पत्रक्रम–एकान्तर, पत्रकोणोद्भूत

प्राप्तिस्थान—यह भारत में सिन्ध, कच्छ, काठियावाड़ आदि जंगल प्रदेशोंमें प्रायः सर्वत्र प्राप्त होती है ।

उपयोगी अंग—निर्यास

रस–तिक्त कटु कषाय मधुर **वीर्य**–उष्ण **विपाक**—कटु

गुण-लघु,तीक्ष्ण,सर,वृष्य,दीपन,स्निग्ध **दोषशमन**–त्रिदोष

श. स. प्रभाव—वातसंस्थान

योग—

योगराज गुग्गुल (आमवात)

कैशोर गुग्गुल (वातव्याधि)

रोगोपयोग—कुष्ट, रजःकृच्छ्रता, वातव्याधियां आमवात, व्रण.

मात्रा—४ रति से १ माशा

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

गूगल

चित्र संख्या ७४

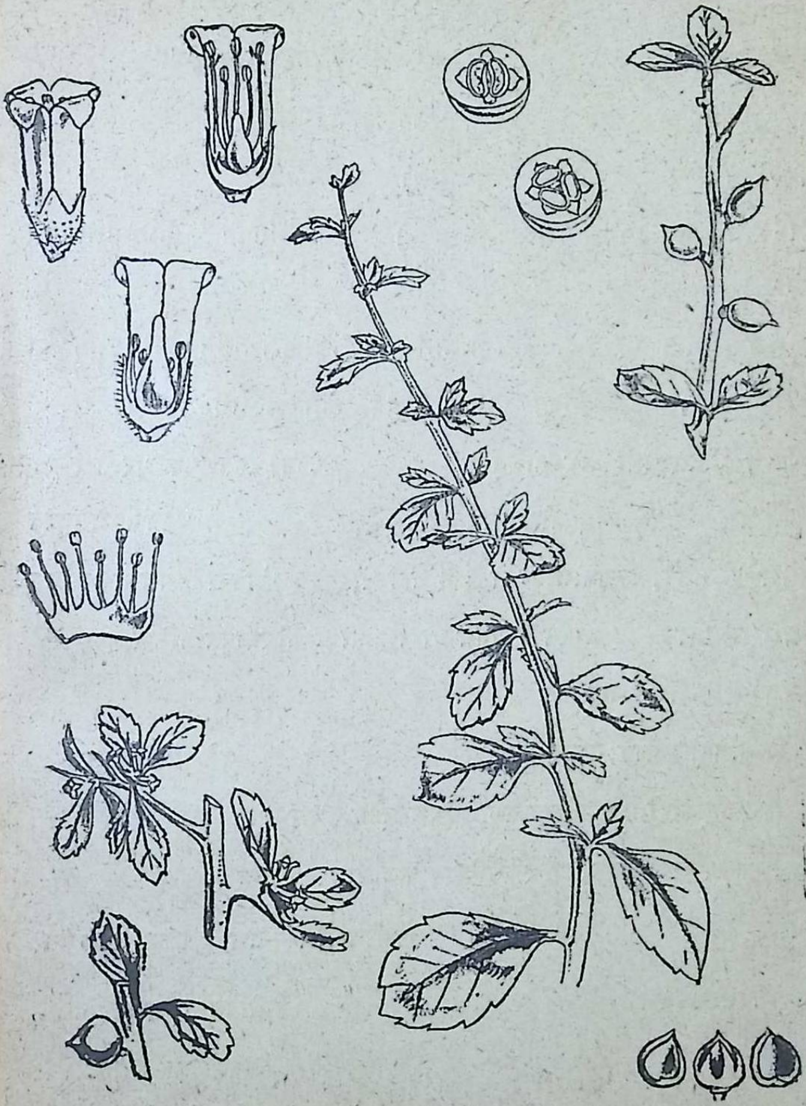

BALSAMODENDRON MUKUL, STOCKS.
(Burseraceae)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

गूलर

नाम **चित्र संख्या-७५**

(१) संस्कृत–उदूम्बर (२) हिन्दी–गूलर

(३) गुजराती–उमरडो (४) मराठी–उमर

(५) अंग्रेजी–Gular fig tree (६) लेटिन–Ficus glomerata, Roxb.

नसर्गिक वर्ग–Urticaceae.

वानस्पतिक वर्णन–यह बीस से तीस फाट ऊंची वृक्ष जाति की वनस्पति है।

मूल–लम्बे, मोटे, रसयुक्त

तना–मोटा, सीधा और ग्रंथियुक्त

शाखा–लम्बी, सीधी; और ऊपर चढ़ती हुई

पुष्प–अंजीर के समान, फीके हरे (अपक्व) रक्त (पक्व), १ से १-१।२ इंचव्यासयुक्त

पत्र–एकान्तर, लम्बगोल, ४ से ६ इंच लम्बे, २ से ३ इंच चाड़, पत्रनाल रामश-

प्राप्तिस्थान—यह भारत में सर्वत्र प्राप्त होती है और बहुत प्रसिद्ध है।

उपयोगी अंग–त्वक् फल

रस–मधुर, कषाय; मधुर (पक्व फल) **वीर्य**–शीत **विपाक**–मधुर

गुण-त्वक्-ग्राही, फल-शीतल, गुरु, लेपमल **दोषशमन**–पित कफ

शा. स. प्रभाव–वृक्क, और श्लेष्मिक कलास्राव

योग–

उदुम्बरसार (व्रण)

रोगोपयोग—व्रण, प्रमेह, रक्तपित, योनिरोग, प्रदर, वमन, तृष्णा, भग्नसंधान।

मात्रा—त्वक् चूर्ण-२ से ४ माशा

अनुपान—जल और मधु

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चित्र संख्या ७५

गूलर

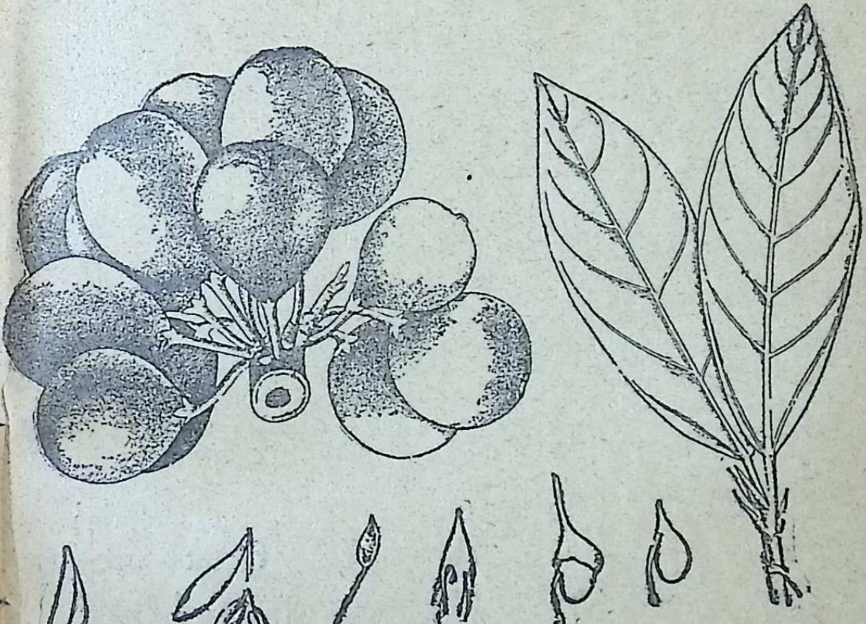

FICUS GLOMERATA, ROXB.

(Urticaceae)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

गोखरू

नाम **चित्र संख्या—७६**

(१) संस्कृत-गोक्षुर (२) हिन्दी—गोखरू
(३) गुजराती—न्हाना गोखरू (४) मराठी—सराटे
(५) लेटिन—Tribulus terrestris, Linn.

नैसर्गिक वर्ग-Zygophyllaceae.

वानस्पतिक वर्णन—यह प्रसारणि क्षुप जाति की वनस्पति है।

मूल—कंटकयुक्त, ४ से १० इंच लम्बी श्वेतवर्ण

तना-कभी २ प्राप्त होती हैं। **पुष्प**—नीलेवर्णयुक्त, पत्रकोणोद्भूत

शाखा—मूल से निकलकर सर्वत्र प्रसारित होती है।

फल—पक्षाकार पांच पक्ष, प्रत्येक पक्ष के बाहर की ओर छोटे और मध्य में लम्बे कांटे होते है।

पत्र-अभिमुख, एक छोटा एक बडा, २ से ३ इंच लम्बे और ३/४ से १-१/२ इंच चौड़े, संयुक्त.

प्राप्तिस्थान—यह भारत में प्राय: सर्वत्र प्राप्त होती है और बहुत प्रसिद्ध है।

उपयोगी अंग—पंचाग बीज

रस—मधुर तिक्त **वीर्य**—शीत **विपाक**—मधुर

गुण—बल्य, वृण, मूत्रल, दीपन **दोषशमन**—त्रिदोष

श. स. प्रभाव-प्रजनन संस्थान और वृक्क

योग—
दशमूल क्वाथ (वातरोग)
गोक्षुरादि गुग्गुल (प्रमेह)

रोगोपयोग—वस्तिरोग, **मूत्रकृच्छ्र**, पूयमेह, वातरोग, **वीर्यक्षीणता**, वातरक्त

अनुपान—जल या दूध **मात्रा**—चूर्ण २ से ४ माशा

विशेष—(१) गोखरू छोटे और बडे भेदसे दो प्रकार के होते है।
(२) छोटी जाति का गोखरू विशेषत: मूत्रल होता हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चित्र संख्या. ७६.

गोखरू

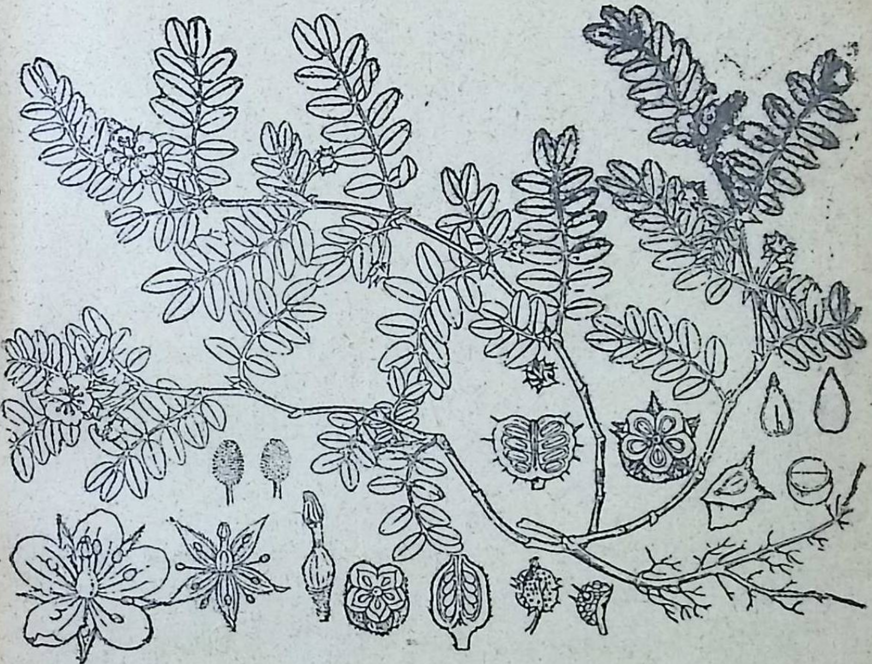

TRIBULUS TERRESTRIS, LINN.
(Zygophyllaceae)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

गोरखमुण्डी

नाम **चित्र सँख्या**-७७

(१) संस्कृत-श्रावणी, मुण्डिका (२) हिन्दी-गोरखमुण्डा

(३) गुजराती-गोरखमुण्डी (४) मराठी-गोरखमुण्डी

(५) लेटिन-Sphaeranthus indicus, linn.

नैसर्गिक वर्ग-Compositae

वानस्पतिक वर्णन-यह १/२ से १-१/२ फीट ऊंची प्रसारणि क्षुप जाति की वनस्पति है।

मूल-जमीन में गहरी जाती है।

तना-श्वेतरोमश

पुष्प-उग्र सुगन्धियुक्त, शाखा किनारे पर से जामुनी या गुलाबीवर्ण के पुष्प निकलते हैं।

शाखा-मूल के सिरे से निकलती हैं जो १/२ इंच व्यासयुक्त होती हैं।

पत्र-लम्बगोल, १/२ से २ इंच लम्बे, १/४ से ३/४ इंच लम्बे चौडे, हलके हरितवर्णयुक्त.

प्राप्तिस्थान-यह भारत में प्रायः सर्वत्र प्राप्त होती है।

उपयोगी अंग-पंचाग

रस-मधुर, तिक्त **वीर्य**-उष्ण **विपाक**-कटु

गुण-मूत्रल, सर, रक्तशोधक, **दोषशमन**-पितकफ

श. स. प्रभाव-त्वचा और रक्तधातु

रोगोपयोग-गण्डमाला, रक्तदोष, रक्तपित, विसर्प, मूत्राकृच्छ्र

मात्रा-चूर्ण २ से ४ माशा

अनुपान-जल

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

गोरखमुण्डी चित्र संख्या. ७७

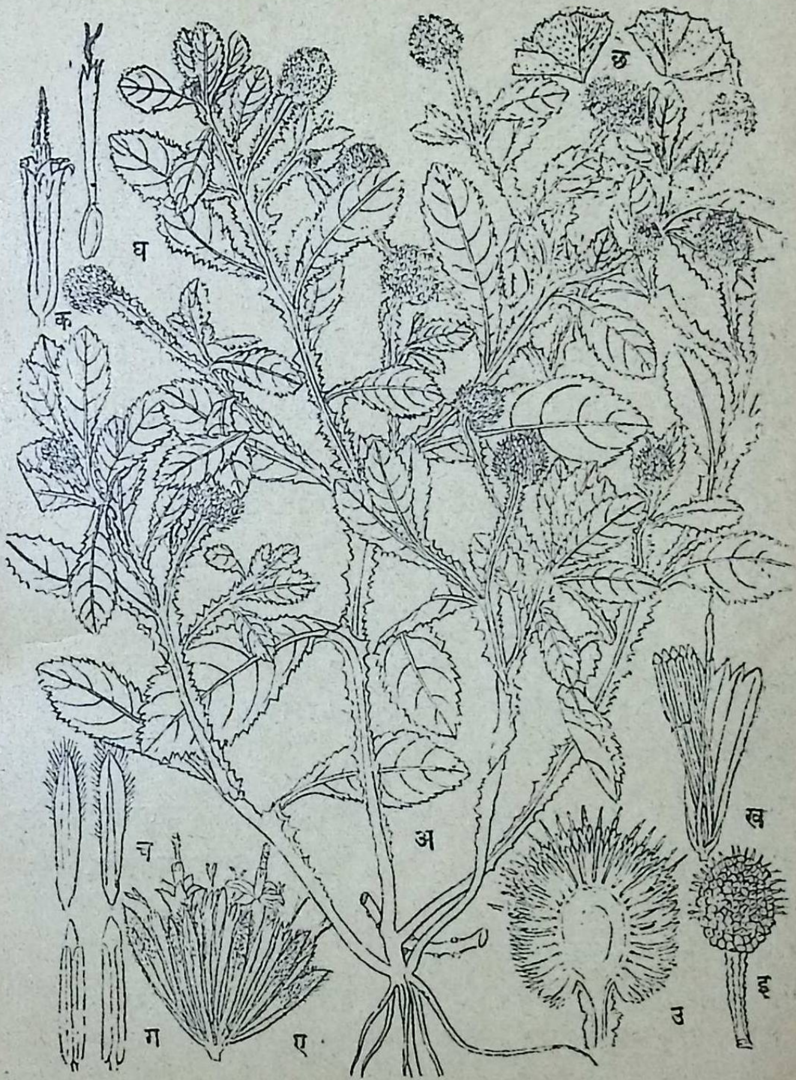

SPHAERANTHUS INDICUS, LINN
(Compositae)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चन्दन

नाम **चित्रसंख्या-७८**

(१) संस्कृत-श्रीखण्ड (२) हिन्दी-चन्दन (श्वेत)

(३) गुजराती-सुखड (४) मराठी-चन्दन

(५) अंग्रेजी-Sandal wood. (६) लेटिन-Santalum album, Linn.

नैसर्गिक वर्ग-.Sanatlaceae.

वानस्पतिक वर्णन-यह सर्वदा हरित रहनेवाली वृक्ष जाति की वनस्पति है।

मूल-साधारण, **पुष्प**—जामुनी वर्णयुक्त,

तना-पीताभ कपिश, सुगन्धित **फल**-वर्तुली, १.३ सें. मी. व्यासयुक्त

शाखा-साधारण पीताभ कपिश वर्णयुक्त. बाह्य त्वक् मोटा कृष्णाभ बैंगनी.

पत्र-उपपत्र रहित, साधारण **बीज**—कोष अधःस्थ

प्राप्तिस्थान—यह भारत में मैसूर, कुर्ग और मलावार में प्रायः सर्वत्र प्राप्त होता है।

उपयोगी अंग-काष्ठ और तैल

रस-तिक्त कषाय मधुर **वीर्य**-शीत **विपाक**-मधुर

गुण-दाह, रुक्ष, लघु, मूत्रल **दोषशमन**-पित

श. स. प्रभाव—वृक्क और ताप

योग- **रोगोपयोग**-विष, वमन, तृष्णा पूयमेह मूत्रकृच्छ्र, मूत्रकृमि,

चन्दनासव (पूयमेह)

मात्रा—चूर्ण २ से ४ माशा

अनुपान—तैल-५ से १०बिन्दू.

विशेष-(१) इसके बीजों में एक प्रकार का तैल होता है जो त्वग्रो में बाह्य प्रयोग के लिये हितकारी है।

(२)मेडगास्कर में इसके काण्ड का चूर्ण नमक के साथ मिलाकर व्रणरोपण के लिए उपयोग में लिया जाता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चित्र संख्या ७८

चन्दन

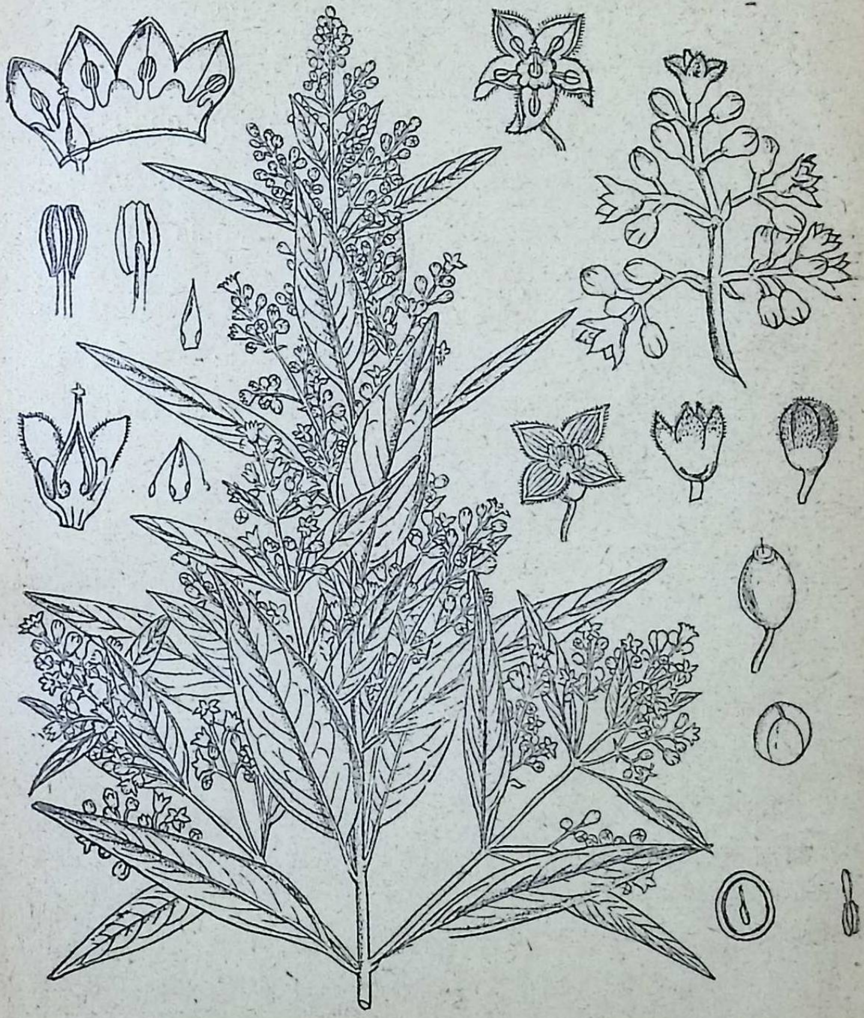

SANTALUM ALBUM, LINN.
(Sanatlaceae)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चव्य

नाम **चित्रसंख्या—७९**

संस्कृत—चविका (२) हिन्दी— चव्य

(३) गुजराती—चवक (४) मराठी— चवक

(५) अंग्रजी-Long piper (६) लेटिन—Piper chaba, Hunter.

नैसर्गिक वर्ग—Piperaceae.

वानस्पतिक वर्णन—यह आरोहिणी लता जाति की वनस्पति है।

मूल—साधारण छोटी **पुष्प**—रक्तवर्ण

तना-किंचित् चतुष्कोणीय **फल**—छोटे, अधःस्थ.

पत्र— लम्बगोल, पत्रमध्यनाडा १२.५ से १८ सें. मीं.लम्वी, ६.३से ८ से. मी. चौडी,

प्राप्तिस्थान—यह भारत और मलाया में प्रायः सर्वत्र प्राप्त होती है।

उपयोगी अंग—मूल और काण्ड

रस—कटु तिक्त **वीर्य**—उष्ण **विपाक**—कटु

गुण—लघु, रुच्य, दीपनपाचन **दोषशमन**—कफ, वातप्रकोप

श. स. प्रभाव—पाचन संस्थान

रोगोपयोग-अर्श, अजीर्ण, उदरशूल, कफजकास

मात्रा—१ से ४ माशा

अनुपान-जल

विशेष-(१) इसके फलों को 'गजपीपल' कहते हैं।

(२) इसके फल उत्तेजक होते हैं विशेषतः कास और श्वास में उपयोगी हैं—कर्नल चोपरा

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चव्य चित्र संख्या ७९

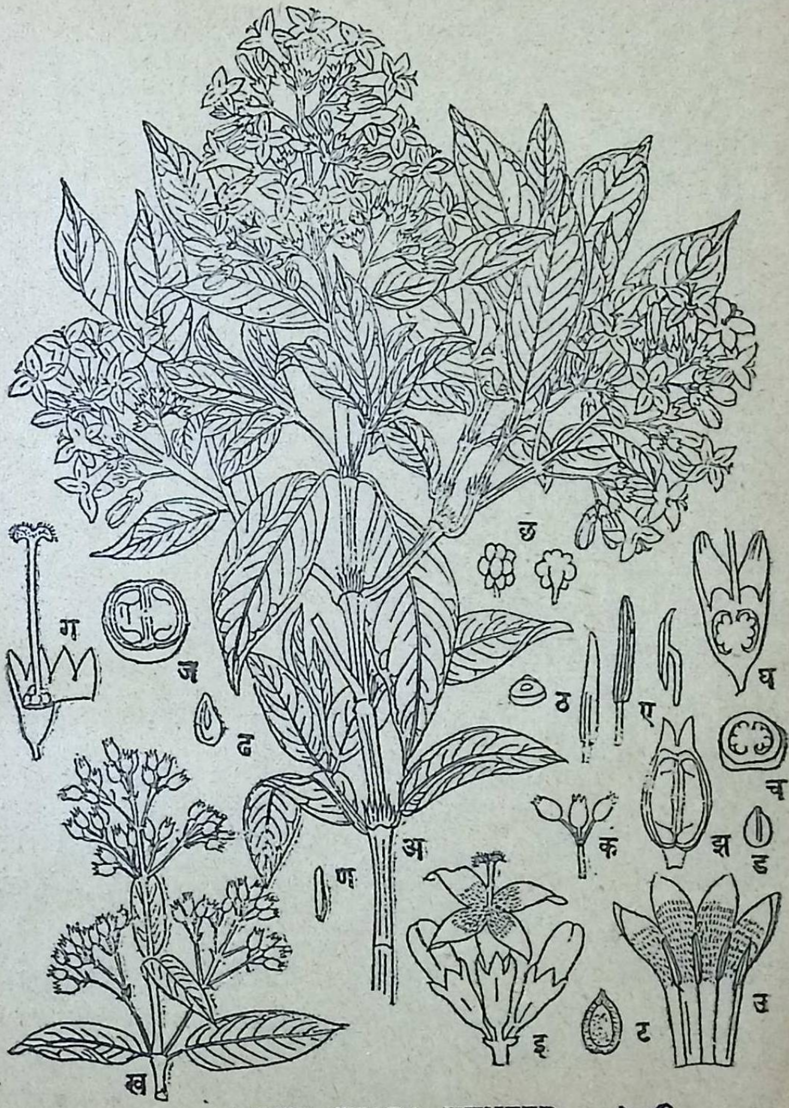

PIPER CHABA, HUNTER

(Piperaceae)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चांगेरी

नाम **चित्रसंख्या-८०**

(१) संस्कृत—चांगेरी (२) हिन्दी—चांगेरी

(३) गुजराती—अम्बुटी (४) मराठी—अम्बुटी

(५) लेटिन—Oxalis corniculata, Linn.

नैसर्गिक वर्ग—Geraniaceae.

वानस्पतिक वर्णन–यह प्रासरणि लता जाति की वनस्पति है।

मूल–छोटी, रेशेदार

तना—साधारण गोल पीताभहरित

पुष्प–पीत

फली–१ से १–१/२ इंच लम्बी

बीज—लम्बगोल, बादमी वर्णयुक्त.

पत्र-संयुक्त, रोमश, तीन तीन एक साथ होते है।

प्राप्तिस्थान—यह भारत के समस्त उष्ण प्रधान जलवायु वाले प्रदेशों में प्राप्त होती है।

उपयोगी अंग—पंचाग

रस–अम्ल कषाय **वीर्य**–उष्ण **विपाक**-कटु

गुण–दीपन, पितरक्त प्रकोपक, **दोषशमन**—कफपित, पितवर्धक

श. स. प्रभाव—पाचन संस्थान

रोगोपयोग–अतिसार, संग्रहणी, अर्श, उदरशूल, व्रण, त्वग्रोग, चातुर्थिकज्वर, अग्निमाद्य, दाह

मात्रा—२ से ४ माशा (चूर्ण)

अनुपान—छाछ या दूध

विशेष—(१) इसमें Acid Potassium Oxalate तत्व रहता है।

(२) दक्षिण आफ्रिका की कुछ जातियां इसको 'सर्पविष' में उपयोग में लेती है।

(३) यह धतूरे के विषनाश में हितकर ह।

(४) कोमन इसको प्रवाहिका में हितकर मानते हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चित्र संख्या ८०

चांगेरी

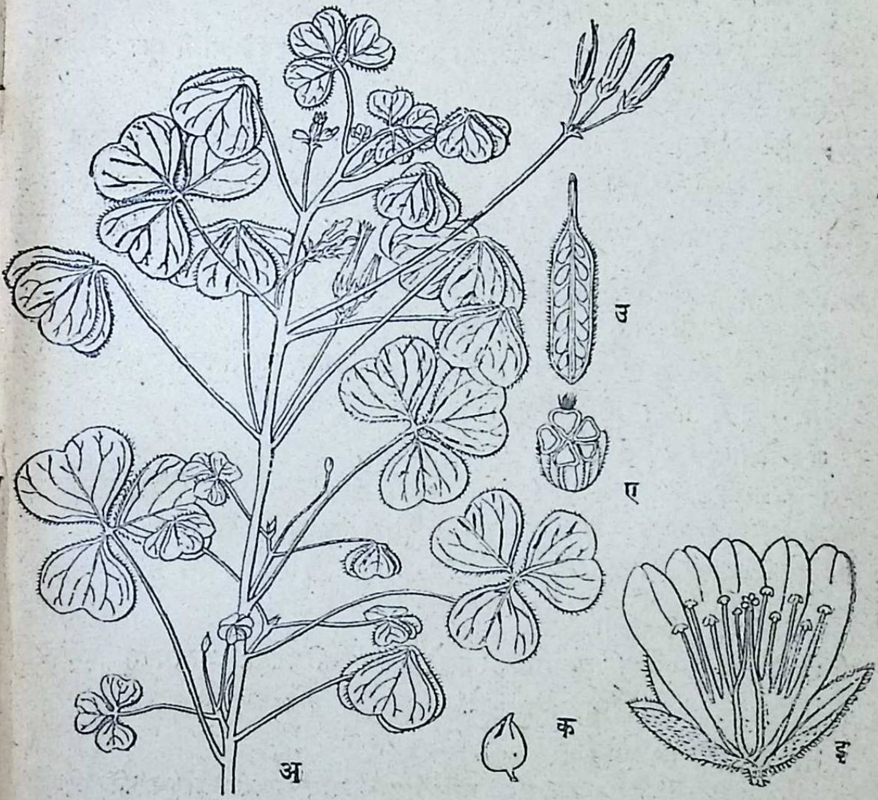

OXALIS CORNICULATA, LINN.
(Geraniaceae)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चालमोगरा

नाम **चित्र संख्या-८१**

(१) संस्कृत—कुष्ट बैरी, तुबरु (२) हिन्दी—चालमोगरा

(३) गुजराती—चालमोगरा (४) मराठी—चालमुगरा

(५) लेटिन–Gynocardia odorata, R.Br.

नैसर्गिक वर्ग–Bixinae.

वानस्पतिक वर्णन–यह मध्यमाकारी सर्वदा हरित रहने वाली वृक्ष जाति की वनस्पति है।

तना—स्निग्ध, राख या काटने पर पीत वर्णयुक्त

शाखा—साधारण गोल या कहीं २ चतुष्कोणीय

पत्र—एक फुट लम्बे, लम्बगोल, श्लक्ष्ण,

पुष्प—पीत ३.८ सें. मी. व्यासयुक्त

फल—कवीट के फल समान, २.५ से ३.८ से. मी. लम्बे, त्वक् खुरदरी

बीज—एक इंच लम्बे

प्राप्तिस्थान–यह हिमालय के निचले प्रदेश–सिक्किम, चटगांव और खसिया में प्राय: सर्वत्र प्राप्त होते हैं।

उपयोगी अंग–बीज तैल

रस–कटु तिक्त **वीर्य**–उष्ण **विपाक**–कटु

गुण–कृमिघ्न, वेदनास्थापन, रक्तशोधन, व्रणरोपण **दोषशमन**–वात

श. स. प्रभाव–त्वचा

रोगोपयोग—क्षय, कण्ठमाला, त्वग्रोग व्रण सन्धिवात, आमवात, गृध्रसी वातरोग, गण्डमाला.

मात्रा–५ से १० बूंद

अनुपान—गाय का घी या दूध की मलाई

विशेष—"In Indo-China the seeds are considered tonic, but they are used externally only; they are powdered, mixed with oil, and used for skin diseases."—*Basu*

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चालमोगरा

चित्र संख्या ८१

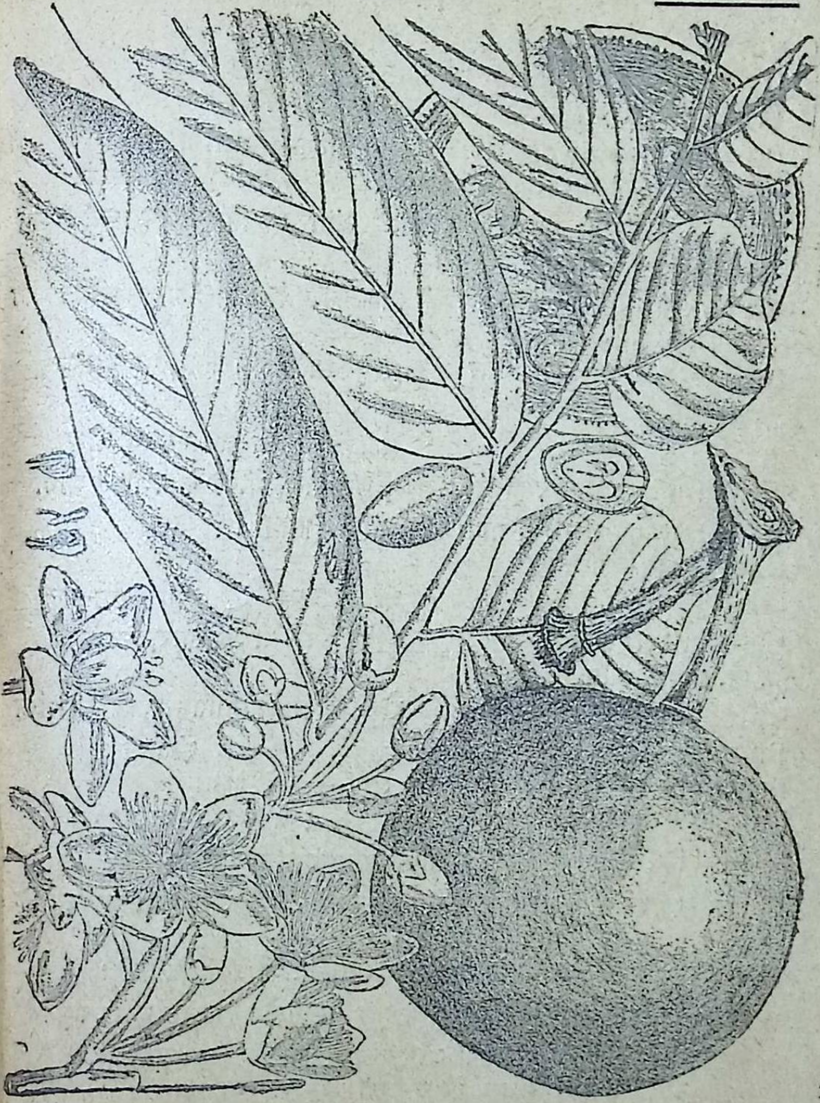

GYNOCARDIA ODORATA, R. BR.

(Bixinae)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चित्रक

नाम **चित्रसंख्या**–८२

(१) संस्कृत–चित्रक (२) हिन्दी–चित्रक

(३) गुजराती–चित्रा (४) मराठी–चित्रक

(५) अंग्रेजी–Leadwort (६) लेटिन–Plumbago zeylanica, linn.

नैसर्गिक वर्ग–Plumbaginaceae

वानस्पतिक वर्णन–यह ३ से ६ फीट ऊंची बहुवर्षायु क्षुप जाति की वनस्पति है।

मूल–१/२ से २ फीट लम्बी, ऊपरकी त्वक् का वर्ण, कपिश आर भीतर का श्वेत, उग्रगंधयुक्त.

तना–कम होता या छोटा, गोल

पुष्प—श्वेत गंधरहित, गुच्छदार,

शाखा–अनेक

फल–लम्बगोल

बीज—प्रत्येक फल एक में बीज

पत्र–अभिमुख, एकान्तर हरित, अखण्ड, लम्बगोल, मोगरे के पत्रो समान,

प्राप्तिस्थान–यह भारत में प्राय: सर्वत्र प्राप्त होती है।

उपयोगी अँग—मूलत्वक्

रस–कटु

वीर्य—उष्ण **विपाक**–कटु

गुण–लघु, रुक्ष, ग्राही

दोषशमन–वात कफहर, पितल

श. स. प्रभाव–पाचन संस्थान

योग—

चित्रकादिघृत संग्रहणी

चित्रकादिलेह अग्निमांद्य

चित्रकादि चूर्ण (वातरोग)

चित्राका हरित की अवलेह (कृमि, मंदाग्नि)

रोगोपयोग–आमातिसार, अग्निमांद्य अर्श, संग्रहणी,

मात्रा—१ से ३ माशा
१ से ४ रति (बालक)

अनुपान–उष्ण जल

विशेष–(१) इसकी मूलत्वक् नवीन ही उपयोग में लेना चाहिए क्योंकि पुरानी हीनवीर्य होती है।

(२) इसकी वर्णभेदसे रक्त और श्वेत–दो जातियां होती हैं।

(३) **प्रतिनिधि**—करील की मूल (यकृतरोग) मजीठ और कपूर

(४) **दर्पनाशक**–मस्तगी और बब्बूल का गोंद (फुफ्फुस)
गुलाब के फूल और सन्दल (यकृत)

(५) **अतियोग**--यह यकृत और फुफ्फुसके लिये हानिकारक है। गर्भवती स्त्री में भी इसका प्रयोग नहीं करना चाहिए।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चित्रक

चित्र सख्या. ८२

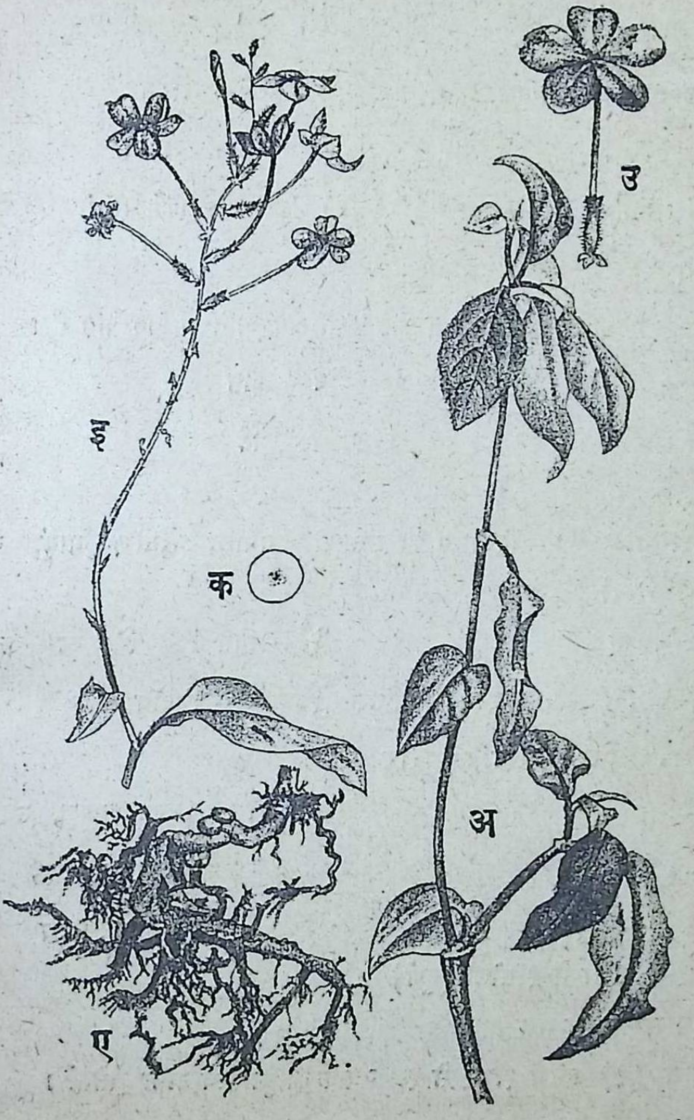

PLUMBAGO ZEYLANICA, LINN (Plumbaginaceae)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चिरायता

नाम **चित्र संख्या-८३**

(१) सस्कृत-किरातिक्त (२) हिन्दी-चिरायता

(३) गुजराती-करियांतु (४) मराठी-चिराइता

(५) अंग्रेंजी-Chiretta (६) लेटिन-Swertia chirata,Ham

नैसर्गिक वर्ग-Gentianaceae.

वानस्पतिक वर्णन—यह ३ फीट ऊंची क्षुप जाति की वनस्पति है।

मूल—साधरण **पुष्प**—पीत

फल—छोटे

शाखा—पीत

प्राप्तिस्थान— यह हिमालय की तलहटी में नेपाल, काश्मीर, कुमायुं, और

उपयोगी अंग—पंचांग

रस—तिक्त **वीर्य**—शीत **विपाक**—कटु

गुण-रुक्ष, सर, पितसारक, कुटपौष्टिक **दोषशमन**—त्रिदोष

श. स. प्रभाव—आन्त्र, सर्वशरीर

योग— **रोगोपयोग**-कामला पाण्डु, ज्वर, कुष्ठ, रण्णा, राह, अग्निमाद्य, कृमि

सुदर्शन चूर्ण (ज्वर)

षोड़शांग चूर्ण (ज्वर)

मात्रा-४ माशा से १ तोला (चूर्ण)

अनुपान—उष्ण जल

विशेष-(१) इसमें १.४२ से १.५२ तक कटुपातत्व प्राप्त होते हैं।

(२) आमाशय-शौथिल्य में यह बहुत लाभप्रद है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चिरायता

चित्र संख्या ८३

SWERTIA CHIRATA, HAM
(Gentianaceae)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चिल्ला [सप्तचक्रा]

नाम **चित्र संख्या-८४**

(१) संस्कृत–सप्तचक्रा (२) हिन्दी–चिल्ला

(३) गुजराती–मोरी (४) मराठी–सप्तकपि

(५) लेटिन–Casearia esculenta, Roxb.

नैसर्गिक वर्ग–Samydaceae.

वानस्पतिक वर्णन–यह क्षुप जाति की वनस्पति है ।

मूल–सुनहरी वर्णयुक्त

तना–पीताभश्वेत, स्निग्ध,

शाखा–पाण्डु, स्निग्ध,

पत्र–एकान्तर, सादे,

पुष्प–हरिताभ, गुच्छदार

फल–१ १/२ इंच लम्बे अण्डाकार नारंगीं वर्णयुक्त.

बीज–बहु, रक्तवर्ण के आवरणयुक्त.

प्राप्तिस्थान–यह भारत में कोचीन, लंका और मलाया में प्राय: सर्वत्र प्राप्त होता है ।

उपयोगी अंग-मूल और पत्र

रस–तिक्त कषाय **वीर्य**-उष्ण **विपाक-**कटु

गुण–स्वेजदनन, **दोषशमन**—वात

श. स. प्रभाव—यकृत

रोगोपयोग–ज्वर, तृष्णा, **यकृतरोग**

मात्रा—१ १/२ से ३ माशा

अनुपान—मक्खन

विशेष–(१) यह वनस्पति यकृतोतेजक और विरेचक है—कर्नल चोपरा

(२) इसकी मात्रा विशेष होनेपर भी किसी प्रकार की हानि नहीं होती है ।

(३) यकृत विकृतिजन्य मधुमेंह में यह वनस्पति बहुत लाभकारि है ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चिल्ला (सप्तचक्रा) चित्र संख्या ८४

CASEARIA ESCULENTA, ROXB.
(Samydaceae)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चीड (सरल)

नाम **चित्रसंख्या—८५**

(१) संस्कृत—सरला (२) हिन्दी—चीड

(३) गुजराती—सरल देवदार (४) मराठी—सरल देवदार

(५) अंग्रेजी–Long-needled pine. (६) लेटिन–Pinus longifolia, Roxb.

नैसर्गिक वर्ग—Coniferae.

वानस्पतिक वर्णन-यह एक ऊंचे वृक्ष जाति की वनस्पति है।

मूल–साधारण पृथ्वी में गहरी उतरी हुई। **पुष्प**– रक्ताभ श्वेत

तना—कीत्वचा १ से २ इंच मोटी **फल**—नोकदार

शाखा-हलके पीतवर्णयुक्त,काण्डारोही,सिधी **बीज** एकबीज

पत्र—गुच्छदार, हलके हरितवर्णयुक्त ९ से १२ इंच लंबे

प्राप्तिस्थान-यह हिमालय प्रदेश में सिंध से भूटान तक १,५०० से ७,५०० फीट की ऊंचाई तक और अफगानिस्तान में प्रायः सर्वत्र प्राप्त होती है।

उपयोगी अंग—सत्व, और पत्र

रस—मधुर तिक्त, कषाय **वीर्य**—उष्ण **विपाक**-कटु

गुण-मूत्रल, स्निग्ध **दोषशमन**—वात

श. स. प्रभाव—आन्त्र, फुफ्फुस और यकृत

रोगोपयोग-मंदाग्नि, दाह, शिरोवेदना, आन्त्रकृमि, त्वग्रोग योनि और गर्भाशयरोग **मात्रा**—१० से १५ रति (सत्व)

अनुपान—मुलेठी चूर्ण और मधु

विशेष-(१) इसकी काण्डत्वक् को काटने से एक प्रकार का 'चिक्कण' निर्यास निकलता है जिसें 'श्रीवास' या 'गन्धबिरोजा' कहते हैं।

(२) गन्ध-बिरोजा (शुष्क) की से एक प्रकार का सत्व निकालते है जिसको 'गन्धबिरोजासत्व' कहते हैं। इसकी सुगन्ध Terpantine oil से मिलती जुलती है।

(३) इसमें ११% से १४% तक Tannin होता है जा चमडा रंगने के उपयोग में लियां जाता हैं।

(४) चावल के जल में इसकी पत्रराख घुलाने से 'स्याही' बनती है।

(५) दर्पनाशक वनस्पति–कतीरा, बब्बूल का गोंद और बादाम तैल

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चीड (सरल) चित्र संख्या ८५

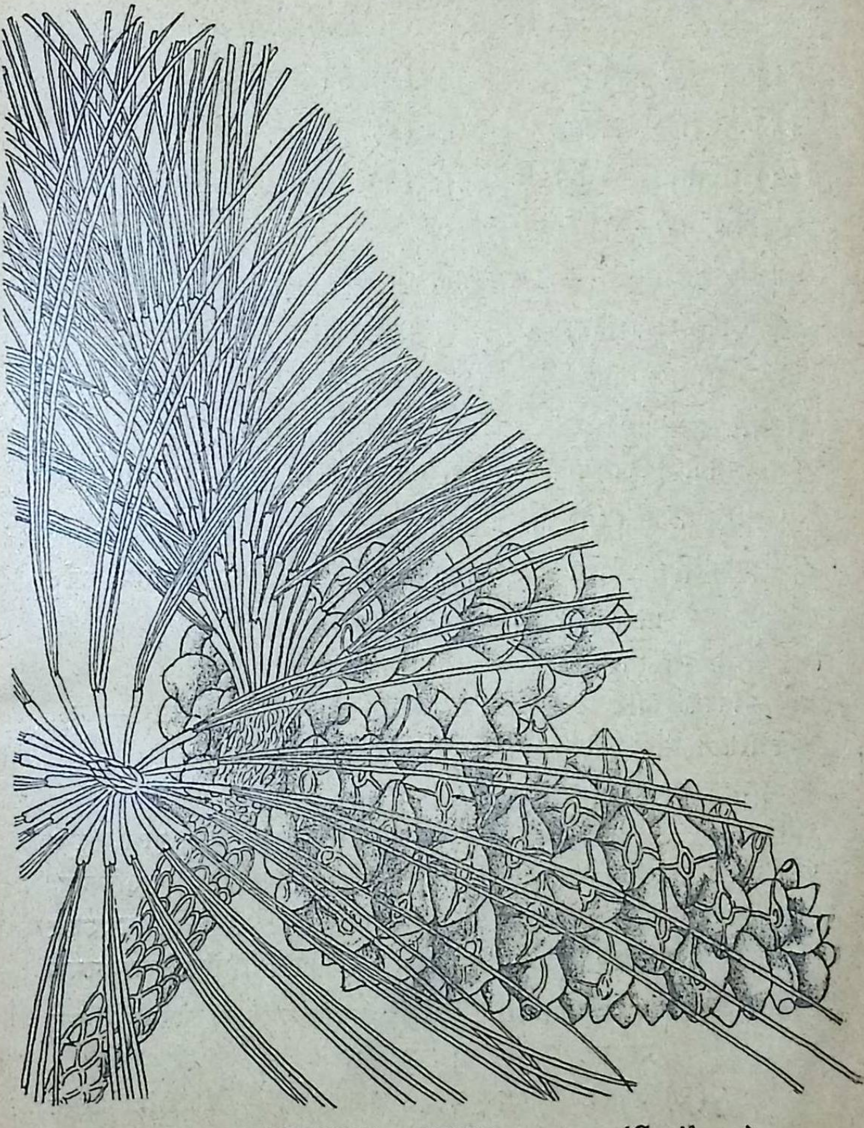

PINUS LONGIFOLIA, ROXB. (Coniferae)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

छतिवन (सप्तपर्ण)

नाम **चित्रसंख्या–८६**

(१) संस्कृत–सप्तपर्ण (२) हिन्दी–छतिवन

(३) गुजराती–सातवण (४) मराठी–सातवीण

(५) अंग्रेजी–Dita baak. (६) लेटिन–Alstonia scholaris, R.B.r.

नैसर्गिक वर्ग—Apocynaceae.

वानस्पतिक वर्णन—यह वृक्ष जाति की वनस्पति है।

मूल–कपिश खर, भंगुर, **पुष्प**—हरिताभ श्वेत, गुच्छदार

तना—साधारण गोल **फल**–लम्ब गोल

शाखा—एकान्तर **बीज**—एक से दो

पत्र–लम्बगोल, विषमभग्न कोणयुक्त, ऊर्धभाग हरित और निम्नभाग हलके हरित वर्णयुक्त और सात पत्र साथ होते है।

प्राप्तिस्थान–यह भारत के शुष्कप्रधानतः प्रान्तों और लंका में प्राय सर्वत्र प्राप्त होती है।

उपयोगी अंग–त्वक्

रस—तिक्क कषाय **वीर्य**–उष्ण **विपाक**—कटु

गुण–स्निग्ध, सारक, दीपन, सुगंधि, हृद्य **दोषशमन**–त्रिदोष

श. स. प्रभाव–पाचन संस्थान और त्वचा

योग—

ज्वर नाशक क्वाथ (ज्वर)

रोगोपयोग–कुष्ठ, शूल, गुल्म, व्रण, उदरकृमि, रक्तविकार, श्वास, **विषमज्वर**

मात्रा–त्वक–चूर्ण—१ से ४ तोला

सत्व—१० से ३० रति **अनुपान**–चोपचीनी और सेन्धा नमक

विशेष—(१) इसमें Quinine salt के समान गुणवाला होता है किन्तु यह इससे विशेष लाभप्रद है।

(२) इसकी काण्ठत्वक् में एक प्रकार का 'Ditcnin' तत्व होता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चित्र संख्या ८६

छतिवत (सप्तपर्ण)

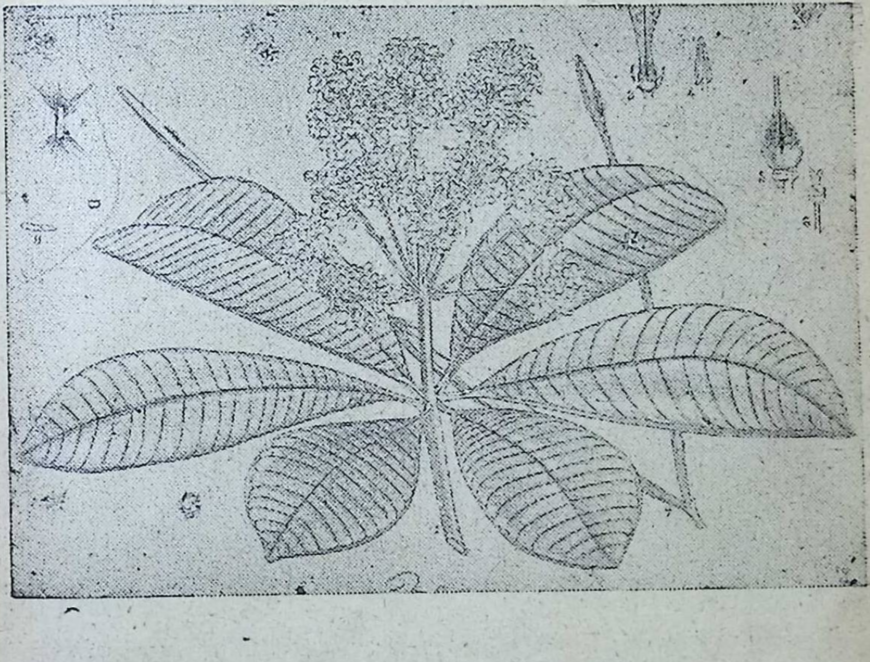

ALSTONIA SCHOLARIS, R. BR.
(Apocynaceae)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

छोटाचांद [सपगधा]

नाम **चित्रसंख्या-८७**

(१) संस्कृति—सर्पगन्धा (२) हिन्दी—छोटा चांद

(३) गुजराती—अमेलपोदी (४) मराठी—अडकई, सापसन

(५) लेटिन—Rauwolfia serpentina, Benth.

नैसर्गिक वर्ग–Apocynaceae.

वानस्पतिक वर्णन—यह पराश्रयी लता जाति की वनस्पति है।

मूल-अंगुली समान माटी और भंगुर **पुष्प**–रक्तवर्ण

तना—हलके पाण्डुवर्णयुक्त प्रत्येक संधि से ३ या ४ पत्र निकलते हैं। **फल**-बैंगनी या कृष्ण (क्व)

पत्र-७-१।२ से १८ से. मी. लम्बे, २-५ से ६.२ सें. मी. चौड़े वर्छी आकारयुक्त।

प्राप्तिस्थान—यह भारत में मुरादाबाद से सिक्किम तक ४००० फीट की ऊंचाई पर और बर्मा अण्डमान सिलोन और जावामें प्रायः सर्वत्र प्राप्त होती है।

उपयोगी अंग–मूल काष्ठ

रस—कटु तिक्त, **वीर्य**--उष्ण **विपाक**--कटु

गुण–रुक्ष, निद्राकार, मेध्य, **दोषशमन**–कफपित

श. स. प्रभाव--मस्तिष्क; और वातसंस्थान

रोगोपयोग-अपस्मार **उन्माद** कृमि, रक्ताभिसरण.

योग–

सर्पगन्धादिचूर्ण (उन्माद)

मात्रा–रक्ताभिसरण—५ से १० ग्रेन, निद्रा में १० से ३० ग्रेन उन्माद में —१ से ३ माशा.

अनुपान—जल, दूध,

विशेष—(१) इसकी मूल में Resin, Potassium Carbonet, Phasphate Silicate iron और Megnese तत्व प्राप्त होते हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

छोटाचांद (सर्पगंधा) चित्र संख्या. ८७

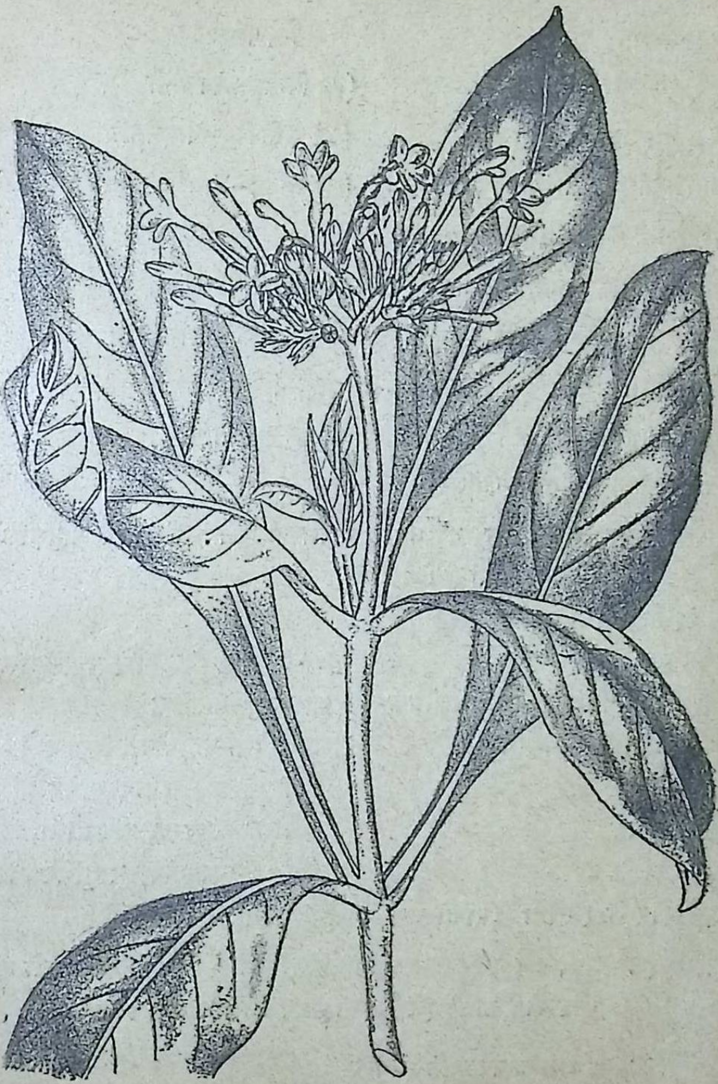

RAUWOLFIA SERPENTINA B NTH.
(Apocynaceae)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

छोपचीनी

नाम **चित्रसंख्या–८८**

(१) संस्कृत–द्वीपान्तरवचा (२) हिन्दी–छोपचीनी,

(३) गुजराती–चोपचीनी (४) मराठी—चोपचीनी

(५) अंग्रेजी–China root. (६) लेटिन–Smilax china, Linn.

नैसर्गिक वर्ग–Liliaceae.

वानस्पतिक वर्णन–यह प्रसारणि क्षुप जाति की वनस्पति है।

मूल–शुष्क हलके गुलाबी वर्णयुक्त **पुष्प**–हलके पीताभ श्वेत

तना—साधारण **फल**–स्निग्ध

शाखा–पतली **बीज**–एक या दो

पत्र–लम्बगोल, पतले,एकान्तर,

प्राप्तिस्थान–यह भारत में बंगाल में सिलहट और नेपाल के पहाड़ों में प्राप्त हाती है।

उपयोगी अंग–मूल

रस–तिक्त, कटु **वीर्य**–उष्ण **विपाक**–मधुर

गुण-दीपन, पौष्टिक, मलमूत्रशोधक, **दोषशमन**–वातकफ

श. स. प्रभाव–मूत्रमार्ग **रोगोपयोग**–वातरोग, फिरंगरोग उदराध्मान अपस्मार, उन्माद, कण्ठमाला, रक्तदोष, चातुर्थिकज्वर,

योग–

चोपचीनीपाक

मात्रा–१।२ से १ तोला (पाक) चूर्ण–३ से ६ माशा.

विशेष–(१) अयोग्य सेवन–उष्ण प्रकृत वाले, बालकों को हृदौर्बल्य वाले और कफ रोग वालों को इसका सेवन अहितकर है।

(२) दर्पनाशक वनस्पति–अनार

(३) प्रतिनिधि वनस्पति–उशवा और असगंध

(४) इसका सेवन शरद या वसन्त ऋतु में करना चाहिए।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

जायफल

नाम

(१) संस्कृत-जातिफलम् (२) हिन्दी-जायफल

(३) गुजराती-जायफल (४) मराठी-जायफळ

(५) अंग्रेजी- (६) लेटिन-Myristica fragrans. Houtt.

नैसर्गिक वर्ग-Myristiceae

वानस्पतिक वर्णन-यह एक वृक्ष जाति की वनस्पति है।

मूल-साधारण

तना-गोल, स्निग्ध

शाखा—कोमल

पत्र-लम्बे

पुष्प-रक्ताभ श्वेत,

फल-लम्बगोल, भीतरी भाग में रक्त-वर्ण का गुच्छ होता है जिसे 'जातिपत्री' कहा जाता है।

प्राप्तिस्थान-यह मलाया और जावा द्वीप में बहुतायतसे प्राप्त होता है।

उपयोगी अंग-फल

रस-तिक्त कटु **वीर्य**-उष्ण **विपाक**-कटु

गुण-ग्राही, दीपन, उत्तेजक, स्वर्य, स्तंभक **दोषशमन**—वातकफ

श. स. प्रभाव—प्रजनन संस्थान

योग—

जातिफलादि वटी (अतिसार, अर्श, मधुमेह)

स्तंभनवटी (शुक्रदोष)

जातिफलादि

रोगोपयोग-वमान, मुखरोग, आमातिसार, शुक्रदोष, विसूचिका, मंदाग्नि

मात्रा-चूर्ण- १/२ से १ माशा

तैल-१ से ४ बिन्दु

अनुपान—तक्र

विशेष-(१) यह शुक्र स्तम्भन के लिये प्रधान वनस्पति है।

(२) अतियोग-इसके अत्यधिक मात्रामें सेवन करनेसे यकृत और फुफ्फुसों को हानि पहुंचती है।

(३) दर्प नाशकयोग-धानिया, चन्दन और वनफशा

(४) यह उष्ण प्रकृतिवालों के लिये हानिकारक और शीत प्रकृति वालो के लिये लाभप्रद है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

जटामांसी

नाम **चित्र संख्या—८९**

(१) संस्कृत—जटामांसी, जटिला (२) हिन्दी-जटामांसी, बालछड

(२) गुजराती-जटामांसी (४) मराठी-जटामांसी

(४) अंग्रेजी-Jatamansi (६) लेटिन-Nardostachys, jatamansi. D.C.

नैसर्गिक वर्ग—Valerianaceae.

वानस्पतिक वर्णन-यह बहु वर्षायु क्षुप जाति की वनस्पति है।

मूल-छोटी रोमश, सुगन्धित **पुष्प**-गुलाबी गुच्छदार,

तना— छोटा, श्लक्षण **फल**-रोमश

शाखा-अधोनत

पत्र-१५ से २० सें. मी. लम्बे, २ से ५ सें. मी. चौड़े,

प्राप्तिस्थान—यह हिमालय में सिक्किम से कुमांयुं तक २००० से १७००० फीट की ऊंचाई तक सर्वत्र प्राप्त होती है।

उपयोगी अंग—मूल,

रस-तिक्त, कषाय, मधुर **वीर्य**—शीत **विपाक**-मधुर

गुण-वल्य,मेघ्य,संज्ञास्थापन,कांतिवर्धक **दोषशमन**-त्रिदोष

श. स. प्रभाव-वातसंस्थान

रोगोपयोग-जलोदर, अपस्मार, रक्तविकार, रक्तपित्त, मस्तिष्कपीडा, दंतशूल, हृदरोग, स्मृतिनाश, आर्तवदोष, विसर्प, आक्षेप

मात्रा-चूर्ण १० से २० रति

अनुपान- जल.

विशेष-(१) यह आकाशमांसी और गन्धमांसी-नाम से दो भेद होते हैं।

(२) इसमें Valerien के समान गुण प्राप्त होते हैं।

(३) इसमें, निर्यास, कर्पूर द्रव्य, अम्ल तत्व, उडनशील तैल. और रालसदृश आदि तत्व प्राप्त होते हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

जटामांसी

चित्र संख्या ८९

NARDOSTACHYS, JATAMANSI D.C.
(Valerianaceae)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

जामुन

नाम **चित्र संख्या-९०**

(१) संस्कृत—जम्बू (२) हिन्दी—जामून

(३) गुजराती—जामू (४) मराठी—जम्बू

(५) अंग्रेजी—Jambol (६) लेटिन–Eugenia jambolana, Lamk.

नैसर्गिक वर्ग–Myrtaceae

वानस्पतिक वर्णन—यह वृक्ष जाति की वनस्पति है।

मूल–मोटी, पृथ्वीमें गहरी उतरीहुई **पुष्प**—पाताभश्वेत

तना–मोटा, गोल, चिकना, रक्ताभ श्वेत **फल**— २ से २-१/२ इंच लम्बे १ से १-१/२

शाखा—गोल

पत्र—बडे, स्निग्ध, चमकदार **बीज**—छोटे,

प्राप्तिस्थान–यह भारत में प्रायः सर्वत्र प्राप्त होता है।

उपयोगी अंग–फल, त्वक्, पत्र और मग्ज

रस–कषाय, मधुर **वीर्य**–उष्ण **विपाक**–कटु

गुण–ग्राही, पुरीष विरजनी, स्तंभक **दोषशमन**–कफपित, वातकर

श० स० प्रभाव–आन्त्र **रोगोपयोग**–अतिसार, बहुमूत्र, वमन, यकृतरोग; आमाशयरोग, मधुमेह, संग्रहणी

मात्रा—चूर्ण–२ से ४ माशा

अनुपान—शहद

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चित्र संख्या ९०

जामून

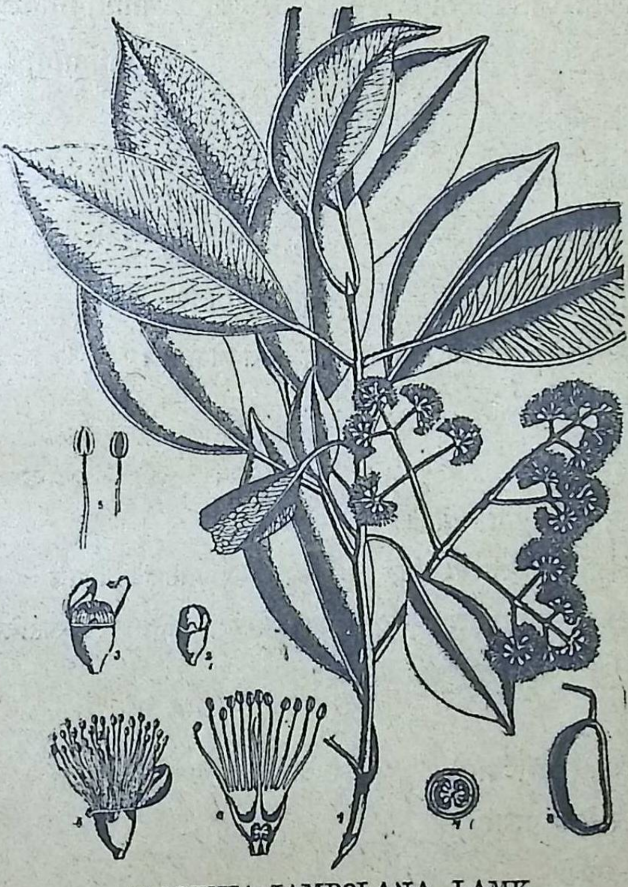

EUGENIA JAMBELANA, LAMK
(Myrtaceae)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

जीरा

नाम **चित्र संख्या—९१**

(१) संस्कृत—जीरक (२) हिन्दी–जीरा

(३) गुजराती—जीरुं (४) मराठी-जीरे, पांढरे जीरे

(५) अंग्रेजी-Cumminum seeds (६) लेटिन—Cumminum cyminum, Linn.

नैसर्गिक वर्ग—Umbezliferae.

वानस्पतिक वर्णन-यह क्षुप जाति की वनस्पति हैं।

मूल-छोटे सूत्रवत् **पुष्प**—

तना-कोमल, हरिताभ **फल**-लम्बगोल, नुकीले

पत्र—त्रिदली **बीज**-अधोलम्ब

प्राप्तिस्थान—यह भारत में प्रायः सर्वत्र प्राप्त होती है।

उपयोगी अंग—फल

रस-कटु **वीर्य**-उष्ण **विपाक**-कटु

गुण-रूक्ष, दीपन, लघु, संग्राही,

श. स. प्रभाव-पाचन संस्थान **दोषशमन**-वातकफ, पितल

रोगोपयोग—अग्निमाद्य, गुल्म **उदराध्मान**, अतिसार, रक्तविकार, **गर्भाशयरोग**, विषमज्वर

योग—

जीरकारिष्ठ, (उदराध्मान)

मात्रा—२ से ४ माशा

अनुपान-मिश्री

विशेष-(१) इसमें Thymol नामक रसायनिक तत्व प्राप्त होता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

जीरा

चित्र संख्या. ९१

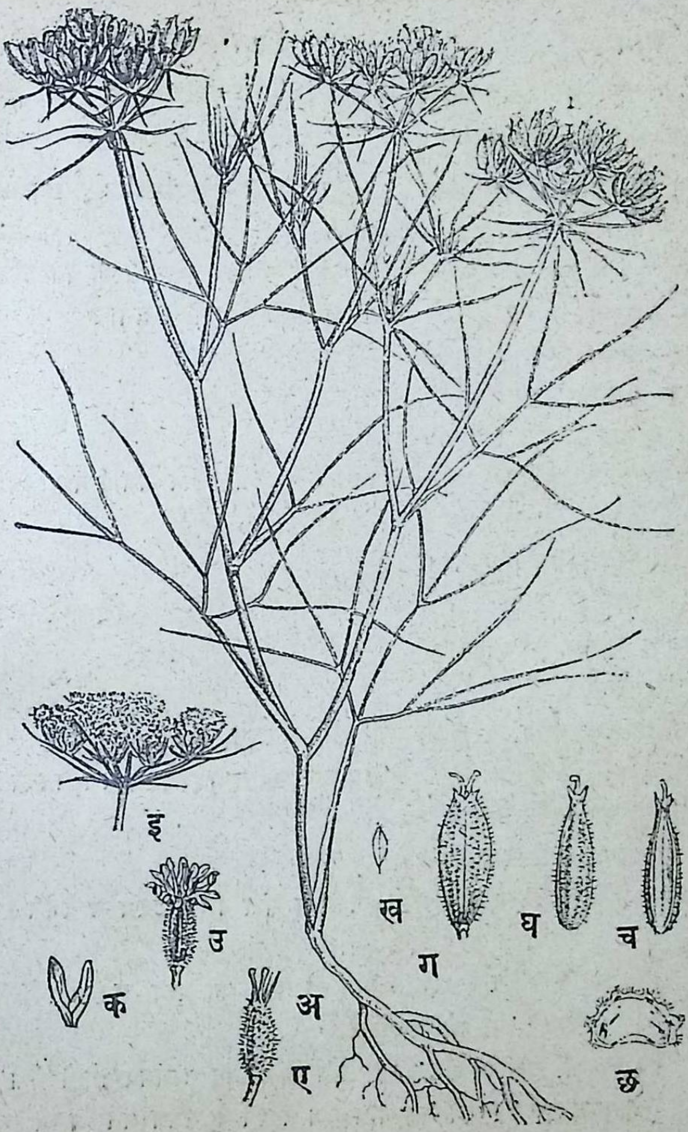

CUMMINUM CYMINUM, LINN. (Umbezliferae)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

डिजिटेलिस

नाम **चित्रसंख्या-९४**

(१) संस्कृत–हृत्पत्री तिलपुष्पी (२) हिन्दी–डिजिटेलिस

(३) गुजराती–डिजिटेलिस (४) मराठी—डिजिटेलिस

(५) अंग्रेजी–Fox glone (६) लेटिन–Digitalis purpurea, Linn.

नैसर्गिक वर्ग–Scrophulariaceae.

वानस्पतिक वर्णन-यह सात से आठ फीट ऊंची वृक्ष जाति की वनस्पति है।

मूल–साधारण

पुष्प–तिलपुष्पों से समान

तना--गोल

फल–छोटे, गोल

शाखा-अधोनत श्लक्षण

पत्र–तम्बाकू के पत्रों के समान, खर,

प्राप्तिस्थान–यह भारत में ७००० से ८००० फीट की ऊंचाई पर हिमालय में सर्वत्र प्राप्त होता है।

उपयोगी अंग–पत्र और सत्व

रस-तिक्त, **वीर्य**–शीत **विपाक**-कटु

गुण-हृद्य, मूत्रल, हृदय की गति कमकरना, संकोचक

दोषशमन–वात पित

श. स. प्रभाव–हृदय, रक्तवाहिनिया और फुफ्फुस

रोगोपयोग-आर्द्रशोथ, जलोदर, हृदयविस्फार, हृद्दौर्बल्य, गर्भाशयरक्तस्राव

मात्रा–पत्र चूर्ण–१।४ से ६ गुंजा

सुरासार–५ से १५ बिन्दु

विशेष–(१) इस वनस्पति के प्रयोग पश्चात् शंख या मण्डरभस्म देनेसे रोगी को यथेष्ठ लाभ होता है।

(२) डिजिटेलिस के अभाव में इसके वर्ग की अन्य वनस्पतियों का प्रयोग किया जा सकता है।

(३) कभी कभी गर्भाशय रक्तस्राव में भी यह लाभप्रद होती है।

(४) यह एक विषैली वनस्पति है। प्रयोग के समय अतः मात्रा प्रमाण का ध्यान देना आवश्यक है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चित्र संख्या ९२

डिजिटेलिस

DIGITALIS PURPUREA,
(Scrophulariaceae)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

डिकामाली

नाम

(१) संस्कृत—हिंगुपत्री (२) हिन्दी—डिकामाली

(३) गुजराती—डीकामाली (४) मराठी—डीकेमाली

(५) अंग्रेजी- (६)लेटिन-Gardenia gummifera, Linn.

नैसर्गिकवर्ग—

वानस्पतिक वर्णन—यह वृक्ष जाति की वनस्पति है और अमरूद के वृक्षों से मिलता जुलता है।

मूल-साधारण **पुष्प**—पीताभ श्वेत

तना-गोल, किंचित् श्लक्ष्ण

शाखा-साधारण, एकान्तर, ऊपर चढती हुई, इसके मूल भाग से एक प्रकार का निर्यास निकलता है। **फल**—मांसल, **बीज**—छोटे

पत्र—साधारण, एकान्तर,

प्राप्तिस्थान-यह भारत के पहाडी प्रदेशों में प्राय: सर्वत्र प्राप्त होता है।

उपयोगी अंग—निर्यास

रस—कटु तिक्त **वीर्य**—उष्ण **विपाक**-कटु

गुण-तीक्ष्ण, अनुलोमन, सर, विबन्ध, **दोषशमन**-वात कफ आमपाचन,

श.स. प्रभाव-आन्त्र

रोगोपयोग-अर्श, अरुचि, आध्मान, प्लीहावृद्धि, कृमि, विषमज्वर, बालातिसार (दन्तोद्भवकाल)

पत्र-१ से २ रति

अनुपान-जल

विशेष-(१) बाल फ़ुफ्फुसरोगों में इसका प्रयोग लाभप्रद है।

(२) यह कृमि, ज्वर और अग्निमाद्य में हितकर है—कर्नल चोपरा.

(३) इसका 'निर्यास' हरिताभपीत और मूत्रगन्धि होता है अत: इसकी शुद्धाशुद्धता देखने पश्चात् ही प्रयोग में लेना चाहिए।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

तज, दालचीनी

नाम

(१) संस्कृत—त्वक् (२) हिन्दी—तज, दालचानी

(३) गुजराती—तज (४) मराठी—तज

(५) लेटिन–Cinnamomum, Zeylanicem breyn.

नैसर्गिक वर्ग—Lauraceae.

वानस्पतिक वर्णन-यह सदा हरित मध्यमाकारी वृक्ष जाति की वनस्पति है।

मूल–मोटी, **पुष्प**–

तनात्वचा—मोटी स्निग्ध और फीके वर्णकी **फल**—गहरा बैंगनी वर्णवाला

निर्यास–५ से १५ रति

पत्र—लम्बगोल, एकान्तर, **तैल**–२ से ५ बूंद

प्राप्तिस्थान—यह प्रधानतः चीन और लंका में बहुताय से प्राप्त होती है।

उपयोगी अंग—त्वक् और त्वक् तैल

रस– कटु मधुर तिक्त **वीर्य**–उष्ण **विपाक**—कटु

गुण-लघु, रुक्ष, तैल, ग्राही **दोषशमन**–वात कफहर, पितल

श. स. प्रभाव—आन्त्र आमाशय

रोगोपयोग—हृद्रोग, आम, कृमि अतिसार, **अरुचि**, वस्तिकेरोग तैल–आर्तवप्रवृर्तक, दंतरोग वमन

विशेष-(१) प्रतिनिधि–कवावचीनी और कुलिंजन

(२) दालचीनी तीन प्रकार की प्राप्त होती है:—

(क) भारतीय–चकरोता, गढवाल कुमायुं में होता है इसके पत्रों को तेजपात कहते हैं।

(ख) चीनी–चीन और सिंगापुर।

(ग) सिंहली–लंका से प्राप्त होनेवाली सिकोनी दालचीनी का तैल सिंगापूर और चीन।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

तगर

नाम **चित्रसंख्या—९४**

(१) संस्कृत-तगर (२) हिन्दी-तगर

(३) गुजराती-तगर गंठोड़ा (४) मराठी-तगर

(५) अंग्रेजी- (६) लेटिन-**Valeriana wallichii** D.C.

नैसर्गिक वर्ग-Valerianaceae

वानस्पतिक वर्णन-यह एक वृक्ष जाति की वनस्पति है

मूल-साधारण **पुष्प**-श्वेत

तना-विशिष्ठ गन्धयुक्त, **फल**-

शाखा-गन्धयुक्त **बीज**-

पत्र-५ से १०सें. मी. लम्बे,

प्राप्तिस्थान-यह भारत में हिमालय में काश्मीर से भूटान तक के प्रदेश में प्रायः सर्वत्र प्राप्त होती है।

उपयोगी अंग-मूल

रस-मधुर तिक्त **वीर्य**-उष्ण **विपाक**-मधुर

गुण-लघु,स्निग्ध, उष्ण, **दोषशमन**-त्रिदोष

श. स. प्रभाव-समस्त शरीर प्रधानतः स्नायुमंडल

रोगोपयोग-वीसर्प, **अपस्मार, संधिवात,**

विष नैचरोग, कुंक्कुरकास

मात्रा--६ रति से २ माशा

अनुपान-जल

विशेष—(१) इसका 'तगर' और 'पिंडीतगर' नाम से दो जातियां हैं।

(२) इसमें ५ से ९ प्रतिशत उड्डनशील तैल प्राप्त होता है।

(३) इसका सेवन करते समय मात्रा का ध्यान रखना परमावश्यक है। अत्यधिक मात्रा हानिकारक है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

तगर चित्र संख्या ९५

VALERIANA WALLICHII, D.C.
(Valerianaceae)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

जमीकन्द (सूरण)

नाम **चित्रसंख्या-९५**

(१) संस्कृत—अर्शोघ्न (२) हिन्दी—जमीकन्द

(३) गुजराती—सूरण (४) मराठी—गोडा सूरण

(५) लेटिन-Amorphophallus companulatus, Blume.

नैसर्गिक वर्ग—Araceae.

वानस्पतिक वर्णन—यह एक क्षुप जाति की वनस्पति है।

मूल-चपटा, लम्बगोल, गहरा बादामी वर्णयुक्त **पुष्प**-एक लिंगी

तना-छोटा **फल**-मांसल, रक्तवर्ण.

शाखा-एकान्तर, **बीज**-२ से ३ बीज

पत्र-३० से ९० सें. मी. चौडे, ये पुष्पों के बाद निकलते हैं। सादे, गहरे हरितवर्णयुक्त.

प्राप्तिस्थान-यह भारत में प्राय: सर्वत्र प्राप्त होती है।

उपयोगी अंग-कन्द

रस-कटु कषाय **वीर्य**-उष्ण **विपाक**-कटु

गुण—अनुलोभयन, दीपन, पाचन, लघु, सर, रुच्य

श. स. प्रभाव-आन्त्र **दोषशमन**-वातकफ

योग— **रोगोपयोग**-गुल्म, अर्श, कफजरोग, यकृत प्लिहा रोग, स्थौल्य, नैत्ररोग (मूल), आर्तवदोष,

बृहत सूरण मोदक (अर्श)

मात्रा-चूर्ण-२ से १० माशा

अनुपान—दूध या जल.

विशेष-(१) यह 'ग्राम्य' और 'वन्य' भेदसे दो प्रकार की होती है औषधोपयगो मे वन्य सूरण ली जाती है।

(२) छोटा नागपुर की नागा जातियाँ इसके फल को संधिवात में बाह्य प्रयोग करते हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

जमीकन्द (सूरण) चित्र संख्या ९५

AMORPHOPHALLUS COMPANULATUS, BLUME
(Araceae)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

ढाक

चित्रसंख्या—९६

नाम
(१) संस्कृति—पलाश
(२) हिन्दी—ढाक टेंसू
(३) गुजराती—खांखरो
(४) मराठी—पाडल
(५) अंग्रेजी—Bastard teak.
(६) लेटिन—Butea frondosa, Roxb.

नैसर्गिक वर्ग—Pipilioinaceae.

वानस्पतिक वर्णन—यह पांचसे बीस फीट ऊंची वृक्ष जातिकी वनस्पति है।

मूल-उध्वभाग कपिश उसके नीचे का रक्त और अन्दर का श्वेत

तना-की त्वक्-१/२ से १ इंच मोटा खर, २ से ३ फुट गोल

शाखा-कोमल, रोमश, शाखा का भेदन करनेसे उसमेंसे एक प्रकारका रक्ताभ निर्यास निकलता है।

पुष्प-पतंगाकार, शुकनासिका समान, गुच्छ, केसरिया वर्णयुक्त

फली-५ से ८ इंच लम्बी-१२ से २ इंच चौड़ी हलके कपिश वर्णयुक्त रोमश

बीज-१ से १-१/२ इंच लम्बे, १ इंच चौड़ा, चपटे, रक्ताभश्वेत

पत्र-त्रिदली, एकान्तर, पुंखपत्र, रोमश, अवरणयुक्त, लम्बगोल

प्राप्तिस्थान-यह भारत में सर्वत्र प्राप्त होती है। और बहुत प्रसिद्ध है।

उपयोगी अंग-पत्र, पुष्प, बीज, तैल और क्षार

रस-तिक्तकटु कषाय
वीर्य-उष्ण
विपाक-कटु

गुण-विरेचक (तैल)संकोचक (निर्यास) मूत्रल, कामोदीपक,

दोषशमन-त्रिदोष

श. स. प्रभाव-महास्रोतस्

योग—
पलाशपुष्पासव (मूत्रदाह, मूत्रकृच्छ्र)

रोगोपयोग-मूत्रावरोध, मूत्रकृच्छ्र, आन्त्रकृमि, अतिसार, रक्तस्राव, अर्श, संग्रहणी, गुल्म, उदररोग, त्वग्रोग

मात्रा-३ से ६ माशा (चूर्ण)

अनुपान- मध

विशेष-(१) इससे एक प्रकार का निर्यास निकलता है जिसे 'चुनिया' या पलास गोंद कहते हैं।

(२) इसके पुष्पों से पीला रंग निकाला जाता है।

(३) पलाश की एक और श्वेत वर्णयुक्त की जाति होती है। यह प्रधानतः पारद, हरताल आदि भस्में बनानेके काममें ली जाता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चित्रसंख्या ९६

ढाक

BUTEA FRONDOSA, ROXB.
(Pipilioinaceae)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

ताम्बूल

नाम **चित्र संख्या—९७**

(१) संस्कृत—नागवल्ली (२) हिन्दी—नागवेल, ताम्बूल

(३) गुजराती—नागवेल (४) मराठी—नागवेल

(५) अंग्रजी—Betel leaf (६) लेटिन—Piper betle, Linn.

नैसर्गिक वर्ग–Piperaceae.

वानस्पतिक वर्णन–यह लता जाति की वनस्पति है।

मूल—साधारण **पुष्प**–पीताभ श्वेत

तना–कोमल हरिताभ **फल**–छोटे

पत्र—गोल, पीपल के पतों के समान

प्राप्तिस्थान—भारत के उष्ण और आर्द्र, प्रधान जलवायु वाले प्रदेशों में प्रायः सर्वत्र प्राप्त होती है। प्रधानतः बंगाल, उडिसा, मद्रास, उत्तर प्रदेश और बम्बई प्रान्त में बहुतायत प्राप्त होती है।

उपयोगी अंग—पत्र

रस—तिक्त, कटु कषाय **वीर्य**—उष्ण **विपाक**—कटु

गुण—सर, पाचन, विशद, रुच्य, स्वर्य. **दोषशमन**—वात कफ, पितप्रकापक

श. स. प्रभाव— प्रजनन अवयव और लालस्राव ग्रंथियां

रोगोपयोग–शोक, **रतौंधि, शुष्ककास**, व्रण, कास, पीनस

मात्रा–स्वरस, १/२ से १ ताला

अनुपान–मधु

विशेष-(१) इसका विशेष उपयोग कफप्रधान रोगों में किया जाता है।

(२) इसमें, Starch, Sugar; Tannin, Diastose और voilatile oil रसायविक तत्व होते है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

तांम्बूल चित्र संख्या ९७

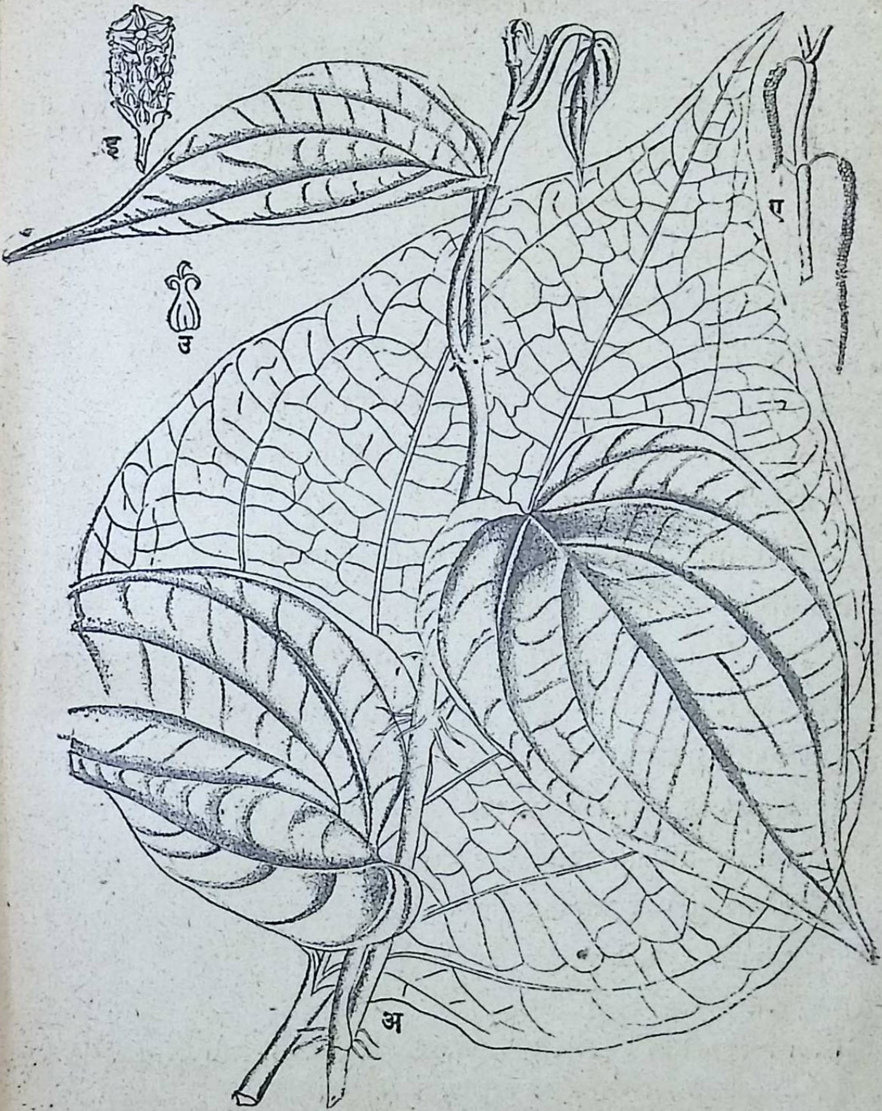

PIPER BETLE, LINN.
(Piperaceae)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

तालमखाना

नाम **चित्र संख्या–९८**

(१) संस्कृत–ईक्षुरकः (२) हिन्दी–तालमखाना

(३) गुजराती–एखरा (४) मराठी–विखरा

(६) लेटिन–Asteracantha longifolia, Ness.

नैसर्गिक वर्ग–Acanthaceae.

वानस्पतिक वर्णन–यह प्रसारणि क्षुप जाति की वनस्पति है।

मूल—साधारण, सूत्रवत् **पुष्प**–नीले

फल–गोल विषम भग्न

शाखा–कंटकयुक्त **बीज**—को ताँलमखाना कहा जाता है।

पत्र–लम्बे

प्राप्तिस्थान–यह भारत म प्रायः सर्वत्र प्राप्त हाती है।

उपयोगी अंग–बीज

रस–मधुर, अम्ल, तिक्त (पत्र) **वीर्य**–शीत **विपाक**–मधुर

गुण–ग्राही, वृष्य पिच्छिल, गुरु (पत्र), मूत्रल और शोथहर **दोषशमन**–वातपित

श. स. प्रभाव–प्रजनन अवयव वृक्क

रोगोपयोग–आमवात, पित्तातिसार मूत्रकृच्छ्र वातशोथ जलोदर वातरक्त

मात्रा–बीजचूर्ण—३ रति से ६ रति

राख—१ से ३ माशा

अनुपान–दूध

विशेष–(१) इसमें चिक्कण द्रव्य, पीतवर्णयुक्त तैल और मांस पदार्थ-यें तीन प्रधान रसायतिक तत्व प्राप्त होते हैं।

(२) इसकी मूल यकृतरोग, प्रजनन अवयय और मूत्राशय के विकारों में लाभप्रद हैं—कर्नल चोपरा

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

तालमखाना

चित्र संख्या ९८

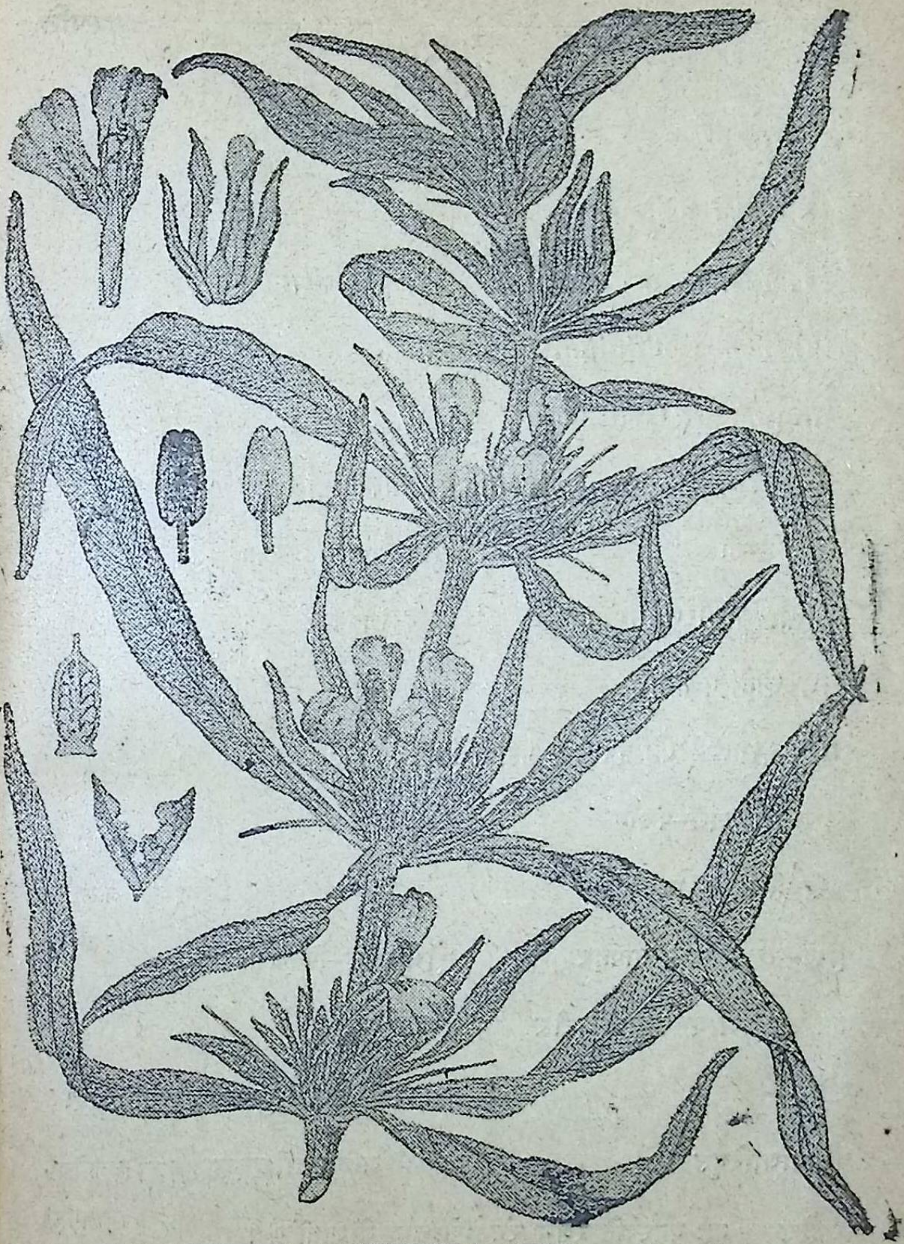

ASTERACANTHA LONGIFOLIA, NESS. (Acanthaceae)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

त्रायमाण

नाम **चित्र संख्या—९९**

(१) संस्कृत–त्रायमाण (२) हिन्दी–त्रायमाण

(३) गुजराती–त्राययाण (४) मराठी–त्रायमाण

(५) लेटिन–Delhinium zalil, Caith.

नैसर्गिक वर्ग–Gentiaceae.

वानस्पतिक वर्णन–यह क्षुप जाति की वनस्पति है।

मूल–लम्बी **पुष्प**–पीत कुंटकयुक्त

शाखा–साधारण अधोमत **फल**–छोटे

पत्र–छोटे, एकान्तर

प्राप्तिस्थान—यह ईरान के पहाडों में विशेष होती है।

उपयोगी अंग–पंचाग

रस–तिक्त कषाय **वीर्य**–शीत **विपाक**—कटु

गुण–सर, स्वेदल, तापहर **दोषशमन**–पितकफ

श. स. प्रभाव–सम्पूर्ण शरीर

योग— **व्याधि**-ज्वर, गुल्म, रक्तविकार,

त्रायमाणादिघृत अग्निमाद्य; **मक्कलशूल**, हृदरोग,

विशेष— यह वनस्पति रेशम रंगने के काम में आती है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

त्रायमाण

चित्र संख्या ९९

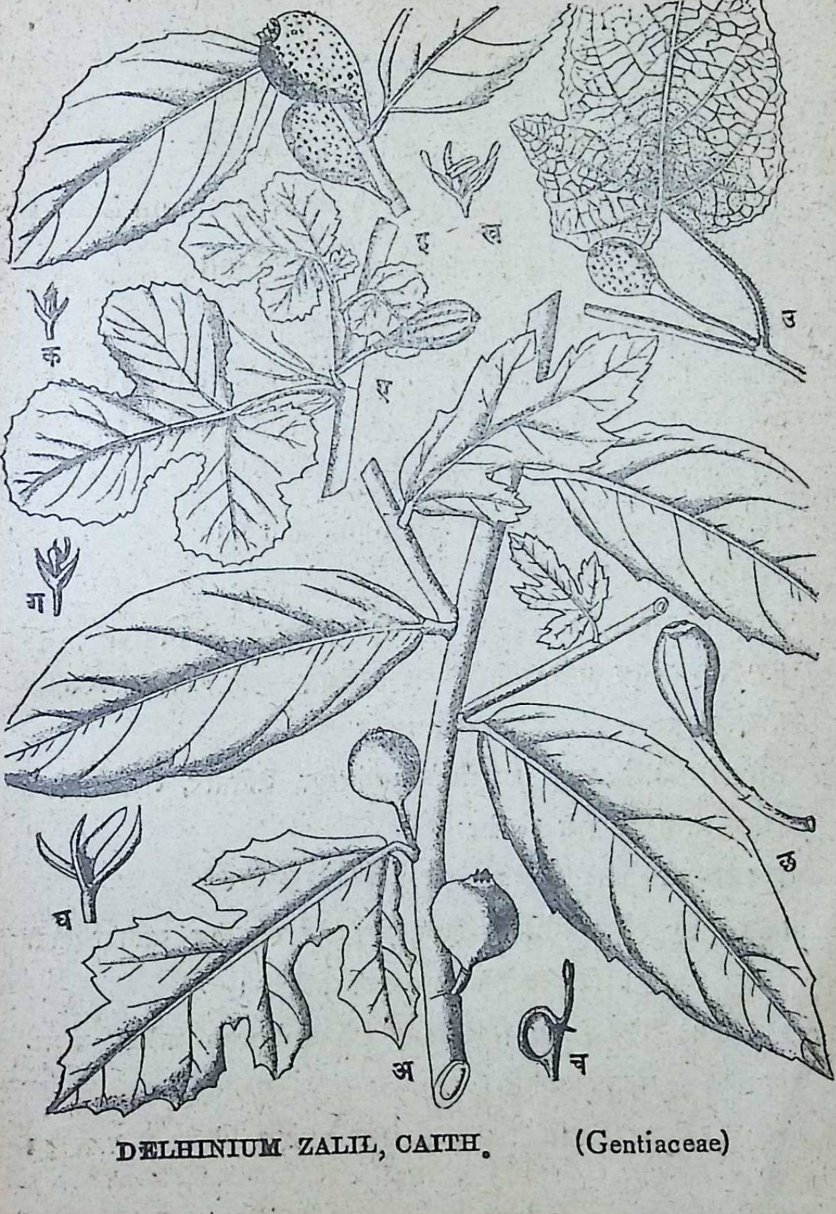

DELHINIUM ZALIL, CAITH. (Gentiaceae)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

तिल

नाम **चित्रसंख्या—१००**

(१) संस्कृत—तिल (२) हिन्दी—तिल

(३) गुजराती—तल (४) मराठी—तीळ

(५) अंग्रेजी-Til (६) लेटिन-Sesamum indicum, Linn

नैसर्गिक वर्ग—Pedaliaceae.

वानस्पतिक वर्णन—यह क्षुप जाति की वनस्पती है ।

मूल—साधारण छोटी रेशेदार, **पुष्प**—नीलाभ या पीताभ श्वेत

तना—गोल, श्लक्षण, **बीज**—कोष—द्वाखण्डी, बहु.

पत्र—अभिमुख, अखंड, उपपत्र रहित

प्राप्तिस्थान—यह भारत में प्रायः सर्वत्र प्राप्त होती हैं ।

उपयोगी अंग—बीज तैल

रस—मधुर तिक्त, कषाय कटु **वीर्य**—उष्ण **विपाक**—मधुर

गुण—स्निग्ध, गुरु, बल्य, संग्राही **दोषशमन**—वात, कफपितकारक

श. स. प्रभाव—सर्वशरीर प्रधानतः आन्त्र

रोगोपयोग-अर्श, **व्रण**, दन्तरोग, आर्तवदोष, अतिसार, **गर्भाशयरोग**

मात्रा—बीज-चूर्ण-२ से १० ग्रेन

अनुपान-जल

विशेष-(१) इसकी वर्णभेद से-कृष्ण, श्वेत और रक्त तीन जातियां होती हैं। औषधोपयोगी केवल कृष्ण जाति है ।

(२) इसमें Iron, Calcium, Phasphoras अधिक मात्रा में पाये जाते हैं ।

(३) सगर्भा स्त्री को अत्यधिक सेवन करने से गर्भपात हो जाता है ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

तिल

चित्र संख्या १००

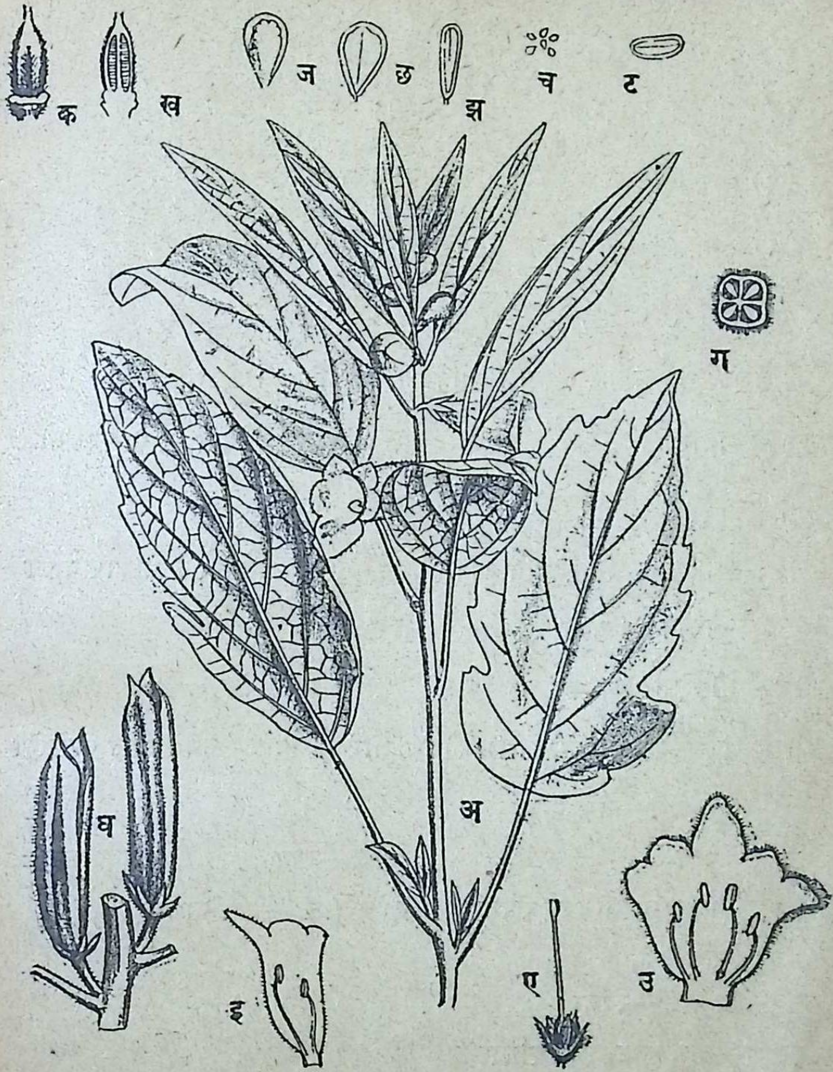

SESAMUM INDICUM, LINN
(Pedaliaceae)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

तुवरक

नाम **चित्रसंख्या—१०१**

(१) संस्कृत—तुवरक (२) हिन्दी—तुवरक

(३) गुजराती—तुवरक (४) मराठी—कडुक वटी

(५) लेटिन–Hydnocarpus wightiana, Blume.

नैसर्गिक वर्ग—Bixineae.

वानस्पतिक वर्णन-यह वृक्ष जाति की वनस्पति है।

मूल-साधारण

पुष्प—श्वेत गुच्छेदार, ९ से १२ मी. मी. व्यास युक्त

तना—गोल, श्लक्षण श्वेताभ कपिश

फल—स्निग्ध, नारंगी के आकार वाला

शाखा-अधोनत, स्निग्ध

बीज·पीताभ, बहु

पत्र—सीधे अण्डाकार

प्राप्तिस्थान-यह भारतमें दक्षिण कोकंण, और मलाबारमें सर्वत्र प्राप्त होता है।

उपयोगी अंग—तैल बीज

रस—कषाय **वीर्य**—उष्ण **विपाक**-कटु

गुण-कृमिघ्न, व्रणशोधन, रोपण, रक्तशोधक,

दोषशमन—कफ नाशक

श. स. प्रभाव—त्वचा

व्याधि—दद्रु, कुष्ट, कृमि त्वग्रोग,

मात्रा—५ से ४० बिन्दु तक (तैल)

अनुपान—जल

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

तुवरक

चित्र संख्या १०१

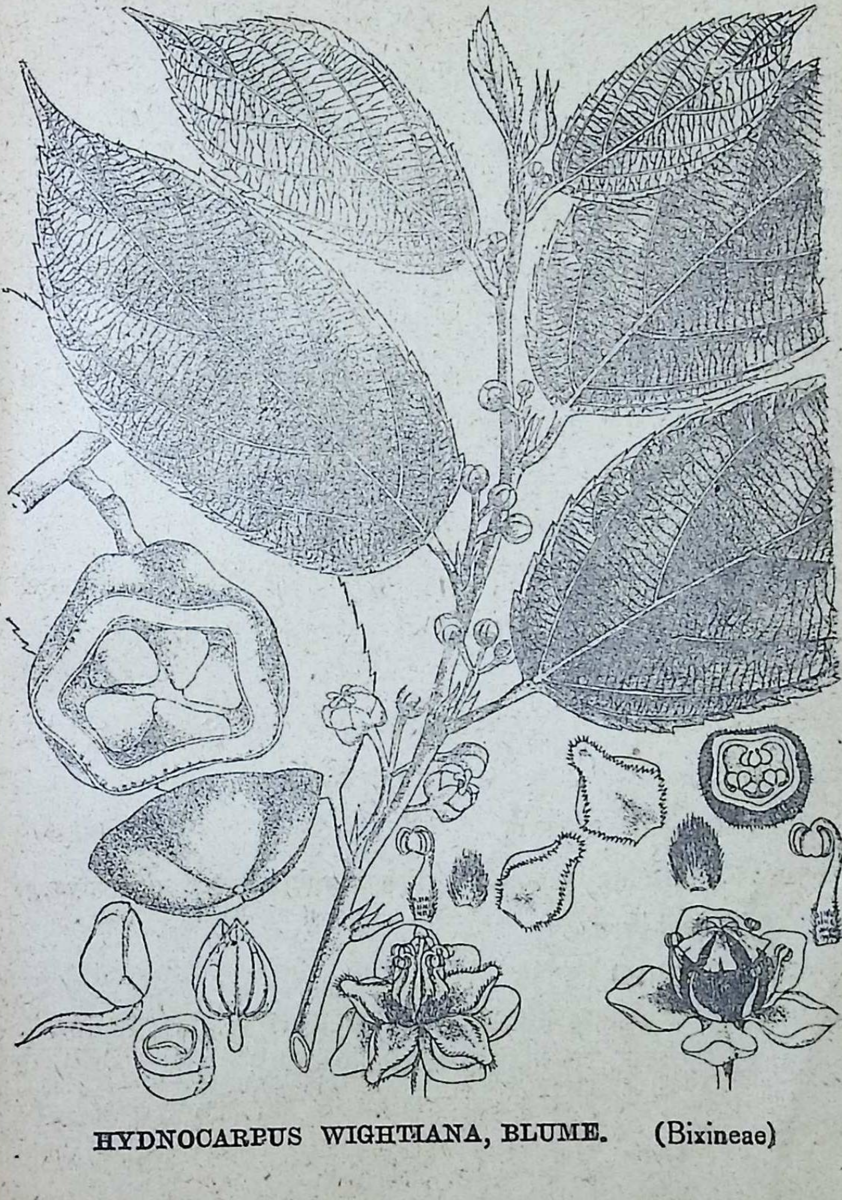

HYDNOCARPUS WIGHTIANA, BLUME. (Bixineae)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

तेजपात [तमालपत्र]

नाम **चित्रसंख्या-१०२**

(१) संस्कृत-तमाल पत्रा, गोत्रपत्र (२) हिन्दी-तमालपत्र

(३) गुजराती-तमालपत्र (४) मराठी-तमालपत्र

(५) अंग्रेजी-Tamala (६) लेटिन-Cinnamomum, Tamala. Linn

नैसर्गिक वर्ग-Lauraceoe.

वानस्पतिक वर्णन-यह २० से ४० फीट ऊंची वृक्ष जाति की वनस्पति है।

मूल-अगुष्टाकारी, **पुष्प**-श्वेत

तना-कपिश और पीतवर्णकी त्वक्युक्त **फल**-कृष्णवर्णयुक्त (पक्व), १/४ से १/२ इंच लम्बा

शाखा-कोमल, चतुष्कोणीय कपिश वर्णयुक्त भंगुर

पत्र-कोमल गुलावी वर्णयुक्त उपपत्ररहित,

प्राप्तिस्थान—यह हिमालय में, ३००० से ८००० फीट की ऊंचाई तक सिलहट और खसिया की पहाड़ियों में प्रायः सर्व प्राप्त होती है।

उपयोगी अँग-पत्र

रस-कटु मधुर **वीर्य**-उष्ण **विपाक**-कटु

गुण-स्वेदल **दोषशमन**-वाकफ,पित्तल

श. स. प्रभाव-पाचन संस्थान

रोगोपयोग-सन्धिवात, श्वास, कास, प्रतिश्याय, गर्भाशयरोग वातकफरोग, अग्निमाद्य

मात्रा-१ से ४ माशा (चूर्ण)

विशेष-(१) इसके पत्र वैसाख मास के लगभग आते हैं और इवसे एक प्रकार का रंग निकाला जाता है।

(२) इसमें एक प्रकार का उड्डनशील तैल पाया जाता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चित्र संख्या १०२

तेजपात (तमालपत्र)

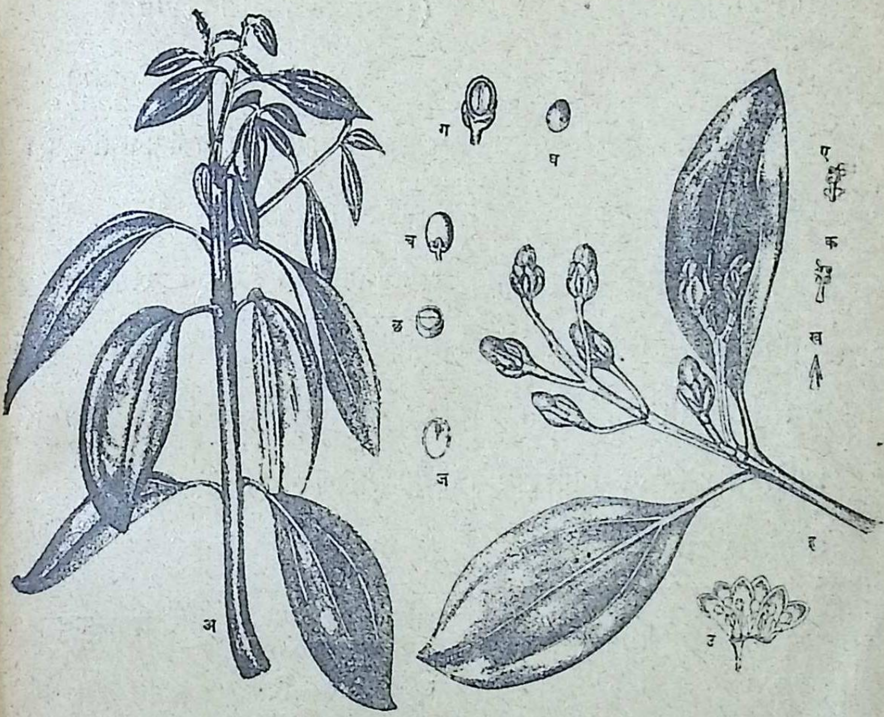

CINNAMOMUM, TAMALA., LINN.
(Lauraceae)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

तेजबल

नाम **चित्र संख्या-१०२**

(१) संस्कृत-तेजबल (२) हिन्दा-तेजबल

(३) गुजराती-तेजबल (४) मराठी-तेजवळ

(५) अंग्रेजी-Tooth ache tree (६) लेटिन-Zahthoxylum alatum (Roxb)

नैसर्गिक वर्ग-Rutaceae

वानस्पतिक वर्णन-यह सर्वदा हरित रहन वाली गुल्म जातिकी वनस्पति है।

मूल-नवीन श्लक्षण **पुष्प**-पीत, सवन

तना-त्वक्-मिर्च समान कटु **फल**—गोल मिर्च समान, रक्त

शाखा—हरित, स्निग्ध, २३ सें. मी. व्यासयुक्त

पत्र-११ से १५ पत्र, लम्बगोल **बीज**-स्निग्ध, कृष्णवर्णयुक्त

प्राप्तिस्थान-भारत में हरिद्वार के जंगला में विशेष प्राप्त होते है।

उपयोगी अंग-मूल, त्वक्

रस-कटु तिक्त **वीर्य**-उष्ण **विपाक**-कटु

गुण-पाचक, रुच्य **दोषशमन**—पित

शा. स. प्रभाव—दन्त **रोगोपयोग**-कण्ठरोग, दन्तशूल, मुखरोग, मंण्दाग्नि, हृदरोग, नपुंसकताहर

योग—पारदभस्म **मात्रा**—२ से ६

विशेष-यह वनस्पति दन्तरोगों में बहुतही लाभकारक है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

तेजबल चित्र संख्या १०३

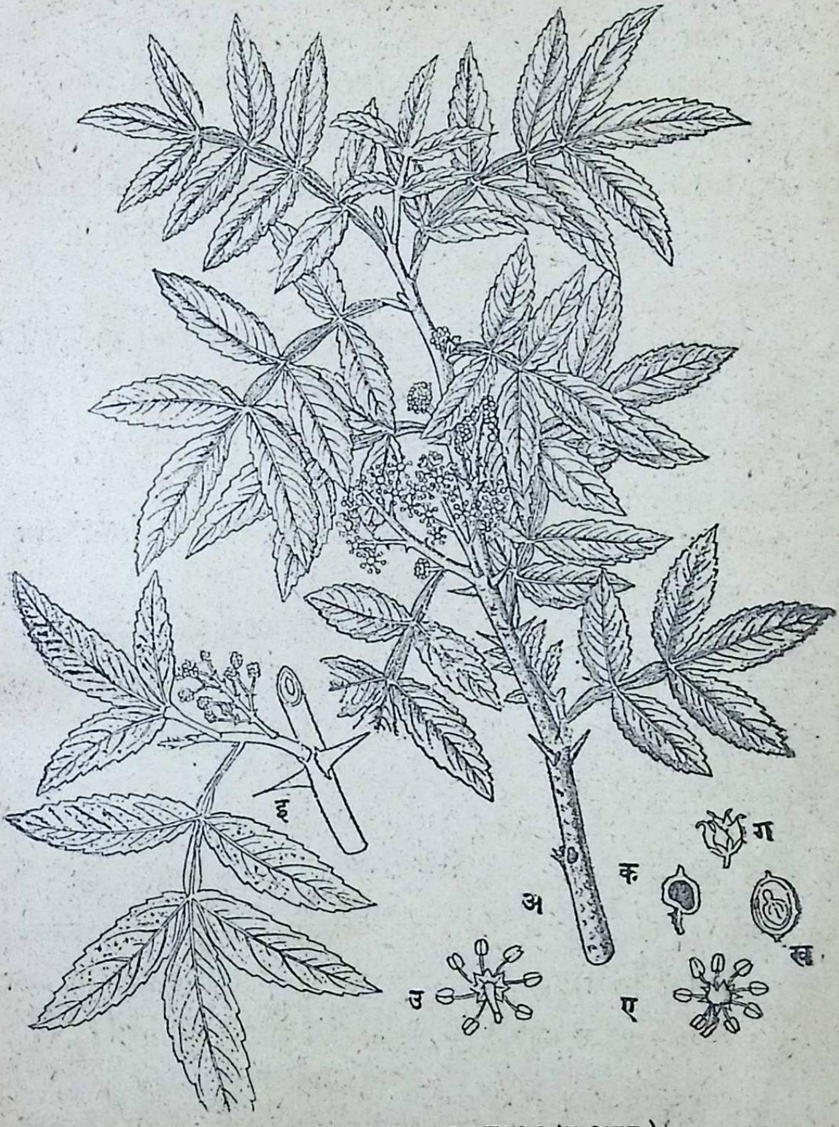

ZAHTHOXYLUM ALATUM (ROXB)
(Rutaceae)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

तालीसपत्र

नाम **चित्र सँख्या–१०४**

(१) संस्कृत–तालीस पत्र (२) हिन्दी–तालीस पत्र

(३) गुजराती–तालीस पत्र (४) मराठी–तालीसपत्र

(५) अग्रेजी–Himalayan silver fir (६) लेटिन–Abies webbiana, Windl.

नैसर्गिक वर्ग–Conifere.

वानस्पतिक वर्णन– यह सर्वदा हरित रहनेवाली वृक्ष जातिकी वनस्पति है।

मूल—साधारण **पुष्प**–गहरे वैंगनी वर्णयुक्त

तना-श्लक्षण, श्वेत

शाखा–अधोनतः

पत्र–लम्बगोल, १/८ इंच चौडे, और १ से ३ इंच लम्बे, चपटे, ऊंर्ध्व भाग गहराहरित और अधोभाग श्लक्षण

प्राप्तिस्थान–हिमालय के काश्मीर, पूर्वंपंजाव का पहाडी प्रदेश गढ़वाल आदि प्रान्तों में सर्वत्र प्राप्त होती है।

उपयोगी अंग–पत्र

रस–तिक्त मधुर **वीर्य**-उष्ण **विपाक**–मधुर

गुण—तीक्ष्ण, गुरु, स्वर्य, दीपन, **दोषशमन**–वातकफ

श. स. प्रभाव–फुफ्फुस

योग– **रोगोपयोग** –गुल्म, श्वास, कास, अरुचि अग्निमांद्य वमन

तालीसादि चूर्ण (कास)

तालीसादगुटिका (कास, श्वास) **मात्रा**–२ से ६ माशा (चूर्ण)

अनुपान–जल

विशेष—(१) पाश्चात्य देशोंमें इसका सत्व निकाला जाता है जो अतिसार और स्नायवीरोगों के उपयोग में लाया जाता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

तालीसपैत्र

चित्र संख्या १०४

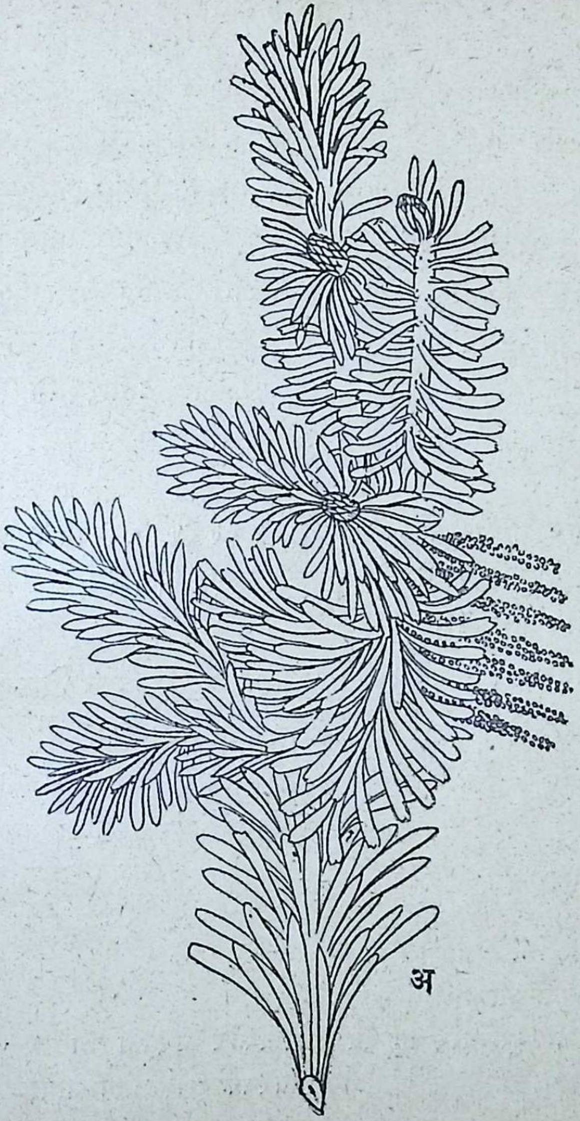

ABIES WEBBIANA, WINDL. (Conifere)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

दली

नाम **चित्र संख्या-१०५**

(१) संस्कृत-दली (२) हिन्दी-दली

(३) गुजराती-दली मूल (४) मराठी-दोमरा

(५) अंग्रेजी-Purging croton (६ लेटिन-Baliospermum montamum.

नैसर्गिक वर्ग-Euphorbiaceae.

वानस्पतिक वर्णन-यह ३ से ४ फीट ऊंची क्षुप जाति की वनस्पति है।

मूल-कपिश वर्णयुक्त,

तना-गोल-स्निग्ध

शाखा-श्लक्षण, हरिताभश्वेत

पुष्प—पीत

फल-गोल, ८ से १३ मि. मी. लम्बी रोमश

बीज—छोटे अरण्यसमृद्ध

पत्र-एकान्तर, आकारयुक्त, लम्बाई-१५ से ३० से. मी. विषम भग्न, रोमश

प्राप्तिस्थान—यह भारत में प्राय: सर्वत्र प्राप्त होता है।

उपयोगी अंग-मूल त्वक्

रस-कटु मधुर **वीर्य**-उष्ण **विपाक**-कटु

गुण-तीव्ररेचक, दीपन **दोषशमन**-पित कफ

श. स. प्रभाव—आन्त्र

योग-
दन्त्यरिष्ट (उदररोग)

रोगोपयोग-अर्श, गुल्म, उदररोग उदरकृमि पाण्डु, कामला, जलोदर.

मात्रा—चूर्ण १ से ३ माशा (मूल)

अनुपान—सुगन्धित द्रव्य में क्वाथ सहित.

विशेष-(१) यह घुल और बहु भेद से दो प्रकार की होती है।

(२) यह जमालगोटे के समान तीव्ररेचक है। अधिक मात्रा का प्रयोग प्राणघातक है।

(३) इसके पत्र श्वासरोग में बहुत हितकर हैं—कर्नल चोपरा

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

दली चित्र संख्या १०५

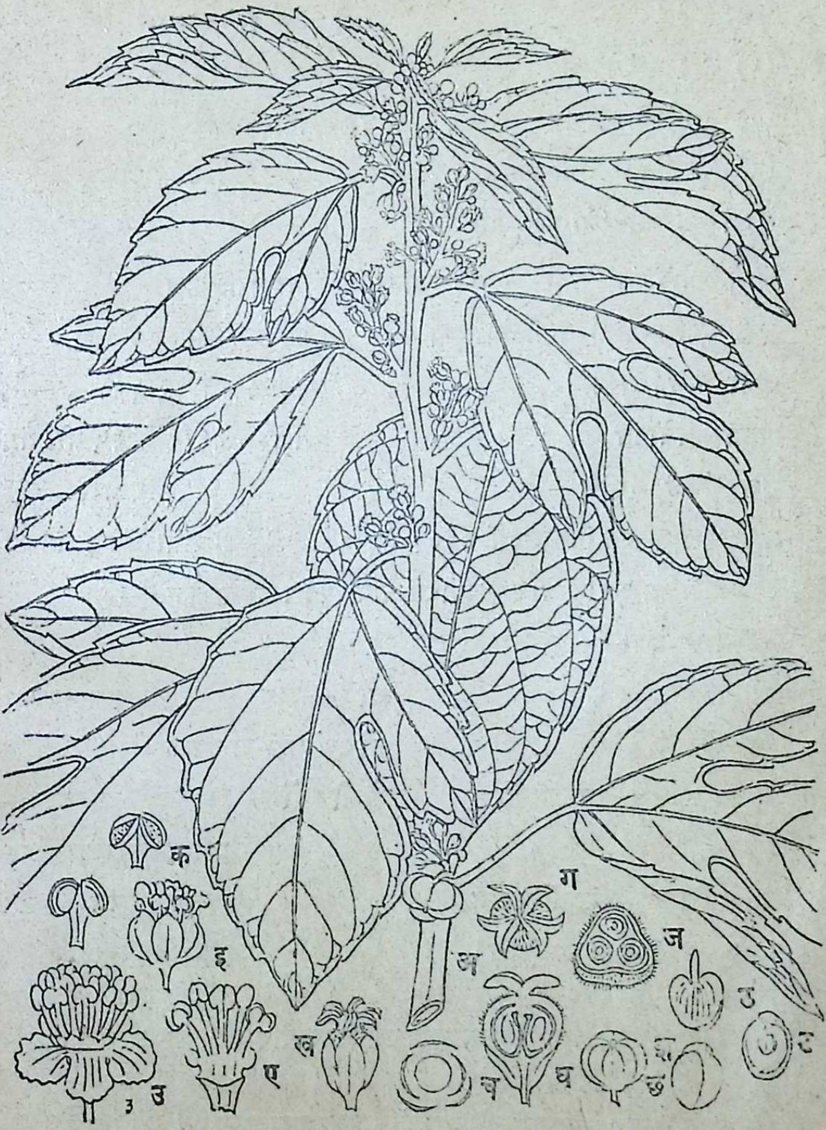

BALIOSPERMUM MONTAMUM. (Euphorbiaceae)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

देवदारू

नाम **चित्र संख्या-१०६**

(१) संस्कृत–देवदारू (२) हिन्दी–देवदार

(३) गुजराती–देवदार (४) मराठी–देवदार

(५) अंग्रेजी–Deodara (६) लेटिन–Cedrus deobdara

नैसर्गिक वर्ग-Coniferae

वानस्पतिक वर्णन—यह बडे वृक्ष जाति की वनस्पति है।

मूल-सुगन्धित, हरित पीतवर्णयुक्त **पुष्प**-एकाकी

तना-गोल,स्निग्ध **फल**–१० से १२-१/२ से. मी.

शाखा–अधोनत **बीज**—७.१/२ से १५ मी. मा.

पत्र-संकडे, नुकीले और भूरा

प्राप्तिस्थान–यह हिमालयमें ७००० से ९००० फीट की ऊंचाई पर, नैपाल, कुमायुं और काश्मीरमें प्राय: सर्वत्र प्राप्त होता हैं।

उपयोगी अंग—काष्ठ और तैल

रस-तिक्त, कटु कषाय **वीर्य**—उष्ण **विपाक**-कटु

गुण–स्निग्ध, **दोषशंमन**–वात कफ

श. स. प्रभाव–समस्तशरीर **रोगोपयोग**–शिर:शूल, पारदजना-विकार,गलगण्ड, श्लीपद नैत्ररोग, कृमि, प्रमेह, आमवात, सूतिका ज्वर

योग—

देवदार्वारिष्ट, देवदार्वादिक्वाथ

मात्रा—३ से ६ माशा (चूर्ण)

अनुपान—मधु

विशेष-(१) इसकी आयुर्वेदमतानुसार 'स्निग्धदारू और काष्टदारू' नामक दो जातियां होती है।

(२) इसकी लकडी को जलाने से एक प्रकार का तैल निकलता है जिसें 'कोलन' कहा जाता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

देवदारू

चित्र संख्या १०६

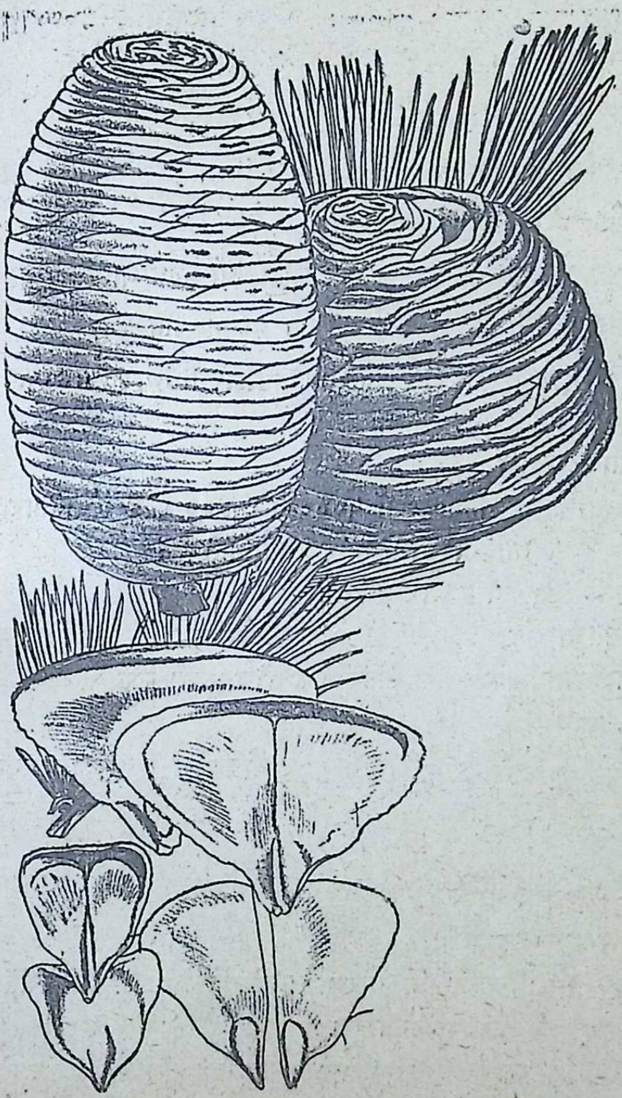

CEDRUS DEOBDARA

(Coniferae)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

दारुहलदी

नाम **चित्रसंख्या-१०७**

(१) संस्कृत-दारुहरिद्रा (२) हिन्दी-दारुहल्दी

(३) गुजराती-दारुहलदर (४) मराठी-दारुहलद

(५) लेटिन-Berberis aristata, Linn.

नैसर्गिक वर्ग—Berberidae.

वानस्पतिक वर्णन-यह ६ से १५ फीट ऊंची गुल्म जाति की वनस्पति है।

मूल-साधारण छोटी **पुष्प**—पीत

तना—की त्वक्-धूसर वर्णयुक्त भीतर से पीत **फल**-मांसल, कृष्णाभरक्त, लम्बगोल

पत्र-सादे, कठार,

प्राप्तिस्थान-यह हिमालय में ५००० से ७,००० फीट ऊंचाई पर, नेपाल, आदि प्रदेशों में सर्वत्र प्राप्त होती है।

उपयोगी अंग-काष्ठ और धनसत्व

रस—तिक्त कटु **वीर्य**—उष्ण **विपाक**—कटु

गुण-सर, चक्षुष्य, यकृदुतेजक, रक्तशोधक **दोषशमन**-कफ

श. स. प्रभाव-यकृत और त्वचा

योग—

दार्वादि चूर्ण (यकृतरोग)

रोगोपयोग-हिक्का, विषवमन, नेत्ररोग विषमज्वर, दन्तरोग वातरोग, त्वग्रोग, यकृतविकार

मात्रा—१ से ६ मासा

अनुपान-जल, शहद

विशेष-(१) हिमालय में उत्पन्न होने वाली इस वनस्पति की छः जातियां होती हैं।

(२) इसमें Berberine नामक कृष्णवर्णका उपक्षार होता है जो मूल और काण्डत्वक् में बहुतायत से प्राप्त होता है।

(३) इसके धनसत्व को 'रसोंत' या 'रसांजन' कहते हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चित्र संख्या. १०७

दारुहल्दी

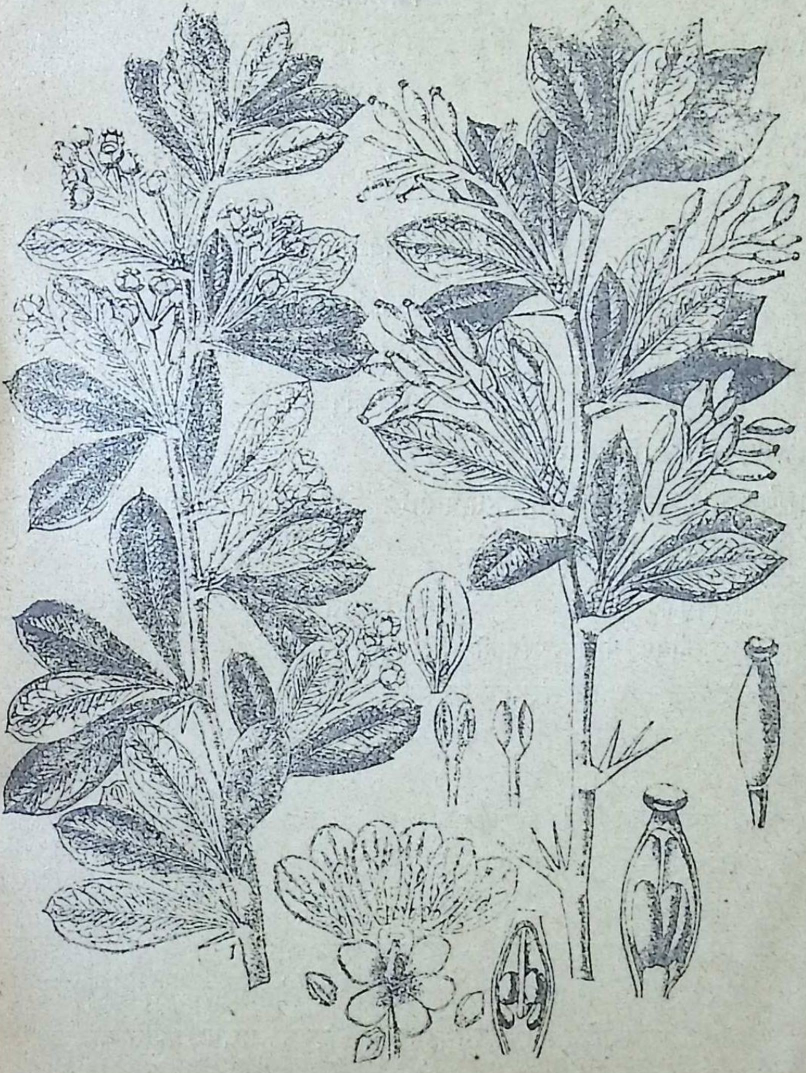

BERBERIS ARISTATA, LINN
(Berberidae).

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

धनिया

नाम **चित्रसंख्या—१०८**

(१) संस्कृत–धान्यक (२) हिन्दी–धनिया

(३) गुजराती–कोथमीर (४) मराठी–धने

(५) अंग्रेजी-Coriander seed. (६) लेटिन-Coriandrum sativum, Linn.

नैसर्गिक वर्ग–Umbelliferae.

वानस्पतिक वर्णन–यह क्षुप जाति की वनस्पति है।

मूल–छोटे, सूत्रवत् **पुष्प**–पीताभ श्वेत

तना-कोमल हरिताभ **फल**–छोटे हरितवर्णयुक्त,

पत्र–कपिश

पत्र–एकान्तर, विषम भग्न

प्राप्तिस्थान–कह भारत में बहुत प्रसिद्ध है और सर्वत्र प्राप्त होता है।

उपयोगी अंग–फल, बीज और पत्र

रस–कटु मधुर **वीर्य**–शात, **विपाक**-मधुर

गुण-मूत्रल, दीपन, पाचन, संग्राही **दोषशमन**—त्रिदोष

श. स. प्रभाव—पाचन संस्थान और नैत्र

रोगोपयोग-ज्वरजन्यदाह, **नैत्ररोग**, वमन, अतिसार, **आमाजीर्ण**, कंठमाला, मंदाग्नि

मात्रा-बीजचूर्ण—१/२ से १ तोला

पत्रचूर्ण—१ से २ तोला

अनुपान—जल

विशेष-(१) दर्पनाशक वनस्पति–मधु और दाल चीनी।

(२) अतियोग–इसके बीजों को अधिक सेवन करने से पुरुषों में कामशक्ति का ह्रास होता है। इससे आर्तव प्रवृति बंद हो जाती है।

(३) श्वास पीडित रोगी को इसके बीजों का प्रयोग अहितकर है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

धनिया चित्र संख्या १०८

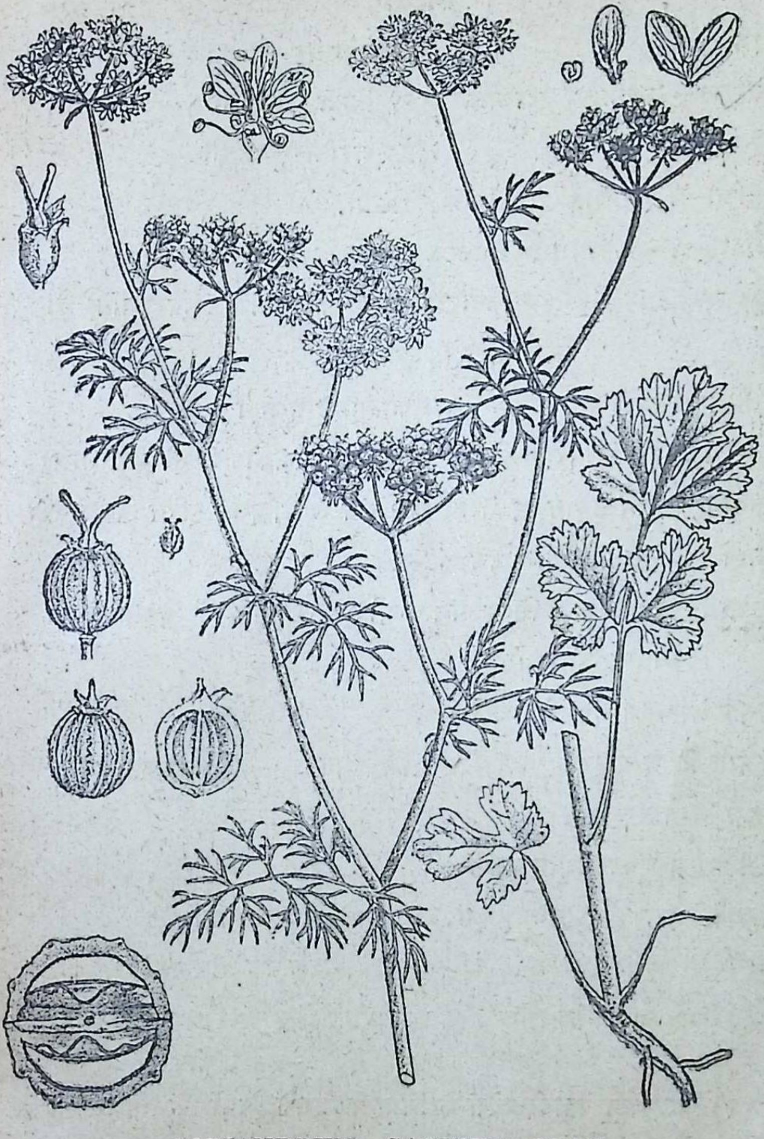

CORIANDRUM SATIVUM, LINN.
(Umbelliferae)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

धमासा

नाम **चित्रसंख्या—१०९**

(१) संस्कृत—धन्यमास, दुरालमा (२) हिन्दी—धमासा

(३) गुजराती—धमासो (४) मराठी—धमासा

(५) लेटिन–Fagonia arabica, Linn.

नैसर्गिक वर्ग—Zygopayllaceae.

वानस्पतिक वर्णन—यह कांटेदार १ से ३ फीट ऊंची क्षुप जाति की वनस्पति है ।

मूल–साधारण छोटी **पुष्प**–हलके गुलाबी

शाखा–अनेक, हलकी हरितवर्णयुक्त **फल**–छोटे, पंचकोषीय, तीक्ष्णाग्र लम्ब,

पत्र–सनाय के पत्तों समान, १ से १-१/२ इंच लम्बे, हलके हरित वर्णयुक्त, प्रत्येक पत्र के पास दो तीक्ष्ण कंटक.

प्राप्तिस्थान–यह भारत में सिन्ध, पंजाब और राजस्थान में बहुतायत से प्राप्त होती है ।

उपयोगी अंग—पंचांग और शर्करा

रस–कषाय तिक्त मधुर **वीर्य**–शीत **विपाक**-मधुर

गुण–कफ निस्सारक, सर **दोषशमन**–पितकफ

श. स. प्रभाव· फुफ्फुस और आन्त्र

रोगोपयोग रक्तपित, वमन, भ्रम, कास, प्रमेह गुल्म, विद्रधि

मात्रा–१/२ से १ तोला **अनुपान**–जल, मधु और गन्ने का रस

विशेष–(१) यह वनस्पति चेचक और कृमि रोगों में बहुत लाभप्रद है ।

–कर्नल चोपरा

(२) अलमोड़ा पहाडी प्रदेश के निवासी इसके पत्रों के पिष्ठ को कण्ठमोला में बाह्य प्रयोग करते हैं ।

(३) इसका धूमपान करने से श्वास वेग की शान्ति होती है ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चित्र संख्या १०९

धमासा

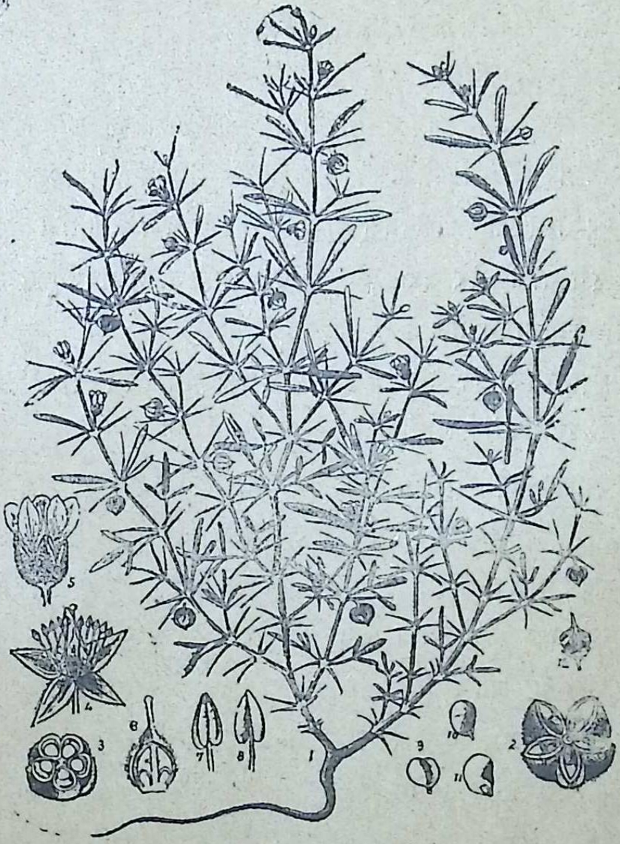

FAGONIA ARABICA, LINN.
(Zygopayllaceae)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

धामन

नाम **चित्र संख्या-११०**

(१) संस्कृत—धन्वन (२) हिन्दी—धामन

(३) गुजराती—धामण (४) मराठी—धामण

(५) लेटिन-Grewia telialfolia, Vahl

नैसर्गिक वर्ग-Tiliaceae.

वानस्पतिक वर्णन-यह बीससे चालीस फीट ऊंची वृक्ष जातिकी वनस्पति है।

मूल-साधारण, ग्रंथियुक्त मोटी

तना-२ से ५ फीट गोल त्वक् आधा इंच मोटी और खर

शाखा—साधारण गोल

पत्र—एकान्तर, उपपत्रयुक्त, २ से ५ इंच लम्बे और १-१/२'' चौड़े, रोमश, बेर के पतों समान.

पुष्प—नियमित, पीतवर्णयुक्त, वैसाख मास में आते हैं।

फल-मांसल, कृष्णवर्णयुक्त मटरके समान

प्राप्तिस्थान-यह भारत में प्रायः सर्वत्र प्राप्त होता है।

उपयोगी अंग-अर्न्तत्वक्, पत्र और फल

रस-मधुर कषाय, **वीर्य**-शीत **विपाक**-मधुर

गुण-रुक्ष, लघु वृहण, बल्य, व्रण **दोषशमन**-त्रिदोष

श.स. प्रभाव-आन्त्र

रोगोपयोग-व्रण, **रक्तातिसार**, रक्तविकार, कास

मात्रा—त्वक्रस-१/२ से २ तोला

अनुपान—जल

विशेष-(१) इसके काण्ड के कोयले से अफीम-विष में लाभप्रद है।

(२) कौंच की फली के दाह शमन के लिये शरीर पर इसकी अर्न्तत्वक् के प्रयोग से लाभ होता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

धामन चित्र संख्या ११०

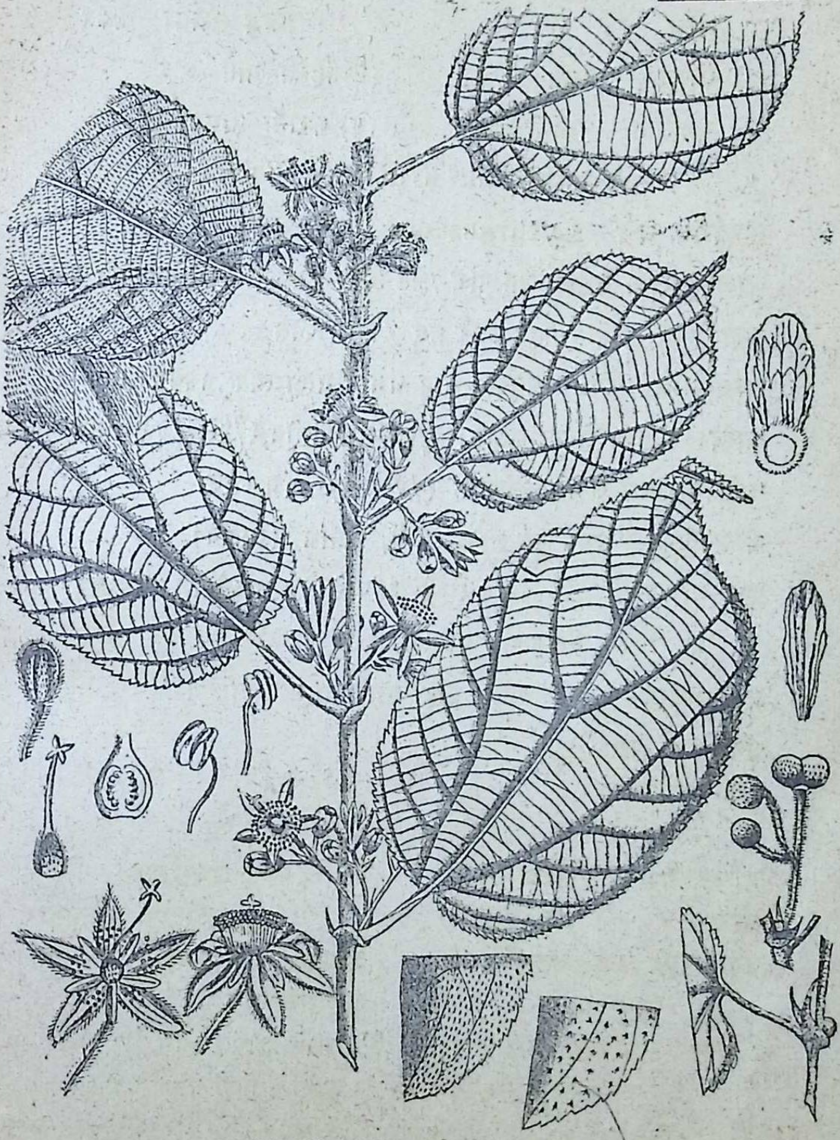

GREWIA TELIALFOLIA, VAHL
(Tiliaceae)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

धाय

नाम **चित्र संख्या—१११**

(१) संस्कृत—धातकी (२) हिन्दी–धाय

(३) गुजराती—धावणी (४) मराठी–धावस

(५) लेटिन–Woodfordia Fruticosa, Kurz.

नैसर्गिक वर्ग—Lythraceae.

वानस्पतिक वर्णन–यह पांच फीट ऊंची क्षुप जाति की वनस्पति है।

मूल–लम्बे, पृथ्वीमें गहरे उतरे हुए रक्ताभ श्वेत

तना–गोल, कपिश वर्णयुक्त, बाहु समान मोटी त्वक्, विषमभग्न

शाखा–कोमल, रोमश, कठीन, **पुष्प**–पत्रकोणीय, १/२से३/४ इंच लंबे, गुच्छदार

फल–हरिताभ कपीश, श्लक्षण, १/४ से १/२ इंच लम्बा।

बीज–चपटे, लम्बे, एक ओर संकीर्ण, पीताभ, (अपक्व)

पत्र–अभिमुख, २ से ४ इंच लम्बे, १/२ से १ इंच चौडा, ऊर्ध्वभाग हलका हरित और निम्नभाग श्वेताभ हरित

प्राप्तिस्थान—यह भारत में प्राय: सर्वत्र प्राप्त होता है।

उपयोगी अंग—पुष्प

रस–कटु कषाय **वीर्य**–शीत **विपाक**–कटु

गुण–मादक, संग्राहक कटु पौष्टिक **दोषशमन**–पित

श. स. प्रभाव—आन्त्र **रोगोपयोग**–**प्रवाहिका**, विसर्प, अत्वार्तव, **अतिसार**

योग—

घात्यक्वादि चूर्ण (ज्वर) **मात्रा**—चूर्ण (पुष्प)–१ से ३ माशा

अनुपान–जल

विशेष-(१) इसमें लगभग २० % Tannic acid होता है।

(२) इसको आसवारिष्ट में रंग लाने के लिये डाला जाता है।

(३) 'The plant is noted for the dye extracted from the flowers, twigs and leaves'—*Dastur*

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

धाय

चित्र संख्या. १११

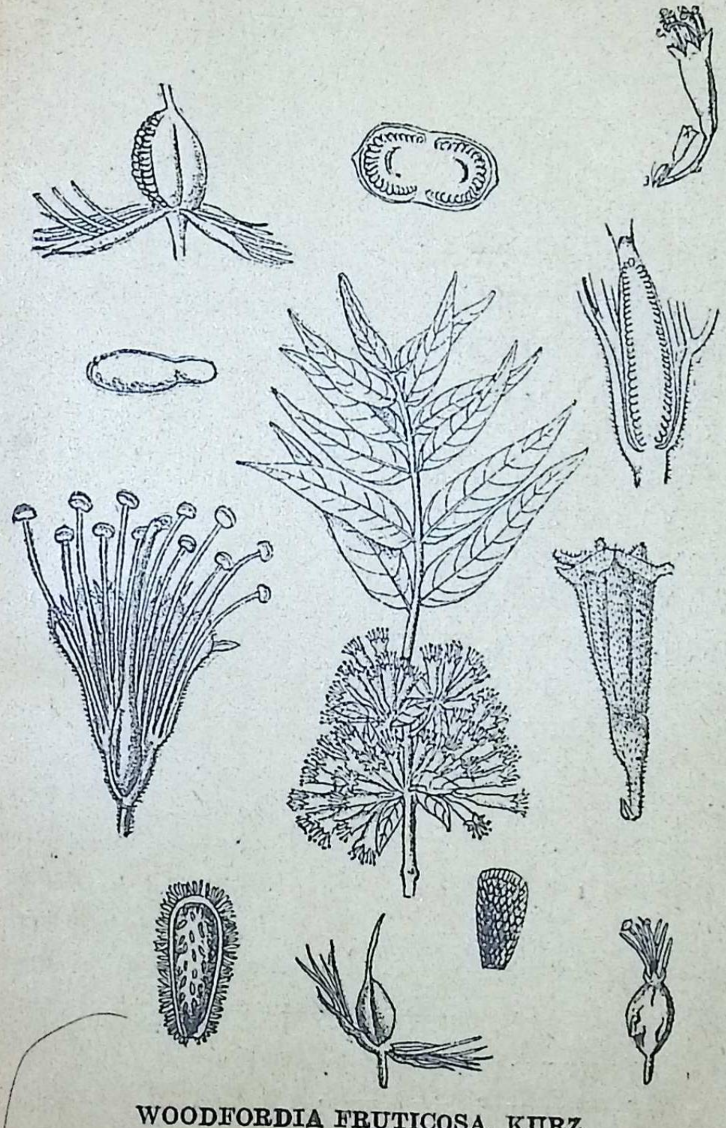

WOODFORDIA FRUTICOSA, KURZ
(Lythraceae)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

नागकेशर

नाम **चित्रसंख्या-११२**

(१) संस्कृत-नाग केसर (२) हिन्दी-नागकेशर

(३) गुजराती-पीलु नागकेसर

(४) अंग्रेजी-Fragrant poon. (५) लेटिन-Mesua Ferrea.

नैसर्गिक वर्ग-Guttiferae.

वानस्पतिक वर्णन-यह सुन्दर, सर्वदा हरित मध्यमाकारी वृक्ष जाति की वनस्पति है।

मूल-कोमल मूल गहरीरक्त, अन्तमें गहरी हरित

तना-गोल, श्लक्षण, कपिश वर्णयुक्त

शाखा-साधारण गोल

पुष्प-नियमित, नागकेशर पीतवर्ण का होता है जिसे 'नागकेशर' कहते हैं. २ से ४ इंच लम्बे, श्वेत और पीतवर्णयुक्त।

फल-अण्डाकार,।

बीज-१ से ४ गहरे भूरे वर्णयुक्त श्लक्षण

पत्र-अभिमुख, सादे, चर्मसद्रश. शल्याकृमि

प्राप्तिस्थान-यह भारत में कुमायुं, दक्षिण कोकण और नेपाल में प्रायः सर्वत्र प्राप्त होती हैं।

रस-तिक्त, कषाय **वीर्य**-उष्ण **विपाक**-कटु

गुण—संग्राही, आम, पाचक. **दोषशमन**-पित कफ

श. स. प्रभाव-पाचन संस्थान **रोगोपयोग**-श्वेतप्रदर, गर्भपात, रक्तविकार अर्श, वमन, अतिसार, सर्पविष

योग—

नागकेशरादि चूर्ण (श्वेत या रक्तप्रदर)

मात्रा-चूर्ण-४ रति से १ माशा **अनुपान**-मिश्री और मक्खन

विशेष-(१) यह उष्ण प्रकृति, यकृतरोग और अर्श रोगवाले व्यक्तियों के लिये हानिकारक है।

(२) दर्पनाशक वनस्पति-वंश लोचन।

(३) प्रतिनिधि-वनस्पति-वालछड़ और खोपरा।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

नागकेशर चित्र संख्या ११२

MESUA FERREA. (Guttiferae)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

नागबला

नाम **चित्र संख्या—११३**

(१) संस्कृत—नागबला (२) हिन्दी—नागबला

(३) गुजराती—भोंयबल (४) मराठी—नागबला

(५) लेटिन-Sida humilis, Linn.

नैसर्गिक वर्ग—Malvaceae.

वानस्पतिक वर्णन—यह प्रसारणी लता जाति की वनस्पति है।

मूल–छोटी सूत्रवत् **पुष्प**–पीतवर्णयुक्त

शाखा–२ से ३ फीट लम्बी प्रसरणशील **पत्र**—रोमश, एकान्तर, कंगूरेदार,

प्राप्तिस्थान—यह भारत में प्राय: सर्वत्र प्राप्त होती है।

उपयोगी अंग—बीजमूल त्वक्

रस–मधुर कषाय **वीर्य**–शीत **विपाक**—मधुर

गुण- संग्राही, पौष्टिक **दोषशमन**–पित्तवात

श. स. प्रभाव—प्रजनन अवयव

रोगोपयोग—प्रमेह, रक्तप्रदर, वातपैत्तिकरोग

मात्रा—२ से ४ माशा

अनुपान–जल

विशेष-(१) यह एक संदिग्ध वनस्पति है। कई निघण्टुकारों ने इसका नाम Sida spinosa दिया हैं परन्तु यह अयुक्त है। यह 'गुलशकरी' नामक वनस्पति का नाम है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

नागबला

चित्र संख्या ११३

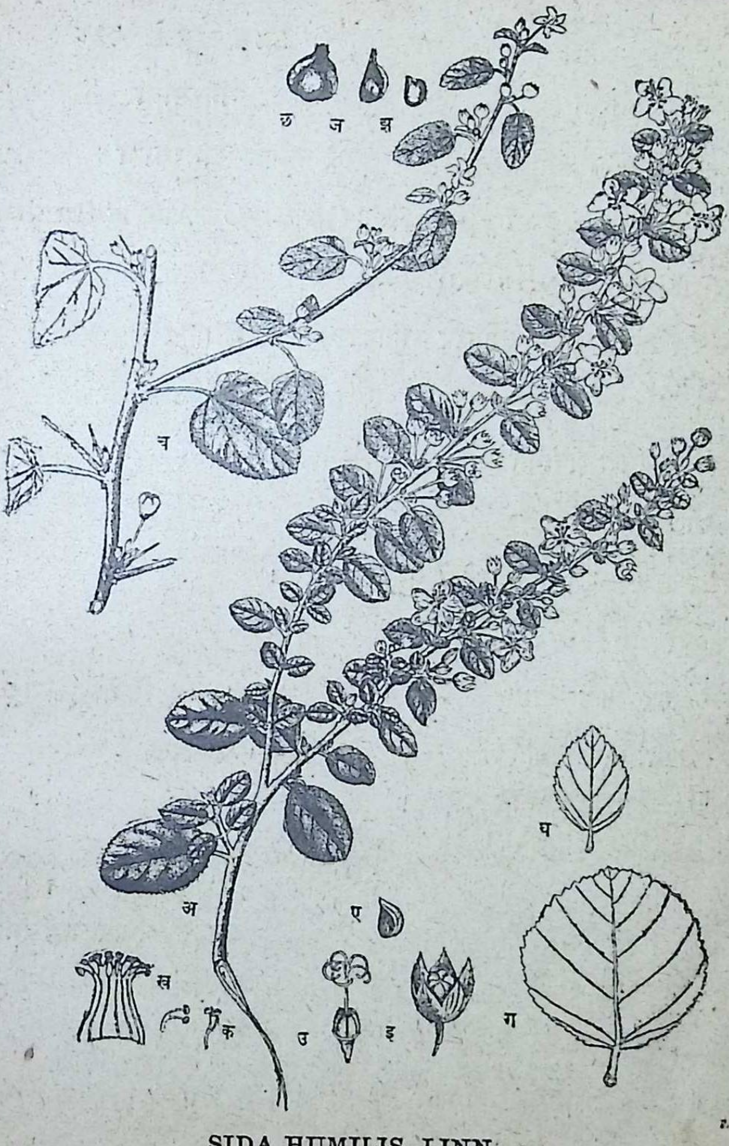

SIDA HUMILIS, LINN.
(Malvaceae)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

नागरमोथा

नाम **चित्र संख्या-११४**

(१) सस्कृत-मुस्ता (स्त) (२) हिन्दा-नागरमोथा

(३) गुजराती-नागरमोथा (४) मराठी-नागरमोथा

(५) अंग्रेंजी-Indian cyperus. (६) लेटिन-Cyprus rotundus, Linn.

नैसर्गिक वर्ग-Cyperaceol

वानस्पतिक वर्णन—यह क्षुप जातिकी वनस्पति है।

मूल—गहरी कन्दयुक्त **पुष्प**— छोटे श्वेत

शाखा—कोमल अधोनत

पत्र-छोटे

प्राप्तिस्थान—यह भारतवर्ष में सर्वत्र होता है।

उपयोगी अंग—कन्द

रस—तिक्त, कटु कषाय **वीर्य**—शीत **विपाक**—कटु

गुण-दीपन, पाचन, शीतल **दोषशमन**—कफपित

श. स. प्रभाव—महास्रोतस्

योग— **रोगोपयोग**-ज्वरातिसार, रक्तपित्त शामक, आमपाचन, वमन, तृष्णा.

मुस्तादिवर्ति

मुस्ताद्य चूर्ण

मात्रा-१ से ४ माशा (चूर्ण)

अनुपान—जल

विशेष-अनुपदेशे यज्जातं मुस्तकं तत्प्रशस्यते (भा० प्र०)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चित्र संख्या ११४

नागरमोथा

CYPRUS ROTUNDUS, LINN
(Cyperaceol)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

निसोत

नाम **चित्र संख्या-११५**

(१) संस्कृत—त्रिवृत (२) हिन्दी—निसोत

(३) गुजराती—निसोतर (४) मराठी—निशोतर

(५) अंग्रेजी-Turpets rootin-dian jalap (६) लेटिन—Ipomoea turpethum

नैसर्गिक वर्ग—Convolvulaceae

वानस्पतिक वर्णन-बहुवार्षिक लता जाति की वनस्पति होती है।

मूल-छोटी, रोमश **पुष्प**-नीला

तना— गोल, हरिताभ **फल**-ग.ल चार चार बीजयुक्त

शाखा-अधोनत

पत्र-नोंकदार

प्राप्तिस्थान—यह प्रायः भारतवर्ष में सर्वत्र प्राप्त होता है।

उपयोगी अंग—मूल

रस-कटु तिक्त मधुर कषाय **वीर्य**-उष्ण **विपाक**-कटु

गुण-विरेचक **दोषशमन**—कफपित; वातल

श० स० प्रभाव—आन्त्र

योग— **व्याधि**—ज्वर, उदररोग,

नाराच चूर्ण यकृतिप्लीहावृध्दि

मात्रा—चूर्ण-५ माशा से १ तोला

विशेष—(१) इसकी कृष्ण, श्वेत और रक्तवर्ण भेद से तीन जातियां होती हैं। क्रमशः नीले श्वेत और रक्तवर्ण के होते हैं। औषध प्रयोग में श्वेत जाति ही उपयागी है।

(२) दर्पनाशक-कनीरा और बबूल की छाल

(३) प्रतिविधि-काला दाना

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चित्र संख्या ११५

निसोत

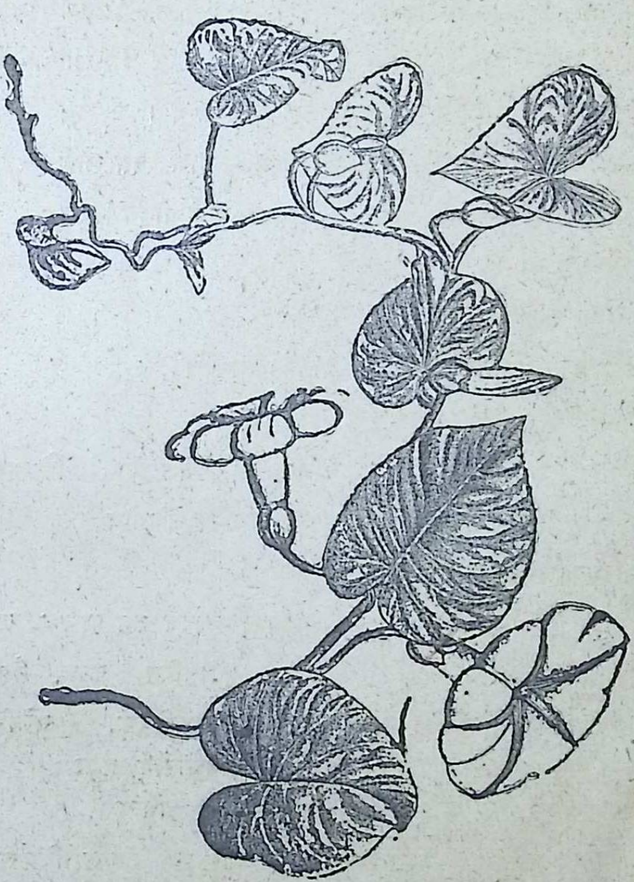

IPOMOEA TURPETHUM,
(Convolvulaceae)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

नीम

नाम **चित्र संख्या—११६**

(१) संस्कृत–निम्ब (२) हिन्दी–नीम

(३) गुजराती–लीमडो (४) मराठी–कडू निंब

(५) अंग्रेजी–Indiandilac. (६) लेटिन–Azadiracita indica. Linn.

नैसर्गिक वर्ग—Meliaceae

वानस्पतिक वर्णन–यह वृक्ष जाति की वनस्पति है।

मूल—साधरण, लम्बी **पुष्प**–पीताभ श्वत छोटे

तना—१/२ से १ फुट गोल खर **फल**–छोटे पीतवर्णयुक्त

शाखा–भगुर

पत्र–संयुक्त एकांतर

प्राप्तिस्थान—भारतवर्ष में सर्वत्र प्राप्त होता है।

उपयोगी अंग—पंचांग

रस–तिक्त **वीर्य**—शीत **विपाक**–कटु

गुण—रक्तशोधक, नैत्र्य, कृमिघ्न **दोषशमन**–त्रिदोष

श. स. प्रभाव—त्वक्, धातु और रक्त

योग— **व्याध**–अपक्व व्रण पाचक, व्रणशोधक

निम्बारिष्ट (ज्वर) रक्तपित, कण्डू, नैत्रविकार,

निम्ब हरिद्रा खण्ड (कामला शोथ), रक्तशोधक, मलेरियाज्वर, त्वचारोग, हैंजा

मात्रा–पत्रस्वरस, ३ से ५ तोला नैत्र– ५ से १० बिन्दु

विशेष–(१) प्रतिनिधि–वकायनकी त्वचा और पत्र किन्तु विषैला होनेसे मात्रा का ध्यान रखना आवश्यक है।

(२) दर्पनाशक–अतिसेवन से वैकारिक अवस्थामें घी, गायका दूध और मक्खन लाभप्रद है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

नीम

चित्र संख्या ११६

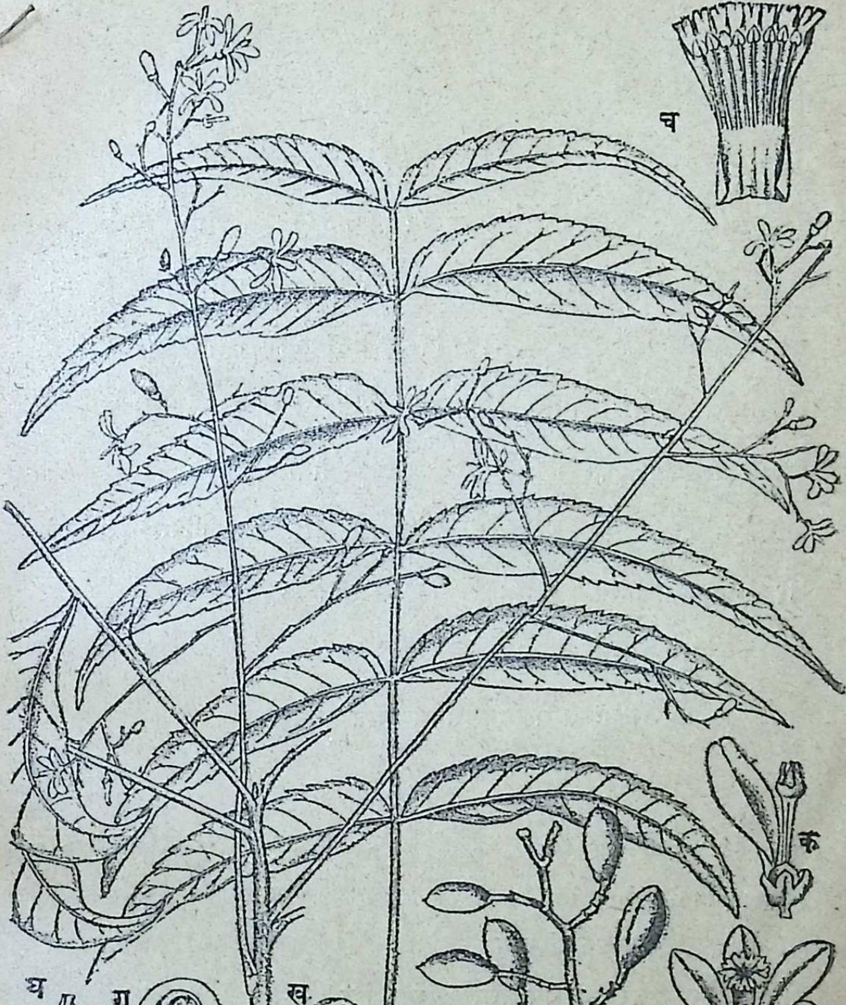

AZADIRACITA INDICA, LINN.
(Meliaceae)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

नींबू (बिजोरा)

नाम **चित्र संख्या-११७**

(१) संस्कृत—निम्बूक (२) हिन्दी—नीम्बू (बिजोरा)

(३) गुजराती—लिंबू (४) मराठी—लिंबु

(५) अंग्रेजी—Lemon. (६) लेटिन-Citrus medica. Linn.

नैसर्गिक वर्ग—Rutaceae.

वानस्पतिक वर्णन—यह वृक्ष जाति की वनस्पति है।

मूल-साधारण मोटी जमीन में गहरी उतरी हुई।

तना-गोल कंटकयुक्त, स्निग्ध **पुष्प**—पीताभश्वेत

शाखा-छोटी **फल**-छोटा गोल, हरित (अपक्व) पीत (पक्व)

बीज-गोल, नुकीले,

पत्र-एकान्तर, तैलग्रंथियुक्त.

प्राप्तिस्थान-यह भारत में प्रायः सर्वत्र प्राप्त इाती है।

उपयोगी अंग-फल

रस-अम्ल **वीर्य**-किंचित् उष्ण **विपाक**-अम्ल

गुण—दीपन, पाचन, हलका। **दोषशमन**-वात

श. स. प्रभाव-पाचन संस्थान

रोगोपयोग-उदररोग, वातशूल, **अग्निमाद्य**

मात्रा—चूर्ण-२ से ४ माशा **अनुपान**—तैल

विशेष-इसमें कटु अम्ल रसायनिक तत्व रहता है जो पाचन संस्थान की क्रिया का नियमन करता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

नींबू (बिजोरा) चित्र संख्या ११७

CITRUS MEDICA, LINN. (Rutaceae)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

नींबू

नाम **चित्रसंख्या–११८**

(१) संस्कृत—निम्बूक (२) हिन्दी—नींबू

(३) गुजराती—लींबु (४) मराठी—लिंबू

(५) अंग्रेजी—Acid lime or Bergamothe. (६) लेटिन—Citrus acida, Linn.

नैसर्गिक वर्ग—Rutaceae

वानस्पतिक वर्णन—यह वृक्ष जाति की वनस्पति है।

तना—छाल पतली होती है। **फल**—स्वाद में खट्टा और छोटा होता है।

प्राप्तिस्थान—भारत में सर्वत्र।

उपयोगी अंग—फल

रस—अम्ल **वीर्य**–किंचित् उष्ण **विपाक**–कटु

गुण–अग्निदीपक, चक्षुष्य, **दोषशमन**—कफ

श. स. प्रभाव–आमाशय, मुखकी श्लैष्पिकला

रोगोपयोग—कास; गुल्म, वमन, कण्ठविकार **मलेरिया**, क्षय, अर्बुद (Cancer) विषविकार, ज्वर, कृमि

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

नींबू

चित्र संख्या ११८

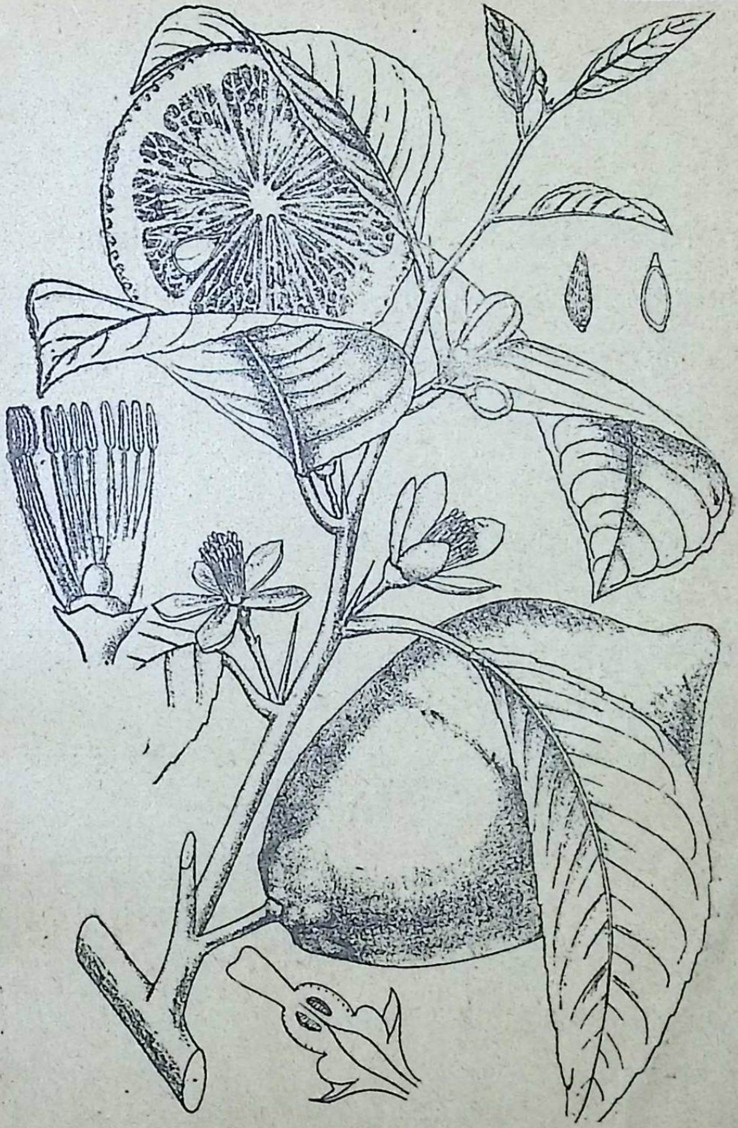

CITRUS ACIDA, LINN.
(Rutaceae)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

निर्गुण्डी, सम्हालु

नाम

(१) संस्कृत–निर्गुंडी, (२) हिन्दी–निर्गुण्डी सम्हालु

(३) गुजराती–नगोड़ (४) मराठी–निर्गुण्डी

(५) अंग्रेजी - Fine leaved chaste (६) लेटिन–Vitex nigunds

नैसर्गिक वर्ग–Verbe naceae. Vitex Trifolia.

वानस्पतिक वर्णन-यह ८ से १० फुट ऊंची वृक्ष जाति की वनस्पति है।

मूल–साधारण **पुष्प**–हल्के नीले रंग के छोट २ फूल

तना–गोल, खर **फल**–कृष्णवर्ण

शाखा–पतली, फीकी, श्वेत **बीज**–छोटे

पत्र-अरहर के समान ऊपर नीले नीचे श्वेत ।

प्राप्तिस्थान–भारतवर्ष में सर्वत्र होता है। विशेषत: बंगाल और दक्षिण भारत

उपयोगी अंग–पंचाग; मूल

रस–कटुतिक्त कषाय **वीर्य**-उष्ण **विपाक**–मधुर

गुण–स्वेदल, रुक्ष **दोषशमन**–वातकफ

श. स. प्रभाव–वातसंस्थान **व्याधि**–आमवात, आमदोष, वातव्याधियां

योग—

निर्गुण्डी तैल– (व्रणरोपक; शोधक)

मात्रा--२ से ४ माशा (चूर्ण)

अनुपान–जल

विशेष—(१) पुष्परंग भेद से इसके श्वेत और नीलाभ दो भेद होते हैं।

(२) इस वनस्पति से एक तीव्र अरुचिकारक गन्ध आती है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

पद्माक

नाम

(१) संस्कृत—पद्मक (२) हिन्दी—पद्माक

(३) गुजराती—पद्मकाष्ठ (४) मराठी—पद्मकाष्ट

(५) अंग्रेजी–Himalayan cherry (६) लेटिन–Prunus puddum, Roxb.

नैसर्गिक वर्ग—Rosaceae.

वानस्पतिक वर्णन–यह मध्यमाकारी वृक्ष जाति की वनस्पति है ।

मूल–मोटी पृथ्वी में गहरी उतरी हुई, विस्तृत

पुष्प—रक्ताभपीत्त, श्वेत, पत्रकोणाग्रोद्भूत

तना–गोलाकार त्वक्युक्त, हलका रक्तवर्ण

फल—पीत और रक्तवर्ण युक्त, १.३ से २ सें. मी. लम्बे

शाखा—कृष्णरक्त, अन्तर्त्वक् रक्तपीताभ श्वेत

पत्र—श्लक्षण, गोल, तीक्ष्ण धारयुक्त

प्राप्तिस्थान–यह हिमालय में शिमला, गढवाल, सतलज से सिक्किम तक प्रायः सर्वत्र प्राप्त होता है ।

उपयोगी अंग—काष्ठ

रस—तिक्त कषाय **वीर्य**—शीत **विपाक**–मधुर

गुण–लघुग्राही, रक्तस्थापक, कटुपौष्टिक

दोषशमन–पित

श. स. प्रभाव–समस्त शरीर

योग—

पद्मकादिलेह (गर्भस्राव)

रोगोपयोग–ज्वर, वमन; **रक्तपित, पितरोग**, विस्फोट, व्रण,

मात्रा–५ से १५ रति तक (चूर्ण) **अनुपान**–जल

विशेष–(१) पद्माक की त्वक् में घातक विषैला तत्व–Hydrocynic Acid. होता है । अतः इसका प्रयोग करते समय मात्रा का ध्यान देना आवश्यक है ।

(शेष–पृष्ठ २३९)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

परवल पटोल

नाम **चित्र संख्या-१२०**

(१) संस्कृत-पटोल (२) हिन्दी-परवल

(३) गुजराती-कडवाँपरवल (४) मराठा-कडुपरवल

(५) अंग्रेजी-Patola (६) लेटिन-Trichosanthes dioica, Roxb.

नैसर्गिक वर्ग-Cururbitaceae.

वानस्पतिक वर्णन-यह आरोहिणी (बेल) लता जाति की वनस्पति है।

मूल--कन्द

तना—कोमल, हरिताभ **फल**-कन्दोरीके फल समान,तीन इंच लंबा

पत्र-अखंड, कंगुरेदार, **बीज**—छोटे, कृष्णाभ

प्राप्तिस्थान-यह भारत में प्रायः सर्वत्र प्राप्त होती है।

उपयोगी अंग-पंचांग

रस-तिक्त कटु **वीर्य**-उष्ण **विपाक**-कटु; फल मधुर

गुण-मूल-सर, भेदन, दीपन **दोषशमन**-पितकफ, फल-त्रिदोघ्न, पत्र-पितघ्न

श. स. प्रभाव-आन्त्र और रक्तधातु

योग-

पटोलाद्य चूर्ण (पाण्डु)

पटोलाद्य क्वाथ (ज्वर, कामला)

रोगोपयोग-पाण्डु, **कामला**, रक्तपित्त **त्वग्रोग**; कृमि (बीज)

मात्रा-२ से ४ माशा चूर्ण

अनुपान-जल

विशेष-(१) परवल का मूल-कन्द तीव्र विरेचक होता है।

(२) इसकी क्रिया 'इलेटेरिया' के समान होती है।

(३) यह प्रधानतः ज्वर में और पौष्टिक योगोंमें काम में ली जाती है।

---

(२) इसमें उपरोक्त विषैले तत्व के होने से शुष्क कास और क्षय में अतिस्वेद आना कम हो जाता है। क्योंकि इसकी श्वासोच्छवास संस्थान पर उपशामक क्रिया होती ह।

(३) हृदय पर इसकी शामक क्रिया होती है जिससे हृद्स्पंदन वेग में कमी होती है। साथ ही हृदय पर बसाका आधिक्य से उत्पन्न कास का शमन करती है।

(४) इस वनस्पति का क्वाथ नहीं बनाना चाहिए क्योंकि ताप से इसके उपयोगी तत्व नष्ट हो जाते हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

परवल पटोल

चित्र संख्या १२०

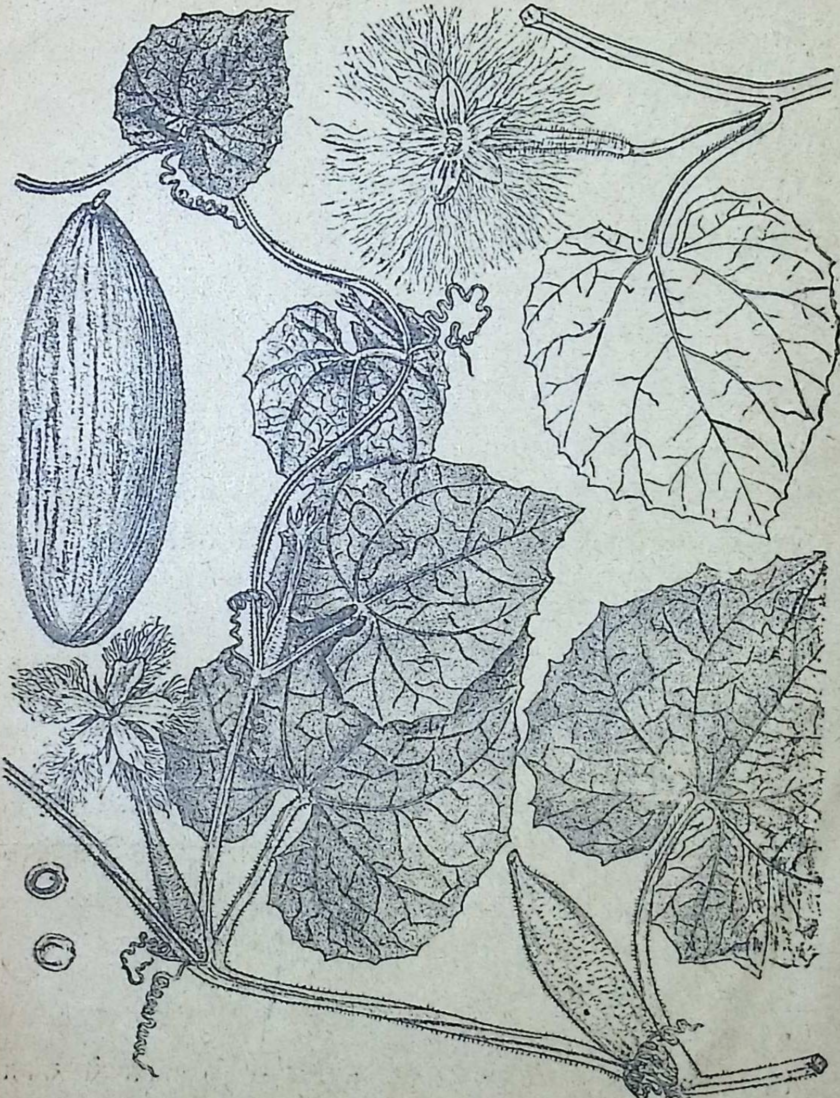

TRICHOSANTHES DIOICA ROXB (Cururbitaceae)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

पवार

चित्र संख्या—१२१

नाम

(१) संस्कृत–चक्रमर्द

(२) हिन्दी–पवार

(३) गुजराती–कुँवाडियो

(४) मराठी–टांकली

(५) अंग्रेजी–Fetid cassia.

(५) लेटिन–Cassia tora, Linn.

नैसर्गिक वर्ग–Leguminosae.

वानस्पतिक वर्णन–यह दोसे पांच फीट की ऊंची एक वर्षायु क्षुप जाति की वनस्पति है जो वर्षाऋतु में वहुतायत से उत्पन्न होती है ।

मूल–४ से ६ इंच लम्बी, रेशेदार

तना–हरिताभ कपिश, अंगुली समान मोटा

शाखा–श्लक्ष्ण, कोमल भाग रोमश, भीतरी भाग रिक्त

पुष्प–पीत

फली–चार इंच लम्बी और पतली.

बीज–२० से ३० बीज छोटे मेथा के समान, स्निग्ध.

पत्र–संयुक्तदल, षटदली, मेथी के पत्तों के समान.

प्राप्तिस्थान–यह भारत में प्राय: सर्वत्र प्राप्त होती है और बहुत प्रसिद्ध है ।

उपयोगी अंग–पंचांग प्रधानत: पत्र और बीज

रस–कटु मधुर

वीर्य–उष्ण

विपाक—कटु

गुण–रुक्ष, लधु

दोषशमन–वात कफ; वात-पितप्रकोपक

श. स. प्रभाव–त्वचा

रोगोपयोग—दद्रु, **कण्डु**, विष, गुल्म, कास, **कृमि**, श्वास, कुष्ठ

मात्रा—चूर्ण–१/२ से २ माशा

अनुपान—जल; वाह्य प्रयोगार्थ निम्बु का रस

विशेष—(१) पंवार की पतियां गुणों में सनाय की पतियों से समता रखती हैं ।

(२) इस वनस्पति से अग्राह्य दुर्गन्ध आती है ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

पवार

चित्रसंख्या १२१

CASSIA TORA, LINN.

(Leguminosae.)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

पाडल (पाटला)

नाम **चित्र संख्या—१२२**

(१) संस्कृत—पाटला (२) हिन्दी—पाडल
(३) गुजराती—पाडल (४) मराठी—पाडल
(५) लेटिन–Stereospermum suaveolens, DC.

नैसर्गिक वर्ग—Bignoniaceae.

वानस्पतिक वर्णन-यह वृक्ष जाति की वनस्पति है।

मूल-माटी पृथ्वीमें गहरी उतरी हुई **पुष्प**—सुगन्धित पीताभ रक्तवर्ण युक्त, शाखाग्रोद्भूत

तना—की त्वक्-मोटी पीतवर्ण युक्त

शाखा-बहु विस्तृत,

फल—लम्बे, टेढी-मेढी अन्तर्भाग २ से. मी. लम्बा पीताभरक्त

बीज-चपटे, पतले, १२ से ३० बीज, २ से ३ सें. मी. लम्बे

पत्र—अभिमुख, उपपत्ररहित, बड़े, संयुक्त, विषमदल, ३० से ४५ सें. मी. लंबे

प्राप्तिस्थान—यह भारत के शुष्क प्रान्तों में प्रायः सर्वत्र प्राप्त होती है।

उपयोगी अंग—मूल, त्वक् और पुष्प

रस—तिक्त, कषाय **वीर्य**—समशीतोष्ण **विपाक**-मधुर

गुण-मूत्रल, बल्य **दोषशमन**—त्रिदोष

श. स. प्रभाव—महास्रोतस्

योग

दशमूल

रोगोपयोग—वमन, शोथ, हिक्का, तृष्णा पित्तातिसार, रक्तपित, श्लेष्मवमन.

मात्रा—चूर्ण-१ से ३ माशा

अनुपान—जल, मधु या निम्बू का रस

विशेष—(१) यह मस्तिष्क के नाडी केन्द्रों पर उपशामक की क्रिया करती है।

(२) सुश्रुत चरक और वाग्भट के मतानुसार यह वनस्पति सर्पविष निवारण में उपयोगी है।

(३) इसके शुष्क पुष्पों में शर्करा, मांसलद्रव्य (Proteins) और लुआब तत्व प्राप्त होते हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

पाडल (पाटला) चित्र संख्या १२२

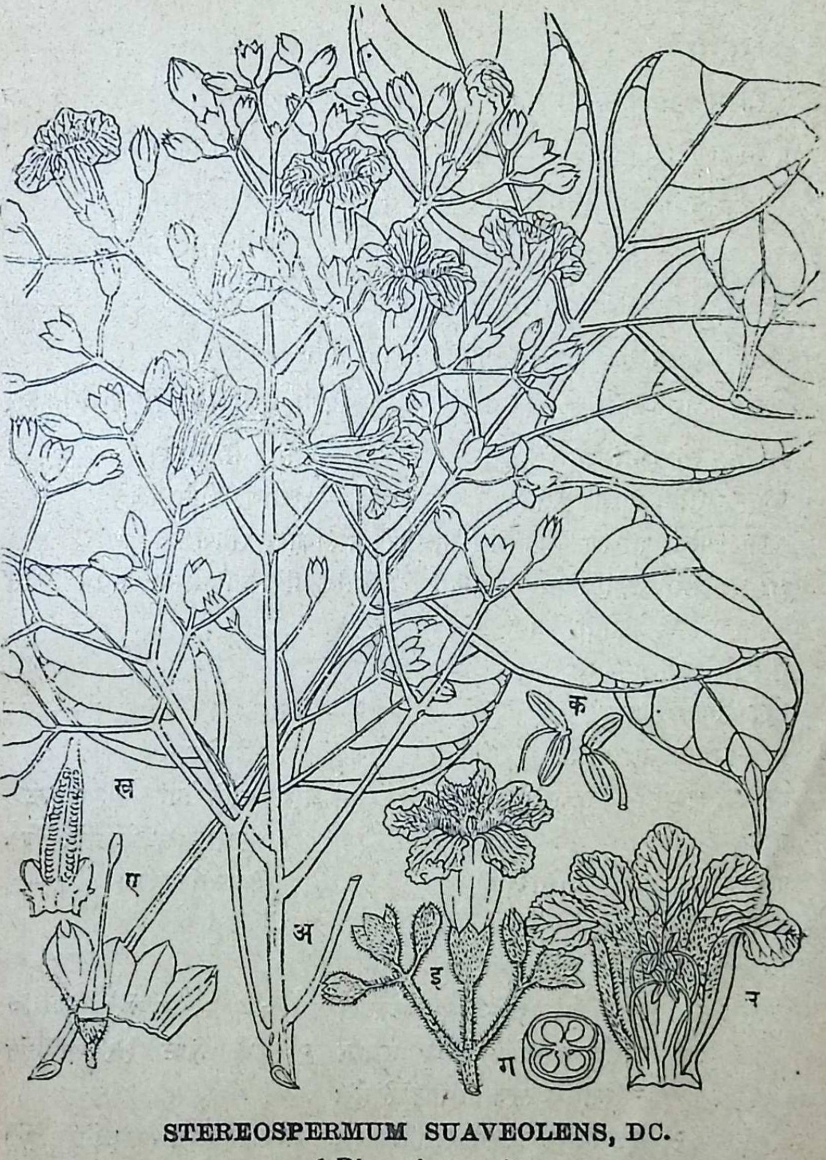

STEREOSPERMUM SUAVEOLENS, DC.

(Bignoniaceae.)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

पाषाण भेद

नाम **चित्र संख्या—१२३**

(१) संस्कृत—पाषाण भेद (२) हिन्दी–पाषाण भेद, पाखान भेद
(३) गुजराती—पाखाण भेद (४) मराठी—पासवाण भेद
(५) अंग्रेजी–Indian rock foil jam. (६) लेटिन–Saxifraga linulata, Wall.

नैसर्गिक वर्ग—Saxifrageceae.

वानस्पतिक वर्णन—यह बहुवर्षायु क्षुप जाति की वनस्तति है।

मूल–कठोर श्वेताभ
पुष्प–श्वेत, गुलाबी या जामुनी वर्णयुक्त, ३ मि. मी. लम्बे
तना—छोटा मांसल
फल—छोटे, नीलाभ श्वेत°
बीज—श्लक्षण, छोटे
पत्र—गोल, श्लक्षण, रक्तवर्णयुक्त, मोटे, दन्ताकार, रोमश

प्राप्तिस्थान—यह हिमालयमें, काश्मीर और नेपालमें प्रायः सर्वत्र प्राप्त होती है।

उपयोगी अंग—मूल

रस–तिक्त, कषाय **वीर्य**—शीत **विपाक**—मधुर
गुण–मूत्रल, व्रण पांचक **दोषशमन**—त्रिदोष
श. स. प्रभाव—वृक्क और आन्त्र **रोगोपयोग**-योनिरोग, मूत्रकृच्छ मूत्राधान, वस्तिरोग, आमातिसार

योग—
पाषाणभेदादि घृत (वस्तिरोग)

मात्रा—१ से ३ माशा (मूल चूर्ण)

अनुपान–जल, मधु और दूध

विशेष–(१) इसमें चूना ११-१/२, कषायम्ल १५-१/२, शर्करा ५-१/२ मांसल पदार्थ ७-३/४, लुआव २-१/४, पिष्ट १९ प्रतिशत रसायनिक तत्व प्राप्त होते हैं।

(२) कोचीन में इसकी पत्तियां श्वास और सन्यास (Epilapsy) रागों में उपयोग में ली जाती है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चित्र संख्या १२३

पाषाण भेद

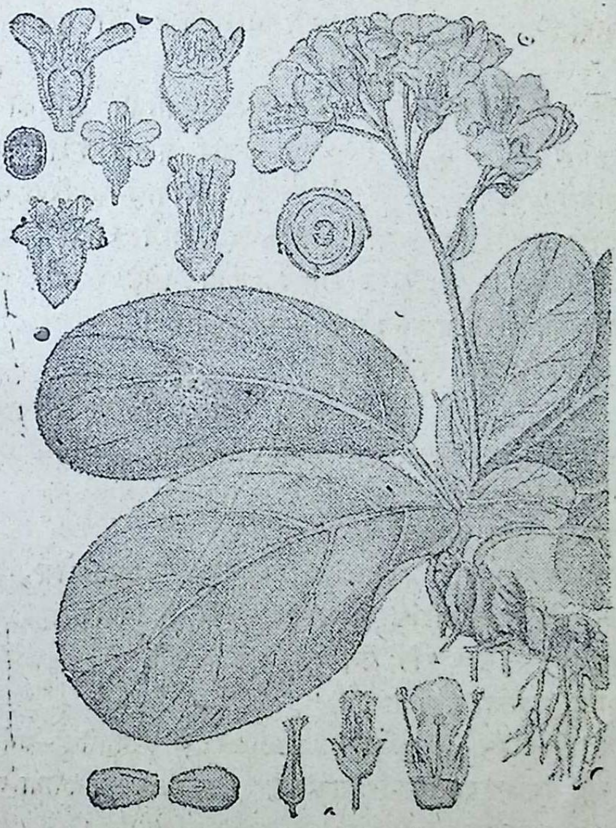

SAXIFRAGA LINULATA, WALL
(Saxifrageceae.)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

पारिजात

चित्र सँख्या-१२४

नाम

(१) संस्कृत-पारिजात
(२) हिन्दी-पारिजात, हरशृंगार
(३) गुजराती-हारशणगार
(४) मराठी-पारिजात
(५) अग्रेजी-Coral jasmine.
(६) लेटिन-Nyctanthes arbortristis, Linn.

नैसर्गिक वर्ग-Oleaceae

वानस्पतिक वर्णन—यह सुन्दर पांच से बारह फाट ऊंची वृक्ष जाति की वनस्पति है।

मूल—छोटी, सूत्रवत् विस्तृत

तना-गोल पाण्डु

शाखा-कोमल, श्लक्षण

पत्र-अभिमुख, उपपत्ररहित, जपा समान, खर.

पुष्प-सुन्दर सुगन्धित रात्रिको खिलते हैं और प्रातःकाल झड़ जाते हैं। श्वेत, पुष्पनाल-केशरिया वर्णयुक्त

फल-चपटे, लम्बे, रोमश

बीज-श्लक्षण, छोटे

प्राप्तिस्थान-यह भारत में प्रायः सर्वत्र प्राप्त होती है।

उपयोगी अंग-पत्र और त्वक्

रस-कटु तिक्त
वीर्य-उष्ण
विपाक-कटु

गुण—अनुलोमक, कटुपौष्टिक, पितद्रावक

दोषशमन-कफ

श॰ स॰ प्रभाव-यकृत और आन्त्र

रोगोपयोग—सन्धिवात, Sciatica, उदकमेह, **यकृतरोग**, **कृमि**, Bronchitis, **जीर्णज्वर** गृध्रसी, आर्तवदोष

मात्रा-त्वक् चूर्ण-२ से ६ रति; पत्र चूर्ण-४ से ६ रति

अनुपान-मधु, शर्करा, जल, पान

विशेष-(१) यह विष (Reptile venoms) में उपयोगी है-कर्नलचोपरा
(२) इसके पुष्पनालको पीसकर एक प्रकार का रंग बनाया जाता है।
(३) इसके पते Santonin के समान कृमिघ्न हैं।
(४) केस और महस्कर द्वारा इस वनस्पति के पतों का ३४ विषमज्वर के रोगियो पर प्रयोग करने से २९ रोगियों को लाभ हुआ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

पारिजात

चित्र संख्या १२४

NYCTANTHES ARBORTRISTIS, LINN. (Oleaeeae)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

पंजूली [भुई आँवला]

नाम

(१) संस्कृत–भूम्याम्लकी (२) हिन्दी–भूई आंवला

(३) गुजराती–भोंय आवली (४) मराठी–भुई आंवळी

(५) लेटिन–Phyllanthus niruri, Linn.

नैसर्गिक वर्ग–Euphorbiaceae

वानस्पतिक वर्णन–यह एक से तीन फीट ऊंची क्षुप जाति की वनस्पति है जो वर्षाऋतु में बहुतायतसे होती है।

मूल–१ से ६ इंच लम्बी, बाह्यावरण कपिश और अन्तरावरण श्वेतवर्णयुक्त; उग्रगंधयुक्त.

पुष्प–छोटे. एकलिंगी, नरपुष्प निम्न पत्राकोणोद्भूत और नारीपुष्प ऊर्ध्व पत्राकोणोद्भूत

तना—सूक्ष्म, सूत्रवत्, बाह्य कपिश और अन्तर्भाग श्वेत

फल–१/२ रेखा व्यासयुक्त कपिश वर्णयुक्त

बीज कोष—उपरिस्थ, तृखण्डी, चिकने, श्लक्षण लम्बगोल

पत्र–एकान्तर, उपपत्ररहित, विभक्त

प्राप्तिस्थान—यह भारत में उष्ण प्रदेशोमें प्रायः सर्वत्र प्राप्त होता है। यह सिन्ध के जंगलों में बहुतायत से उत्पन्न होता है।

उपयोगी अंग—पंचांग

रस–कषाय, अम्ल, तिक्त मधुर **वीर्य**–शीत **विपाक**–कटु

गुण–लघु, दीपन, पाचन, मूत्रजनन, स्रंसन **दोषशमन**–कफ

श. ल. प्रभाव—यकृत, प्लीहा और वस्ति

रोगोपयोग-कास, श्वास, प्रमेह, दाह, पाण्डु, **रक्तदोष**, **बालातिसार**

मात्रा-स्वरस–१/२ से २ तोला **अनुपान**—जल या मधु

विशेष—(१) कोंकण निवासी कुचले के विष के निवारण के लिये इसके पतों का विशेष उपयोग करते हैं।

(२) इसके पत्र और फल आँवले के समान होते हैं किन्तु इसका आकार छोटा होता है। अतः यह 'भुई आंवला' कहा जाता है।

(३) इसमें कटु पौष्टिक और Phyllanthin नामक रसायनिक तत्व प्राप्त होते हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

प्रियंगु

नाम

(१) संस्कृत—प्रियंगु (२) हिन्दी— प्रियंगु
(३) गुजराती—घऊंला (४) मराठी—गहुला
(५) अंग्रेजी-Perfumed cherry (६) लेटिन-Prunus mahaleb, Linn.

नैसर्गिक वर्ग-Rosaceae

वानस्पतिक वर्णन-यह एक क्षुद्र वृक्ष जाति की वनस्पति है।

मूल—साधारण गोल, रोमश.

तना-गोल, त्वक मोटी किंचित् खर

शाखा—ऊर्ध्वमुखी, श्लक्षण

पुष्प-शाखाग्रोद्भूत पीत

फल-३/४ इंच मोटे, गोल, रोमश, हरित (अपक्व) पाण्डु (पक्व)

बीज—एक या दो, अम्ल, नवीन सुगन्धयुक्त, अम्ल कषाय रसयक्त.

पत्र—एकान्तर, सदल, पक्षाकार, संयुक्त.

प्राप्तिस्थान—यह भारत और बिलोचिस्तान में प्रायः सर्वत्र प्राप्त होती है।

उपयोगी अंग—फलमज्जा

रस—तिक्त; **वीर्य**—शीत **विपाक**—कटु

गुण—पुरीषसंग्रहणीय, मूत्रविरजनीय, कामोद्दीपक

श. स. प्रभाव—आमाशय **दोषशमन**-कफपित

रोगोपयोग-रक्तविकार, दाह, ज्वर, वक्त्रजाड्यता, **गलितकुष्ठ**

मात्रा-चूर्ण-१ से ४ माशा **अनुपान**-मधु, मिश्री

विशेष-(१) इसमें Coumarin, Salicylic acid और Amygdalin नामक रसायनिक तत्व प्राप्त होते हैं।

(२) महर्षि चरक ने रक्तपित की चिकित्सा में दाह शमन के लिये प्रियंगु और श्वेत चन्दन की उबटन लगाई हुई कामिनी का स्पर्श बतलाया है।

(३) इसका प्रधानतः आमाशयार्बुद या आमाशयक्षत में प्रयोग लाभप्रद है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

प्याज

नाम **चित्र संख्या–१२६**

(१) संस्कृत–पलाण्डु (२) हिन्दी–प्याज

(३) गुजराती–कांदो (४) मराठी–कांदा

(५) अंग्रेजी–Onion (६) लेटिन–Allium sepa,Linn.

नैसर्गिक वर्ग–Lilaceae.

वानस्पतिक वर्णन–यह क्षुप जाति का वनस्पति है ।

मूल–कन्द, बहुसूत्री

पुष्प–छोटे श्वेत द्विलिंगी

बीज–गोल चपटे, कृष्णाभ

पत्र–अभिमुख, सादे, संकीर्ण लम्ब.

प्राप्तिस्थान–यह भारतवर्ष में सर्वत्र प्राप्त होता है ।

उपयोगी अंग–कन्द

रस–लवणातिरिक्त समस्त रस, प्रधानतः कटु और मधुर **वीर्य**–उष्ण **विपाक**–मधुर

गुण–गुरु,अग्निवर्धक,तीक्ष्ण,मूत्रजनन **दोषशमन**—वातघ्न, कफपितकर

श. स. प्रभाव—पाचन और वातसंस्थान

रोगोपयोग–अर्श, **गुदभ्रंश,** कामला, कर्णरोग, ज्वर, अनिद्रा, **आमातिसार आवतार्तव**

मात्रा—कन्दरस–२ से ४ माशा

अनुपान—जल

विशेष–(१) इसमें 'उत्पत तैल' (Essential oil) और 'गन्धक योग' Organic sulphides तत्व प्राप्त होते हैं ।

(२) इसके रक्त और श्वेतवर्ण भेद से दो जातियाँ होती हैं ।

(३) दर्पनाशक द्रव्य–मधु, दधि और तक ।

(४) अतियोग–उष्ण प्रकृति प्रधान व्यक्तियों के लिये इसका अधिक सेवन अहितकर है । मुख्यतः यह स्मरण शक्ति के लिये हानिकारक है ।

(५) कहीं कहीं इसके बीजों को मधु के साथ पीसकर खालित्य पालित्य में लगाते हैं ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

प्याज

चित्र संख्या १२६

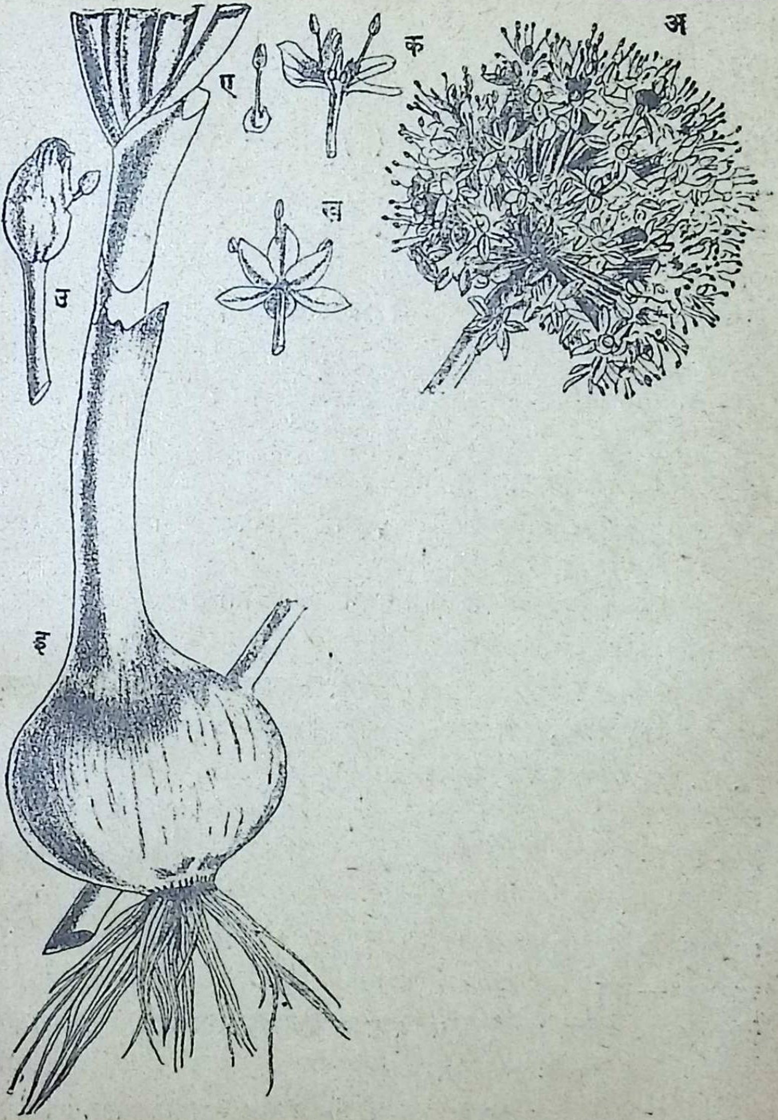

ALLIUM SEPA, LINN.
(Lilaceae.)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

पिठवन (पृश्नपर्णी)

नाम **चित्र संख्या—१२७**

(१) संस्कृत-पृश्नपर्णी (२) हिन्दी—पिठवन
(३) गुजराती—पीठवण (४) मराठा-पीठवन
(५) अंग्रेजी—Painted leaved uraria (६) लेटिन—Uraria lagopoides, DC.

नैसर्गिक वर्ग—Papilionaceae.

वानस्पतिक वर्णन—यह दो से तीन फीट ऊंची क्षुप जाति की वनस्पति है।

मूल—मोटी, लम्बी और पृथ्वीमें गहरी उतरी हुई

तना—जमीन से किंचित निकलकर शाखाओं में लिप्त हो जाता है।

पुष्प—जामुनी, गोल

फली—एक इंच लम्बी, टेढी-मेढी, श्लक्ष्ण

बीज—पीताभ हरित कठोर, चमकीला गुवार के बीज के आकारयुक्त.

शाखा—हरित वर्णयुक्त, सुक्ष्मरोमयुक्त

पत्र-२.५ से ५ सें. मी. लम्बे, संयुक्त, पीताभ व पिंश रेखायुक्त, एकान्तर उपपत्र सूक्ष्म।

प्राप्तिस्थान—भारत में यह प्रायः सर्वत्र प्राप्त होता है।

उपयोगी अंग—पंचांग, मूल

रस—मधुर तिक्त **वीर्य**—उष्ण **विपाक**—मधुर

गुण—दीपन, संग्रही, वृष्य, सर **दोषशमन**-त्रिदोष

श. स. प्रभाव-वात और प्रजनन संस्थान

योग—
दशमूल (ज्वर)
लघुपंच मूल (ज्वर)

रोगोपयोग-अतिसार, वातरोग, पर्यायिक ज्वर, वात-रक्त. उन्माद, व्रणदाह प्रसूतिरोग

मात्रा-१/२ से १ तोला (चूर्ण)

अनुपान—मधु

विशेष-(१) गर्भवती स्त्री के नाभि-प्रदेश के समीपवर्ती प्रांत में इसका लेप, करने से सुख-प्रसव होता है।

(२) इस वनस्पति का मुख्यतः योगके साथ उपयोग होता है। अकेले में बहुत ही कम काम में लाई जाती है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चित्र संख्या. १२७

पिठवन (पृश्नपर्णी)

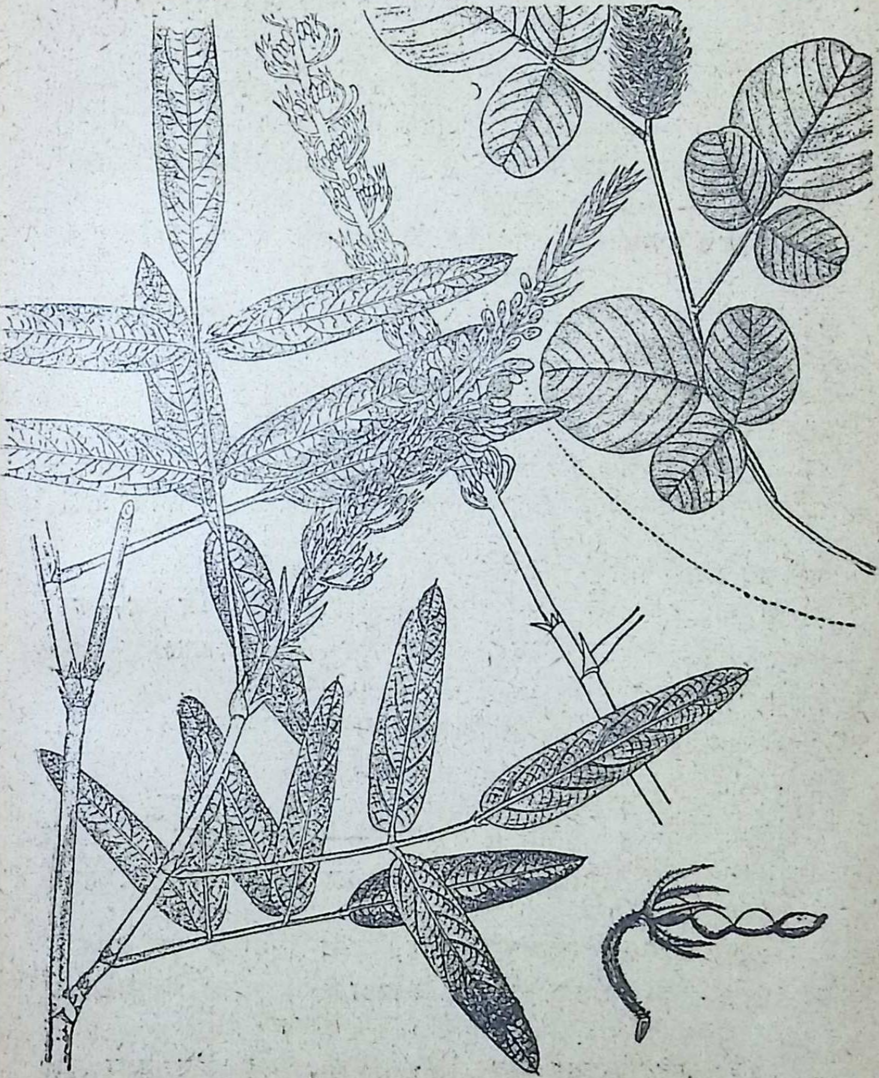

URARIA LAGOPOIDES, DC.
(Papilionaceae.)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

पितपापडा

नाम **चित्र संख्या १२८**

(१) संस्कृत—पर्पट (२) हिन्दी—पित पापडा

(३) गुजराती—पित पापडा (४) मराठी—पित पापडा

(५) अंग्रेजी—Fine leaves fumitory. (६) लेटिन—Fumaria parviflora, Lamk.

नैसर्गिक वर्ग—Fumariaceae

वानस्पतिक बर्णन—यह क्षुप जाति की वनस्पति है जा वर्षाऋतु में बहुतायत से उत्पन्न होती है ।

मूल—साधारण, तान्त्वी **पुष्प**—श्वेत या गुलाबी वर्णयुक्त, सिरेपर जामुनी

शाखा—६ इच लम्बी

फल—जौ दाने समान, कपिश और नील वर्णयुक्त

बीज—छोटे,

पत्र—१/२ से २-१/२ इंच लम्बे और १/४ इंच चौडें, दोनो छोए संकीर्ण.

प्राप्तिस्थान—यह भारत; बिलोचिस्तान और ईरान में प्रायः सर्वत्र प्राप्त होती हैं ।

उपयोगी अंग—पंचांग

रस—तिक्त **वीर्य**—शीत **विपाक**—कटु

गुण—संग्राही, सर, रक्तशोधक **दोषशमन**—कफपित; वातल

श. स. प्रभाव—समस्त शरीर, मुख्यतः आन्त्र और यकृत

योग—
पर्पटादि चूर्ण (पैतिकज्वर)

रोगोपयोग—जीर्णज्वर, अतिसार, पैतिकज्वर, रक्तपित, दाह, कृमि, दद्रु

मात्रा—चूर्ण-२ से ६ माशा
स्वरस-१ से ५ तोला

अनुपान—मधु या शर्करा

विशेष-(१) इसमें Alkaloid fumarine नामक रासायनिक तत्व प्राप्त होते है ।

(२) इसके रसभेदसे-शाहतरा और पित पापडा-नामक दो जातिय होती है ।, शाहतरा ईरान से आता है जो भारत में होनेवाले 'पित पापडा' की अपेक्षा विशेष गुणकारी है ।

(३) अतियोग-इसके अधिक सेवन से यकृत, अण्ड और हृदय का हानि पहुंचतीहै ।

(४) दर्पनाशक द्रव्य—बडी हरड; मधु और नींबु ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

पितपापडा

चित्र संख्या १२८

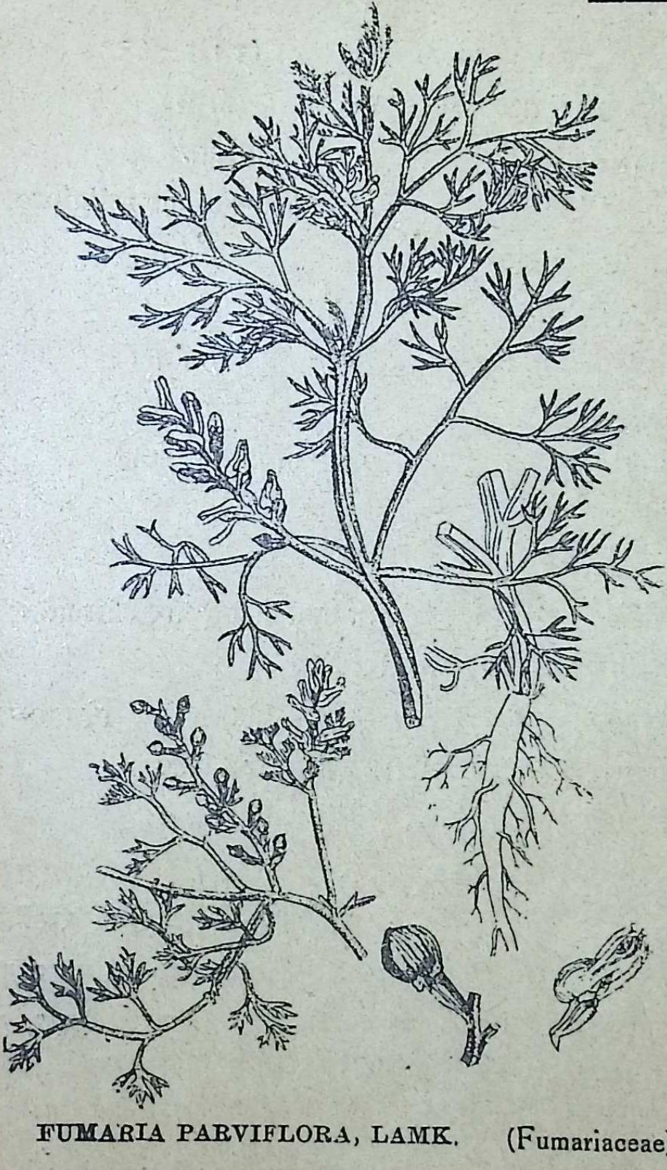

FUMARIA PARVIFLORA, LAMK. (Fumariaceae)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

पीपल

चित्र संख्या—१२९

नाम

(१) संस्कृत—अश्वत्थ
(२) हिन्दी—पीपल
(३) गुजराती—पीपलो
(४) मराठी—पिंपल
(५) अंग्रेजा—Pipal tree.
(६) लेटिन—Ficus religiosa, Linn.

नैसर्गिक वर्ग—Urticaceae.

वानस्पतिक वर्णन—यह बडे वृक्ष जाति की वनस्पति है।

मूल—मोटी जमीन में बहुत दुर तक विस्तृत

पुष्प—छोटे रक्ताभ पीत

तना—गोल सीधा

फल—गोल, मांसल, छोटे

शाखा—चिकनी पाण्डु

पत्र—एकान्तर, उपपत्रायुक्त

प्राप्तिस्थान—यह भारत में प्राय: सर्वत्र प्राप्त होती है और सर्वत्र प्रसिद्ध है।

उपयोगी अंग—मूल, त्वक्, फल और कोंपल

रस—महाकषाय
वीर्य—शीत
विपाक—कटु

गुण—रुक्ष, गुरु, मूत्रसंग्रहण, वर्ण्य, पौष्टिक

दोषशमन—पितकफ

श. स. प्रभाव—प्रजनन अवयव

योग—
हरताल भस्म में इसका प्रधान स्थान है।

रोगोपयोग—योनीरोग, रक्तविकार, कण्डु, श्वास, त्वग्रोग, दन्तरोग, शूल, प्रमेह

मात्रा—चूर्ण—२ से ४ माशा

अनुपान—मधु या शर्करा

विशेष— इसका विशेपत: प्रयोग बाजीकरण योगों में बहुत होता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

पीपल

चित्र संख्या १२९

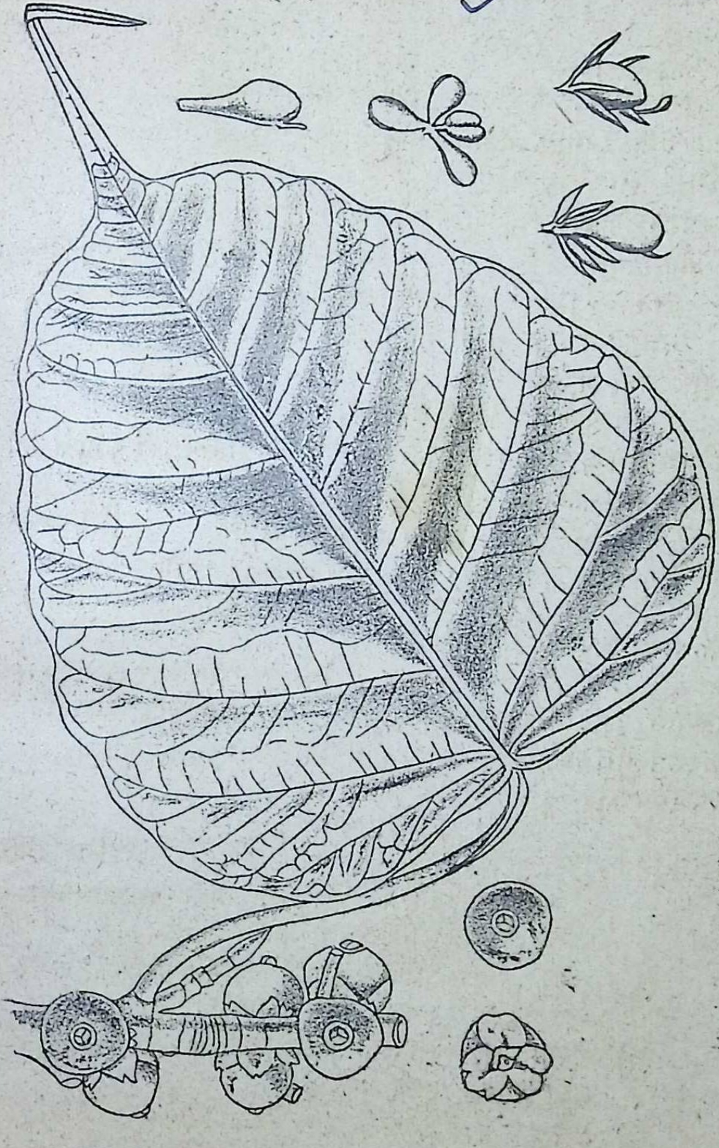

FICUS RELIGIOSA LINN. (Urticaceae)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

पींपर [पीपरामूल]

चित्र संख्या–१३०

नाम

(१) संस्कृत—पिप्पली (२) हिन्दी—पीपर

(३) गुजराती—लिंडी पीपर (४) मराठी—पिपली

(५) अंग्रेजी–Long pepper (६) लेटिन–Piper longum, Linn.

नैसर्गिक वर्ग–Piperaceae

वानस्पतिक वर्णन–यह आरोहिणी लता जाति की वनस्पति है।

मूल–पीतला मूल,

तना–कुछ बाहर निकल कर अनेक शाखारुप में लुप्त हो जाता है।

पुष्प—छोटे, काण्डलग्न, पत्रकोणोद्भूत

फल–कृष्णवर्णयुक्त, एक इंचसे कुछ अधिक लम्बा.

शाखा—बहु, हरिताभ

पत्र—अखण्ड, एकान्तर, हृदयाकृतियुक्त, नागरवेल के समान.

प्राप्तिस्थान–यह भारतमें ककोंण, मलाबार आदि स्थानोंमें कहीं २ प्राप्त होती है।

उपयोगी अंग–फल और मूल

रस–कटु

वीर्य–अनुष्ण

विपाक–मधुर

गुण—स्निग्ध, दीपन, पाचन

दोषशमन–वातकफ; कफकारक और पितशामक(आर्द्र); पित्तल(शुष्क)

श.स. प्रभाव–पाचक संस्थान

योग—

गुडपिप्पली (जीर्णज्वर)

सितोपलादिचूर्ण (कास)

त्रिकटु (उदररोग)

रोगोपयोग–जीर्णज्वर, उदररोग, अग्निमांद्य, प्लीहारोग, आनाह श्वास, प्रसूतिज्वर, आमवात, कफजरोग.

मात्रा—४ से १० रति

अनुपान–मधु

विशेष–(१) इसके आकार भेद से–छोटी (पीपल) और बडी (गज पापल) दो जातियां होती हैं। इसमें गजपीपल के काण्डको 'चव्य' और पीपल की मूल को 'पीपलामूल कहते हैं।

(२) आयुर्वेद में उदरविकारों के लिये 'वर्द्धमान पिप्पली' का प्रयोग बहुत प्रसिद्ध है। यह उत्तम रसायन है।

(३) अतियोग–पीपर के अतिसेवन से शिरशूल होने लगता हैं और यकृत के लिये हानिकारक है।

(४) दर्पनाशक द्रव्य–बबूल का गोंद और इसबगोल

(५) प्रतिनिधि द्रव्य–सोंठ और कुलिंजन।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

पीपर (पीपरामूल) चित्र संख्या १३०

PIPER LONGUM, LINN.
(Piperaceae)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

पुनर्नवा

नाम **चित्र संख्या—१३१**

(१) संस्कृत—पुनर्नवा (२) हिन्दी—पुनर्नवा, विसखपरा
(३) गुजराती—वसेड़ो (४) मराठी—खापरा
(५) अंग्रेजी-Spreading hogwood. (६) लेटिन–Boerhaavia diffusa, Linn.

नैसर्गिक वर्ग—Nyctagineae.

वानस्पतिक वर्णन—यह बहु वर्षायु प्रसारणि लता जाति की वतस्पति है।

मूल–तान्तवी, छोटी **पुष्प**–श्वेत, रक्त या नीले वर्णयुक्त, छोटे
शाखा–रक्त, कोमल, हरिताभ **फल**–सूक्ष्म, गोल कृष्णाभ

पत्र–२-५ से ३-८ से. मी. लम्बे, चौंलाई के पत्तों के समान, चिकने, रसयुक्त

प्राप्तिस्थान–यह भारत, बिलोचिस्तान, लंका, अफ्रिका और अमेरिका में प्राय: सर्वत्र प्राप्त होती है।

उपयोगी अंग—मूल और पंचांग

रस–श्वेत: तिक्त कटुकषाय **वीर्य**–श्वेत: उष्ण, रक्त: शीत **विपाक**–कटु
गुण–सारक, शोथहर, मूत्रल **दोषशमन**–वातकफ (श्वेत); पितकफ (रक्त)
श. स. प्रभाव–वृक्क

योग—
पुनर्नवाक्षार (यकृत प्लीहावृद्धि)
पुनर्नवासव (प्रमेह, उदररोग)
पुनर्नवामण्डूर (सन्धिवात)
पुनर्नवारिष्ठ (जलोदर, सर्वांग शोथ)

रोगोपयोग–रक्तप्रदर, पाण्डुराग,, त्वचाशोथ, हृद्रोग, शोथ, जलोदर, गुल्म, प्रमेह, उदररोग.

मात्रा–चूर्ण-२ से ४ माशा
अनुपान–मधु या शर्करा

विशेष–(१) इसमें Alkaloid Purnarnavine नामक रसायनिक तत्व प्राप्त होते हैं.।
(२) यह वर्ण भेद से–श्वेत, रक्त और नीली तीन जातियां होती हैं।
(३) इसका अतिसेवन करने से वमन-प्रभाव प्राप्त होते हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

पुनर्नवा चित्र संख्या १३१

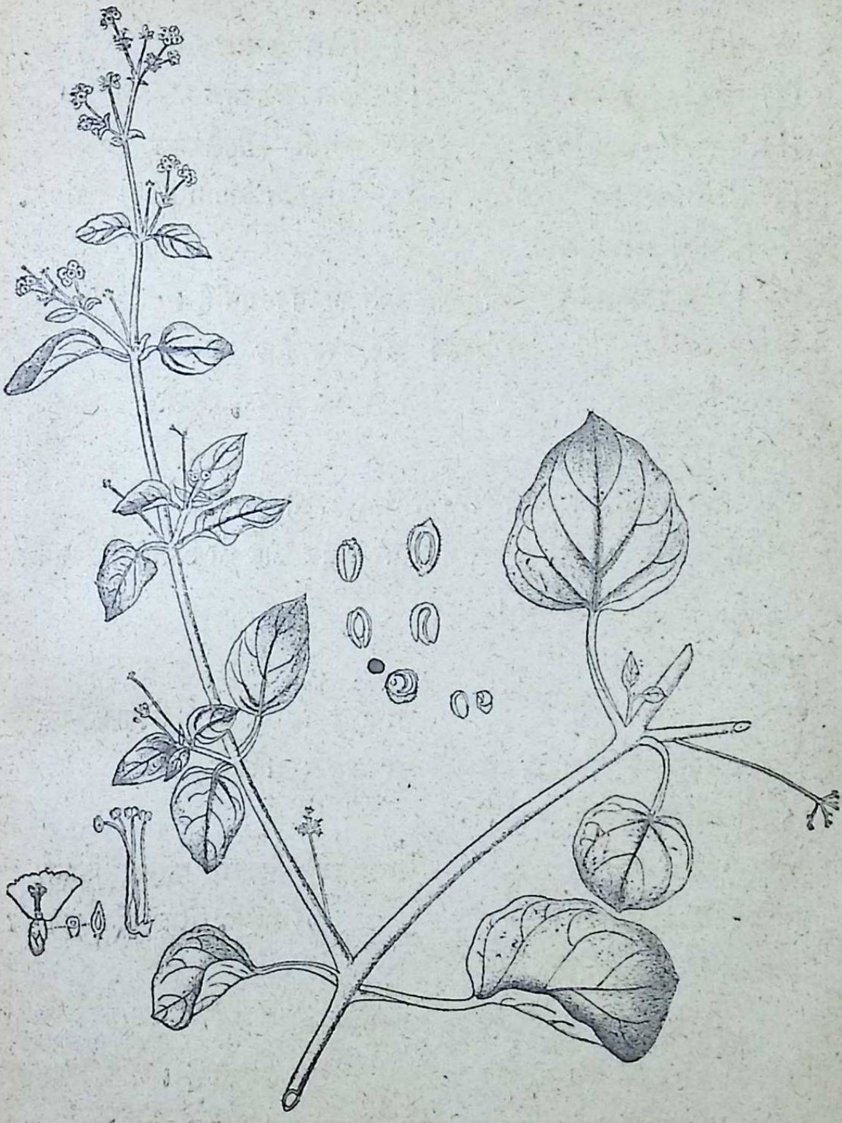

BOERHAAVIA DIFFUSA, LINN.
(Nyctagineae.)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

पोखरमूल

नाम **चित्र संख्या-१३२**

(१) संस्कृत–पूष्करमूल (२) हिन्दी–पोखरमूल

(३) गुजराती–पोहकरमूल (४) मराठी—पोहखरमूल

(५) अंग्रेजी–Orris root (६) Inula racemofa, Hook.

नैसर्गिक वर्ग–Irideae.

वानस्पतिक वर्णन–यह क्षुद्र वृक्ष जाति की वनस्पति है।

मूल–गांठेदार, कपिश, चपटी, कठिन **पुष्प**–श्वेत, नीले

तना–तान्त्वी, उग्रगन्ध युक्त **फल**–छोटे, कठोर, श्लक्ष्ण

शाखा–साधारण गोल.

पत्र–१५ से ३० सें. मी. लम्बे ५-७ से ७-५ से. मी. चौड़े.

प्राप्तिस्थान–यह काश्मीर में पांच से नौ हज़ार फीट की ऊंचाई पर सर्वत्र प्राप्त होती है।

उपयोगी अंग–मूल

रस–कटु, तिक्त **वीर्य**–उष्ण **विपाक**–कटु

गुण—शोथशामक, कफद्रावक **दोषशमन**–वातकफ

श. स. प्रभाव–फुफ्फुस

योग— **रोगोपयोग**–हिक्का, **कास**, श्वास,

पुष्करमूलादिकल्क (कास) **पाण्डु**, शोथ कृमि, हृदरोग

मात्रा–चूर्ण–१ से ४ माशा

अनुपान–मधु

विशेष–(१) इसके मूल की गंध 'बनफशा' के समान होती है।

(२) इसमें एक प्रकार का कपूर और राल के समान तीक्ष्ण गुणवाले रसायनिक तत्व प्राप्त होते हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

पोखरमूल

चित्र संख्या १३२

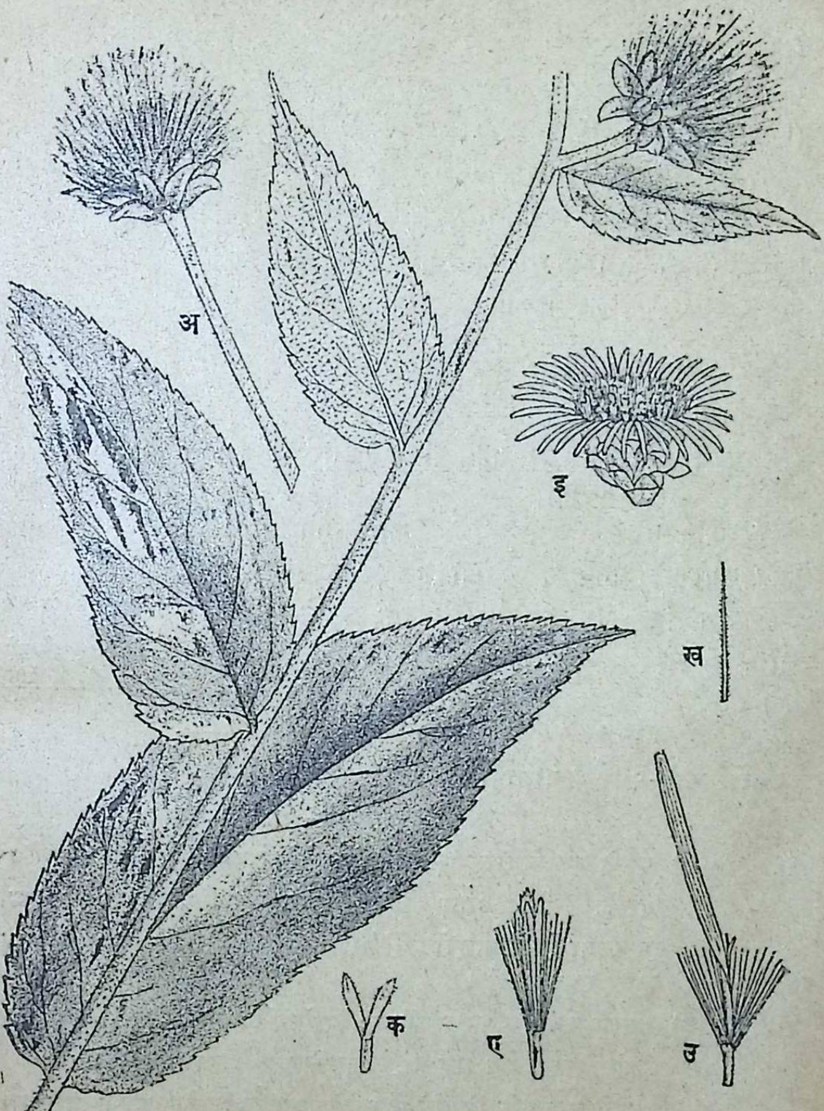

INULA RACEMOFA, HOOK. (Iridœae)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

बड

नाम **चित्र संख्या—१३३**

(१) संस्कृत—वट (२) हिन्दी-बड, वरगद

(३) गुजराती—बडलो (४) मराठी-बड

(५) अंग्रेजी-Baniyan tree. (६) लेटिन-Ficus bengalensis, Linn.

नैसर्गिक वर्ग—Urticaceae.

वानस्पतिक वर्णन-यह विशाल वृक्ष जाति की वनस्पति है।

मूल-सौ हाथ के घेराव तक फैली हुई।

तना-२० से ३० फीट गोल।

फल—रक्तवर्णयुक्त

शाखा-से रक्तवर्ण के मोटे सूत्र निकलते है।

पत्र-गोल अण्डाकृति

प्राप्तिस्थान—यह भारत में बहुत प्रसिद्ध है और सर्वत्र प्राप्त होती है।

उपयोगी अंग—पंचांग

रस—कषाय मधुर **वीर्य**-शीत **विपाक**-मधुर

गुण—व्रणरोपक, पौष्टिक, कामोद्दीपक **दोषशमन**-कफपित

श. स. प्रभाव—समस्त शरीर, प्रधानतः प्रजनन अवयव

योग—

वटादियोग

रोगोपयोग—वमन, योनिरोग, मूर्च्छा विसर्प व्रण, मधुमेह, मूत्रकृच्छ, उपदंश, रक्तप्रदर.

मात्रा—चूर्ण-२ से ४ माशा

अनुपान-शहद, शर्करा या जल

विशेष-(१) इसके मूल के तन्तु 'सार्स्सापरिला' के समान रक्तदोषान्तक हैं।

(२) इसके किसी भी भाग को भेदन करने से एक प्रकार का दूध निकलता है जो वातरोग Rhumetism में बाह्यप्रयोग के लिये बहुत उपयोगी है।

(३) इसकी नवीन कोमल कोंपलों के निर्यास में शल्क (Tannin) विशेष रहता है। अतः यह रक्तातिसार में लाभप्रद है।

(४) इसकी त्वचा के निर्यास में मधुमेह की शर्कराके ह्रास-तत्व प्राप्त होते हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

वड चित्र संख्या १३३

FICUS BENGALENSIS, LINN.
(Urticaceae)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

बबूल

नाम **चित्र संख्या—१३४**

(१) संस्कृत–बब्बूल (२) हिन्दी–बबुल
(३) गुजराती–बावल (४) मराठी–बबुल
(५) अंग्रेजी–Acacia tree. (६) लेटिन-Acacia arabica, Willd.

नैसर्गिक वर्ग–Mimosasceae.

वानस्पतिक वर्णन–यह मध्यमाकारी छोटे तीक्ष्ण कांटेदार वृक्षजाति की वनस्पति है।

मूल–मोटी लम्बी पृथ्वी में गहरी उतरी हुई रक्ताभ उग्र-गन्धयुक्त, कठोर।

तना–कृष्णाभ कपिश, अन्तर्त्वक् श्वेत

शाखा–त्वक् कपिश रोमश, २–१/२ से ३ इंच लम्बे कांटेदार

पुष्प–पीतवर्णयुक्त, गोल

फली–चपटी, सन्धिस्थान से फटनेवाली ४ से ६ इंच लम्बी १/२ से ३/४ इंच चौड़ी,

बीज–७ से १२ बीज, श्लक्षण, १-१/२ से २ रेखा चौड़े, लम्बगोल

पत्र–सदल, पक्षाकार, आवले के पत्तों के समान,

प्राप्तिस्थान–यह भारत, बिलोचिस्तान, वज़रीस्तान, अरब और मिश्रदेश में प्राय: सर्वत्र प्राप्त होता है।

उपयोगी अंग–त्वक्, पत्र और निर्यास।

रस–कषाय **वीर्य**-शीत **विपाक**-कटु

गुण-मलावरोधक **दोषशमन**—कफपित

श. स. प्रभाव—मुख और आन्त्र।

रोगोपयोग–कुष्ठ; कास, आम, रक्तातिसार, मूत्रकृच्छ्र, कृमि, विष, आर्तवविकार

मात्रा–निर्यास–२ से ४ माशा
क्वाथ–४ से ६ तोला

अनुपान—मधु और शर्करा

विशेष–(१) प्रतिनिधि द्रव्य—ढाक और धावडे का गोंद।
(२) दर्पनशाक वनस्पति—बनफशा
(३) अतियोग–इसके अधिक सेवन से वक्ष और गुदाको हानि है।
(४) इससे रक्ताभ श्वेतरंग का निर्यास (गोंद) निकलता है।
(५) इसकी त्वक् चमडे रंगने के उपयोग में आती है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

बबूल

चित्र संख्या १३४

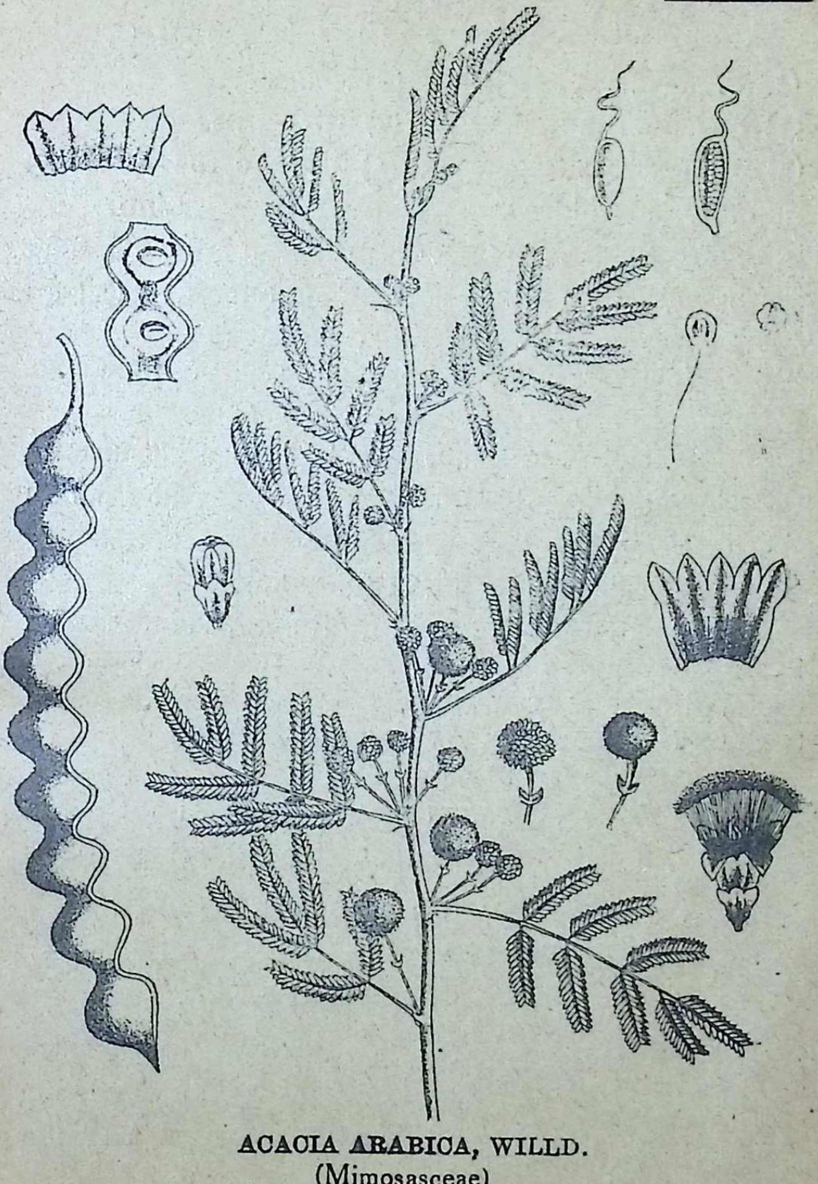

ACACIA ARABICA, WILLD.
(Mimosasceae)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

वच

नाम **चित्र संख्या-१३५**

(१) संस्कृत-वचा (२) हिन्दी-वच
(३) गुजराती-घोडावच (४) मराठी-वेखण्ड
(५) अंग्रेजा-Sweet flag (६) लेटिन-Acorus calamus, Linn.

नैसर्गिक वर्ग-Aroideae.

वानस्पतिक वर्णन-यह क्षुद्र क्षप जाति की वनस्पति है जो आर्द्र जमीन में बारहों मास उत्पन्न होती हैं।

मूल-मध्यमांगुली समान मोटी

शाखा-टेढीमेढी

पत्र-श्लक्ष्ण, हरित, नुकीलें, ९. से १.८ सें. मी. तक लम्बे १.८ से ३.८ सें. मी. चौडे

पुष्प-पीताम्भ श्वेत

प्राप्तिस्थान-यह भारत में आसाम, मनीपुर और ब्रह्मामें बहुतायत से—प्राप्ति होती है।

उपयोगी अंग— मूल और शाखा

रस-कटु तिक्त **वीर्य**—उष्ण **विपाक**-कटु

गुण-मदुविरेचक, वामक, मेध्य, मूत्रल **दोषशमन**-वातकफ

श.स. प्रभाव-मस्तिष्क **रोगोपयोग**-अर्श, विबंध, कण्ठरोग, अपस्मार, शुष्ककास, Hysteria.

योग—

सारस्वतचूर्ण (उन्माद, स्मरणशक्ति)

मात्रा—चूर्ण-साधारण २ से ५ रति
वमनार्थ-१० से १५ रति

अनुपान—उष्ण जल

विशेष-(१) इस वनस्पति के समस्त अंग सुगन्धित होते हैं।

(२) इसकी 'घोडावच' और श्वेत या 'खुरासानी वच' नाम से-दो जातियाँ हैं।

(३) दर्पनाशक वनस्पति-सौंफ

(४) अतियोग-उष्ण प्रकृति प्रधान व्यक्तियों को अधिक सेवन नहीं करना चाहिए क्योंकि इससे शिरःशूल होता है।

(५) इसके मूलत्वक् में १.५% से ३.५% तक उड्डनशील तैल पाया जाता है जिसके प्रधान तत्व Asaryl aldehyde हैं। साथ ही Acorin glucocide eugenol, asarone pinee और Caphene भी प्राप्त होते हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चित्र संख्या १३५

बच

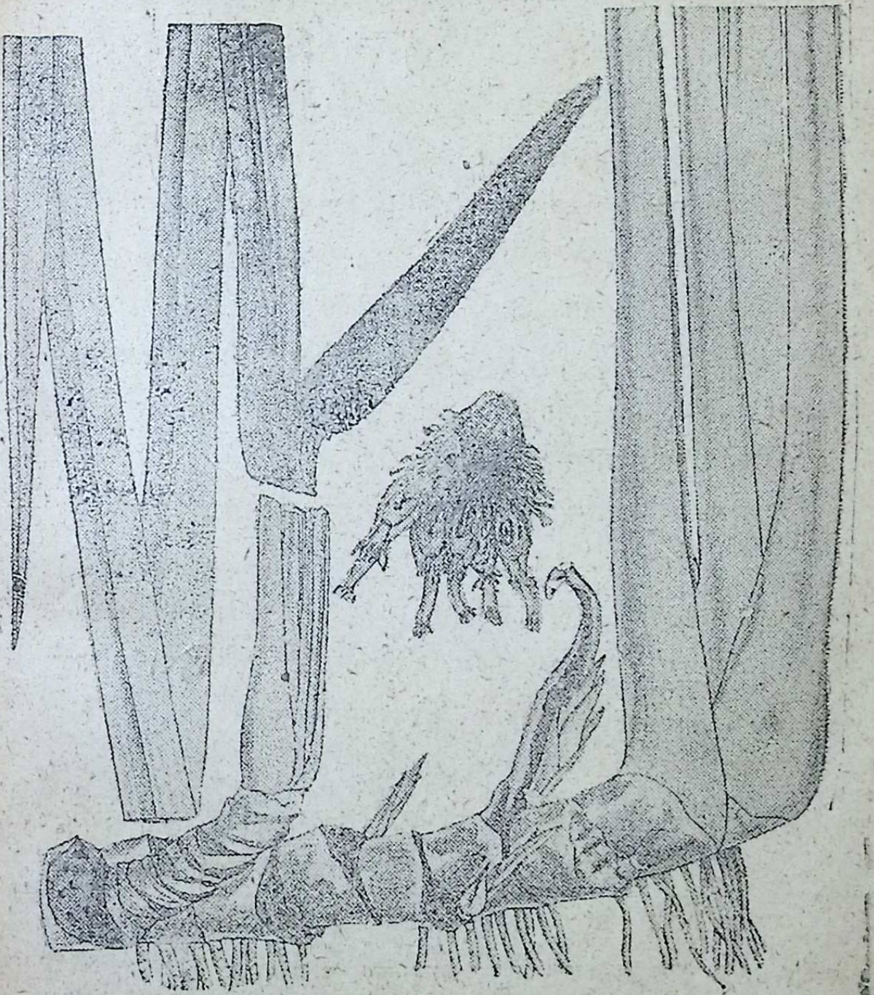

ACORUS CALAMUS, LINN.
(Aroideae)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

वरुण

नाम **चित्र संख्या–१३६**

(१) संस्कृत–वरुण (२) हिन्दी–बरना

(३) गुजराती–वायवरणा (४) मराठी–वायवर्णा

(५) अंग्रेजी-Three bavedcofer (६) लेटिन-Crataeva religiosa, Forst.

नैसर्गिक वर्ग—Capparideae.

वानस्पतिक वर्णन–यह मध्यमाकारी २५ से ३० फीट ऊंची वृक्ष जाति की वनस्पति है।

मूल–माटी, लम्बी, तान्त्वी **पुष्प**—श्वेत

तना—गोल मोटा **फल**–सुपारी के आकार, युक्त रक्तवर्ण युक्त युक्त (पक्व)

शाखा-अधोनत, गोल, कपिसवर्ण

पत्र-बेलपत्र समान त्रीदली, संयुक्त, एकान्तर.

प्राप्तिस्थान–यह भारत में बंगाल, आसाम और मध्यभारत में बहुतायत से प्राप्त होती है।

उपयोगी अंग–फल, पुष्प और त्वक्

रस—तिक्त, कटु, मधुर **वीर्य**–उष्ण **विपाक**—कटु

गुण-दीपन,भेदन **विद्रधि पाचक** **दोषशमन**–वात कफ

श. स. प्रभाव–वृक्क

योग— **रोगोपयोग**–गुल्म, **वातरक्त**, अश्मरी, मूत्रकृच्छ्, **मूत्रसरग्रन्थिरोग** **गण्डमाला**

वरुणादि क्वाथ

वरुणादि गुड

मात्रा—चूर्ण २ से ५ माशा **अनुपान**– मधु या शर्करा

विशेष–(१) इसके पतों को मसलने से तीव्र गन्ध आती है।

(२) इसका त्वक् में Saponin समानगुणवाला तत्व प्राप्त होता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

बरुण चित्र संख्या १३६

CRATAEVA RELIGIOSA, FORST.
(Caprarideae)

१८

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

बहेडा

नाम

(१) संस्कृत–विभितक (२) हिन्दी–बहेडा
(३) गुजराती–बहेडा (४) मराठी–बहेडा
(५) अंग्रेजी–Bedda nuts. (६) लेटिन–Terminalia belerica, Roxb.

नैसर्गिक वर्ग-Combretaceae

वानस्पतिक वर्णन—यह ऊँची वृक्ष जाति की वनस्पति है।

मूल-साधारण, तान्तवी मोटी

तना-८ से १० फीट गोलाकार, सीधा लम्बा

शाखा-श्लक्ष्ण, हरिताभ कपिश गोल

पुष्प—पीताभ श्वेत

फल-गोल, कपिशवर्णयुक्त, ये शीतकाल के लगभग आते हैं। कार्तिक पौष तक पकते हैं।

पत्र-२ से ८ इंच लम्बे. अण्डाकार, छोटेपत्र ताम्रवर्ण युक्त दुर्गन्धित.

प्राप्तिस्थान--यह भारत, बर्मा और लंका में प्रायः सर्वत्र प्राप्त होती है।

उपयोगी अंग-फल

रस-कषाय **वीर्य**-उष्ण **विपाक**-मधुर

गुण-केश्य, लघु, स्वर्य, रसायन **दोषशमन**-कफपित

श.स. प्रभाव-समस्त शरीर, प्रधानतः श्वास नलिका और आन्त्र

योग-
त्रिफलायोग (नैत्ररोग)

रोगोपयोग—नैत्रशोथ, कास, स्वर-विकार, मंदाग्नि, अतिसार पैतिकशोथ, जलोदर, अर्श, कुष्ठ.

मात्रा—चूर्ण २ से ३ माशा **अनुपान**—जल

विशेष-(१) दर्पनाशक द्रव्य-शर्करा और मधु।
(२) प्रतिनिधि द्रव्य-आँवला।
(३) अतियोग–इसके अधिक सेवनसे गुद विकार उत्पन्न हो जाते हैं।
(४) बबूलके समान इससे भी एक प्रकार का निर्यास (गोंद) निकलता है।
(५) इसकी काण्डत्वक् पीलारंग बनाने के उपयोग में आती हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

ब्राह्मी

नाम

(१) संस्कृत—ब्राह्मी (२) हिन्दी—ब्राह्मी
(३) गुजराती—ब्राह्मी (४) मराठी—ब्राह्मी
(५) अंग्रेजी-Indian penny wort (६) लेटिन—Hydrocotyle asiatica, Linn.

नैसर्गिक वर्ग—Umbelliferae.

वानस्पतिक वर्णन—यह प्रसारणी लता जाति की वनस्पति है जो आर्द्र भूमि और वर्षाऋतु में बहुतायत से उत्पन्न होती है

मूल–सूक्ष्म, सूत्रवत्

तना-की सन्धि पर मूल, पत्र, पुष्प और फल आते हैं । **फल**-छोटे

पत्र—छोटें, एकान्तर, हृदयाकृतियुत्

प्राप्तिस्थान—यह भारत और लंका में प्रायः सर्वत्र प्राप्त होती है ।

उपयोगी अंग—पत्र और पंचांग

रस–तिक्त, कषाय, मधुर **वीर्य**–शीत **विपाक**—मधुर

गुण-रसायन, मेध्य, स्वर्य, हृद्य, निद्राजनक **दोषशमन**–वातकफ

श. स्व. प्रभाव—मस्तिष्क

योग-
ब्राह्मीपाक (स्मरणशक्ति)
सारस्वतारिष्ट (मेध्ययोग)
सरस्वत घृत (स्वर्य)

रोगोपयोग—कुष्ठ, प्रमेह, ज्वर, **कास**, प्लीहा, वातरक्त, **मस्तिष्करोग**,

मात्रा—२ से ४ माशा **अनुपान**–शहद

विशेष-(१) ब्राह्मी को हमेशा छाया में सुखाना चाहिए क्योंकि इसमें एक प्रकार का उपयोगी उड्डन शील तैल रहता है ।
(२) इसमें Brahmin. नामक रसायनिक तत्व बहुत महत्वपूर्ण है ।
(३) पाण्डीचेरी के निवासी इसको 'कामोद्दीपक' के लिए उपयोग में लाते है ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

वंशलोचन

नाम

(१) संस्कृत–बंसलोचन (२) हिन्दी–वंशलोचन

(३) गुजराती–वंशलोचन (४) मराठी–वंशलोचन

(५) अंग्रेजी–Ramboo manna. (६) लेटिन–Bambusa arundinacea, Retz.

नैसर्गिक वर्ग–Graminae.

वानस्पतिक वर्णन–यह 'नजळा' नामक बांस से निकाला जाता है। इस बांस का एक 'स्त्री' जाति होती हैं जिसमें एक प्रकार का सत्व जम जाता है। कुछ काल पश्चात् इस सत्व का निकाल लिया जाता है। इसे 'वंशलोचन' कहते हैं।

प्राप्तिस्थान–बांस समान।

उपयोगी अंग–शुष्क घनसत्व

रस–कषाय मधुर **वीर्य**–शीत **विपाक**–मधुर

गुण–रुक्ष, ग्राही, उत्तेजक **दोषशमन**–वात

श. स. प्रभाव–श्वासोच्छ्वाससंस्थान

योग—

सितोपलादि चूर्ण (कास)

मात्रा––१० से २० रति (चूर्ण)

रोगोपयोग—श्वास, कास, क्षय, रक्तविकार, मंदाग्नि, जीर्णज्वर, पूयमेह, मूत्रदाह

अनुपान–मधु

विशेष—वंशलोचन में salicalic acid. ७०% और Potash Calcium ३०% होता है। ऐसा माना जाता है कि वंशलोचन में जितनी अधिक मात्रा में Salicalic Acid होगा उतना ही वह उत्तम होगा।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain: Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

बांस

नाम

(१) संस्कृत–वंश (२) हिन्दी–बांस

(३) गुजराती–बांस (४) मराठी–बांवू

(५) अंग्रेजी–Spiny bamboo. (६) लेटिन–Bambusa arundinacea, Retz.

नैसर्गिक वर्ग—Gramineae.

वानस्पतिक वर्णन–यह सीधी लम्वी ४० से ५० फीट ऊंची वृक्ष जाति की वनस्पति है ।

मूल—साधरण, तान्त्वी कठोर **पुष्प**– श्वेत

तना—गोल श्लक्षण, भीतर से पोला

शाखा–वहुत कम होती है ।

पत्र–कम, नुकीले, लम्वे.

प्राप्तिस्थान—यह भारत में वहुत प्रसिद्ध है और प्राय: सर्वत्र प्राप्त होता है ।

उपयोगी अंग—अंकुर और पत्र

रस–अम्ल, कटु किंचित् कषाय **वीर्य**—शीत **विपाक**–कटु

गुण—रज: शोधक, पाचक **दोषशमन**–पित

श. स. प्रभाव—प्रजनन संस्थान, प्रधानत: गर्भाशय

योग—

रज:प्रवर्तक चूर्ण (आर्तवदोष)

रोगोपयोग–प्रमेह, मूत्रकृच्छ्र, आर्तवरोग, गर्भाशयरोग प्रसूतीरोग,

मात्रा–क्वाथ–१/२ से १ तोला **अनुपान**—पुराना गुड़

विशेष–(१) इसका प्रयोग गर्भवती और कामल प्रकृतिवाली कामिनी का देते हुए मात्रा का ध्यान रखना परमावश्यक है ।

(२) इसमें Salicalic Acid २८%. Calcium ४% Megneceium ६% Potassium ३४% Sodium १२% Florine २%, और Sulphor १०% होता है ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

बावची

नाम **चित्र संख्या**—१३९

(१) संस्कृत—बाकुची (२) हिन्दी—बावची

(३) गुजराती—बावची (४) मराठी—बावची

(५) लेटिन–Psoralea corylifolia, Linn.

नैसर्गिक वर्ग—Papilionaceae.

वानस्पतिक वर्णन-यह २ से ४ फीट ऊंजी क्षुप जाति की वनस्पति है जो वर्षाऋतु में वहुतायत से उत्पन्न होती है।

मूल-सूत्रवत् सूक्ष्म **पुष्प**—फीके जामुनी वर्णयुक्त

तना-सिधा **फल**—कृष्ण (पक्व)

शाखा—गोल, हरिताभ, कोमल

पत्र—ग्वार के पत्तों के समान, एकान्तर

प्राप्तिस्थान-यह भारत और लंका में प्रायः सर्वत्र प्राप्त हाती है।

उपयोगी अंग—बीज और तैल

रस—फल-कटुतिक्त; पंचाग: तिक्त **वीर्य**—फल: उष्ठा, पंचांग: शीत **विपाक**-कटु

गुण-सर, रुच्य, अग्नि दीपक, बल्य **दोषशमन**-वातकफ

श. स. प्रभाव-त्वचा

योग—

बृहत सोमराजि तैल (श्वेत कुष्ठ)

श्वेत कुष्ठहरलेप (श्वेत कुष्ठ)

रोगोपयोग-रक्तपित, पाम, कण्डु त्वग्रोग, विष, वातरक्त, श्वेत कुष्ठ

मात्रा-बीजचूर्ण-३ मशा तक

क्वाथ-१ तोला तक

अनुपान-जल

विशेष-(१) प्रतिनिधि द्रव्य-कालीजीरी।

(२) दर्पनाशक द्रव्य-शिकंनबीज और अन्य अम्ल पदार्थ।

(३) अतियोग-इसके अत्यधिक सेवन से पित्त की वृद्धि होती है आर नैत्र में विकार उत्पन्न हो जाते हैं।

(४) इसमें एक वर्णविहिन तैल, Albumin, शर्करा और Manganese. नामक रसायनिक तत्व प्राप्त होते हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

बावची

चित्र संख्या १३९

PSORALEA CORYLIFOLIA, LINN.
(Papilionaceae)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

वछनाग

नाम **चित्र संख्या–१४०**

(१) सस्कृत–वतसनाम (२) हिन्दा–बछनाग

(३) गुजराती–बछनाग (४) मराठी–वचनाग

(५) अंग्रेंजी–Aconite. (६) लेटिन–Aconitum ferox, Wall.

नैसर्गिक वर्ग–Ranunculaceae.

वानस्पतिक वर्णन—यह बहुवर्षायु क्षुप जातिकी वनस्पति है।

मुल—ग्रंथियुक्त (Tuberus), बादामी वर्णयुक्त

पुष्प—रक्ताभ श्वेत, पीत

फल–गोल, चिक्कण

तना–सीधा गाल

शाखा—गोल हरिताभ कपिश, सीधी कोमल

पत्र–अभिमुख, अखण्ड

प्राप्तिस्थान—यह नेपाल के अल्पाइन, हिमालय प्रान्त मे बहुतायसे होता है।

उपयोगी अंग—कन्द

रस—अत्यन्त मधुर **वीर्य**—उष्ण **विपाक**—मधुर

गुण–रूक्ष, सुक्ष्म, आशु, विकासी **दोषशमन**—त्रिदोष

श. स. प्रभाव—वातकेन्द्र और पाचनसंस्थान

योग—

मत्युन्जयरस (ज्वर)

आनन्द भैरवरस (ज़्वरातिसार)

रोगोपयोग–मूत्रकृच्छ्र, मधुमेह, गृध्रसी धनुर्वात.

मात्रा–रस–१ से २ रति

विशेष–(१) शोधन—इसको तीन दिन तक गोमुत्र में भिगो रखें। तीसरे दिन गोमूत्र में ऊबाल कर निकाल लें और धूप में सुखा दें।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

बछनाग चित्रसंख्या १४०

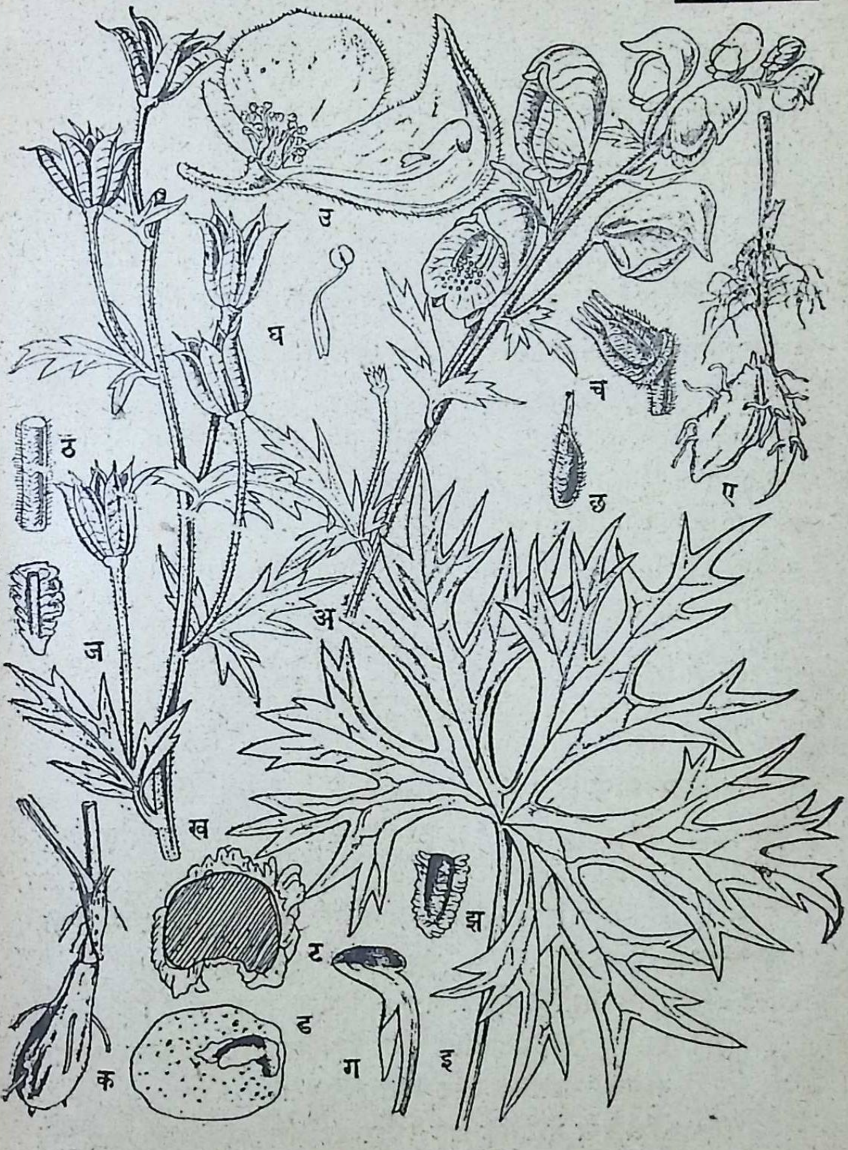

ACONITUM FEROX, WALL. (Ranunculaceae)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

बिल्व

नाम **चित्र संख्या-१४१**

(१) संस्कृत—बिल्व (२) हिन्दी— वेल, बिल्व
(३) गुजराती—बीली (४) मराठा—बेल
(५) अंग्रेजी—Bail fruit tree. (६) लेटिन-Aegle marmeloes, Corr.

नैसर्गिक वर्ग—Rutaceae.

वानस्पतिक वर्णन—यह मध्यमाकारी वृक्ष जाति की वनस्पति है।

मूल-साधारण तान्त्वी कहीं कहीं ग्रंथियुक्त

पुष्प—श्वेत सुगन्धित

तना-श्लक्ष्ण, कपिश

फल-गोल, स्वादिष्ट, कठोर वरणयुक्त

शाखा-कंटकयुक्त, भंगुर

बीज- बहु

पत्र-गोल, त्रिदली, गुच्छदार, एकान्तर

प्राप्तिस्थान-यह भारत और बर्मा में प्रायः सर्वत्र प्राप्त होता है।

उपयोगी अंग-मूलत्वक्, फलमज्जा

रस-मधुर, तिक्त, कषाय **वीर्य**- उष्ण **विपाक**-मधुर

गुण—ग्राही, कफोच्छेदक, दीपन, बल्य, सर

दोषशमन- वातकफ

श. स. प्रभाव-आन्त्र

योग—
बिल्वतैल (वधिरता)

रोगोपयोग-अतिसार, **प्रवाहिका,** कर्णरोग, **मधुमेह,** वातरोग, वमन, कामला, संग्रहणी.

मात्रा— १ से ४ माशा **अनुपान**—शहद या दूध

विशेष-(१) इसके बीजों से एक प्रकार का निर्यास निकलता है।
(२) इसमें शल्कि, उडनशील तैल, कटु तत्व और चिक्कण लुआब नामक रसायनिक तत्व प्राप्त होते हैं।
(३) कम्बोडिया में इसके फळ राजयक्ष्मा और यकृति-दाह शम नमें काम में लेते हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

बिल्व

चित्र संख्या १४१

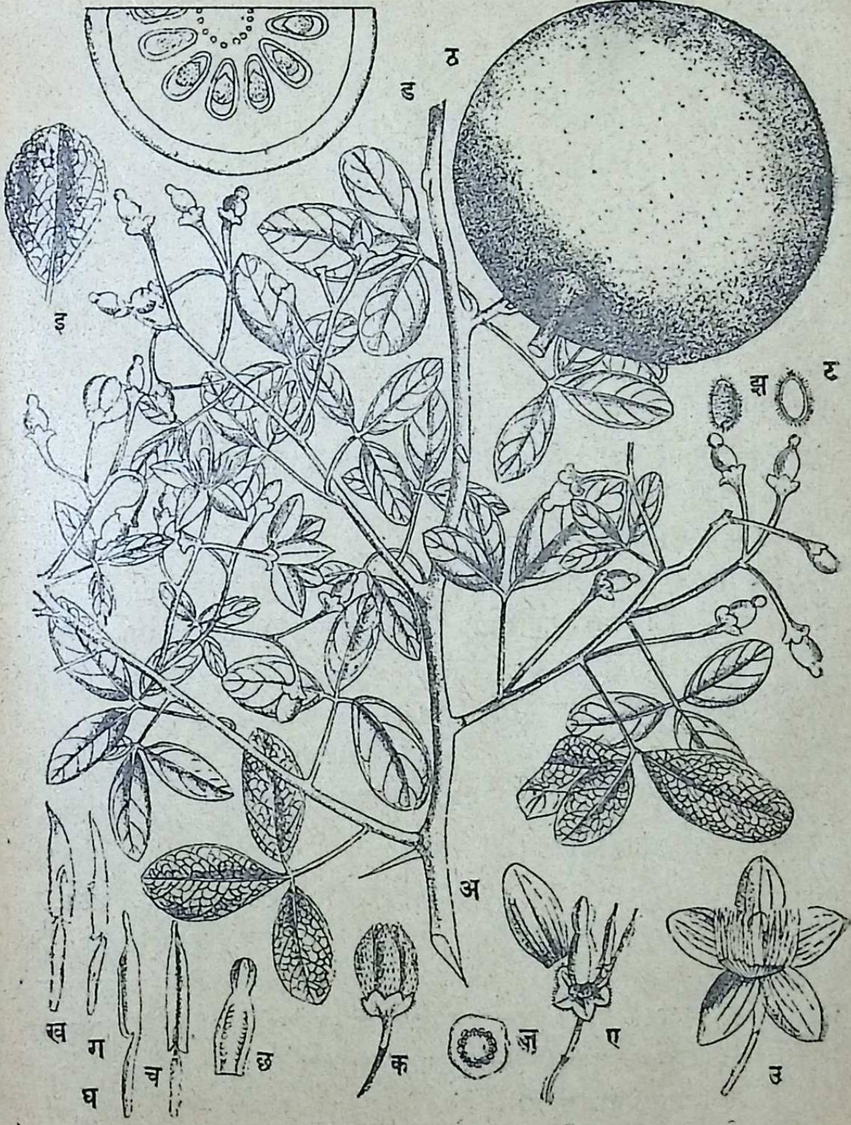

AEGLE MARMELOES, CORR. (Rutaceae)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

बेलाडोना

नाम

(१) संस्कृत— द्राक्षाफला (२) हिन्दी—बेलाडोना

(३) गुजराती—गिरिबूटी (४) मराठी—बेलाडोना

(५) अंग्रेजी—Belladonna Black cherry. (६) लेटिन—Atropa belladonna, Linn.

नैसर्गिक वर्ग—Solanaceae.

वानस्पतिक वर्णन—यह तान से छः फीट ऊंचो क्षुप जाति की वनस्पति है।

मूल–प्राय: एक फ़ुटलम्बी, मोटी और मांसल, तीव्रगन्धयुक्त. **पुष्प**–हरित १ से २ फीट

तना—मध्यमाकरी श्लक्षण **फल**–करोंदे के समान

शाखा–छोटी, गोल हरिताभ

पत्र–अखण्ड, अभिमुख.

प्राप्तिस्थान–यह हिमालयमें काश्मीर, शिमला, कुमायुं, नैनीताल आदि प्रांतोंमें छ: हजार से बारह हजार फीट की ऊंचाई तक सर्वत्र प्राप्त होता है।

उपयोगी अंग—पत्र, मूल और सत्व।

रस—तिक्त **वीर्य**– उष्ण **विपाक**–कटु

गुण–शोथशामक, स्तन्य, स्वेद अवरोधक **दोषशमन**—वातकफ

श. स. प्रभाव–वातसंस्थान

योग–

सुरासार (कास)

रोगोपयोग—श्वास, कास, शोथ, वेदना, हृद्दौर्बल्य, फ़ुफ्फुसरोग, कुक्कुरकास

मात्रा—सुरासार-५ से १० बिन्दु तक **अनुपान**–पत्रचूर्ण- १/४ से १/२ रति

विशेष–(१) यह घातक विष है अंत: प्रयोग के समय मात्रा प्रमाण का ध्यान देना आवश्यक है।

(२) यह वृद्धों के लिए अहितकर और बालकों के लिये उत्तम है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

भारंगी

नाम

(१) संस्कृत–भार्गी (२) हिन्दी–भारंगी

(३) गुजराती–भारुंगी (४) मराठा–भारंगी

(५) लेटिन–Clerodandron serratum, Spreng.

नैसर्गिक वर्ग–Verbenaceae.

वानस्पतिक वर्णन–यह एक से अढाई मीटर ऊंची गुल्म जाति की वनस्पति है।

मूल—साधारण तान्त्वी | **पुष्प**–नीलाभश्वेत, गुच्छदार

तना—कोमल हरिताभ | **फल**–जामुनीवर्णयुक्त (पक्व)

शाखा–लगभग चार इंच लम्बी | **बीज**—छोटे कठोर

पत्र–लम्बगोल, रोमश, ४ इंच लम्बे, २ से ३ इंच चौडे, एकान्तर

प्राप्तिस्थान–यह भारतमें हिमालय की तराई तथा दक्षिण में विजगापट्टम में प्रायः सर्वत्र प्राप्त होती है।

उपयोगी अंग–मूल और काष्ठ

रस–तिक्त कटु | **वीर्य**–उष्ण | **विपाक**–कटु;

गुण–दीपन, रुक्ष, लघु | **दोषशमन**–वातकफ

श. स. प्रभाव–फुफ्फुस

योग–

भार्ग्यादि गुड (यक्ष्मकास)

रोगोपयोग–प्रतिश्याय, **यक्ष्मकास** पानस, **वातकफज्वर** नेत्ररोग, जलोदर, गलगण्ड.

मात्रा–चूर्ण–१-१/२ से ४ माशा | **अनुपान**–जल, शहद, आर्द्रिका रस

विशेष–(१) दर्पनाशक द्रव्य–इमली का सत या निर्यास।

(२) इसमें उपक्षार (Alkaloid) तत्व विशेष प्राप्त होते हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

भांगरा

नाम **चित्र संख्या-१४३**

(१) संस्कृत—भृंगराज (२) हिन्दी—भांगरा

(३) गुजराती—भांगरा (४ मराठी—माका

(५) लेटिन—Eclipta alba, Hassk.

नैसर्गिक वर्ग—Compositae.

वानस्पतिक वर्णन—यह आधा से एक फीट लम्बी क्षुप जाति का वनस्पति होती है जो वर्षाॠतु में उत्पन्न होती है और प्राय: बारहोंमास रहती है।

मूल—सूत्रवत **पुष्प**—श्वेतवर्ण युक्त

फल— कृष्णवर्ण युक्त छोटे

शाखा—श्लक्षण, हरित; कृष्णाभ व्यंगयुक्त, रोमश.

पत्र-१ से ३ इंच लम्बे, १/२ से १ इंच चौडे गोल, विषमभग्नकोणीय, पत्रों को मसलने से कृष्णाभ हरितवर्ण का रस निकलता है।

प्राप्तिस्थान—यह भारत में प्राय: सर्वत्र प्राप्त होती है।

उपयोगी अंग—पंचांग

रस-तिक्त कटु **वीर्य**—उष्ण **विपाक**-कटु

गुण-रसायन, संग्राही, रुक्ष, केश्य **दोषशमन**—वातकफ

श ल. प्रभाव—केश और त्वचा

योग— **रोगोपयोग** पाण्डु संग्रहणी, त्वग्रोग,

भृंगराज तैल (खालित्य पालित्य) व्रण, उपदेश, प्रतिश्याय, धनुर्वात

रसमण्डूर (यकृत्प्लिहावृद्धि)

मात्रा—स्वरस-१ से २ ड्राम **अनुपान**-जल या शहद

विशेष—(१) इसमें Alkaloid ecliptine. नामक रसायनिक तत्व प्राप्त होता है।

(२) यह वण भेदसे श्वेत, पीत और कृष्ण तीन प्रकारकी होती है।

(३) यह 'टेरेक्सेकम' के समान पित शुद्धिकर और केश्य है।

(४) भागरे के पंचांग को हमेशा छाया में सुखाना चाहिए। इसको उबालना भी नहीं चाहिए क्योंकि इसका उपयोगी तत्व उड्डनशील है। अत: इसके स्वरस का प्रयोग ही उत्तम है।

(५) इसकी विशेष मात्रा वामक होती है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

भांगरा चित्र संख्या. १४२

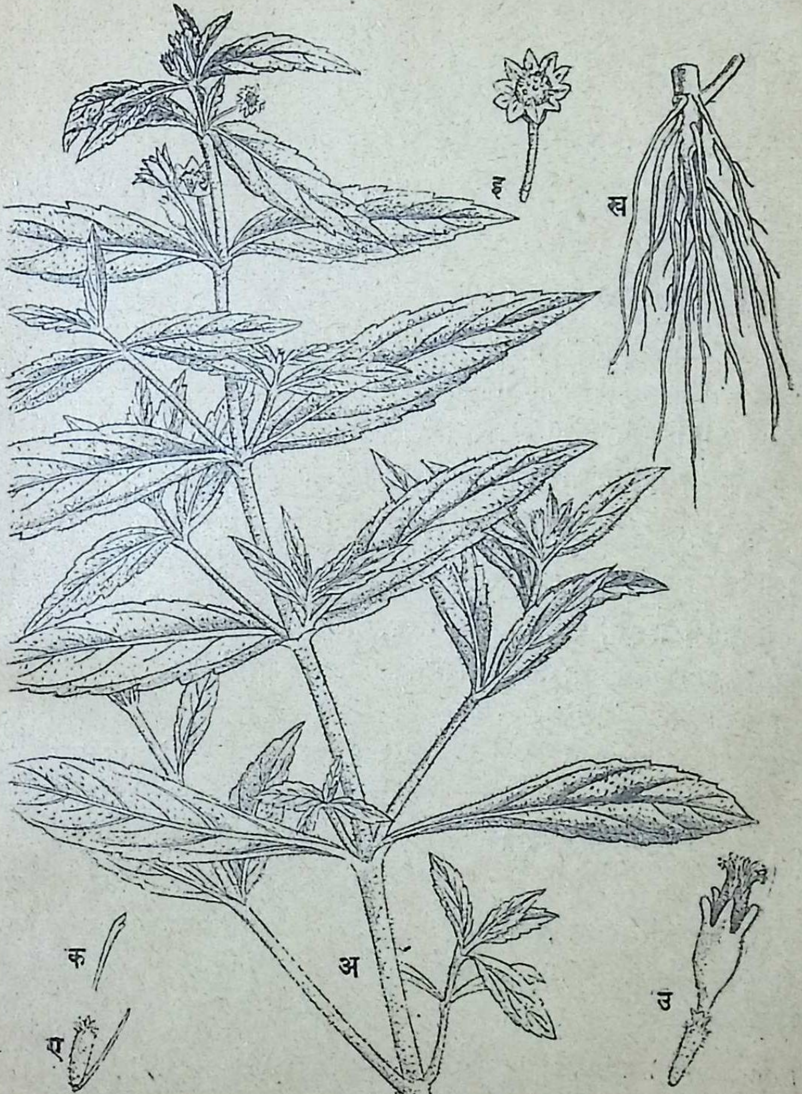

ECLIPTA ALBA, HASSK. (Compositae)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

भिलावां

नाम **चित्र संख्या-१४४**

(१) संस्कृत-भल्लातक (२) हिन्दी-भिलावां

(३) गुजराती-भिलामों (४) मराठी-बिब्बा

(५) अंग्रेजी-Common marking nut. (६) लेटिन-Semicarpus anacardium, Linn

नैसर्गिक वर्ग-Anacardiaceae

वानस्पतिक वर्णन-यह तीस फीट ऊंचा मध्यमाकारी वृक्ष जाति की वनस्पति है

मूल-साधारण तन्तुयुक्त **पुष्प**-पीत

तना—की गोलाई चार फीट त्वक् १ इंच मोटी कृष्णाभ श्वेत

फल-हरित (अपक्व) पीत (पक्व) और कृष्ण (शुष्क) हृदयाकृति

शाखा—कठोर, खर, अधोनत **बीज**—गीरो

पत्र-शाखा ोद्भूत, ९ से १८ इंच लम्बे, गोल

प्राप्तिस्थान—यह भारत में प्रायः सर्वत्र प्राप्त होता है।

उपयोगी अँग—फल

रस-मधुरकषाय **वीर्य**-उष्ण **विपाक**-मधुर

गुण-मेध्य, रसायन, शुक्ल, केश्य **दोषशमन**-वातकफ

श. स. प्रभाव—वातसंस्थान

योग

अमृतभल्लातकी अवलेह (वातराग)

भल्लात्तक तैल (वातरोग)

रोगोपयोग- प्रमेह, संग्रहणी, वातव्याधि अर्श, गण्डमाला, कृमिरोग,

मात्रा-स्वरस-१/२ से २ रति **अनुपान**—जल

विशेष—(१) भिलावें की गिरी में ३२% उत्पत तैल रहता है।

(२) यह घातक विष है अतः प्रयोग करते समय शुद्धाशुद्ध मात्रा प्रमाण का ध्यान रखना आवश्यक है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

भिलावां

चित्र संख्या १४४

SEMICARPUS ANACARDIUM, LINN. (Anacardiaceae)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

मरिच

नाम **चित्र संख्या—१४५**

(१) संस्कृत–मरिच (२) हिन्दी–मरिच काली

(३) गुजराती–मरी (४) मराठी–मिरीं

(५) अंग्रेजी–Piper. (६) लेटिन–Piper nigrum, Linn.

नैसर्गिक वर्ग–Piperaceae.

वानस्पतिक वर्णन–यह आरोहिणी लता जाति की वनस्पति है।

मूल–साधारण, तन्तुयुक्त **पुष्प**–छोटे, पत्रकोणाग्रोद्भूत

तना–मुडाहुआ, हरिताभ श्लक्ष्ण, **फल**–छोटे, कृष्णवण युक्त

पत्र–अखण्ड, एकान्तर

प्राप्तिस्थान–यह भारत में मलाबार और कोंकण में प्राय: सर्वत्र प्राप्त होती है।

उपयोगी अंग–फल

रस–कटु **वीर्य**–उष्ण **विपाक**—कटु

गुण–दीपन, तीक्ष्ण, उत्तेजक **दोषशमन**–वातकफ, पित्तल

श. स. प्रभाव–महास्रोतस्

योग– **रोगोपयोग**—अग्निमाद्य, कृमि, शिर:शूल

मरिच्यादि चूर्ण (अग्निमांघ)

मात्रा—चूर्ण २ से ४ माशा **अनुपान**—जल

विशेष—(१) इसके त्वक् में–रालसदृश एक घुलनशील पदार्थ और दूसरा उड्डनशील उपयोगी तैल–ये दो रसायनिक तत्वप्राप्त होते हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

मरिच चित्र संख्या. १४५

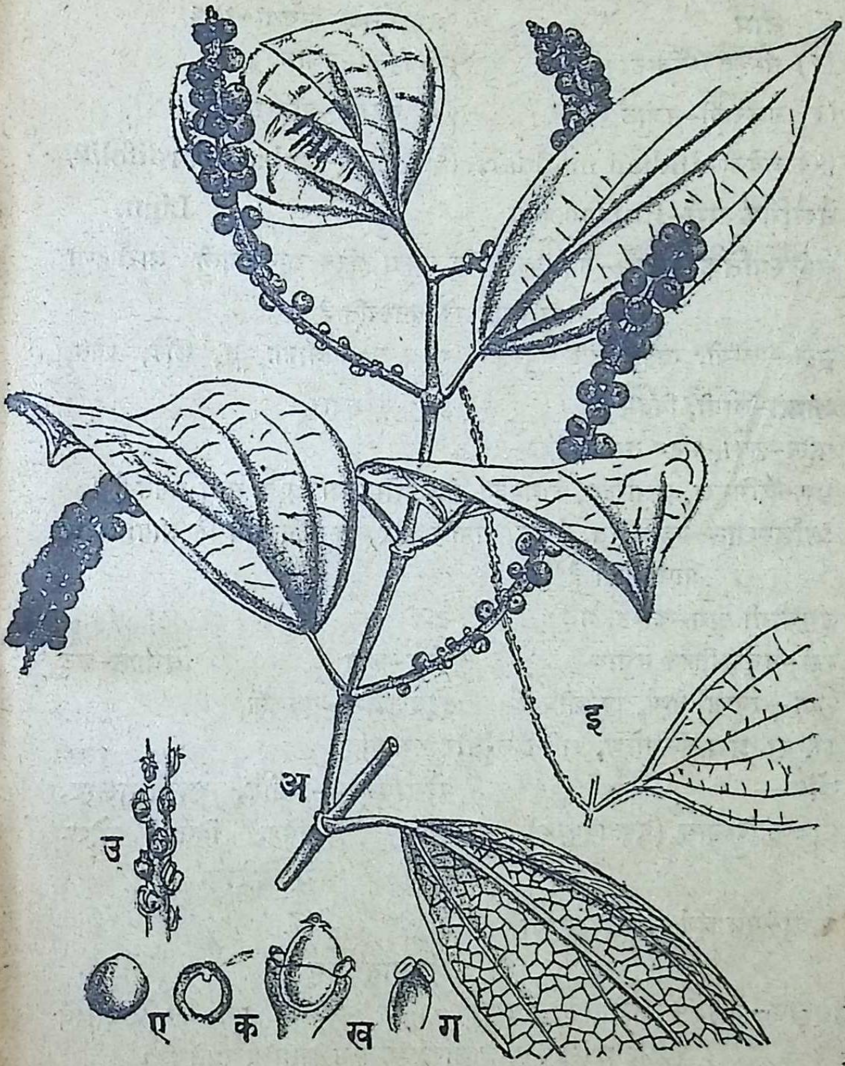

PIPER NIGRUM, LINN.

(Piperaceae.)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

मंजीठ

नाम **चित्र सँख्या–१४६**

(१) संस्कृत–मंजिष्ठा (२) हिन्दी–मजीठ

(३) गुजराती–मजीठ (४) मराठा–मंजिष्ठ

(५) अंग्रेजी–Indian maddar. (६) लेटिन–Rubia cardifolia, Linn.

नैसर्गिक वर्ग–Rublaceae.

वानस्पतिक वर्णन—यह एक वर्षायु सर्वदा हरित रहने वाली आरोहिणी लता जाति की वनस्पति है।

मूल—लम्बी, रक्तत्वकावरणयुक्त **पुष्प**–पत्रकोणाग्रो: ूत, छोटे, श्वेत, गुच्छदार

शाखा–लम्बी, विषम

फल–कृष्ण, मटर समान

पत्र–अभिमुख, अखण्डित, क।णयुक्त, सादे, चार चार एक साथ लगते हैं।

प्राप्तिस्थान–यह भारत, ईरान, नेपाल और अफगानिस्तान में प्रायः सर्वत्र प्राप्त होती है।

उपयोगी अंग–काष्ठ, मूल

रस–मधुर तिक्त कषाय **वीर्य**–उष्ण **विपाक**–कटु

गुण—त्वच्य, वर्ण्य, रक्तशोधक **दोषशमन**–वातकफ

श० स० प्रभाव–आन्त्रा, मस्तिष्क और रक्तधातु

योग—
मंजिष्ठादिक्वाथ (रक्तविकार)

रोगोपयोग–त्वग्रोग, **रक्तातिसार**, प्रमेह, विसर्प, **शोथ**, **योनिरोग**.

मात्रा–मूल चूर्ण–१ से ४ माशा

अनुपान–मधु

विशेष–(१) केपटाद्वंत के निवासी इसके मूल या पत्र का जलपार्श्व (Pleurisy) या वक्षान्तं शोथ में काम में लाते हैं।

(२) इसमें Glucocide Munjistin नामक रसाय।नक तत्व प्राप्त होते हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चित्र संख्या १४६

मंजीठ

RUBIA CARDIFOLIA, LINN.

(Rubiaceae.)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

महुआ

नाम **चित्र संख्या—१४७**

(१) संस्कृत—मधूक (२) हिन्दी—महुआ

(३) गुजराती—महुडो (४) मराठी—मोहड़ा

(५) अंग्रेजी—Mohva tree. (६) लेटिन—Bassia latifolia, Roxb.

नैसर्गिक वर्ग—Sapotaceae.

वानस्पतिक वर्णन—यह विशाल ऊंची वृक्ष जाति की वनस्पति है।

मूल—मोटी लम्बी पृथ्वी में गहरी उतरी हुई।

पुष्प—पीताभश्वेत, मांसल, ठोस मादक गन्धयुक्त, पत्रकोणोद्भूत

तना—विषमभग्न त्वक् रक्तवर्णयुक्त

फल—पीतवर्ण; लम्बगोल, बेरकेसमान

शाखा—रक्ताभ कपिश भंगुर सीधी

बीज—एक इंच लम्बे, आधा इंच चौडे दो या तीन बीज युक्त

पत्र—सादे, अखण्ड, उपपत्र रहित, तीन से छः इंच लम्बे

प्राप्तिस्थान—यह भारत में प्रायः सर्वत्र प्राप्त होता है।

उपयोगी अंग—मूल

रस—मधुर **वीर्य**—शीत **विपाक**—मधुर

गुण—गुरु, बृहर्ण, वीर्यवर्धक **दोषशमन**—वातपित

श. स. प्रभाव—वातसंस्थान

रोगोपयोग—रक्तपित, रक्तविकार, स्नायविक पीड़ा, वातशूल, पामा,

मात्रा—मूलचूर्ण-२ से ४ माशा **अनुपान**—शहद

विशेष-(१) इसके पुष्पों में ६०% शर्करा प्राप्त हाती है जो Glucose. से गुणधर्म में सान्निध्य रखती है।

(२) इसके बीज का तैल शीघ्र ही दूषित हो जाता है। अतः हमेशा नवीन तैल ही प्रयोग में लेना चाहिए।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

महुआ

चित्र संख्या १४७

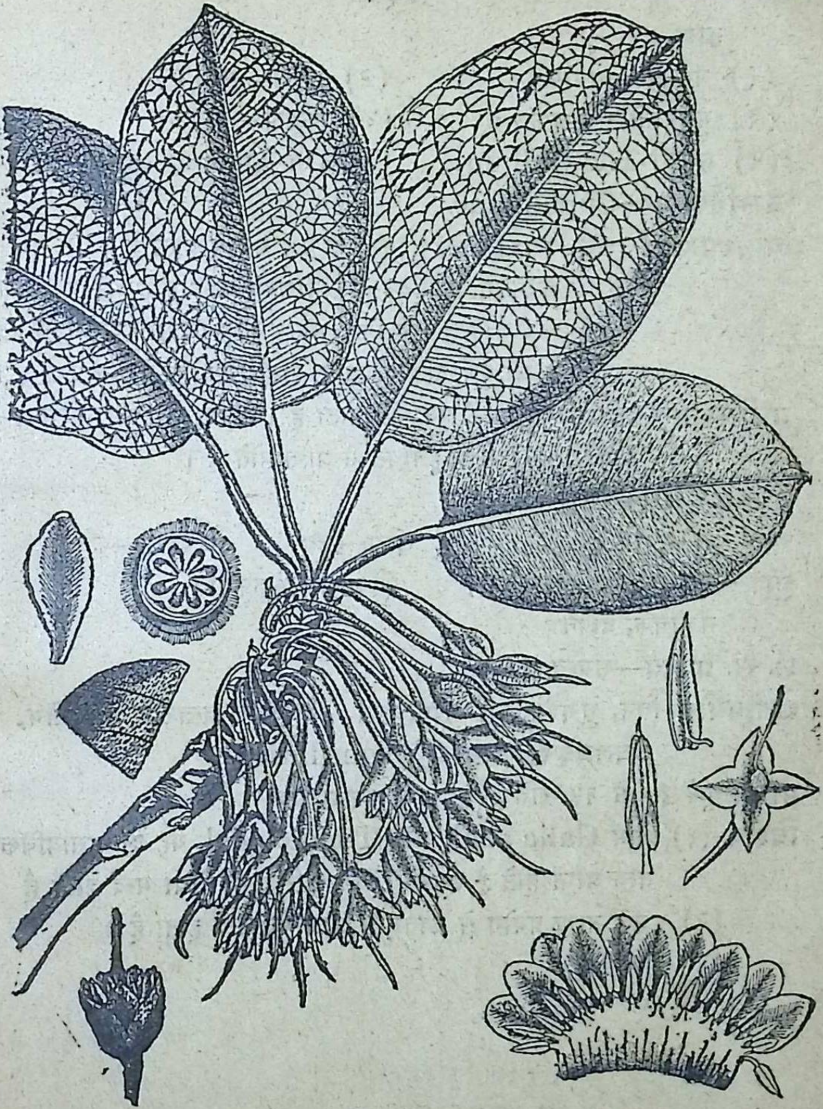

BASSIA LATIFOLIA, ROXB.
(Sapotaceae.)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

मायफल

नाम

(१) संस्कृत—मायाफल (२) हिन्दी— माजूफल

(३) गुजराती—माजुफल (४) मराठी—मायफल

(५) अंग्रेजी-The Gall nut. (६)लेटिन-Quercus infectoria, Oliv.

नैसर्गिक वर्ग-Cupuliferae.

वानस्पातक वर्णन-इसका आकार 'सुरु' के वृक्ष समान होता है। इस वृक्ष के फलों को छेदन कर नीलवर्ण वाले कीट भीतर प्रवेश कर जते हैं। ये फिर भीतर का मग्ज साफ कर बच्चे देते हैं जो पूर्ण वृद्धि को प्राप्त होने पर बाहर निकल आते हैं।

प्राप्तिस्थान—यह भारत में उत्पन्न नहीं होता है। ईरान, सीरिया, एशिया (Minor.) में वहुतायत से प्राप्त होते हैं।

उपयोगी अंग—फल

रस—अतिकषाय **वीर्य**—उष्ण **विपाक**—कटु

गुण—स्तम्भक, शोणितास्थापन, संकोचक, दीपन **दोषशमन**-कफवात

श. स. प्रभाव—समस्त शरीर

रोगोपयोग-विष, पूयमेह, तन्तुमेह, व्रण, जीर्णज्वर, दन्तरोग, योनिरोग, श्वेतप्रदर, गलशुण्डी (Tonsillitis.)

मात्रा-चूर्ण १० से १५ रति **अनुपान**-जल

विशेष-(१) इसमें Galic acid, और Tannic acid. यह दो-रसायनिक तत्व प्राप्त होते हैं इसमें 'टेनिक एसिड'की क्रिया मन्द होती है

(२) इसके बाह्य प्रयोग से रक्तस्राव और पूय बन्द होता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

मुलेठी

नाम

(१) संस्कृत–मधुक (२) हिन्दी–मुलेठी
(३) गुजराती–जेठीमध (४) मराठी–जेठीमघ
(५) अंग्रेजी–Liqourice. (६) लेटिन–Glycyrrhiza Glabra, Linn.

नैसर्गिक वर्ग–Leguminoseae,

वानस्पतिक वर्णन–यह क्षुप जाति की वनस्पति है।

मूल–लम्बगोल, पीतवर्णयुक्त खर

पुष्प–रक्तवर्णयुक्त

तना–साधारण, गोल

फली–छोटी और वारीक

शाखा–किंचित् चतुष्कोणीय

पत्र–छोटे गोल संकीर्ण

प्राप्तिस्थान–यह अफगानिस्तान, ईरान और गिलगिटमें बहुतायसे प्राप्त होती है।

उपयोगी अंग–मूल काष्ठ

रस–मधुर **वीर्य**–शीत **विपाक**–मधुर

गुण–शुक्ल, सर, चक्षुष्य स्वर्य. **दोषशमन**—वातपित, कफनिष्कारक

श. स. प्रभाव—फुप्फुस, आन्त्रा.

योग–
मधुकादिघृत, (कास)
मधुकतैल (गलशोथ)

रोगोपयोग–मुत्रदाह, व्रणरोपणार्थ, कास, तृष्णा, प्रतिश्याव रक्तपित्त, **गलशोथ**

मात्रा—चूर्ण-१ से ४ माशा **अनुपान**—जल

विशेष-(१) श्री० हॉटसन मतानुसार यह गले के व्रण के लिये उपयोगी है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

मूसली-सफेद

नाम **चित्र संख्या—१४९**

(१) संस्कृत—श्वेतमुसली (२) हिन्दी—मूसली सफेद

(३) गुजराती—घोळीमुसली (४) मराठी—

(५) लेटिन-Asparagus adscendeus, Linn.

नैसर्गिक वर्ग-Liliaceae.

वानस्पतिक वर्णन-यह कांटेदार गुलम जाति की वनस्पति है।

मूल—श्वेत कंटकयुक्त **पुष्प**—छोटे पीताभश्वेत

तना-गोल श्वेताभहरित **फल**—छोटे दानेदार

शाखा—श्वेताभकपिश

पत्र—घने, एकान्तर

प्राप्तिस्थान-यह पश्चिमी हिमालय और पंजाब से कुमायुं में ५, ३०० फुटतक और अफगानिस्तान में प्राय: सर्वत्र प्राप्त होती है।

उपयोगी अंग—मूल

रस—मधुर **वीर्य**—शीत **विपाक**—मधुर

गुण—उत्कृष्ठ बल्य **दोषशमन**— पित

श. स. प्रभाव—समस्त शरीर

योग— **रोगोपयोग**—मधुमेह, अतिसार, प्रवाहिका, सर्वांगिक दौर्बल्य.

मूसली पाक (दौर्बल्य)

मात्रा—चूर्ण—३ से ६ माशा

विशेष—यूनानी वैद्य इसका शुक्र धातु क्षय में विशेषकर उपयोग में लाते हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

मूसली-सफेद चित्रसंख्या १४९

ASPARAGUS ADSCENDEUS, LINN. (Liliaceae.)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

मैनफल

नाम **चि संख्या— १५०**

(१) संस्कृत–मदन (२) हिन्दी—मैनफल

(३) गुजराती—मींढप (४) मराठी–गेलफल

(५) अंग्रेजी—Emetic nut. (६) लेटिन-Randia dumetorum; Lamk.

नैसर्गिक वर्ग—Rubiaceae.

वानस्पतिक वर्णन--यह कंटकयुक्त गुल्म जाति की वनस्पति है।

मूल–तान्त्वी

पुष्प—हरीत, पीत या श्वेत

तना—श्लक्ष्ण

फल-पीले या भूरे, गोल अखरोट के आकार युक्त

शाखा—तीक्ष्ण कांटेदार

पत्र-हरित अपामार्ग के पत्रों के समान

प्राप्तिस्थान—भारतवर्ष के पहाडी प्रान्तों में प्राय: सर्वत्र प्राप्त होती है।

उपयोगी अंग—मूल काष्ठ

रस—कटु तिक्त **वीर्य**—उष्ण **विपाक**—कटु

गुण—वामक, पक्वाशय, आमाशय शोधक

दोषशमन–कफपित

श. स. प्रभाव-आमाशय

व्याधि-वमन कराने के लिये; त्वचा रोगों में गुल्म, प्रवाहिका, **उदरशूल**

मात्रा–चूर्ण-१० से २० रति

विशेष-(१) इस वनस्पति, आकार प्रकार, रुप और रंग जलआयु के अनुसार परिवर्तित होती रहती है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चित्र संख्या १५०

मैनफल

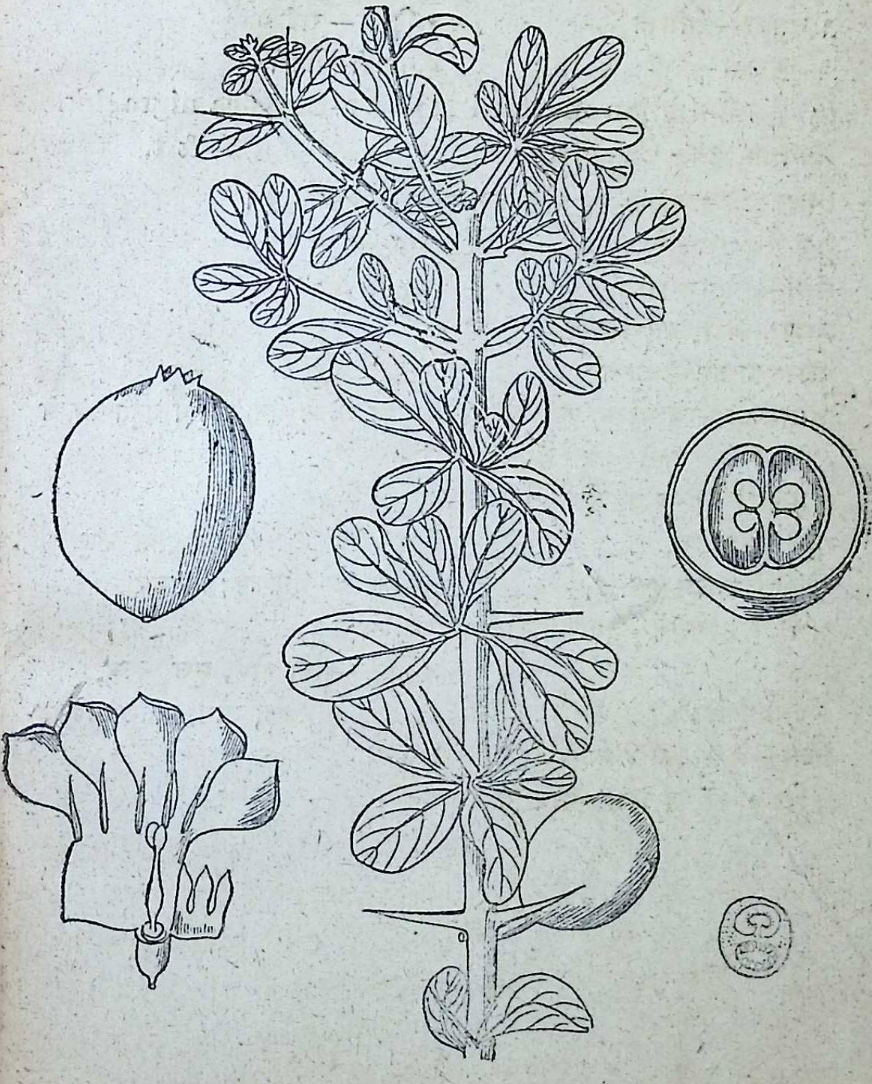

RANDIA DUMETORU M: I, F K.
(Rubiaceae.)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

राई

नाम **चित्र संख्या १५१**

१ संस्कृत—राजिका २ हिन्दी—राई

३ गुजराती—राई ४ मराठी—मोहरी

(५) अंग्रजी-Indian mustard (६) लेटिन-Brassica nigra, hk. F. & t.

नैसर्गिक वर्ग- Cruciferae

वानस्पतिक वर्णन-यह २ से ४ फुट ऊंची वनस्पति है।

मूल-रेशेदार **पुष्प**—पीतवर्ण

तना—श्वेताभ हरित **फल**-छोटे

शाखा-छोटी, चतुष्काणीय,

पत्र-एकान्तर साधारण

प्राप्तिस्थान-यह भारत, पूर्वी एशिया, अफ्रीका, दक्षिण अमेरिका में बहुतायत से प्राप्त होती है।

उपयोगी अंग-बीज, तैल

रस—कटु तिक्त **वीर्य**—उष्ण **विपाक**-कटु

गुण-तीक्ष्ण, दाहकर **दोषशमन**—वातकफ; पितकर

श. स. प्रभाव— समस्त शरीर प्रधानतः त्वचा

योग- **व्याधि**-प्लीहा रोग, शूल, गुल्म, क्रमिव्रण, शोथ, प्रतिश्यायक

राजिद्रादिलेप

मात्रा—चूर्ण-२ से ४ माशा

विशेष-(१) यह विशेष मात्रा में वामक है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

राई चित्र संख्या १५१

BRASSICA NIGRA, HK. F &. T.
(Cruciferae.)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

रास्ना

नाम **चित्र संख्या-१५२**

(१) संस्कृत—रास्ना (२) हिन्दी—रास्ना

(३) गुजराती—रासनो (४) मराठी—रासना

(५) अंग्रेजी—**Indian groundsel** (६) लेटिन—**Pluchea Lanceolata, C. B. C.**

नैसर्गिक वर्ग—**Compositae.**

वानस्पतिक वर्णन—भारत में पैदा होनेवाली रास्ना के क्षुप ६ से ७ फुट ऊंचे होते है।

मूल—बहुवर्षायु मोटी **पुंष्प**—पीताभश्वेत

तना—गोल **फल**—छोटे

पत्र—वेलची के समान शाखा परिवेष्टित

प्राप्तिस्थान—यह पंजाब सिन्ध, और अफगानिस्तान में सर्वत्र प्राप्त होती है।

उपयोगी अंग—पत्र

रस—तिक्त **वीर्य**—उष्ण **विपाक**—कटु

गुण—आमपाचन, वातशामक **दोषशमन**—वातकफ

श. स. प्रभाव—वातसंस्थान

योग— **व्याधि**—आमवात, शोथ, ज्वर वातरक्त, वातरोग

रास्नासप्तक क्वाथ (वातरोग)

मात्रा—चूर्ण २ से ४ माशा **अनुपान**—जल

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

रास्ना चित्र संख्या १५२

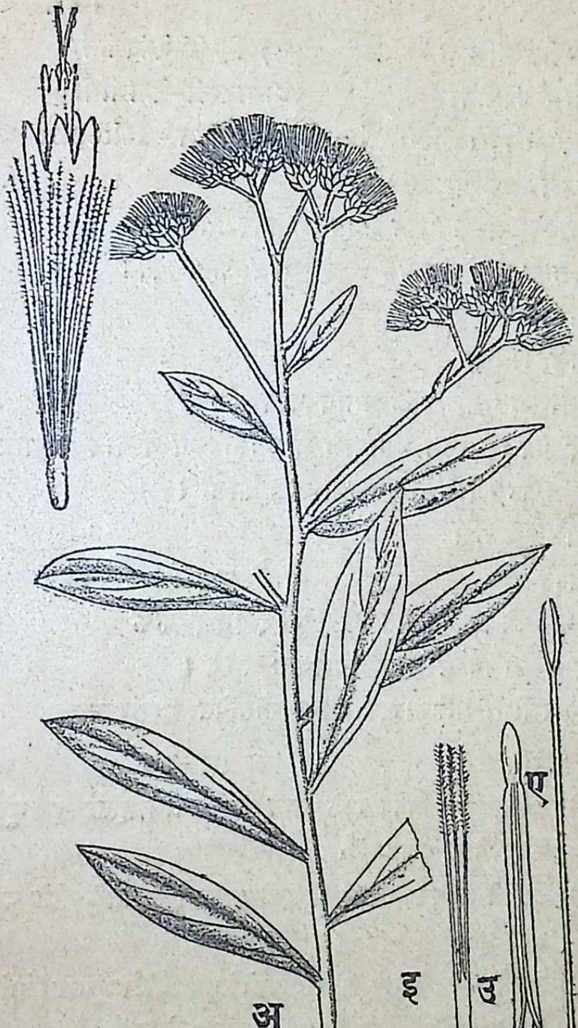

PLUCHEA LANCEOLATA, C. B C (Compositae.)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

रेवंदचीनी

नाम चित्रसंख्या १५३

(१) संस्कृत–पीत मूलिका (२) हिन्दी–रेवंदचीनी

(३) गुजराती–रेवंदचीनी (४) मराठी–रेवांचीनी

(५) अंग्रेजी-Indian rheumbarb (६) लेटिन- Rheum emodi, Wall.

नैसर्गिक वर्ग-Polygonaceae.

वानस्पतिक वर्णन-यह क्षुप जाति की वनस्पति है ।

मूल—अदरक के समान कन्द **पुष्प**–पीताभश्वेत

तना—मध्यमाकारी

शाखा- कोमल, स्निग्ध

पत्र-रक्त, मांसल मुचकुन्द के समान रक्तवर्णयुक्त

प्राप्तिस्थान-यह हिमालय में नेपाल और सिक्किम में चार से बारह हजार फुट की उंचाई तक प्राप्त होती है ।

उपयोगी अंग- मूल ।

रस- कटु तिक्त **वीर्य**–कटु **विपाक**–कटु

गुण–बल्य, मृदुविरेचक,यकृतोतेजक **दोषशमन**–कफ

श. स. प्रभाव-पाचन संस्थान, विशेषतः आन्त्र ।

रोगोपयोग–अजीर्ण, अतिसार, मंदाग्नि शीतपित, **वातरक्त**

मात्रा–१ से ५ रति **अनुपान**–जल

विशेष-(१) इसका मूल अदरक के कन्प के समान होता है मूल त्वचा रेवंदचीनी कहते हैं ।

(२) इसको अधिक मात्रा में प्रयोग करने से पतले पीले वर्ण के दस्त आते हैं ।

(३) इसमें विरेचक Glucoside, Rhaponticin और Chrysophanic acid. प्राप्त होता है ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

रेवन्दचीनी

चित्र संख्या १५३

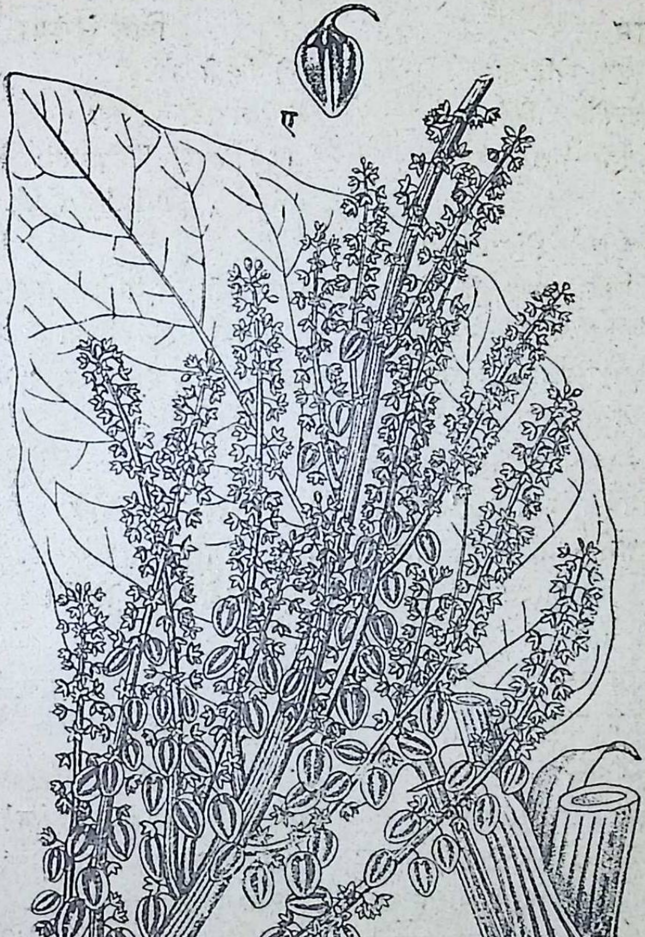

RHEUM EMODI, WALL. (Polygonaceae)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

रोहिड़ा

नाम **चित्र संख्या–१५४**

(१) संस्कृत–रोहितक (२) हिन्दी–रोहेड़ा
(५) गुजराती–रोहिडो (४) मराठी–रोहिड़ा
(५) अंग्रेजी–Rohitka. (६) लेटिन–Tecoma Undulata, G. Don.

नैसर्गिक वर्ग–Bignoniaceae.

वानस्पतिक वर्णन–यह दस से पन्द्रह फीट ऊंची वृक्ष जातिकी वनस्पति है।

मूल–पृथ्वी में गहरे उतरे हुए

तना—वाह्यत्वक्खर, अन्तर्त्वक् हरिताभपीत

शाखा—रक्तपीताभ रक्तवर्णयुक्त

पत्र–अभिमुख, ३ से ६ इंच लम्बे, १/२ से १–१/४ इंच चौड़े

पुष्प-केशरी वर्णयुक्त शाखा काणाग्रोद्भूति

फल–६ से ८ इंच लम्बे, १/४ चौड़े, बहुबीजी

प्राप्तिस्थान—यह पंजाब, वजरीस्तान, बिलोचिस्तान, राजस्थान, सिन्ध, काठियावाड, गुजरात में बहुतायत से प्राप्त होते हैं।

उपयोगीअँग—त्वक्

रस–कषाय कटु **वीर्य**–शीत **विपाक**–कटु

गुण–सारक, रक्तशोधक, स्निग्ध **दोषशमन**–कफपित

श. स. प्रभाव—यकृत पिल्हा

योग–
रोहितकधृत (उदररोग)

रोगोपयोग–यकृत पिल्हा रोग और उदररोग, कामला, पाण्डु, प्रदर

मात्रा–चूर्ण–१॥ से ३ माशा आथ– १/२ से १ तोला

विशेष—(१) श्री कर्नलचोपरा के मतानुसार इसकीं काण्डत्वक् उपदंश में लाभकारी हैं।

(२) इसके काण्ड त्वक् चूर्णसे 'चाय' बनाई जाती है जिसका प्रयोग व्याधिजनित दुर्बलता में किया जाता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

रोहिडा चित्र संख्या १५४

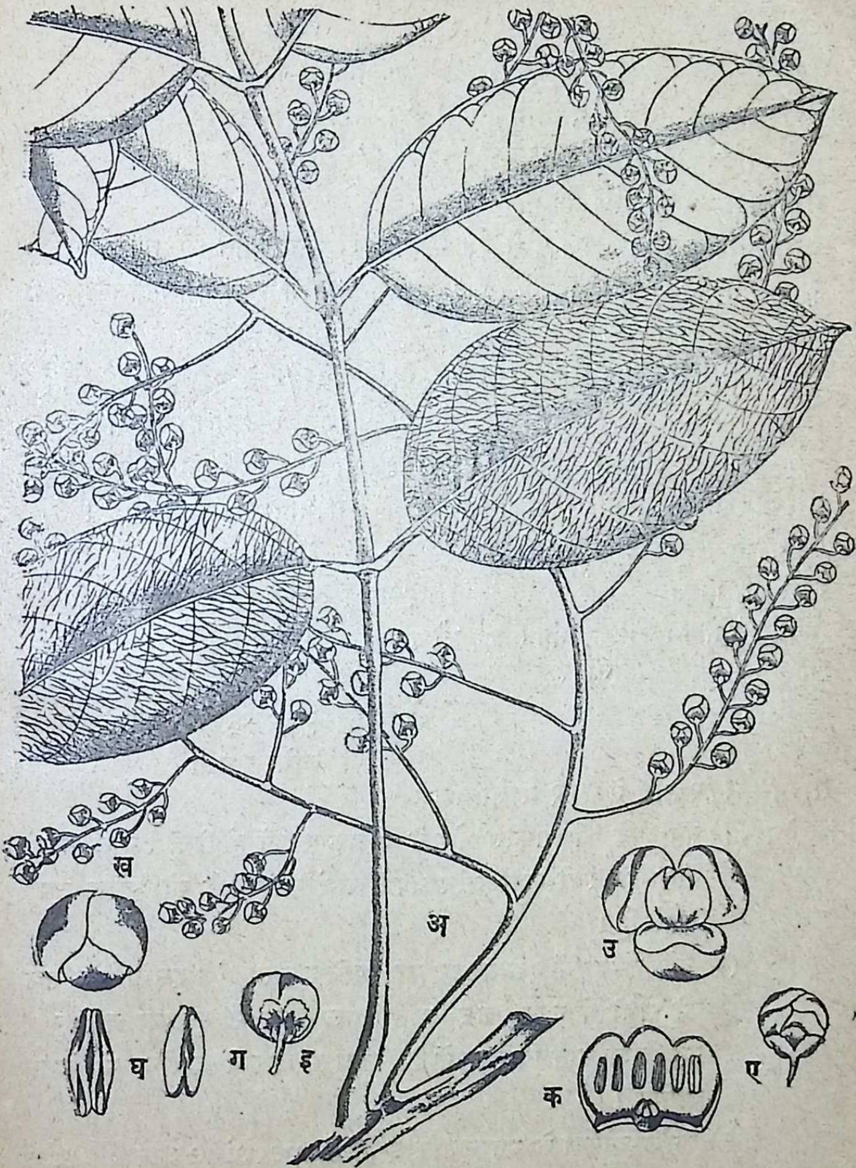

TECOMA UNDULAFTA, G. DOM. (Bignoniaceae)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

लांगली

नाम **चित्र संख्या–१५५**

(१) संस्कृत–लांगली, कलिहारी (२) हिन्दी–कलिहारी
(३) गुजराती–दूधियो वछनाग (४) मराठी–कण्ठलावी
(५) लेटिन–Gloriosa Superba, Linn.

नैसर्गिक वर्ग–Liliaceae.

वानस्पतिक वर्णन–यह ५ से १० फीट लम्बी लता जाति की वनस्पति है।

मूल–रसयुक्त, चपटाई लियेहुएगोल कन्दाकारी **पुष्प**–पीताभ रक्त वर्णयुक्त पांच छः अंगुल लम्वें

तना—पेंसील समान माटी, श्लक्ष्ण **फल**–१–१/२ से २ इंच लम्बे त्रिकोणिय, एक में दो दो बीज युक्त

पत्र–एकान्तर क्वचित अभिमुख, पत्रनाडी समान्तर, बरछी के आकार युक्त

प्राप्तिस्थान–यह भारत, लंका और मलाया में प्रायः सर्वत्र होता है।

उपयोगीअंग–कन्द

रस–कटु तिक्त **वीर्य**–उष्ण **विपाक**–कटु

गुण–लघु, तीक्ष्ण, सारक, गर्भपातक **दोषशमन**–कफवात

श. स. प्रभाव–महास्रोतस्

रोगोपयोग–कुष्ठ ण, शोथ, वस्तिशूल अर्श कृमि, कमला

मात्रा—१/२ रति से १/२ माशा तक

विशेष–(१) यह कन्द की आकृति भेद से दो प्रकार की होती है। गोल कन्द वाले को 'स्त्री क्षुप' और चपटे लम्बे कन्द वाले को 'पुरुष क्षुप' कहते हैं।

(२) शोधन–इसमें एक प्रकार का उपविष होता है। इसके पत्र तक्र को रात्री में गला कर प्रातः काल छाया में सुखाना चाहिए। यह क्रिया सात दिन करनें के पश्चात इसको प्रयोग में लेना चाहिए।

(३) कर्नल चोपरा के मतानुसार इसमें Superbine और Gloriosine नामक उपक्षार होते हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चित्र संख्या १५५

लांगली

GLORIOSA, SUPERBA, LINN.

(Liliaceae.)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

लज्जालु

नाम **चित्र संख्या–१५६**

(१) संस्कृत–लज्जालु (२) हिन्दी–छुईमुई

(३) गुजराती–रीसामणी (४) मराठी–लाजरी

(५) अंग्रेजी–Sensative plant. (६) लेटिन–Mimosa pudica, Linn.

नैसर्गिक वर्ग—Mimosaceae.

वानस्पतिक वर्णन–यह क्षुप जाति की वनस्पति है।

मूल—रक्तवर्णयुक्त १/२ से १ फुट लम्बे पृथ्वी में गहरे उतरे हुए **पुष्प**–नीले गुलाबीया मिश्रित

शाखा–कांटेदार; मूल से निकलती है, १ से २ फीट लम्बी

पत्र–छूने से कुंचित हो चाते हैं; पत्र खैर के समान;

प्राप्तिस्थान—यह भारत में प्रायः सर्वत्र प्राप्त होती है।

उपयोगी अंग—पंचाग

रस–तिक्त कषाय **वीर्य**—शीत **विपाक**–कटु

गुण—संधानीय; पुरीषसंग्रहणीय **दोषशमन**–कफपित

श. स. प्रभाव—प्रजनन अवयव

रोगोपयोग—अतिसार, रक्तपित, कामला योनिरोग, सिक्तामेह अर्श,

मात्रा–चूर्ण–२ से ४ माशा **अनुपान**–जल

विशेष–(१) यह कंटकयुक्त और कंटकरहित भेद से दो प्रकार की होती है। एक केवल छूनेसे मुरझा जाती है और दूसरी परछाई से मुरझा जाती है।

(२) इसमें रक्तसंग्राहक गुण सर्वोत्तम है।

(३) ब्राजिल में इसको वमनार्थ प्रयोग करते हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

लज्जालु

चित्र संख्या. १५६

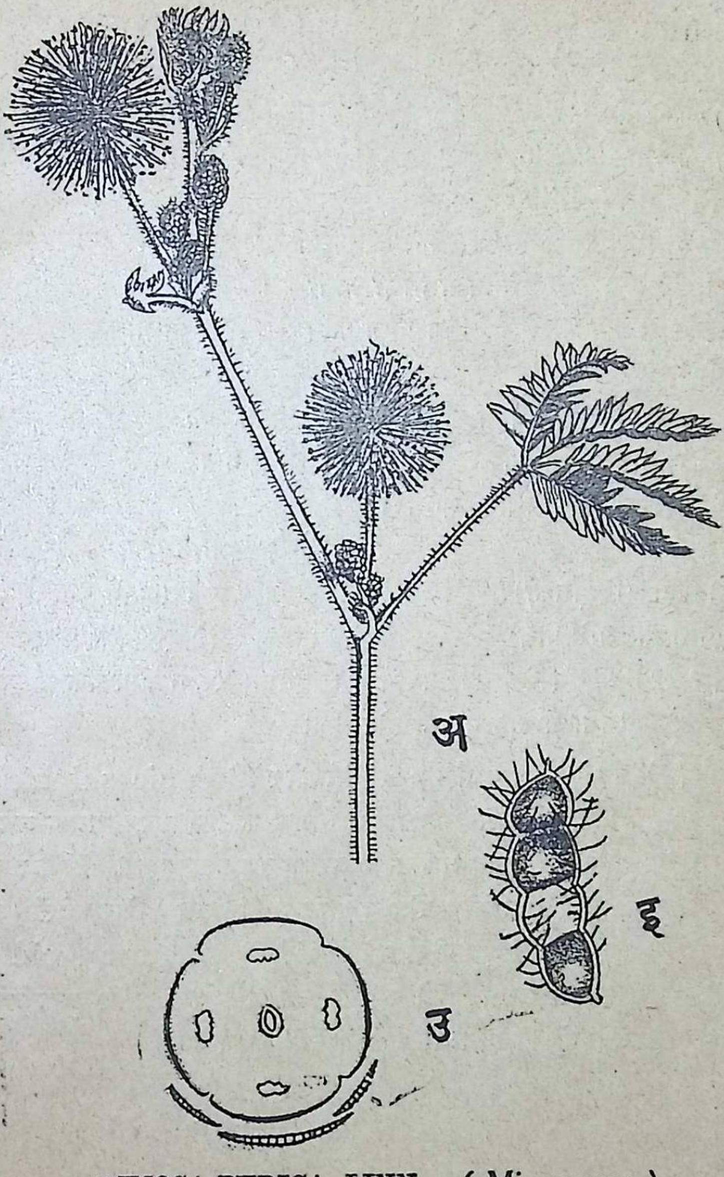

MIMOSA PUDICA, LINN. (Mimosaceae.)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

लहसुन

नाम **चित्र संख्या—१५७**

(१) संस्कृत— लशुन रस (२) हिन्दी—लहसुन

(३) गुजराती—लसण (४) मराठी—लसून

(५) अंग्रेजी–Garlic. (६) लेटिन–Alliun Sativum, Linn.

नैसर्गिक वर्ग—Liliaceae.

वानस्पतिक वर्णन–यह एक प्रसिद्ध वनस्पति है इसका कन्द प्याज के समान जमीन में सिधा जाता है।

प्राप्तिस्थान-यह भारत में सर्वत्र प्राप्त होती है और बहुत प्रसिद्ध है।

उपयोगी अंग—कन्द

रस—अम्लातिरिक्त सर्वरस **वीर्य**—फलः उष्ण, **विपाक**-मधुर

गुण-सर, पाचन, रसायन **दोषशमन**-वात

श. स. प्रभाव-वातसंस्थान, सर्वशरीर

योग—

रसोनवटी (विसूचिका)

लशुनाद्यघृत (अग्निमाद्य)

रोगोपयोग-अग्निमाद्य, अजीर्ण, उदराध्मान वातरोग, विसूचिका, पक्षाघात

विशेष-(१) लहसुन के बाह्य प्रयाग में सावधानी रखना आवश्यक है इससे त्वचा में दाह उत्पन्न होता है।

(२) इसमें उत्पन्न तैल ० २५% और Organic sulphides होता है। इसके उडनशील तेल में कीटाणु नाशक प्रबल क्षमता होती है। यह क्षय आदि प्राणघातक किटाणु को निष्क्रिय कर देता है। प्रांणी शरीर में इस तैलकी विचित्र क्रिया होती है। यह प्राणवायु (ओषजन) के संयोग sulphuric Acid का उत्पति करता है जो फुफ्फुस, त्वचा, यकृत और वृक्क आदि अवयवों की क्रियाओं का नियमन करता है

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चित्रसंख्या १५८

लहसून

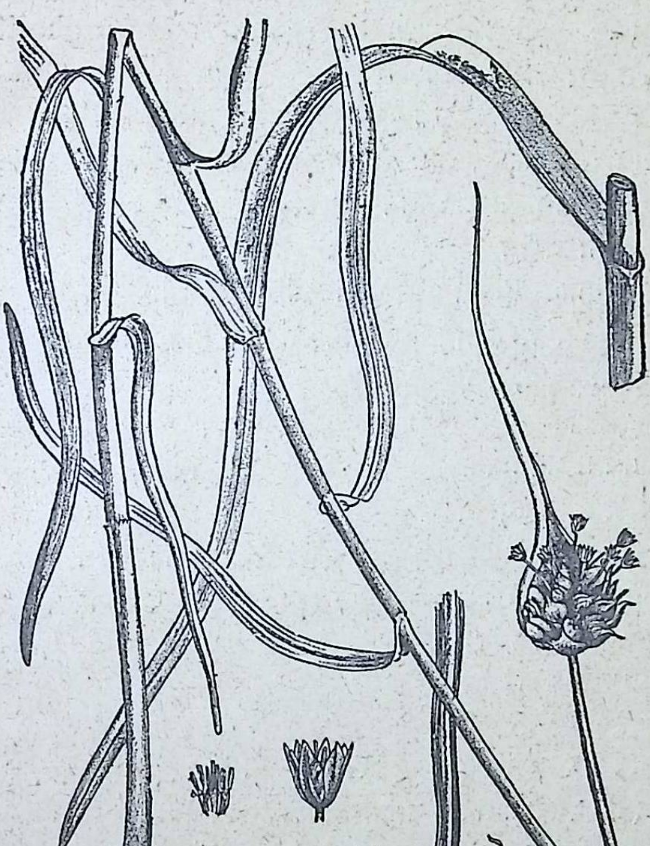

ALLIUN SATIVUM, LINN.
(Liliaceae.)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

लौंग

नाम

(१ संस्कृत—लवंग (२) हिन्दी—लौंग
(३) गुजराती—लवींग (४) मराठा—लवंग
(५) अंग्रेजी—Clove tree. (६) लेटिन-Caryophyllus aromaticus, Linn.

नैसर्गिक वर्ग—Myrtaceae.

वानस्पतिक वर्णन—इसके वृक्ष सुन्दर और सुगन्धित होते हैं।

मूल-साधारण **पुष्प**—पत्राकोणोद्भूत

तना-गोल श्लक्षण, पाण्डुता लिये हुए **फल**-शुष्क

शाखा-साधारणगोल,

पत्र—सुगन्धित, अभिमुख, अखण्ड, तैल ग्रंथि युक्त सादे

प्राप्तिस्थान-यह जञ्जीबार में बहुतायत से प्राप्त होते हैं।

उपयोगीअंग-पुष्प, तैल

रस-कटु, तिक्त **वीर्य**- उष्ण **विपाक**-मधुर

गुण—पाचन, अनुलोमन **दोषशमन**-त्रिदोष

श. स. प्रभाव-महास्रोतस्

योग— **रोगोपयोग**-उदरशूल, आध्मान, कास, हिक्का, दन्तशूल

लवंगादिवटी (कास)
देवकुसुमादिवटी(फिरंग)
लवंगातैल (कृमिघ्न)

मात्रा—चूर्ण १ से २ रत्ति

विशेष-(१) इसमें उत्पत तैल और Eugenol नामक तत्व प्राप्त होते हैं।

(२) इसके प्रधानतः आठ गुण माने जाते हैं—
पाचन, कृमिघ्न, रक्तके श्वेतकणों की वृद्धि, चेतनाशक्ति की वृद्धि करना, नाडियोंके संकोच विकास जन्य पीडा शमन, दौर्गन्ध्य नाशक, मूत्रल और बाह्य प्रयोग से वेदनाशमन व्रण रोपण शोधन।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

लोबान

नाम

(१) संस्कृत–ऊद (२) हिन्दी–लोबान
(३) गुजराती–लोबान (४) मराठी–लोबान
(५) अंग्रेजी–Gum benzoin. (६) लेटिन–Gum benzoin, Dryand.

नैसर्गिक वर्ग–Styraceae.

वानस्पतिक वर्णन—यह एक प्रकार के वृक्ष का निर्यास होता है।

प्राप्तिस्थान-यह श्याम और सुमात्रा द्वीपों में बहुतायत से प्राप्त होता है। इसमें श्यामका लोबान उत्तम होता है।

उपयोगी अंग–निर्यास

रस- कटु **वीर्य**-उष्ण **विपाक**–कटु

गुण—वृणशोधक, मूत्रल, उत्तेजक **दोषशमन**–कफ

श. स. प्रभाव–फुफ्फुस

योग—
टिंचर बेन्झोइन (व्रण)

रोगोपयोग-जीर्णकास, वस्तिशोथ, पूयमेह, प्रतिश्याय, शिरःशूल, **आमवात**

मात्रा–३ से ८ रति **अनुपान**-मुलेठीचूर्ण

विशेष-(१) इसमें Acid Benzoin और Cinnamic Acid होता है।

(२) आमवात में सतलोबान (Acid Benzoin) को सज्जिक्षार के साथ में १५ रति तक के प्रयोग से Saliysalic Acid के समान क्रिया करता है।

(३) लोबान के आयुर्वेदिक ग्रंथों में वर्णन प्राप्त नहीं होते है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

वायविडंग

नाम **चित्र संख्या-१५९**

(१) संस्कृत—विडंग (२) हिन्दी—वायविडंग
(३) गुजराती—बविडाग (४) मराठी—वावडिंग
(५) अंग्रेजी—Eurbolia. (६) लेटिन—Embelia Ribes. Burm.

नैसर्गिक वर्ग—Myrsinaceae.

वानस्पतिक वर्णन—यह बडे गुल्म जाति की वनस्पति है।

मूल-साधारण सूत्र युक्त

तना—कोमल, गोल, हरिताभ श्वेत

शाखा—गाँठदार खुरदरी

पत्र-गोल, अण्डाकृति, एकांतर

पुष्प—सफेद

फल-गुच्छेदार, स्वाद में कषाय और कड़ुवा कालीमिर्चके समान होता है। एक में दो दो बीज होते हैं।

प्राप्तिस्थान—यह भारत, लका, मलाया और दक्षिणी चीन में बहुतायत से प्राप्त होता है।

उपयोगी अंग—बीज

रस—कटु **वीर्य**- उष्ण **विपाक**-कटु

गुण—लघु, दीपन, अनुलोमन **दोषशमन**-वातकफ

श. स. प्रभाव-आन्त्र

योग-
विडंगारिष्ट (कृमि)
विडंगादिक्षार (कृमि)
विडंगावलेह (अग्निमाद्य, कृमि)

रोगोपयोग-उदरकृमि, आध्मान, अग्निमांद्य,विबंध, त्वग्रोग.

मात्रा-चूर्ण-२ माशा से ४ माशा तक

विशेष-(१) इसमें Embelic acid नामक तत्व होता है।

(२) प्राचीन ग्रंथों में इसको उत्कृष्ठ कृमि नाशक वर्णन प्राप्त होता है। महर्शि सुश्रुतने 'सर्वोपघान शमनीय' योग में इसको मानसिक दोष से दोषजन्य उपद्रवों के निवारणार्थ लाभकारी माना है।

(३) डायमॉकने इसको Tapeworm के नाश करने में उत्कृष्ट माना है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

वायविडंग चित्र संख्या १५९

EMBELIA RIBES, BURM. (Myrsinaceae.)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

लोध

नाम **चित्र सख्या—१६०**

(१) संस्कृत—लोध्र (२) हिन्दी–लोध
(३) गुजराती—लोधर (४) मराठी—लोघ्र
(५) अंग्रेजी–Lodh tree (६) लेटिन–Symplocos racemosa (Roxb.)

नैसर्गिक वर्ग—Styraceae.

वानस्पतिक वर्णन—यह सर्वदा हरित रहनेवाली वृक्ष जाति की वनस्पति है।

मूल–साधारण, पृथ्वीमें गहरी उतरी हुई
पुष्प–पीताभश्वेत सुगन्धित
तना—त्वचा गेरुएवर्ण की भंगुर
फल—आधा इंच लम्बा अण्डाकार कठोर बीजयुक्त
शाखा–साधारणगोल, खर
पत्र—अण्डाकृति, कंगूरेदार, लम्बगोल

प्राप्तिस्थान—यह बंगाल और आसाम में बहुतायत से प्राप्त होता है।

उपयोगी अंग—त्वक्

रस–कषाय **वीर्य**—शीत **विपाक**—कटु

गुण–लघु, ग्राही, चक्षुष्य, **दोषशमन**—कफपित

श. स. प्रभाव—प्रजनन संस्थान

रोगोपयोग–रक्तविकार, रक्तपित,ज्वर अतिसार, **श्वेतप्रदर, अत्यत्यार्तव**-

लोध्रासव (श्वेतप्रदर) **मात्रा**—१० से २० रति (चूर्ण)

विशेष-(१) इसकी छाल और पतों से रंग निकाला जाता है।
(२) इसमें Loturine, colloturine और Loturidine उपक्षार होते हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

लताकस्तुरी

नाम

(१) संस्कृत–लताकस्तुरी (२) हिन्दी–कस्तुरीदाना, मुश्कदाना

(३) गुजराती–लताकस्तुरी (४) मराठी–कस्तूरभेंड

(५) लेटिन–Hibiscus abelmoschus, Linn.

नैसर्गिक वर्ग–Malvaceae.

वानस्पतिक वर्णन–यह लगभग एक गज ऊंची क्षुप जाति की वनस्पति है

मूल–मूत्र बहुसूत्रा **पुष्प**–पीतवर्णयुक्त

शाखा–कोमल रोमश **फल**–भिण्डी समान लगभग चार अंगुल लम्बे

पत्र–भिण्डा के पत्रों समान **बीज**–कृष्णवर्णयुक्त, इनमें कस्तुरी के समान सुगन्ध आती है।

प्राप्तिस्थान–यह भारत के उष्ण प्रधान प्रान्तों में बहुतायत से प्राप्त होता है।

उपयोगी अंग–बीज

रस–तिक्त मधुर **वीर्य**–शीत **विपाक**–मधुर

गुण–वृष्य, लघु, नैत्र्य, वाजीकरण, **दोषशमन**–कफ

श. स. प्रभाव–पाचन संस्थान

रोगोपयोग–वस्तिरोग, आन्त्ररोग, आक्षेप, मुखरोग, तृष्णा, अपस्मार अग्निमाद्य, स्वरभंग

मात्रा—२ से ४ माशा (चूर्ण) **अनुपान**–जल और शहद

विशेष–(१) अमेरिका में इस वनस्पति का सर्पविष निवारणार्थ आन्तरिक और बाह्य प्रयोग किया जाता है।

(२) इसमें एक प्रकार का "उत्पत तैल" प्राप्त होता है।

२१

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

लुनिया

नाम

(१) संस्कृत–लोणिका (२) हिन्दी–लुणिया

(३) गुजराती–लुणी (४) मराठी–घोल

(५) लेटिन–Portulaca oleracea, Linn.

नैसर्गिक वर्ग—Portulaceae.

वानस्पतिक वर्णन–यह छः से आठ इंच लम्बी प्रसारणि क्षुप जाति की वनस्पति है।

मूल—एक से दो इंच लम्बी सूत्रयुक्त **पुष्प**–पत्रकोणोद्भूत गुच्छदार, पीत वर्णयुक्त

शाखा–सूत्रवत् पतली, सन्धिस्थान से मूल निकालती है **फल**–श्लक्ष्ण. पहले हरा और बाद जामुनीवर्ण का होता

पत्र–अखण्ड, छोटे, मांसल, एकान्तर, १/४ से १–१/२ इंच लम्बें और १/६ से १/२ चौड़े **बीज**–१/८ लाइन जैसे सूक्ष्म, कृष्ण-वर्णयुक्त

प्राप्तिस्थान—यह भारत में प्रायः सर्वत्र होती है।

उपयोगी अंग—पंचाग

रस–मधुर; अनुरस लवण **वीर्य**—शीत **विपाक**–मधुर

गुण—गुरु, रुक्ष, विष्टम्भ, सर, पुरीषभेदक, ग्राही **दोषशमन**–कफ वातल; नातिपित्तला

श. स. प्रभाव—पचन संस्थान, त्वचा, वृक्क

रोगोपयोग—**मूत्रदाहाह, जीर्णज्वर**, विसर्प, शिरःशूल, त्वग्रोग, नैत्ररोग, **रक्तस्राव**

मात्रा–चूर्ण–२ से ४ माशा स्वरस–१ से ४ माशा **अनुपान**—जल; शहद

विशेष–(१) इसकी-बृहत और लघु. भेद से दो जातियां होती हैं।

(२) पूर्वी अफ्रीका के निवासी इसका क्वाथ को कृपिघ्न मानते हैं।

(३) इसमें एक प्रकार का लुबाव और Potassium oxolate तत्व प्राप्त हाते हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

शिलारस

नाम

(१) संस्कृत–शिलारस (२) हिन्दी–शिलारस

(३) गुजराती–शेलारस (४) मराठी–शिलारस

(५) लेटिन–Altingia Epccelsa, Linn.

नैसर्गिक वर्ग–Hamamelideae.

वानस्पतिक वर्णन–यह एक प्रकार के वृक्ष का सत्व होता है जो भारत में अरब से भारत में बहुत आता है। यह गाढा, भूरेवर्ण का कोमल और स्निग्ध होता है।

प्राप्तिस्थान–ये इसके वृक्ष आसाम, भूटान और पेग् में सर्वत्र प्राप्त हाता है।

उपयोगी अंग–घनसत्व

रस–कटु तिक्त **वीर्य**–कटु **विपाक**—कटु

गुण–सुगन्धित, स्निग्ध, कफनिसारक **दोषशमन**–कफपित

श. स. प्रभाव-त्वचः

रोगोपयोग—कण्डु, मूत्रावात, दाह या त्वग्रोग

विशेष—(१) शोधन–इसको Rectified Spirit में घुलाकर छान लें और खुला छोड दे जिससे स्पिरिट उड जायगा।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

शतावरी

नाम **चित्र संख्या—१६०**

(१) संस्कृत—शतमूली (२) हिन्दी—शतावरी
(३) गुजराती—शतावरी (४) मराठी—शतावरी
(५) लेटिन–Aspaaragus racemosus, Willd.

नैसर्गिक वर्ग–Liliaceae.

वानस्पतिक वर्णन–यह आराहिणी कंटकयुक्त लता जाति की वनस्पति हैं।

मूल—कन्द, (Rhizome) **पुष्प**–श्वेत, सुगन्धित
पत्र–छोटे सीधे **फल**–५ से ६ फी. व्यास और रक्त वर्णयुक्त

प्राप्तिस्थान–यह भारत में प्राय: सर्वत्र प्राप्त होती है।

उपयोगी अंग—मूलकन्द

रस—मधुर तिक्त **वीर्य**—शीत **विपाक**–मधुर

गुण– गुरु, बल्य, वृष्य, रसायन, स्निग्ध, मेध्य **दोषशमन**-त्रिदोष

श. स. प्रभाव–सर्वशरीर

योग—
शतावरी पाक (रक्तविकार)
शतावरी घृत (रक्तविकार)
फल घृत (उन्माद, योनिरोग)

रोगोपयोग–रक्तविकर गुल्म, अतिसार, शोथ, वातव्याधि, मूत्रविकार, अपस्मार

मात्रा–पाक–१ से २ तोला **अनुपान**-दूध–शहद, शर्करा

विशेष–(१) यह आकार भेद से महाशतावरी, और लघु शतावरी–दो प्रकार की हाती है।
(२) इसके कन्दमें ७%शर्करा प्राप्त होती है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

शतावरी

चित्र संख्या १६०

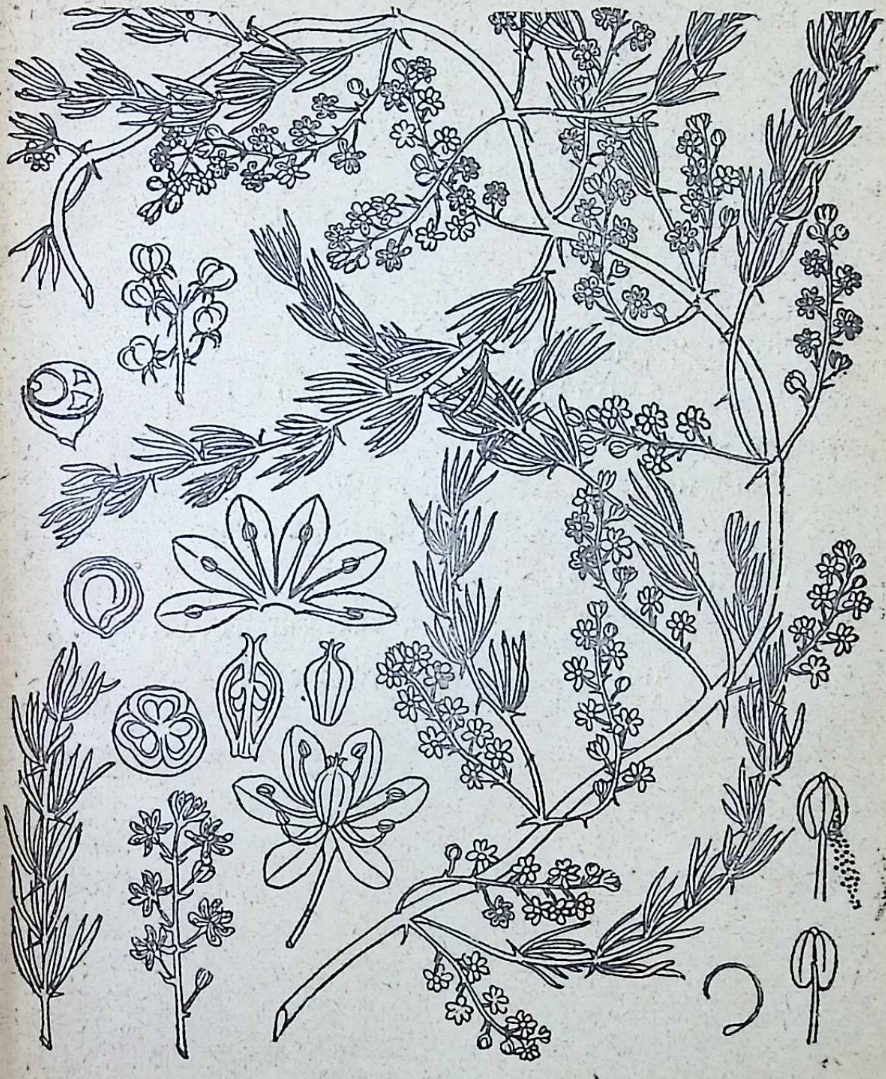

ASPARAGUS RACEMOSUS, WILLD.

(Liliaceae.)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

शरपुंखा

नाम **चित्र संख्या–१६१**

(१) संस्कृत—शररपुंखा (२) हिन्दी— शरपुंखा
(३) गुजराती—शरपंखो (४) मराठी—शरपुंख
(५) लेटिन–Tephrosia Purpuna, Or.

नसर्गिक वर्ग–Papilinioceae.

वानस्पतिक वर्णन–यह क्षुप जाति की वनस्पति है।

मूल–साधारण **पुष्प**- —श्वेत, रक्त

तना—गोल **फल**—छोटे

पत्र-पंखाकार, एकान्तर; पुंखपत्र रहित

प्राप्तिस्थान—यह भारत और मलाया में सर्वत्र होती है।

उपयोगी अंग–पंचागक्षार, मूल

रस–तिक्त कषाय कटु **वीर्य**–उष्ण **विपाक**–कटु

गुण-- —लघु **दोषशमन**–वातकफ

श. स. प्रभाव–यकृतप्लींहा

रोगोपयोग–कृमि, यकृतप्लीहावृद्धि गुल्म, ज्वर, कास, उदररोग, निद्रारोग,

मात्रा—४ से ६ माशा **अनुपान**–जल

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

शरपुंखा

चित्र संख्या १६१

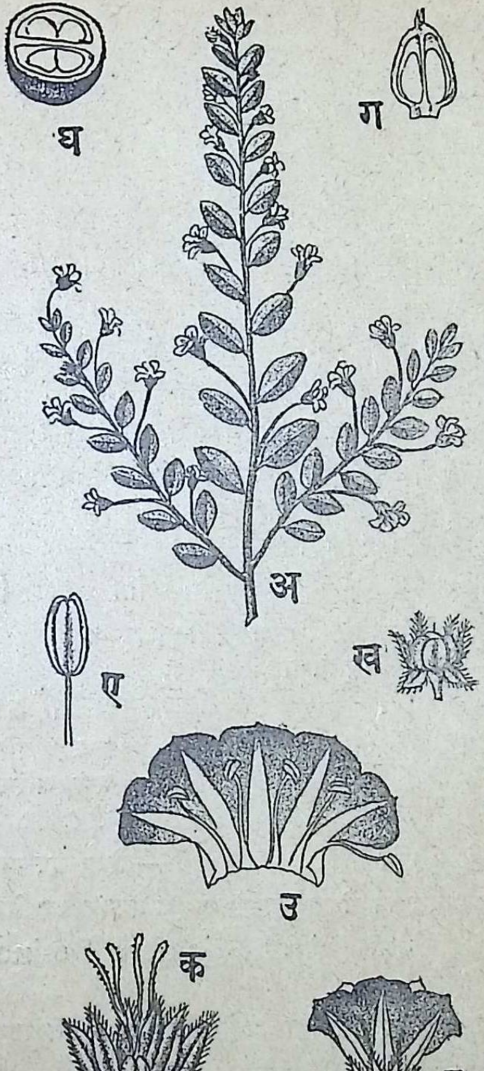

TEPHROSIA PURPUNA, OR.
(Papilinioceae.)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

शाल

नाम **चित्र संख्या-१६२**

(१) सस्कृत-शाल (२) हिन्दी-साल
(३) गुजराती-शलवृक्ष (४) मराठी-शलवृक्ष
(५) अंग्रेंजी-Saltree. (६) लेटिन-Shorea robusta, Gaertn.

नैसर्गिक वर्ग-Diptercarpaceae.

वानस्पतिकवर्णन—यह विशाल वृक्ष जाति की वनस्पति है।

मूल—पृथ्वी में गहरी उतरी हुई, मोटी
पुष्प—शाखाग्रोद्भूत, पीतवर्णयुक्त, गुच्छदार
तना-गहरा रक्ताभकपिश, कठोर
फल-
पत्र-एकान्तर, सादे
शाखा—साधारण

प्राप्तिस्थान—यह उत्तरीय भारत में पंजाब से आसामतक कांगड़ा की पहाड़ियों में और दक्षिण कोरोमण्डल से पंचमढी की पहाड़ियो में बहुतायत से प्राप्त होती है।

उपयोगी अंग—निर्यास, त्वक्,पत्र और फल

रस—कषाय, मधुर **वीर्य**—शीत **विपाक**—कटु

गुण-ग्राही,रुक्ष्य,व्रणरोपक शोधकस्निग्ध **दोषशमन**—कफ

श. स. प्रभाव—आन्त्र और त्वचा

योग—
शलमहस्य (व्रणरोग)

रोगोपयोग-प्रवाहिका, रक्तविकार, कुष्ठ, प्रमेह, पाण्डुरोग व्रण, अस्थिसंधान; कर्ण-रोग; **योनीरोग**

मात्रा—चूर्ण-१ से २ रति **अनुपान**—जीरा, मक्खन (बासमोकी)

विशेष-(१) इसके धड का भेदन करने पर एक प्रकार का निर्यास निकलता है जिसे 'शल' (Aromatic obeo Resinous gun) कहते हैं।

(२) शल का मरहम का प्रयोग(त्वग्रोगों में बहुतायत से किया जाता है।

(३) इसके बीजो को जल मे उबालने पर एक प्रकार का गाढा तैल प्राप्त होता है।

(४) वायु शुद्धि के लियें शाल अति उत्तम है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

शाल

चित्रसंख्या १६२

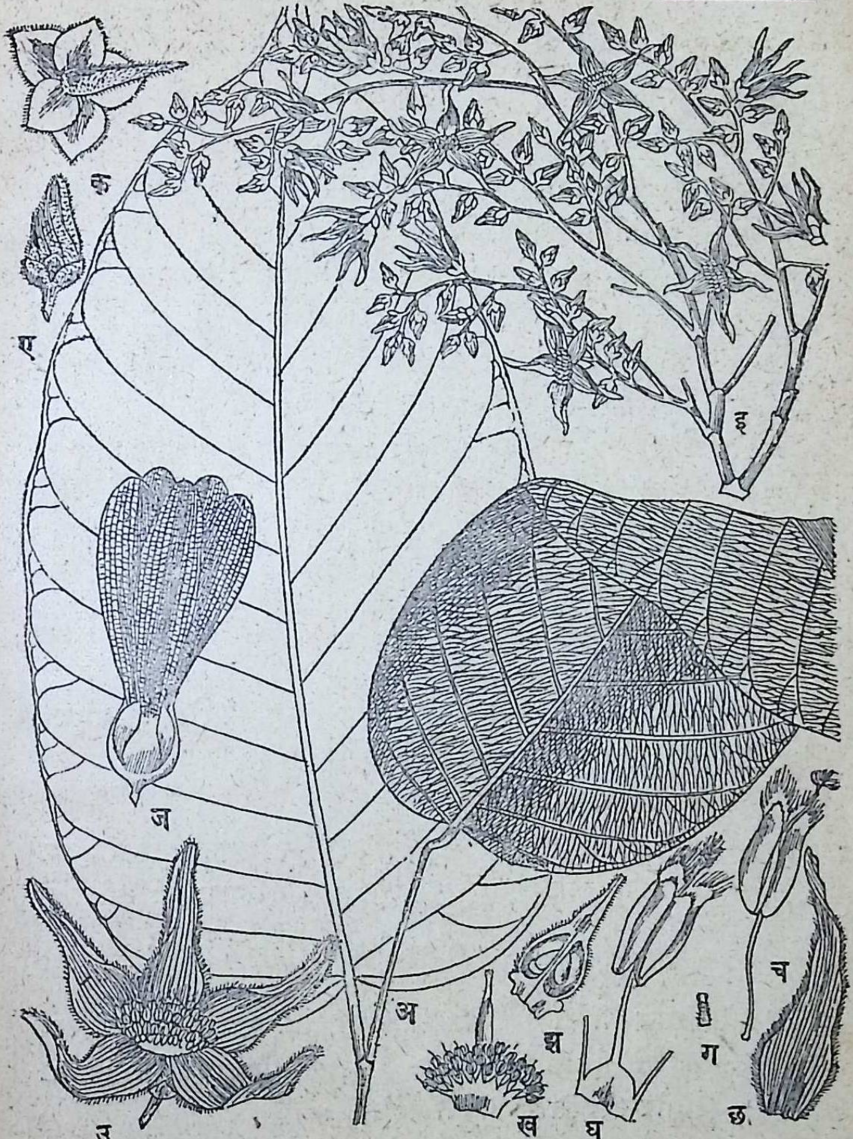

SHOREA ROBUSTA, GAERTN.
(Diptercarpaceae.)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

शालपर्णी

नाम **चित्रसंख्या** १६३

(१) संस्कृत–शालपर्णी (२) हिन्दी–सरिवन

(३) गुजराती–समेरवो (४) मराठा–सालवण

(५) लेटिन-Desmodium gangeticum, D. C.

नैसर्गिक वर्ग-Papilionaceae.

वानस्पतिक वर्णन-यह दो से पांच फीट ऊंची क्षुप जाति की वनस्पति है।

मूल—अंगुली समान मोटे, पृथ्वी में गहरे उतरे हुए बहुसूत्री

पुष्प–जामुनी, गुलाबी

फली-पतली, चपटी, वक्र ३ से ८ सन्धियुक्त

तना–पेन्सिल समान मोटी, श्लक्ष्ण, भूरेवर्णयुक्त

बीज-प्रत्येक सन्धि में एक एक बीज

शाखा-कोमल, रोमश

पत्र-एकान्तर, उसे ६ इंच लम्बे, १-१/२ से ३ इंच चौडे, हरित रोमश, नुकीले

प्राप्तिस्थान-यह भारत में प्राय: सर्वत्र प्राप्त

उपयोगी अंग-पंचांग

रस–मधुर तिक्त **वीर्य**–उष्ण **विपाक**–मधुर

गुण–गुरु, वृहण, बल्य, रसायन **दोषशमन**-वात

श. स. प्रभाव-सर्वशरीर

योग—
यह दशमूलकी प्रधान वनस्पति है।

रोगोपयोग–विषमज्वर प्रमेह, अश वातरोग, वमन: अतिसार, कृमि, मूत्रदाह,

मात्रा-चूर्ण–१ से १-१/२तोला **अनुपान**–जल, शकंरा, शहद

विशेष-(१) शालपर्णी की एक और जाति होतो है जिसके तीन २ पत्ते साथ लगते है। लेटिन में उसे Desmodium Diffiusum और संस्कृत्ति में त्रिपर्णी कहते हैं।

(२) आजकल शालपर्णी की मूल और पतोंकी क्वाथको कालीमिर्च साथ रक्तविकारों में बहुत व्यहृत होता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

शालपर्णी चित्र संख्या १६३

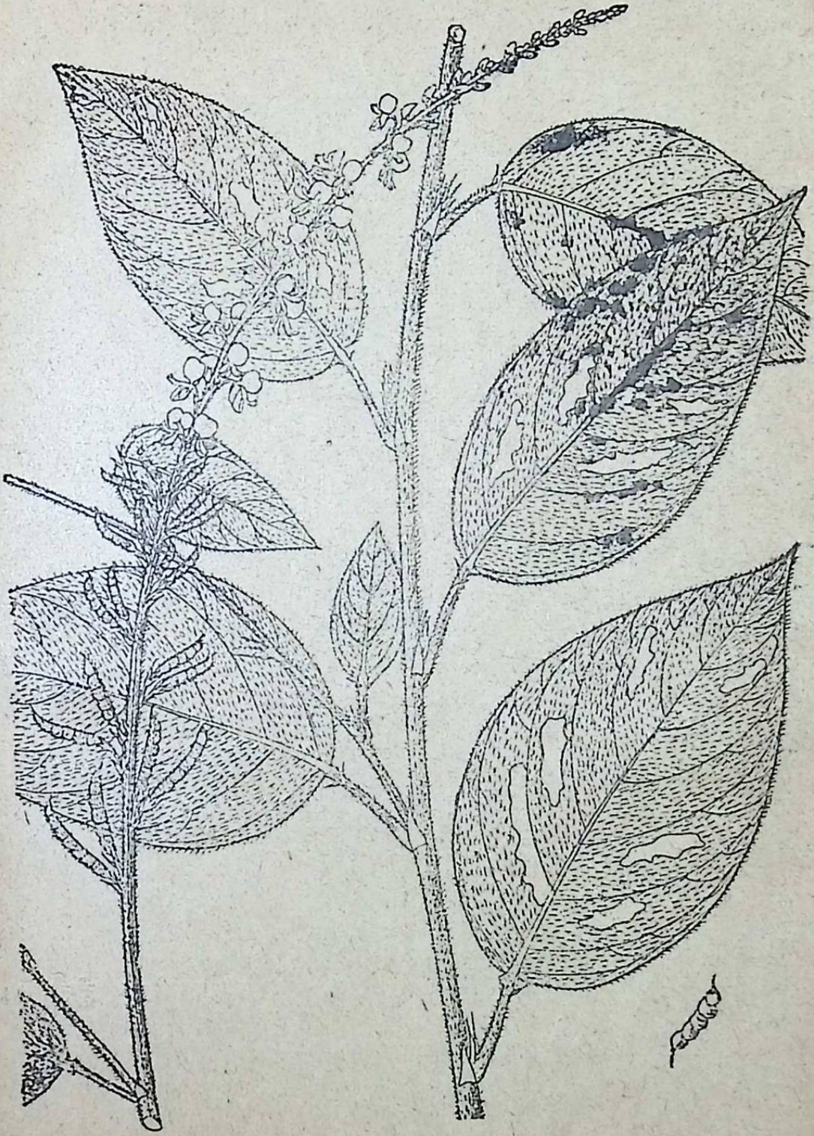

DESMODIUM GANGETIUM, D. C.
(Papilionaceae.)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

सेभल

नाम **चित्र संख्या १६४**

(१) संस्कृत—शाल्मली (२) हिन्दी—सेभल

(३) गुजराती—शेमलो (४) मराठी– सांवर शेवरी

(५) लेटिन–Bonrlux Ceiba, Linn.

नैसर्गिक वर्ग–Bombaca ceae.

वानस्पतिक वर्णन-यह वृक्ष जाति की वनस्पति होती है।

मूल–पृथ्वी में गहरा उतरी हुई **पुष्प**—रक्तवर्ण

तना—मोटा, गोल; खर **फल**-आक फल के समान

शाखा-कोमल

पत्र–गुच्छदार, एकान्तर, श्लक्ष्ण, पीताभहरित

प्राप्तिस्थान–यहभारत और लंका के उष्ण प्रदेशों में, प्राय: मलाया में सर्वत्र होता है।

उपयोगी अंग–मूल, निर्यास

रस—मधुर कषाय **वीर्य**—शीत **विपाक**-मधुर

गुण-पिच्छल, वृष्य, ग्राही **दोषशमन**—वात पित

श. स. प्रभाव—आन्त्र

योग-

प्रदरनाशक घृत (प्रदर)

रोगोपयोग-अतिसार, प्रवाहिका, रक्तप्रदा, दाह, रक्तपित, व्यंग शुक्रक्षीणता

मात्रा—मूलचूर्ण–२ से ६ माशा

निर्यास–४० ग्रेन की तीन मत्रा

विशेष-(१) इसके निर्यास (गोंद) को 'मोचरस' कहते हैं।

(२) इसमें Tannic और Gallic acid की मात्रा विशेष होती है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

सेभल

चित्र संख्या १६४

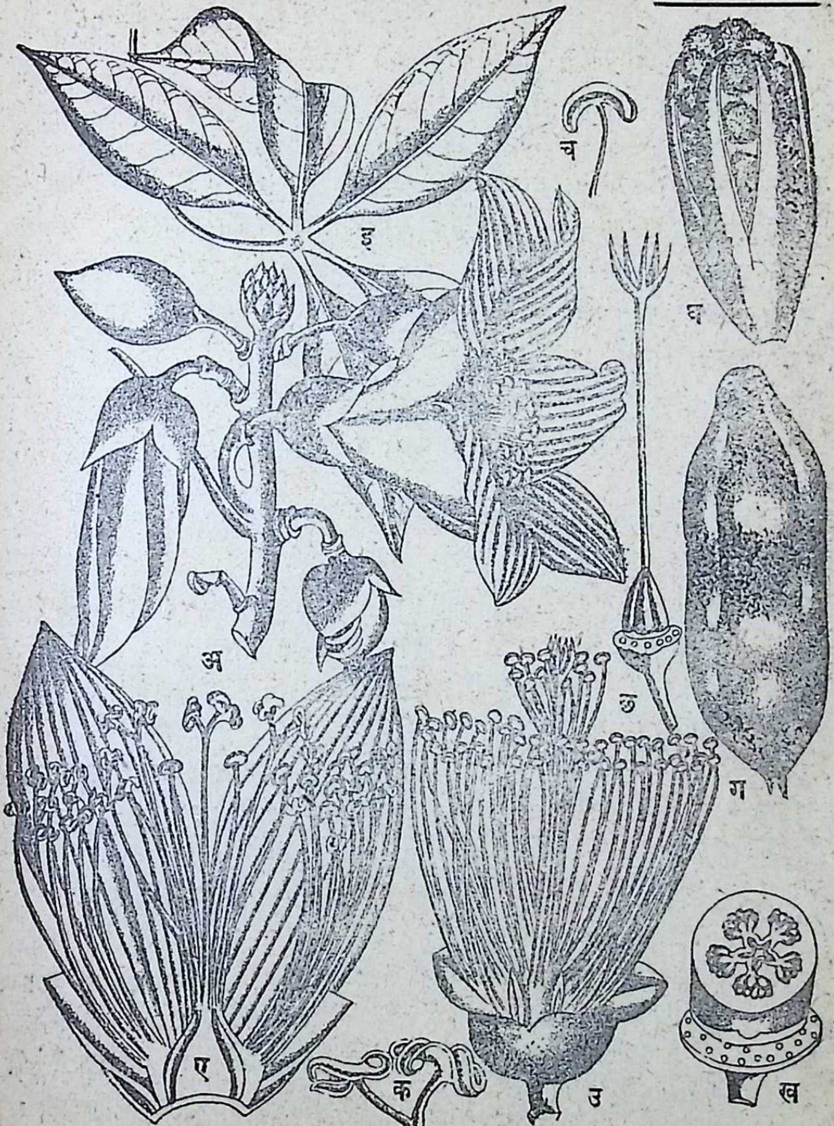

BONRLUX CEIBA, LINN.
(Bombacaceae.)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

शंखाहुली

नाम **चित्र संख्या–१६५**

(१) संस्कृत—शंखपुष्पी (२) हिन्दी—शंखाहुली

(३) गुजराती—शंखावली (४) मराठी—शंखाहुली

(५) लेटिन-Evolvulus alsinoides, Linn.

नैसर्गिक वर्ग–Convolvulaceae.

वानस्पतिक वर्णन—यह बहुवर्षायु प्रसारणी जाति की वनस्पति है।

मूल-सूत्रवत्

तना-अनेक शाखा युक्त, ३० से. मी. लम्बे, रोमश

पुष्प—पत्रकोणोद्भूत, श्वेत, रक्त या नीले वर्णयुक्त, शंखाकृतियुक्त

फल—द्विखण्डी

बीज—चार

पत्र—एकान्तर, हृदयाकृति, उपपत्ररहित, सनाय जैसी, १/२ से छोटी, सूक्ष्म, रोमश

प्राप्तिस्थान-यह भारत में प्रायः सर्वत्र प्राप्त होती है।

उपयोगी अंग-पंचांग

रस-कषाय कटु, तिक्त **वीर्य**-अनुष्ण **विपाक**-कटु

गुण—सारक, मेध्य, वृष्य, बल्य, स्वर्य, रसायन दीपन, पांचन, Brain tonic

दोषशमन-वातपित

श. स. प्रभाव-मष्तिष्क

योग—

बुद्धिवर्द्धक घृत (स्मरण शक्ति)

शंखपुष्पीचूर्ण (स्मृतिवृद्धि)

रोगोपयोग-मानसरोग, उन्माद, अपस्मार कृमि, कुष्ठ, अनिद्रा

मात्रा—स्वरस–१ से ४ तोला

फाण्ट–४ से ८ तोला

अनुपान—जल; शहद, घी, दूध,

विशेष-(१) यह पुष्पवर्ण भेद से-रक्त श्वेत और नील-तीन प्रकार की होती है।

(२) इसकी प्रधान क्रिया मस्तिष्क पर होती है और यह मस्तिक तंतुओं को शक्ति देने में ब्राह्मी और 'वच' के गुणोंसे समानता रखती है।

(३) एसली मतानुसार यह आन्त्रों के लिये हितकर है।

(४) इसमें एक प्रकार का क्षारीय रासायनिक तत्व प्राप्त होता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

शंखाहुली चित्र संख्या १६५

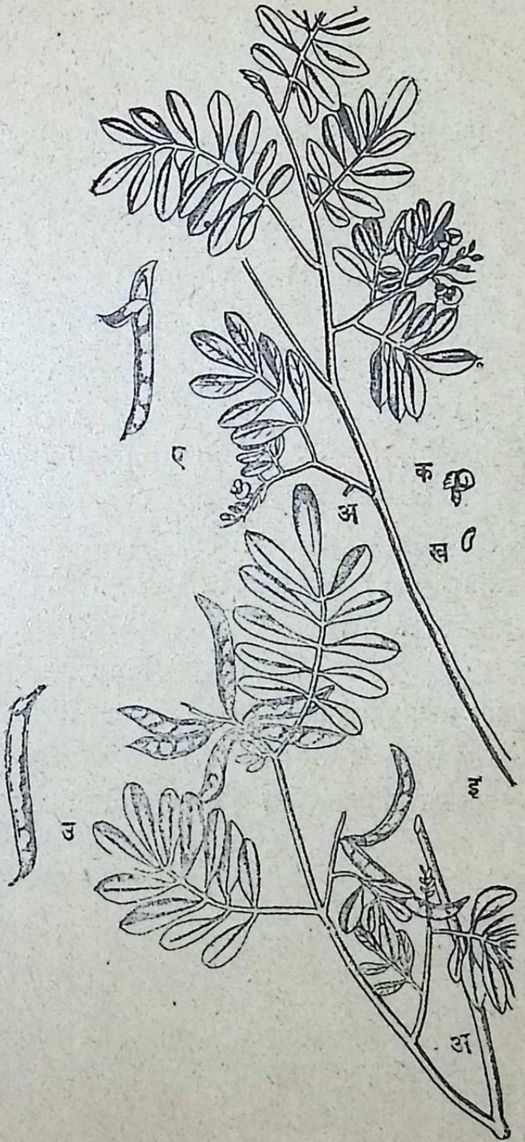

EVOLVULUS ALSINGIDES, LINN. (Convolvulaceae.)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

सिरस

चित्र संख्या—१६६

नाम

(१) संस्कृत-शिरीष (२) हिन्दी-सिरस

(३) गुजराती-सरसडो (४) मराठी-शिरशी

(५) अंग्रेजी-Sirisc tue. (६) लेटिन- Aeliggia Lellrecil, Linn.

नैसर्गिक वर्ग-Mimosaceae.

वानस्पतिक वर्णन-वृक्ष (शीत काल में पत्र झड जाते हैं)

मूल-साधारण

पुष्प-पीताभ सफ़ेद

तना-खर, विभिन्न पिण्ड गोल

फल-गोल, रक्ताभ

शाखा-पीताभश्वेत, श्लक्ष्ण, सीधी

पत्र-रमलीसदृश एकान्तर

प्राप्तिस्थान-भारतवर्ष, और अफ्रिका मे प्रायः सर्वत्र प्राप्त होता हैं।

उपयोगी अंग-बीज, त्वचा

रस-मधुर तिक्त कषाय **वीर्य**-अनुष्ण **विपाक**-कटु

गुण-ग्राही, स्तंमाक (बीज) **दोषशमन**—त्रिदोष

श. स. प्रभाव—त्वचा, नैत्र

योग-

दशांगलेप (शोथ में बाह्यप्रयोगार्थ)

व्याधि-विष, त्वचारोग, दद्रुपामा, शोथ रक्तार्धा

मात्रा—चूर्ण-२ माशा से ६ माशा

विशेष-(१) आजकल वीर्यदौंबल्भंता में इसका प्रयोग विशेष पाया जाता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

सिरस चित्र संख्या. १९६

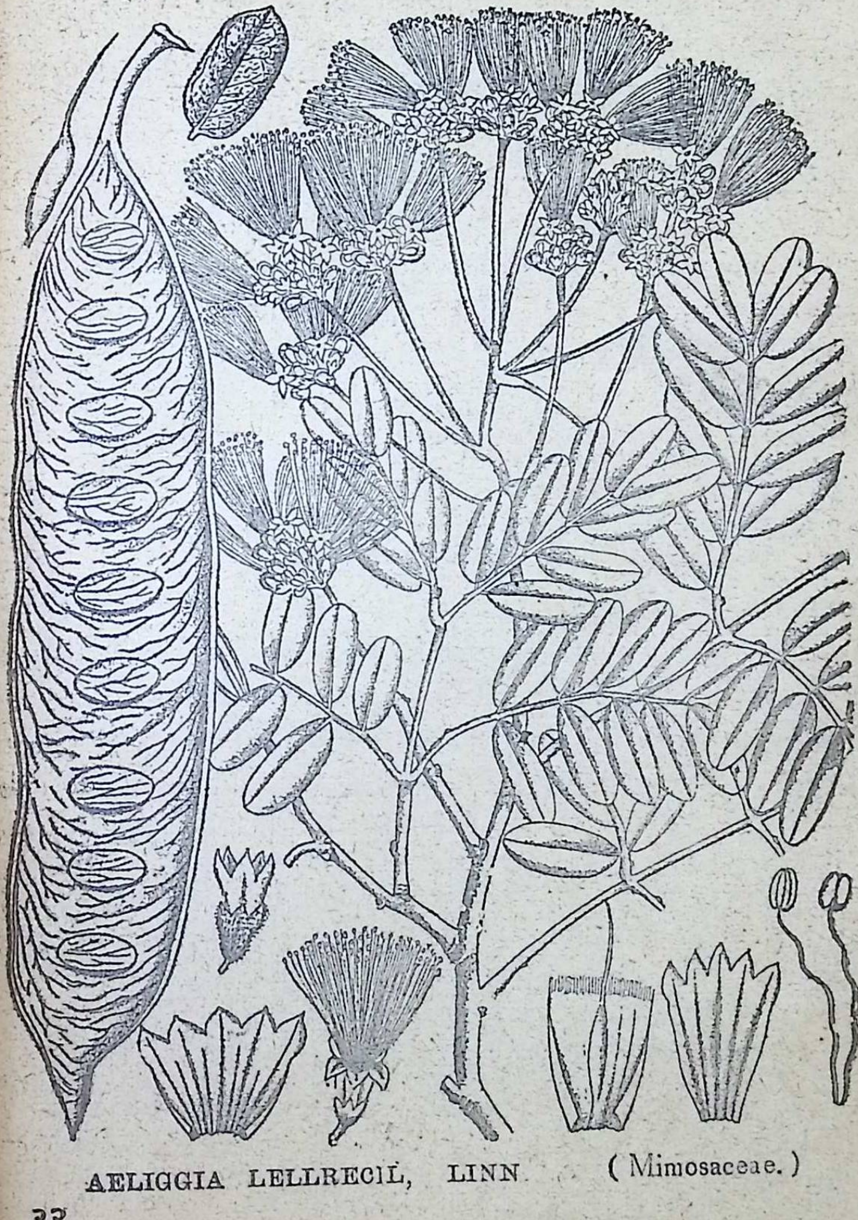

AELIGGIA LELLRECIL, LINN (Mimosaceae.)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

विदारीकन्द

नाम **चित्र संख्या— १६७**

(१) संस्कृत-विदरीकंद (२) हिन्दी—विदारीकन्द

(३) गुजराती—विदारीकन्द (४) मराठी—भोपकोहलु

(५) लेटिन-Ipomoea Dilitata Linn.

नैसर्गिक वर्ग—Convolvulaceae.

वानस्पतिक वर्णन--यह क्षुप जाति कीं वनस्पति है।

मूल—कन्द **पुष्प**—पीताभ श्वेत

तना—हरिताभगोल **फल**—छोटे गोल

पत्र-कुण्ठित पत्राग्र, एकान्तर

प्राप्तिस्थान—यह भारत में प्राय: सर्वत्र प्राप्त हीती है।

उपयोगी अंग—कन्द

रस—मधुर तिक्त **वीर्य**—शीत **विपाक**—मधुर

गुण—वृष्ण मूत्रल स्वर्ण पौष्टिक **दोषशमन**—वातपितघ्न

श. स. प्रभाव—प्रजननसंस्थान

रोगोपयोग—रक्तपित,दाह, शुक्रदौर्बल्य

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

विदारीकन्द

चित्र संख्या १६७

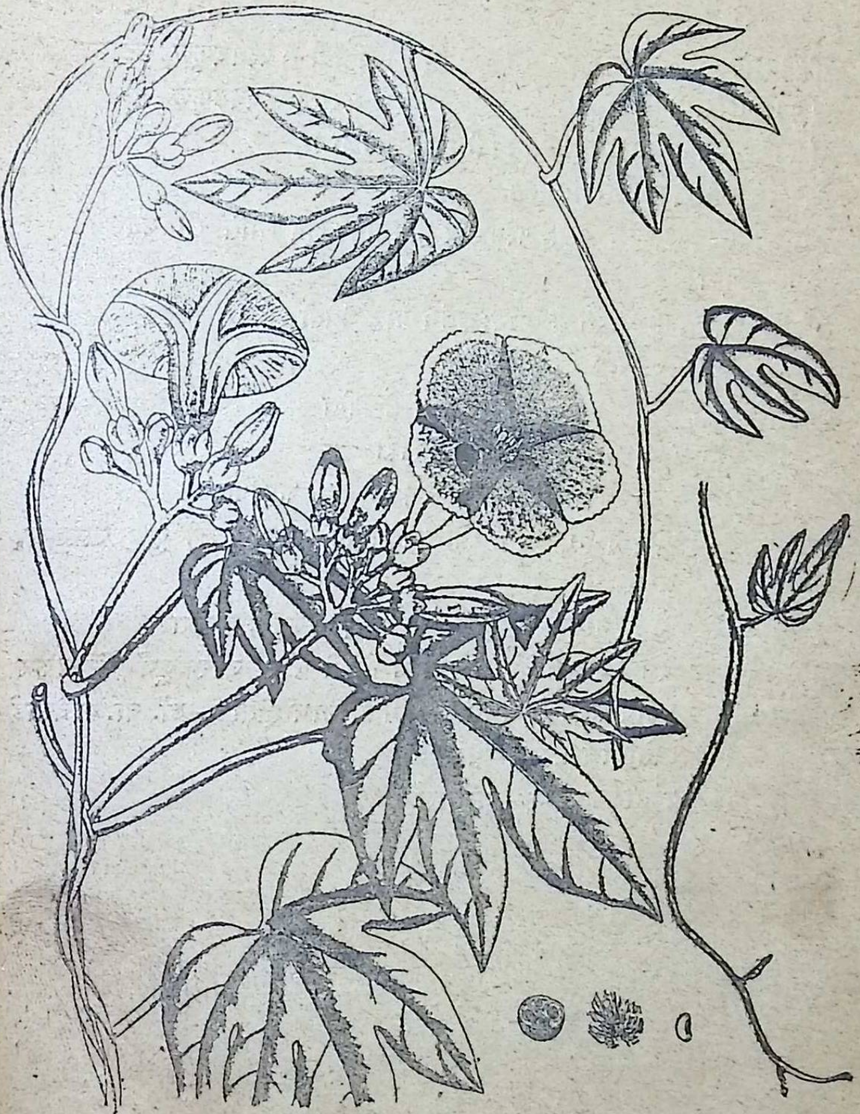

IPOMOEA DILITATA, LINN (Coavolvulaceae)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

शैलेय

नाम चित्र संख्या १६८

(१) संस्कृत—शैलेम (२) हिन्दी—पत्थरफूल, छटीला

(३) गुजराती–छडीलो (४) मराठी—दगडफूल

(५) लेटिन–Parmelia perforata, Linn.

नैसर्गिक वर्ग—Lichenes.

वानस्पतिक वर्णन—यह पत्थरपर होनेवाली क्षुद्र जाति की वनस्पति है।

पुष्प—पुष्प

प्राप्तिस्थान–यह भारत में प्रायः सर्वत्र प्राप्त होती है।

उपयोगी अंग–पंचाग

रस–तिक्त **वीर्य**–शीत **विपाक**–कटु

गुण—सुगन्धि, हृद्य, लघु हृदयोल्लासकारी

श. स. प्रभाव–सर्वशरीर **दोषशमन**–कफपित

रोगोपयोग–दाह तृष्णा, वमन, श्वास, व्रणदोष, कण्डू, कुष्ठ, गुदरक्तस्राव, यकृत प्लीहारोग

मात्रा—१/२ से १ माशा **अनुपान**—शहद, शर्करा

विशेष–(१) इसके एक तोले के क्वाथ में मिश्री और जीरकचूर्ण मिलाकर प्रयोग करने से मूत्रनिष्कासन में लाभ होता है–डॉ. वा. ग. देसाई

(२) प्रतिनिधि द्रव्य—बालछड

(३) दर्पनाशक द्रव्य—अन्तास

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

शैलेय चित्र संख्या १६८

PARMELIA PERFORATA, LINN. (Lichenes.)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

सहदेवी

चित्र संख्या—१६९

नाम

(१) संस्कृत-सहदेवी
(२) हिन्दी-सहदेवी
(३) गुजराती-सदर्डी
(४) मराठी-सादोडी
(५) अंग्रेजी-Ash-coloured
(६) लेटिन-Vernonia cinera, Linn.

नैसर्गिक वर्ग-Composite.

वानस्पतिक वर्णन-यह एक से तीन फुट ऊंची क्षुप जाति वनस्पति है।

पुष्प-बैंगनी

तना-छोटे कोमल श्लक्षण, हरिताभ फल-बीज-कालीजीरी के समान

पत्र-रोयेंदार दूर दूर रहते हैं

प्राप्तिस्थान-भारत में वर्षा ऋतु में प्रायः सर्वत्र प्राप्त होती हैं

उपयोगी अंग-पंचांग

रस-मधुर वीर्य-शीत विपाक-मधुर

गुण-पौष्टिक, अग्निवर्धक, स्वेदल दोषशमन—त्रिदोष

श. स. प्रभाव—समस्त शरीर

रोगोपयोग-ज्वर, कास, श्वास, कृमि

मात्रा-१॥ माशा से ४ माशा

विशेष-(१) यह Phenacitin के समान वेदनाशामक स्वेदल और ज्वर नाशक है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चित्र संख्या १६९क

सहदेवी

VERNONIA CINERA, LINN.

(Compositae)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

सत्यानाशी [धतूरा पीला] चित्र संख्या-१८२क

नाम

(१) संस्कृत—स्वर्णक्षीरी
(२) हिन्दी—पीलाधतूरा, सत्यानाशी
(३) गुजराती-दारुडी
(४) मराठी-कांटे धोत्रा
(५) अंग्रेजी—Prickly poppy
(६) लैटिन—Argemona Mexicana, Linn.

नैसर्गिक वर्ग—Papaveraceae

वानस्पतिक वर्णन-यह भस्मीवर्णकी २से४फीट ऊंची क्षुप जातिकी वनस्पति है।

मूल—सूक्ष्म
पुष्प—पीत
तना—तीक्ष्ण कंटकयुक्त हरिताभ
फल—लम्बगोल कंटकयुक्त
पत्र-ऊंटकटारे के समान विषभग्न
बीज—छोटे कृष्णवर्णयुक्त

प्राप्तिस्थान—यह भारत में प्राय: सर्वत्र प्राप्त होती हैं।

उपयोगी अंग—मूल, बीज, क्षीर और तैल

रस—तिक्त, **वीर्य**—शीत **विपाक**—कटु

गुण—भेदन, रेचन, व्रणशोधन **दोषशमन**— कफ, पित

रोगोपयोग-रक्त विकार, कृमि, अश्मरी, शोथ, उपदंश, जलोदर, नेत्ररोग

श. स. प्रभाव—पाचन संस्थान और त्वचा

मात्रा—मूल ८ से २५ रति, बीज १ से ३ माशा, क्षीर२ से ४ माशा

अनुपान— छाछ

विशेष—(१) इस पौधे के किसी भी अवयव को तोड़ने से स्वर्ण के समान पीतवर्ण का दुग्ध निकलता है।

(२) इसमें रासायनिक विश्लेषण द्वारा दारुहल्दी के समान Berberine protopine नामक उपक्षार और बीजों मे ३६% तैल होता है। ये अहिफेन की अपेक्षा अत्यधिक निद्राजनक और वामक होता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चित्र संख्या.१६९

सहदेवी

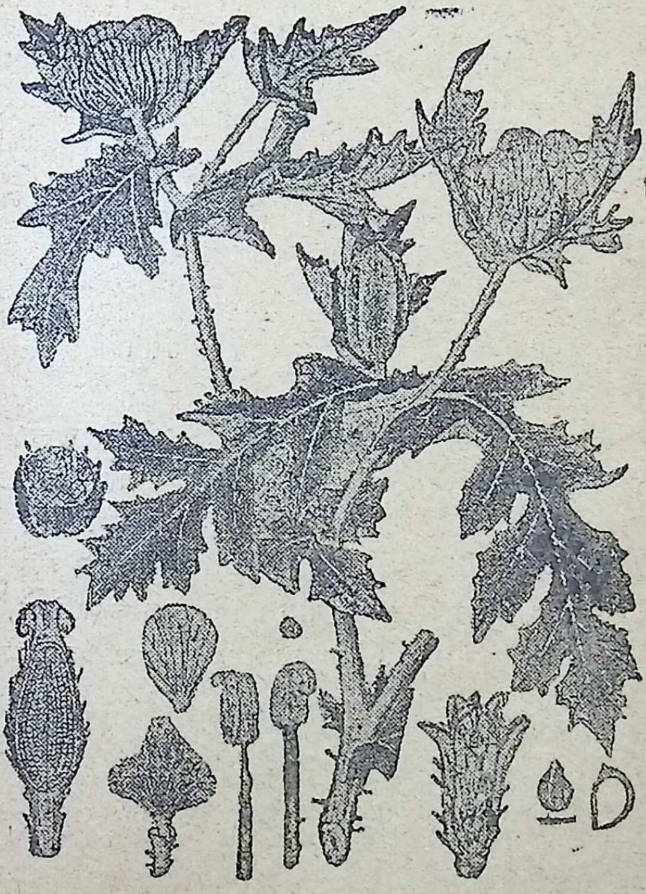

VERNONIA CINERA, LINN.
(Composite.)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

सहिंजना;

नाम **चित्र संख्या—१७०**

(१) संस्कृत—शिग्रु, शोभांजन (२) हिन्दी—सहिंजन,
(३) गुजराती—सरगवो (४) मराठी—शेवगा
(५) अंग्रेजी-Horse rcdish tree (६) लेटिन—Moringa pterygosperma. Linn.

नैसर्गिक वर्ग—Moringaceae.

वानस्पतिक वर्णन—यह लगभग २० फुट ऊंची वृक्ष जाति की वनस्पति है ।

मूल-पृथ्वी में गहरे उतरे हुए
पुष्प-श्वेत,नीले और रक्तभा
तना-की गोलाई ४-५ फीट
फल-छोटे गोल श्वेताभ पीत
शाखा-कठोर खर

पत्र—इमली के पत्रों के भांति परन्तु लम्बाई में कुछ बड़ें होते हैं ।

प्राप्तस्थान—यह भारत में प्रसिद्ध है और सर्वत्र प्राप्त होता है ।

उपयोगी अंग—पंचांग

रस-मधुर कटु **वीर्य**-उष्ण **विपाक**—कटु

गुण-पाचन, तीक्ष्ण, अनुलोमक सर **दोषशमन**-कफवात

श. स. प्रभाव—महास्रोतस्

योग-
सहजने का क्वाथ (उत्तेजक)
सहजने का फांट (उत्तेजक)

रोगोपयोग—कृमि, अपची, विद्रधि गुल्म, आध्याम, रजः कृच्छता

मात्रा—२ से ४ ड्राम
फांट—१ से २ औंस

विशेष (१) –इसकी श्वेत, रक्त और नील वर्णभेद से तीन जातियां होती ।
(२) इसका Sympathetic motor fibres पर अवसादक प्रभाव होता है ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

सहिंजना

चित्र संख्या १७०

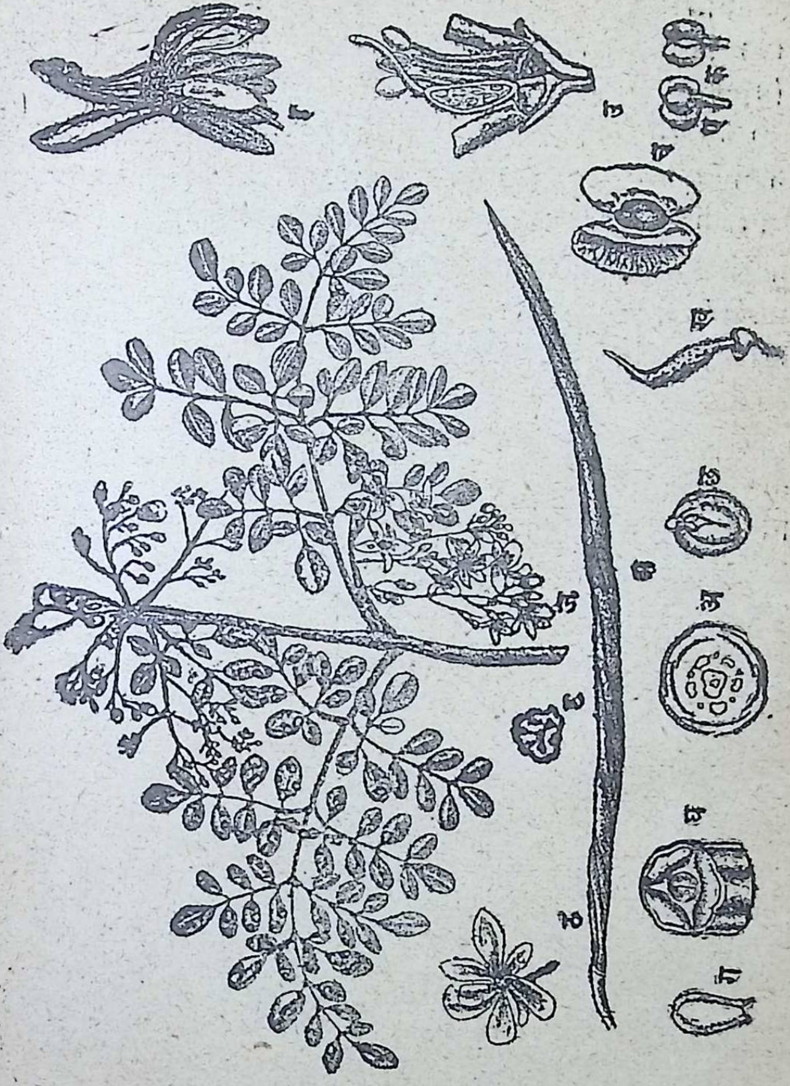

MORINGA PTERYGO,SPERMA. LINN.
(Moringaceae.)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

सिताव

नाम **चित्र संख्या-१७१**

(१) संस्कृत—सताव (२) हिन्दी—सिताव
(३) गुजराती—सताव (४) मराठी— सताव
(५) अंग्रेजी—Garden rul. (६) लेटिन—Ruta Graveolens. Linn.

नैसर्गिक वर्ग—Rutaceae.

वानस्पतिक वर्णन—यह क्षुप जाति की दुर्गन्धित वनस्पति है।

प्राप्तिस्थान—यह भारत में इरान से आती है।

उपयोगी अंग—

रस-कटु तिक्त **वीर्य**-उष्ण **विपाक**-कटु

गुण-महुरेचक **दोषशमन**—वातकफ

श. स्व. प्रभाव—त्वचा, आर प्रजनन संस्थान

योग—

विशेष—(१) इसका गर्भवती स्त्रियों इसका प्रयोग नहीं करना चाहिए। गर्भपात होने की आशंका रहती है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चित्र संख्या १७१

सिताव

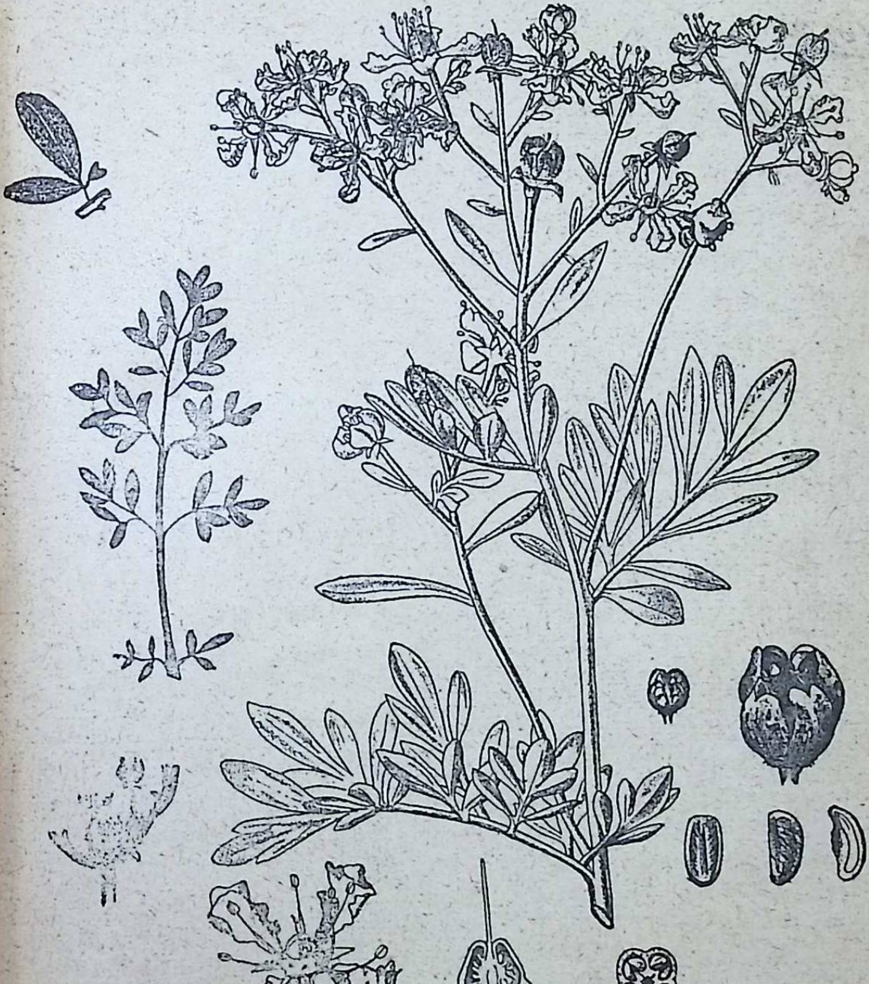

RUTA GRAVEOLENS, LINN.

(Rutaceae)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

स्नुही

चित्र संख्या-१७२

नाम

(१) संस्कृत-स्नुही (२) हिन्दी-थोहर

(३) गुजराती-थोर कांटलो (४) मराठी-मिनगुट थोंर

(५) लेटिन-Euphorbia nerriifolia, Linn.

नैसर्गिक वर्ग-Euphorbiaceae

वानस्पतिक वर्णन-यह वृक्ष जाति की वनस्पति है।

मूल-सूत्रवत् गुच्छदार **पुष्प**—श्वेत, पीत

तना—गोल हरिताभ **फल**—छोटे

शाखा—एकान्तर श्लक्ष्ण

पत्र—लट्वाकार दुर्गंधयुक्त

प्राप्तिस्थान-यह दक्षिण भारत बगाल और वर्मा में प्रायः सर्वत्र होती है।

उपयोगी अंग—पत्र, क्षीर, मूल

रस—तिक्त; क्षीर-कटु **वीर्य**—उष्ण **विपाक**-कटु

गुण—क्षार-तीक्ष्ण विरेचक **दोषशमन**-कफ पित्त

श.स. प्रभाव-आन्त्र

रोगोपयोग-क्षीर विरेचनार्थ, पत्र-व्रणपाचक, कुष्ठ, उदररोग बिष;

मात्रा— चूर्ण १ से २ माशा

विशेष—(१) यह तीव्र विरेचक है। अतः प्रयोग के समय ध्यान देना आवश्यक है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चित्र संख्या : ७२

स्नुही

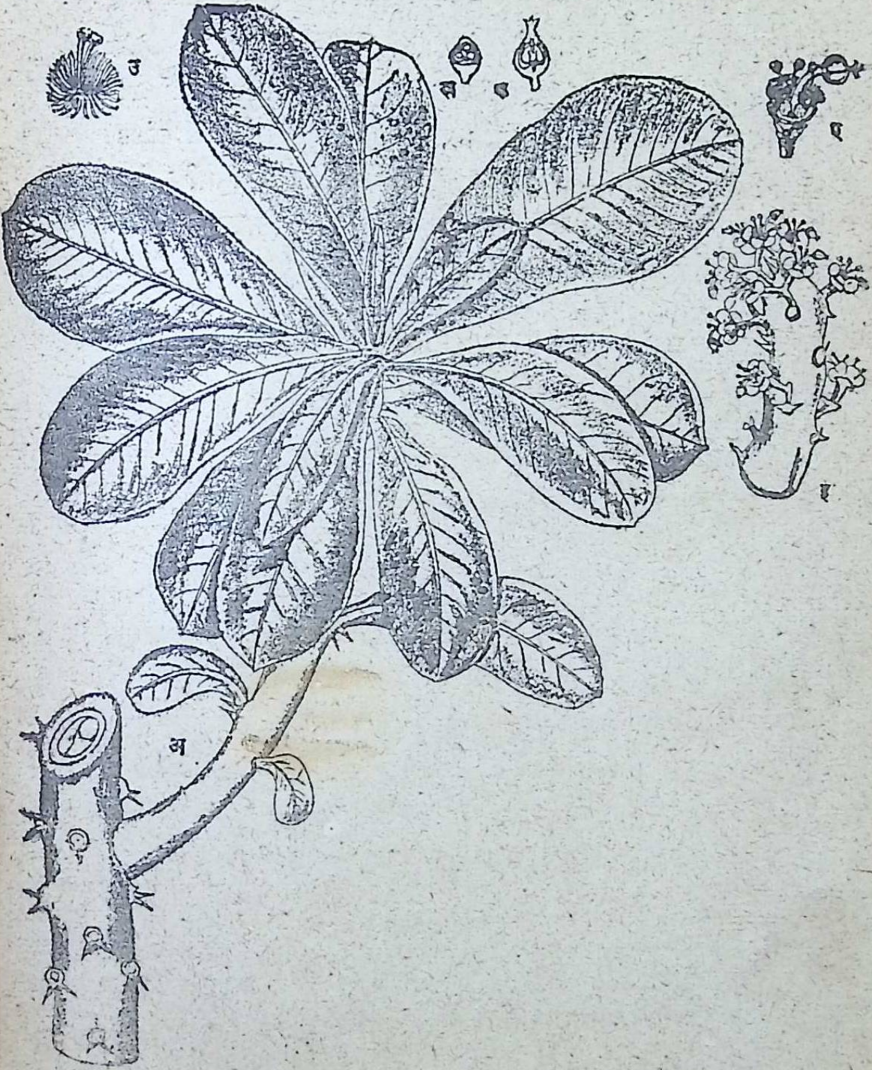

EVPHORBIA NERIIFOLIA, LINN.
(Euphorbiaceae)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

हिंगु

नाम चित्र संख्या—१७३

(१) संस्कृत—हिंगु (२) हिन्दी—हिंगु

(३) गुजराती—हींग वघारणी (४) मराठी—हींग

(५) अंग्रेजी-Asafoetida. (६) लेटिन–feurla. Narthex, Boiss.

नैसर्गिक वर्ग—Umbelliferae.

वानस्पतिक वर्णन—यह क्षुप जाति की वनस्पति का निर्यास है।

प्राप्तिस्थान–इरान, अफगानिस्तान, मंडीक्वेटा, डेराइस्माइल, मुलतान, और पेशावर में प्रायः सर्वत्र प्राप्त होती है।

उपयोगी अंग—निर्यास

रस– कटु **वीर्य**-उष्ण, **विपाक**-कटु

गुण–सर, अनुलोमक, अग्निदीपक **दोषशमन**–वातकफहर पितल

श. स. प्रभाव–महास्रोतस्

व्याधि–आध्मान, विषम्य, उदरकृमि गुल्म, हृदरोग, प्रसूतिरोग

योग—

हिंग्वादिवटी, (अनेकरोगों में)

हिंग्वाष्टकचूर्णं–(उदररोग)

हिंगुकपूरेवटी ( )

मात्रा-१ रति से ४ रति

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

हिंगु चित्रसंख्या १७३

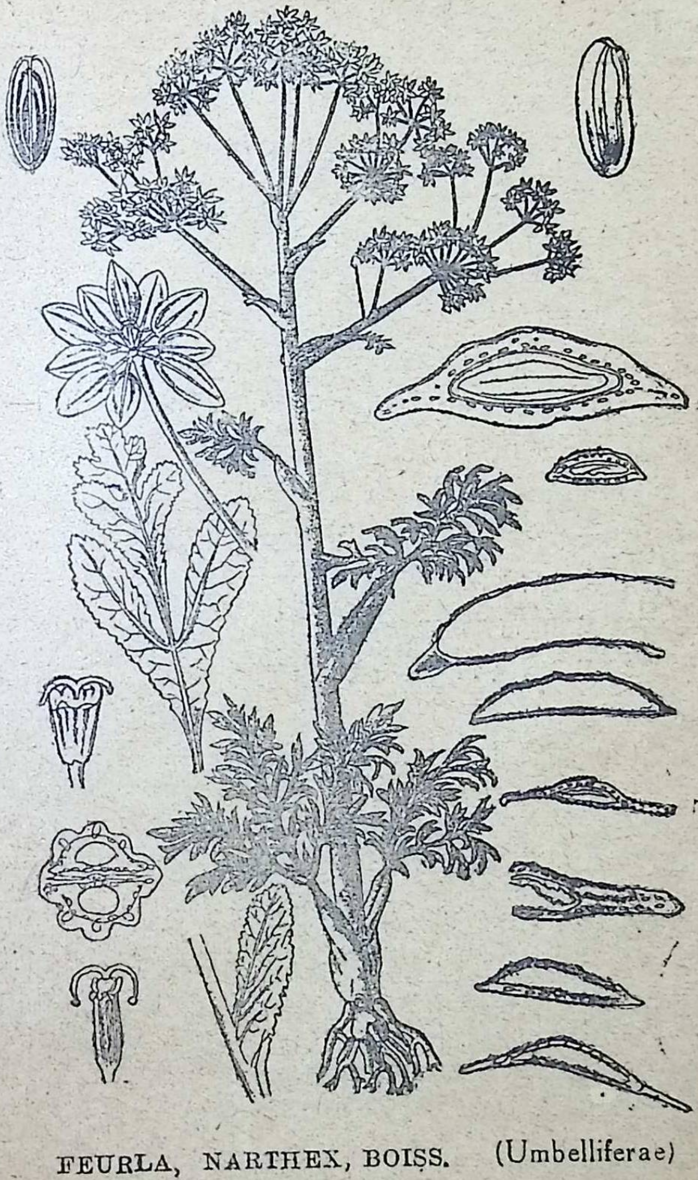

FEURLA, NARTHEX, BOISS. (Umbelliferae)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

शुरजन

चित्र संख्या-१७४

नाम

(१) संस्कृत-सुरंजन (२) हिन्दी-सुरंजा

(३) गुजराती-सुरंजा (४) मराठी-सुरंजा

(५) लेटिन-Colchicum luteum, Bakel.

नैसर्गिक वर्ग-Liliaceae

वानस्पतिक वर्णन-यहक्षुप जाति की वनस्पति है।

मूल-कन्द **पुष्प**—श्वेताभ पीत

तना—किंचित् चतुष्कोणीय **फल**—छोटे

पत्र— एकान्तर श्लक्षण

प्राप्तिस्थान-यहकाश्मीर और ईरान में वहुतायत से प्राप्त होती है।

उपयोगी अंग—कन्द (काण्ड)

रस—तिक्त **वीर्य**—शीत **विपाक**-कटु

गुण—वामक रेचक **दोषशमन**-त्रिदोष

श.स. प्रभाव-समस्तशरीर

रोगोपयोग—वातरक्त अनिद्रा, बातरोग

मात्रा—द्रवसार २ से ५ बिन्दु ५ से १५ बिन्दु

अनुपान-जल

विशेष—(१) इसकी क्रिया शरीर दर Colichicum के समान होती है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चित्र संख्या १७४

सुरजन

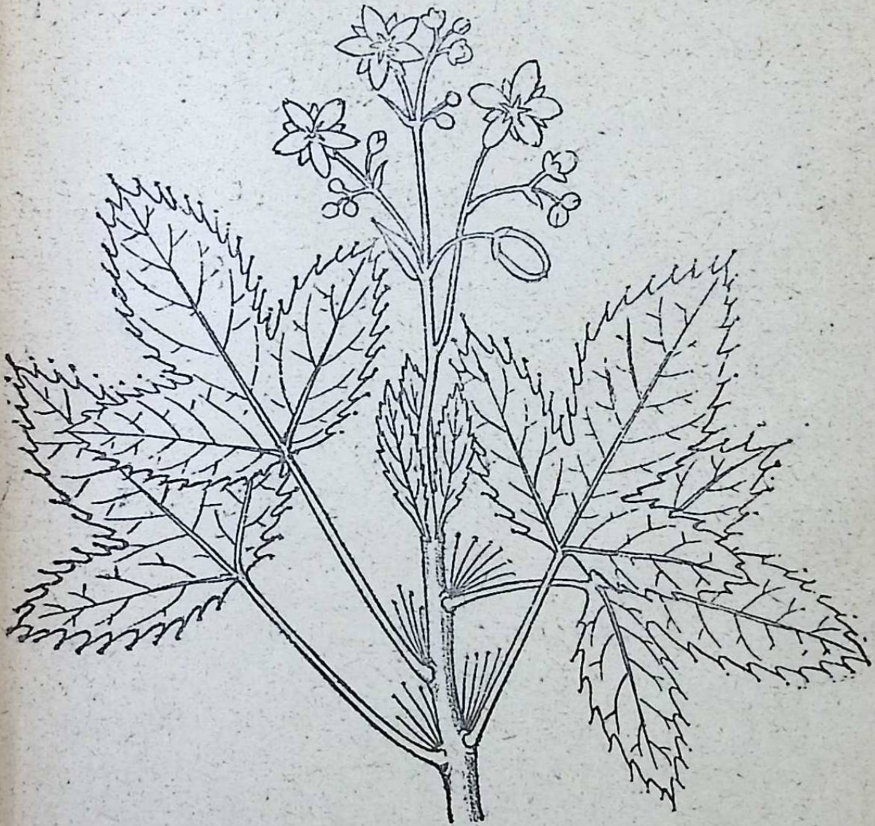

COLCHICUM LUTEUM, EAKEL
(Liliaceae)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

वनजीरक

नाम चित्र संख्या—१७५

(१) संस्कृत—वन जीरक (२) हिन्दी—काली जीरा

(३) गुजराती—काली जीरी (४) मराठी—कडूजिरें

(५) लेटिन—Centratherum anthelminticum, Linn.

नैसर्गिक वर्ग—Compositae.

वानस्पतिक वर्णन—यह तीनसे पांच फीट ऊंची क्षुप जातिकी वनस्पति है।

मूल—साधारण **पुष्प**—जामुनी वर्णयुक्त

तना—कोमल, हरिताभ **फल**—श्यामवर्णयुक्त लम्बे

पत्र—कंगुरेदार; शल्याकृतियुक्त

प्राप्तिस्थान—यह भारत में प्रायः सर्वत्र प्राप्त होता है।

उपयोगी अंग—बीज

रस—तिक्त **वीर्य**—उष्ण **विपाक**—कटु

गुण—दीपन, कटुपौष्टिक, मूत्रजनन, स्तन्यजनन **दोषशमन**—वात

श. स. प्रभाव—आन्त्र

रोगोपयोग—व्रण, कृमि, त्वग्रोग, शोथ, ज्वर

मात्रा—चूर्ण—१-१/२ से ३ माशा **अनुपान**—सुगन्धि द्रव्य

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

वनजीरक

चित्र संख्या १७५

CENTRATHE .UM ANTHELMINTIGUM LINN, (C:mpositae)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

वातास [बदाम]

नाम **चित्र संख्या—१७६**

(१) संस्कृत—वाताम (२) हिन्दी—बादाम
(३) गुजराती—बादाम (४) मराठी—बादाम
(५) अंग्रेजी-Almond tree. (६) लेटिन-Prunus amygdalus, Baili

नैसर्गिक वर्ग—Rosaceae.

वानस्पतिक वर्णन—यह मध्यमाकारी वृक्ष जाति की वनस्पति है। वनस्पति है।

मूल-साधारण, **पुष्प**-शाखा कोणोग्रोद्भूत, श्वेत
तना—गाल श्वेतोभ **फल**—गोल केसरीयावर्ण युक्त ह्याव वरण कठोर
शाखा- किंचित् चतुष्कोणीय
पत्र—एकान्तर, सदल, पक्षाकार, कपिशवर्णयुक्त.

प्राप्तिस्थान—यह भारत में काश्मीर, अफगानिस्तान, और ईरान में प्राप्त होती है। भारत में केवल काश्मीर और पंजाब के कुछ हिस्सों में इसकी खेती की जाती है।

उपयोगी अंग—फल

रस-मधुर **वीर्य**—उष्ण **विपाक**—मधुर

गुण-गुरु, बृहण, बल्य, सारक, कामोद्दीपक, शुक्रल **दोषशमन**—वात; पितकफकारक

प्र. स्थ. प्रभाव—सर्वशरीर; प्रधान प्रजनन संस्थान.

रोगोपयोग-मधुमेह, श्वेतप्रदर, कास नेत्ररोग, आर्तवविकार आन्त्रशूल, व्रण

मात्रा—१ से २ तोला (पाक)

विशेष-(१) इसके रसभेद से कडुवी और मीठी—दो जातियां होता हैं।
(२) कडवी बादाम में घातक जहरीला Hydrocynic acid होता है। अतः प्रयोग के समय ध्यान देना चाहिए।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

वाताम (बादाम)

चित्र संख्या. १७६

PRUNUS AMYGDALUS, BAILI.

(Rosaceao)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

स्याह जीरा

नाम **चित्र संख्या—१७७**

(१) संस्कृत—कृष्ण जीरक (२) हिन्दी—स्याहजीरा

(३) गुजराती—स्याहजीरा (४) मराठी—स्याहजीरा

(५) लेटिन–Carum carvi, Linn.

नैसर्गिक वर्ग—Umbelliferae.

वानस्पतिक वर्णन—यह क्षुप जाति की वनस्पति है।

मूल—छोटे सूत्रवत् **पुष्प**—पीताभ श्वेत, छत्राकार

तना—हरित कोमल **फल**—नीरस, छोटे, कृष्णवर्णयुक्त

शाखा—कोमल हरित, एकन्तर

प्राप्तिस्थान–यह काश्मीर, सीमा प्रान्त, अफगानिस्तान और ईरान में प्रायः सर्वत्र प्राप्त होती है।

उपयोगी अंग—बीज

रस- कटु **वीर्य**-उष्ण, **विपाक**-कटु

गुण–रोचन, दीपक, दुर्गन्धनाशक, ग्राही **दोषशमन**–वात कफ

श. स. प्रभाव-पाचन संस्थान

रोगोपयोग–जीर्णज्वर, शोथ, उदरशूल

मात्रा-१ से ३ माशा

विशेष-(१) इसमें एक प्रकार का उडनशील तैल होता है।

(२) यह पेचिश में बहुत उपयोगी बनस्पति है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

स्याह जीरा

चित्र संख्या १७७

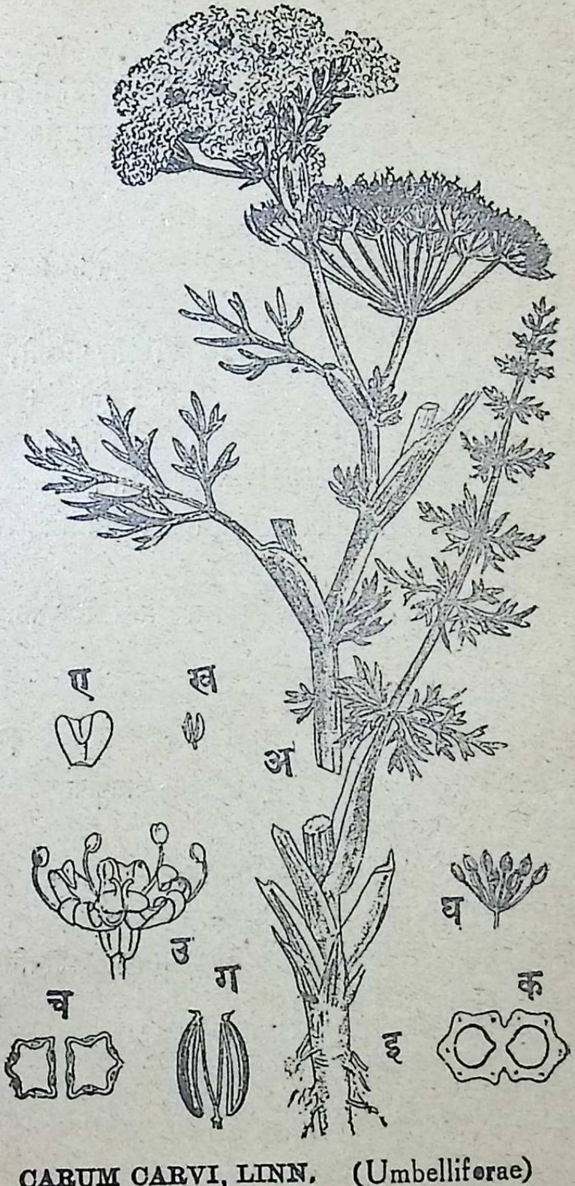

CARUM CARVI, LINN. (Umbelliferae)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

शाखोटक

नाम **चित्र संख्या-१७८**

(१) संस्कृत-शाखोटक (२) हिन्दा-सिहोड़ा

(३) गुजराती-साहोडा (४) मराठी-सागसा होडा

(५) लेटिन-Streblus asper, Lour (Cepicarpus orientalis, Blome)

नैसर्गिक वर्ग-Urticaceae.

वानस्पतिक वर्णन-यह छोटी सर्वदा हरित रहनेवाली वृक्ष जाति की वनस्पति है।

मूल-पृथ्वीमें गहरी उतरीहुई, मोटी **पुष्प**-एकलिंगी, पुलिंगी, और स्त्रीलिंगी भिन्न २ होते हैं।

तना—कोमल, त्वक्युक्त, कपिश, **फल**-एकखण्डी पीले

शाखा—रोमश, कोमल **बीज**—एक बीज

पत्र-एकान्तर लट्वाकार, या विपरीत लट्वाकार अनियमित दलाकारी १ से ३ इंच लम्बे

प्राप्तिस्थान—यह भारत में बंगाल और मध्य प्रान्त में बहुतायत से प्राप्त होते हैं।

उपयोगी अँग—त्वक् और कृक्ष

रस-कटु **वीर्य**-उष्ण **विपाक**-कटु

गुण-लघु, रुक्ष्य **दोषशमन**-वातकफ

श. स. प्रभाव—पचन संस्थान,

रोगोपयोग-रक्तपित, अर्श, ज्वर, अतिसार;

मात्रा-चूर्ण-१ से २ माशा **अनुपान**—जल

विशेष—(१) इसमें Nederl Tidsehrrt नामक रासायनिक कटु तत्व प्राप्त होंते हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

शाखोटक चित्र संख्या.१७८

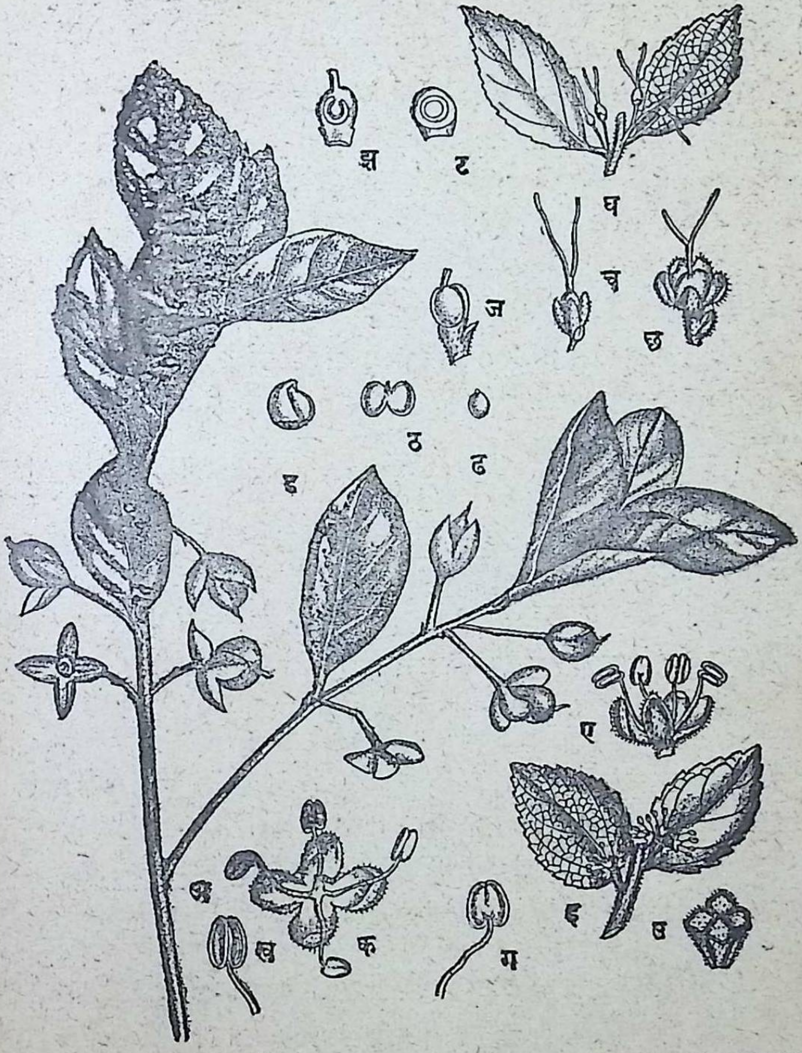

STREBLUS ASPER, LOUR(CEPICARPUS ORIENTALIS, BLOME)
(Urticaceae)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

बकुल

नाम **चित्र संख्या—१७९**

(१) संस्कृत–बकुल (२) हिन्दी–मौलसरी, बकुल

(३) गुजराती–बोलसरी (४) मराठी– बकुल

(५) लेटिन-Mimusops elengi, Linn.

नैसर्गिक वर्ग–Sapotaceae

वानस्पतिक वर्णन–यह वृक्ष जाति की वनस्पति है।

मूल—पृथ्वी में गहरी उतरी हुई **पुष्प**–श्वेत

तना-गाल, भंगुर त्वक्तयुक्त **फल**–मांसल, विदारी

शाखा–खर

पत्र–सादे, एकान्तर अखण्ड, चर्म सदृश, उपपत्र रहित

प्राप्तिस्थान-यह भारत के उद्यानों में प्रायः सर्वत्र प्राप्त होता है।

उपयोगी अंग–त्वक्, पुष्प और फल

रस–मधुर, कषाय **वीर्य**–उष्ण **विपाक**–कटु

गुण–हृद्य, स्निग्ध, गुरु **दोष**–कफ, पित

रोगोपयोग-जीर्णज्वर, दन्तरोग, श्वित्र, कृमि

श. स. प्रभाव—पचनसंस्थान **मात्रा**– चूर्ण २ से ४ माशा

विशेष–(१) पुष्पों का अर्क ज्वर की उत्तेजना के लिये दिया जाता है।

(३) इसके फल रक्तातिसार में बहुत उपयोगी है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

बकुल

चित्र संख्या १७९

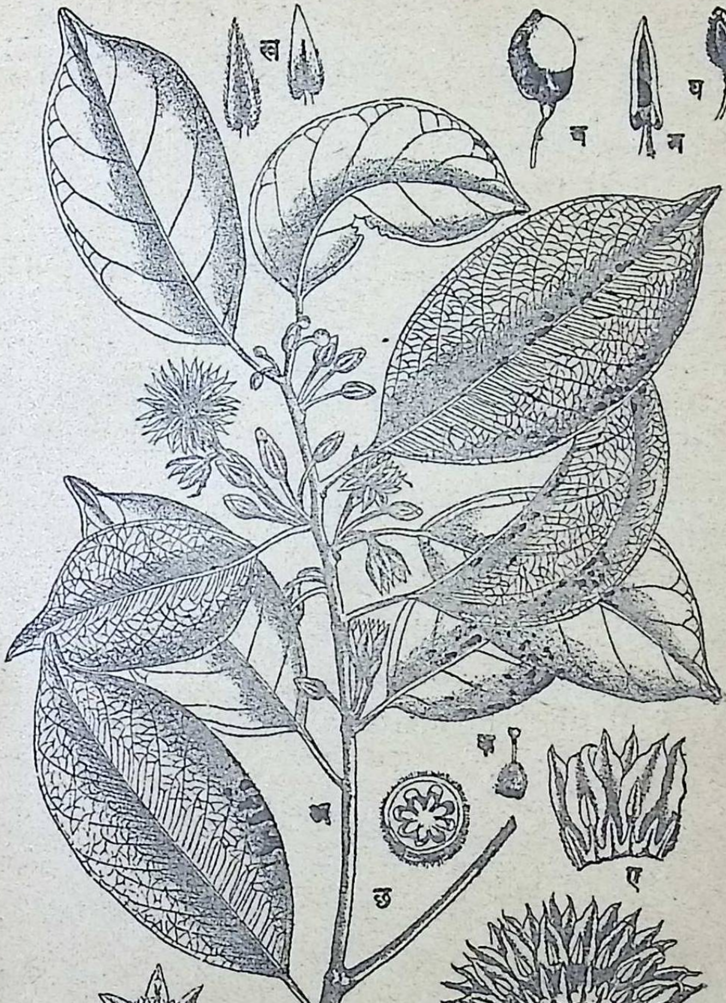

MIMUSOPS ELENGI, LINN.
(Sapotaceae)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

बनफ्शाह

नाम **चित्रसंख्या—१८०**

(१) हिन्दी—बनफ्शाह (२) लेटिन-Viola odorata, Linn

नैसर्गिक वर्ग—Violaceae

वनस्पतिक वर्णन-यह ४ से ५ अंगुल ऊची क्षुद्रक्षुप जाति का वनस्पति है

तना— गोल हरिताभ जामुनी **पुष्प**—वर्णमुक्त, सुगंधित

पत्र—रोमश, हृदयाकृति, ब्राह्मी के समान

प्राप्तिस्थान—यह हिमालय प्रदेश मे काश्मीर और ईरान में प्रायः सर्वत्र प्राप्त होती हैं।

उपयोगी अंग—पंचाग

रस— कटु, मधुर **वीर्य**—शीत **विपाक**-कटु

गुण—अनुलोमन, स्निग्ध **दोष**—पित

श. स. प्रभाव— फुफ्फुस, यकृत और आमाशय

रोगोपयोग—प्रतिश्याय फुफ्फुस, कास, पैतिक शोथ

मात्रा— ४ से ८ माशा

विशष—(१)इसके फूलों का गुलकन्द वनाया जात्ता है जो कोष्ठबद्धता मे लाभप्रद है।

(२) यह प्रतिश्माय के लिये अत्यन्त उपयोगी वनस्यति हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

बनफ़शाह

चित्र संख्या १८०

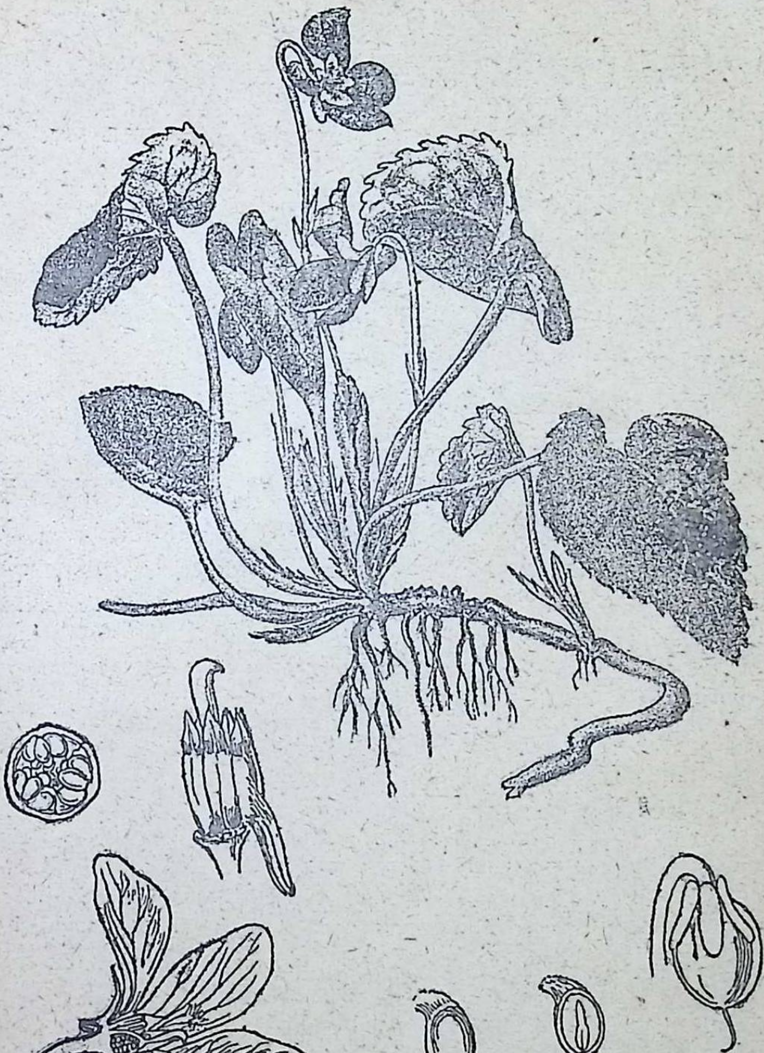

VIOLA ODORATA, LINN.
(Violaceae)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

हल्दी

नाम चित्र संख्या—१८१

(१) संस्कृत—हरिद्रा (२) हिन्दी—हल्दी

(३) गुजराती—हलदर (४) मराठी—हलद

(५) अंग्रेजी—Turmic (६) लेटिन—Curcuma Longa, Linn.

नैसर्गिक वर्ग—Scitaminaceae.

वानस्पतिक वर्णन—यह छोटे, कोमल एकवर्षायु क्षुप होते हैं।

मूल—पीतवर्ण का कन्द **पुष्प**-छोटे

लता—कोमल श्लक्षण **फल**-पीताभ श्वेत

पत्र—

प्राप्तिस्थान-यह भारत में प्रायः सर्वत्र प्राप्त होती है।

उपयोगी अंग-कन्द।

रस-कटु तिक्त **वीर्य**—उष्ण **विपाक**-कटु

गुण-दीपन, ग्राही, रुक्ष, वर्ण्य, **दोषशमन**—कफपित्तहर

श. सं. प्रभाव-त्वचा यकृत् **व्याधि**—त्वचारोग, कामला, पाण्डु प्रमेह, कृमि, कण्डू विष, अर्बुद।

योग—

हरिद्राखण्ड (प्रमेह)

मात्रा—२ से ४ माशा **अनुपान**-जल

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

हल्दी

चित्रसंख्या १८१

CURCUMA LONGA, LINN. (Scitaminaceae)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

सालममिश्री

नाम **चित्र संख्या- १८२**

(१) संस्कृत—मुज्जातक (२) हिन्दी—सालममिश्रा

(३) गुजराती—सालम (४) मराठी—सलेप

(५) लेटिन-Orchis laxiflora, Lam.

नैसर्गिक वर्ग—Orchidcae

वानस्पतिक वर्णन-यह क्षुद्र जाति की वनस्पति है।

मूल—कन्द **पुष्प**—पीताभ श्वेत या नीचे वर्णयुक्त

तना—गोल हरिताभ

पत्र—छोटे

प्राप्तिस्थान—यह नैपाल, अफगानिस्तान और ईरानमें प्रायः प्राप्त होती है।

उपयोगी अंग—कन्द

रस—मधुर **वीर्य**—शीत **विपाक**—मधुर

गुण—अग्निदीपक, शुक्रल, बल्य, पौष्टिक, कामाद्दीपक

श. स. प्रभाव—मस्तिष्क

योग— **रोगोपयोग**—रक्तरोग, अतिसार, अपचन, कफरोग

सालमपाक (जीवनीशक्ति)

कमोद्दीपत चूर्ण (कामशक्ति वर्द्धक)

मात्रा—एक छटाक प्रति दिन **अनुपान**—दुग्ध

विशेष-(१) इसकी सालमपंजा, सालम लहसुनिया, सालमें बादशाही, सालम लाहौरी और सालम मद्रासी नामक पांच जातियां होती हैं।

(२) इसमें पचास प्रतिशत बोल रहता है।

(३) इसमें खटिक Chloride of potassium प्राप्त होता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

सालममिश्री

चित्र संख्या १८९

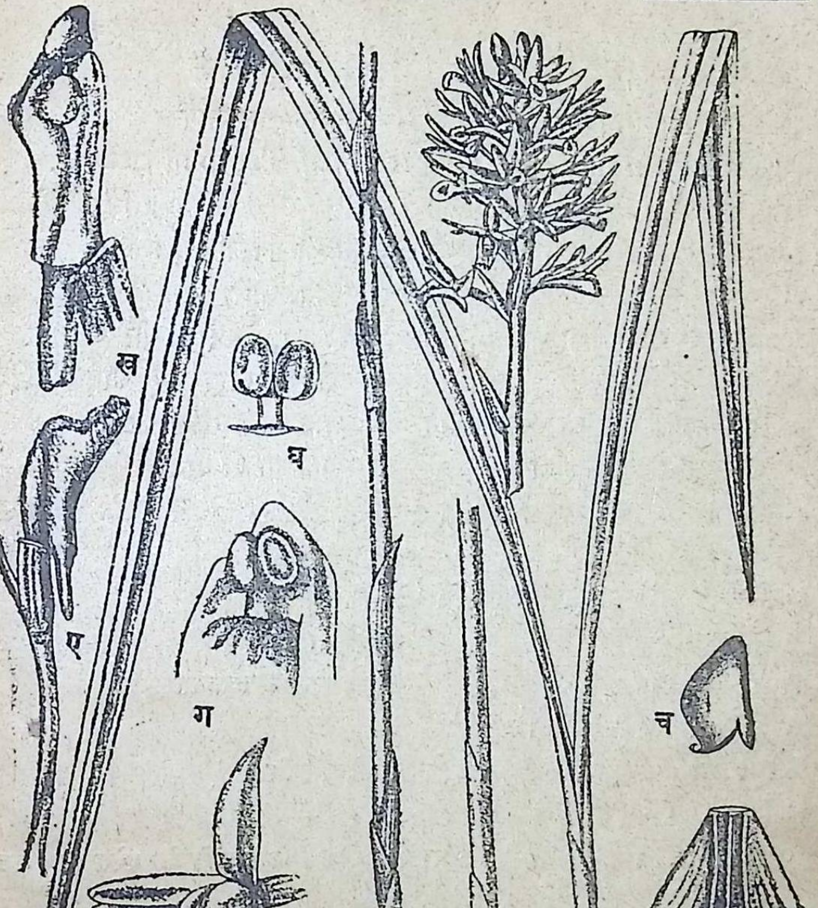

ORCHIS LAXIFLORA. LINN. (Orchibcae)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

। । ।

नाम **चित्र संख्या-१८३**

(१) संस्कृत-शाक (२) हिन्दी-सागवान

(३) गुजराती-सागवान (४) मराठी-सागवान

(५) अंग्रेजी-Indian oak, teak (६) लेटिन-Tectona gradis, Linn. F.

नैसर्गिक वर्ग-Verbenaceae.

वानस्पतिक वर्णन-यह विशाल वृक्ष जाति की वनस्पति है ।

मूल-पृथ्वीमें गहरी उतरी हुई मोटी

तना-हलकी कपिश या पाण्डुवर्णयुक्त विषमभग्न

शाखा-कपिश वर्णयुक्त, चतुष्कोणीय

पत्र-अभिमुख अण्डाकारी

पुष्प-श्वेत, सीधे, रोमश

फल-स्निग्ध, ०-५ से. मी. व्यासयुक्त, रोमश, बाह्यवरण कोमल और आभ्यन्तरिकभाग कठोर

बीज-एक या दो बीज

प्राप्तिस्थान-यह भारत में मध्यप्रान्त और दक्षिण प्रदेश यें बहुतायत से प्राप्त होती है ।

उपयोगी अंग-त्वक्,पत्र,. पुष्प, बीज, बीजतैल

रस-कषाय **वीर्य**-शीत **विपाक**-कटु

गुण-रुक्ष, विषद, खर **दोषशमन**—कफवात

श. स. प्रभाव—सर्वशरीर

रोगोपयोग-प्रमेह, कुष्ठ, रक्तपित्त, शोथ, कृमि

मात्रा—चूर्ण-२ से ४ माशा **अनुपान**—शहद

वानस्पतिक विकृतियां-इसके पत्तों के मध्यमे अण्डाकृति के श्वेत दाग पड जाते हैं ।

विशेष-(१) इसको काष्ठ से Tar निकाला जाता है और अलसी के तैल का प्रतिनिधि है ।

(२) The bark cotains a dye which is made use of in the Celebes for coloring matting a yellowish-brown—*DASTUR*.

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चित्रसंख्या १८३

सागवान

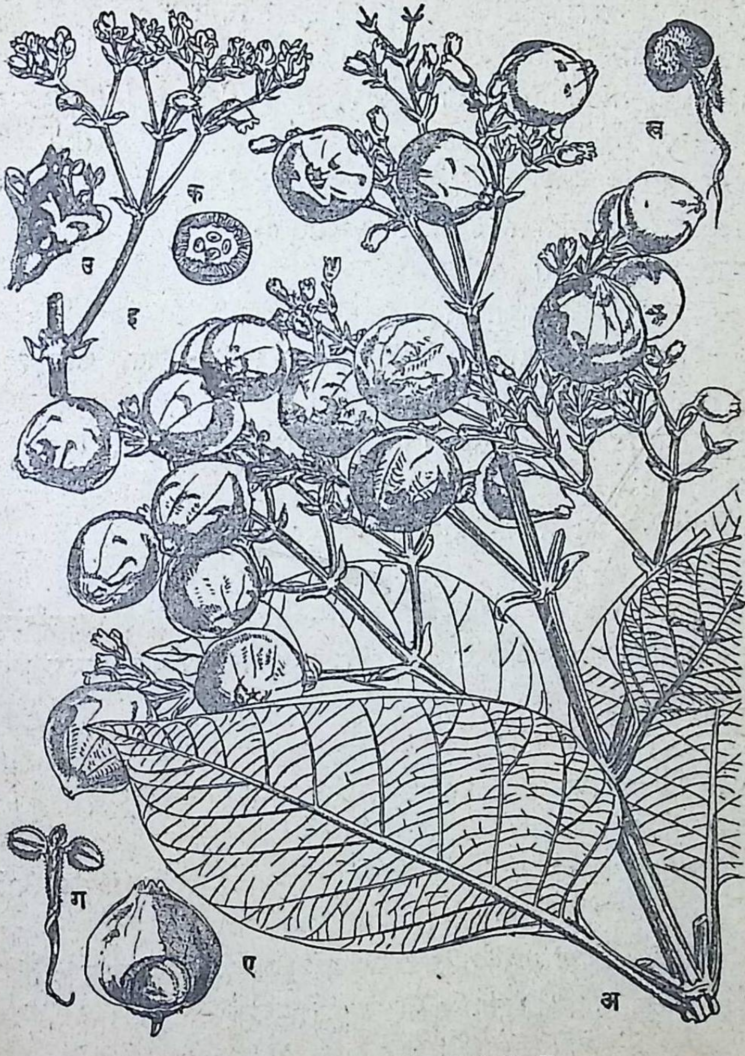

TECTONA GRADIS, LINN. F.

(Verbenaceae)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

सिघाडा

नाम **चित्र संख्या-१८४**

(१) संस्कृत–शृंगाटक (२) हिन्दी–सिघाडा
(३) गुजराती–शींघोंडा (४) मराठी–शेंगाडा
(५) अंग्रेजी–Singhara nut (६) लेटिन–Trapa bispinosa, Roxb.

नैसर्गिक वर्ग—Onagraceae.

वानस्पतिक वर्णन–यह लता जाति की वनस्पति है जो तालाबोंमें होती है।

मूल—जल में तैरनेवाली (Floating Roots)

पुष्प–पत्रकोणाग्रोद्भूत

तना—जल में ऊपरका ओर प्रवृत होनेवाला आकोची

फल–त्रिकोणाकारी, हरीत, जल में सड़ाने पर कृष्णवर्णयुक्त, कोण में दो या तीन कांटे होते हैं।

बीज–श्वेत लसदार गुदा होता है। सुखने पर यह कठोर हो जाता है।

पत्र–जल पर तैरते हैं, पत्रक्रम–एकान्तर, सादे

प्राप्तिस्थान—यह भारत में प्राय: सर्वत्र प्राप्त होता है।

उपयोगी अंग—फल

रस–मधुर **वीर्य**—शीत **विपाक**–मधुर

गुण–गुरु, विष्टम्भि, वाजिकरण, रुक्षग्राही **दोषशमन**–पितहर वातकफकर

श. स.प्रभाव—सर्वशरीर

रोगोपयोग— **अतिसार, रक्तप्रदर**, रक्तपित फुप्फुसरोग, दाह

मात्रा–चूर्ण–१ से २ तोला **अनुपान**—दूध, जल

विशेष–(१) कम्बोडिया निवासी मलेरिया या अन्य ज्वर से उत्पन्न निर्बल निवारणार्थ उपयोग में लेते हैं।

(२) सिघाडे का पेय पितप्रकृति वाले के लिये अति उत्तम है।

(३) इसमें Magnese की मात्रा अधिक होइी है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चित्र संख्या १८४

सिघाड़ा

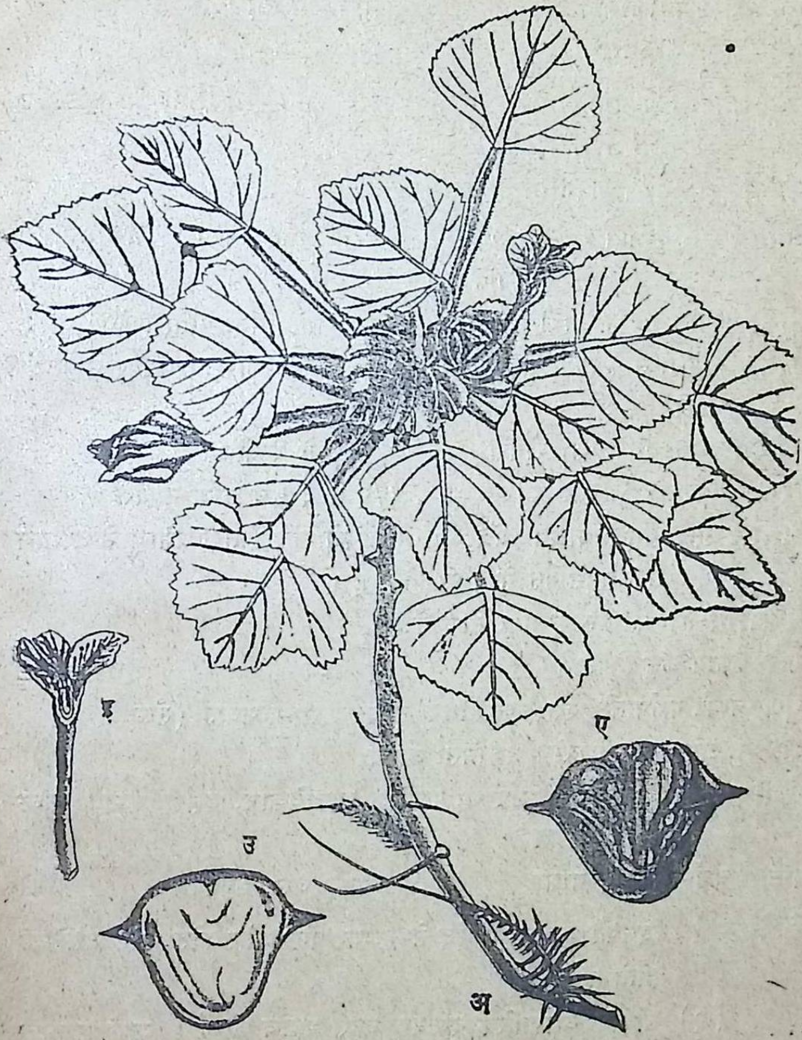

TRAPA BISPINOSA, ROXB.
(Onagraceae)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

सीसम

नाम **चित्र संख्या-१८५**

(१) संस्कृत-शिंशिपा (२) हिन्दी-सीशम

(३) गुजराती-सीसम (४) मराठी-सीसू

(५) अंग्रेजी-Sissoo, south Indian red wood. (६) लेटिन-Dalbergia sissoo, Roxb.

नैसर्गिक वर्ग-Papilionaceae.

वानस्पतिक वर्णन-यह लगभग साठ फीट ऊंची विशाल वृक्ष जाति की वनस्पति है।

मूल-पृथ्वीमें गहरी उतरी हुई मोटी **पुष्प**—अनियमित, पीताभश्वेत

तना-कपिश, त्वक्युक्त, खर, कठोर भारी, दृढ **फल**—पतले, कपिशपाण्डु, २ से ४ इंच लम्बे

शाखा—निम्नाभिमुख, रोमश **बीज**-२ से ४ बीजयुक्त

पत्र—एकान्तर, करतलाकार, श्लक्ष्ण, १/२ से ३ इंच लम्बे नुकीले

प्राप्तिस्थान-यह हिमालय में ३,००० फीट की ऊंचाई तक सिन्धु से आसाम तक बहुतायत से प्राप्त होता है।

उपयोगीअंग-काण्डत्वक् और बीज तैल

रस-कषाय कटु तिक्त **वीर्य**-उष्ण **विपाक**-कटु

गुण-वर्ण्य, गर्भपाती, रुक्ष, रक्तशोधक **दोषशमन**-कफवात (तैल)

श. स. प्रभाव-सर्वशरीर, प्रधानतः आन्त्र

रोगोपयोग-कण्डू, मूत्राशयरोग, पूयमेह रक्तविकार, स्तनशोथ, कुष्ठ फिरंगोपदंश

मात्रा-चूर्ण-४ से ६ माशा **अनुपान**-जल; शहद

विशेष-(१) इसकी काण्डवर्ण भेद से-कृष्ण, पीत और श्वेत-तीन जातियां होती हैं।

(२) सीशम व्यापारिक दृष्टया बहुत महत्व का है। जहां मजबूत लचीलीलकड़ी की आवश्यकता होती हैं वहीं सर्वत्र इसीका प्रयोग किया जाता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चित्र मंख्या १८५

सीसम

DALBERGIA SISSOO, ROXB. (Papilionaceae,)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

सोया

नाम **चित्र संख्या—१८९**

(१) संस्कृत—शतपुष्पा (२) हिन्दी—सोया
(३) गुजराती—सुवा (४) मराठी—सोवा
(५) अंग्रेजी–Dill. (६) लेटिन–Peucedanum graveolens, Benth & Hook

नैसर्गिक वर्ग-Umbelliferae.

वानस्पतिक वर्णन–यह बहुवर्षायु क्षुप जाति की वनस्पति है। जो धनिये से मिलती जुलती है।

मूल—साधारण, सूत्रवत्,
पुष्प–पीतवर्ण युक्त,
तना कोमल, हरित
फल-छोटे,
शाखा-पतली छोटीं, हरिताभ
बीज-एक रेखा में दो दो
पत्र-पक्षाकार

प्राप्तिस्थान-यह भारत में प्राय: सर्वत्र प्राप्त होती है।

उपयोगी अंग—बीज और तैल

रस—कटु तिक्त **वीर्य**—उष्ण **विपाक**-कटु

गुण-स्निग्ध, लघु, तीक्ष्ण, दीपन स्निग्ध, मेध्य
दोषशमन-कफवात, पीतकर

श. स. प्रभाव-उदर

योग—
अर्क सोया (वातउदरशूल)

रोगोपयोग-ज्वर, नैत्ररोग, शूल, व्रण उदरशूल, पक्षाघात, अर्दित, संधिशूल

मात्रा-अर्क-४० से ६० विन्दु

अनुपान-जल, अर्क के साथ प्राय: Lime water देते हैं।

विशेष-(१) इसंके बीजों में तीन प्रतिशत सुगन्धित तैल होता ह।
(२) केसे और महस्कर के धनानुसार यह कृमि (Hook worm) को नष्ट करने में बहुत लाभप्रद है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चित्र संख्या-१८६

सोया

PEUCEDANUM GRAVEOLENS, BENTH & HOOK.
(Umbelliferae)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

श्लेष्मातक

नाम **चित्र संख्या–१८७**

(१) संस्कृत—श्लेष्मातक (२) हिन्दी—लिसोड़ा

(३) गुजराती—वडगुन्दा (४) मराठी—भोंकर

(५) अंग्रेजी–Sebestan, clammy cherry (६) लैंटिन–Cordia dichotoma, Forst. (syn. Codia myxa, Linn.)

नैसर्गिक वर्ग–Boraginaceae.

वानस्पतिक वर्णन–यह मध्यमाकारी वृक्ष जाति की वनस्पति है।

मूल–पृथ्वी में प्रवेश होते ही विभक्त होने लगता है

पुष्प–छोटे श्वेत गुच्छदार एकलिंगी और द्विलिंगी पुष्प साथ होते है।

तना—४ इंच से १२ फीट व्यास युक्त, वर्ण कपीश

फल—हरित (अपक्व), पीताभ श्वेत (पक्व) ०–७५ इंच लम्बे.

शाखा–विस्तृत और ऊंची उठीहुई

बीज–एकसे चार बीज युक्त. रक्ताभ पीत

पत्र–खर, पत्रक्रम–एकान्तर; उपपत्र रहित, अखंड मोटे, रोमश, ३ से ४ इंच लम्बे.

प्राप्तिस्थान—यह हिमालयमें ५००० फीटकी ऊंचाई तक सर्वत्र प्राप्त होतेहै।

उपयोगी अंग–काण्ड त्वक, पत्र और फल

रस– मधुर कषाय तिक्त **वीर्य**–शीत **विपाक**–कटु

गुण—केश्य, गुरु, स्निग्ध, संकोचाक. **दोषशमन**–कफपित

श. स. प्रभाव–मूत्र संस्थान

रोगोपयोग–कास, **अतिसार**, **मूत्रकृच्छ**, व्रण, विसर्प, कुष्ठ, प्रतिश्याय, ज्वर, **पूयमेह**

मात्रा—चूर्ण २ से ४ माशा **अनुपान**–जल मधु और शर्करा.

विशेष (१) इसके फल का रस रंग बनाने के काम में लाया जाता है।

(२) जावा द्विप के निवासी इसके काण्डत्वक् के क्वाथ का जीर्ण ज्वर में प्रयोग करते हैं।

(३) The tree is host of lac insects. *DASTUR.*

(४) तीक्ष्ण विरेचन के योगों में इसको मिला कर देने से उनका दोष निवारण करतां है।

(५) प्रतिनिधि द्रव्य-उन्नाव

(६) दर्पनाशक द्रव्य-आंवला.

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चित्र संख्या १८७

इलेष्मातक

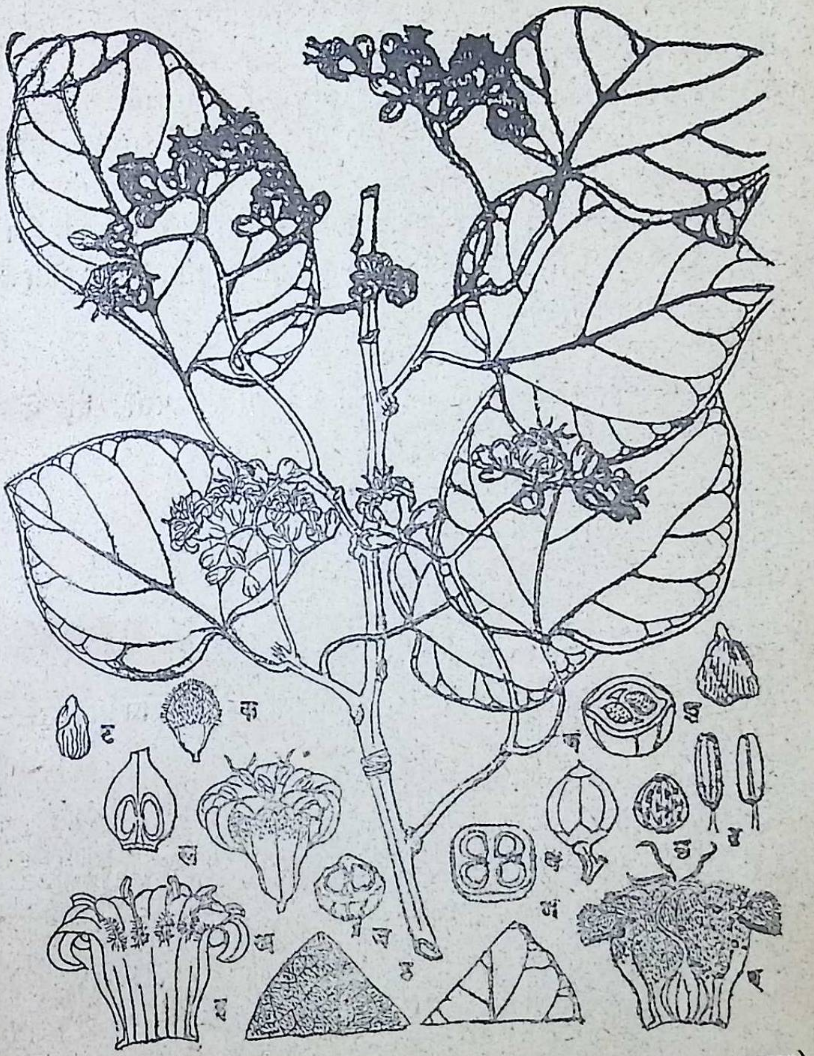

CORDIA DICHOTOMA, FORST. (SYN. CODIA MYXA, LINN)

(Boraginaceae)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

हंसराज

नाम **चित्र संख्या १८८**

(१) संस्कृत—हसपदी (२) हिन्दी—हंसराज

(३) गुजराती—हंसराज (४) मराठी—हंसराज

(५) अंग्रेजी-The maidens hair fern (६) लेटिन–Adiantum lunulatum, Burm.

नैसर्गिक वर्ग–Filics.

वानस्पतिक वर्णन-यह एक से दो फीट ऊंची क्षुप जाति की वनस्पति है। जो जलाशयोंके किनारे शीतप्रधान स्थानोंमें विशेष होती है।

शाखा–कृष्णवर्णयुक्त, श्लक्ष्ण, स्निग्ध. **पुष्प**—अपुष्प

पत्र–छोटे, मुस्तासे मिलते जुलते, प्रथम पीतवर्णयुक्त के पत्तों, बाद में कृष्णाभ हरित

प्राप्तिस्थान–यह भारत में प्रायः सर्वत्र प्राप्त होती है।

उपयोगी अंग–पंचांग

रस—मधुर **वीर्य**—शीत **विपाक**-मधुर

गुण-गुरु कण्ठय रोपण, ग्राही, लेखन **दोषशमन**—कफ

श. स. प्रभाव—श्वासोच्छवास संस्थान

रोगोपयोग-दाह, रक्तदोष, अतिसार, लूताविष, शोथ, कास फुफ्फुस-शोथ; ज्वर

मात्रा—चूर्ण–२ से ६ माशा, शर्बत–१/२ से १ तोला

विशेष-(१) इसका विशेष मात्रा में वामक है।

(२) It is worked of with tochre and applied locally for erysipelataus inflammations–Kirtikar & Basu.

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चित्र संख्या १८८

हंसराज

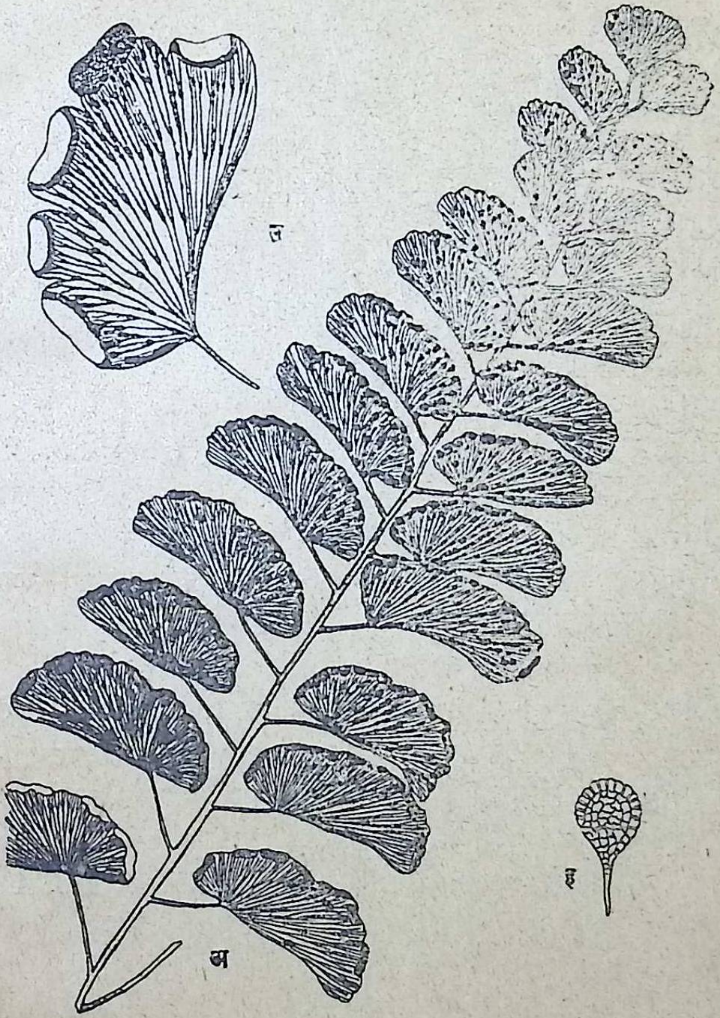

ADIANTUM LUNULATUM, BURM.

(Filics)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

हाडजोड

नाम **चित्र संख्या—१८९**

(१) संस्कृत–अस्थिसंहार, व्रजवल्ली (२) हिन्दी–हाडजोड
(३) गुजराती–हाडसोंकल (४) मराठी–कांडवेल
(५) लेटिन–Vitis quadrangularis, Wall.
नैसर्गिक वर्ग–Vitaceae.

वानस्पतिकवर्णन—यह लता जाति की वनस्पति है। प्रत्येक चार छः अंगुल की दूरी पर ग्रंथि होती है।

पुष्प—गुलाबी और श्वेतवर्णयुक्त
तना–चतुष्कोणीय, हरित, पुरानेहो पर पत्ररहित **फल**–मटर के समान छोटे रक्तवर्णयुक्त
बीज–एकबीजी
शाखा—से सूत्र निकलते हैं।
पत्र–एकान्तर, एकाकी २.५ से ५ से. मी. लम्बे, अण्डाकार
प्राप्तिस्थान—यह भारत, मलायाद्वीप समूह और लंकामें प्रायः सर्वत्र प्राप्त होती है।
उपयोगी अंग—पंचाग, प्रधानतः काण्ड
रस—मधुर **वीर्य**—उष्ण **विपाक**—अम्ल
गुण–रुक्ष्य, सारक, दीपन, वृष्ण, बल्य **दोषशमन**—वातकफ
श. स. प्रभाव—संधि संस्थान
रोगोपयोग—कृमि, अर्श, **अस्थिसंधान**, अतिसार, कर्णपीडा, उदररोग, **उपदंश**, वातरोग, अजीर्ण, Scurvy **आर्तवविकार**,
मात्रा—चूर्ण-२ से ४ माशा **अनुपान**–जल, मधु, शर्करा
विशेष–(१) The Rongas of East Africa apply the Pounded stem to wounds.–*KIRTIKAR & BASU.*

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चित्र संख्या १८९

हाड़जोड़

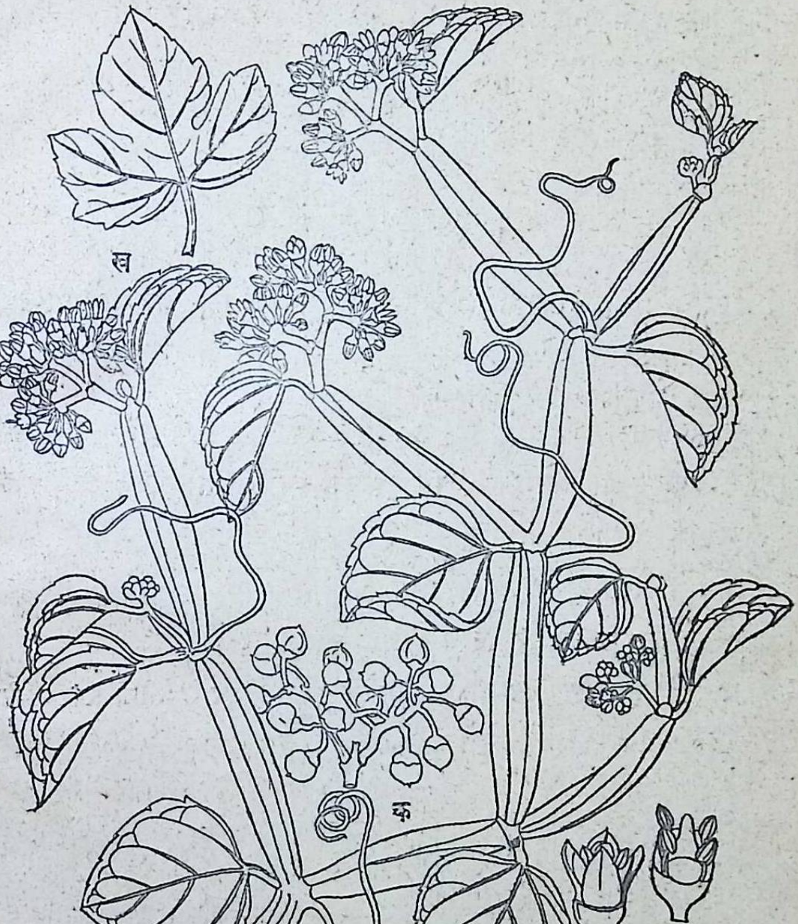

VITIS QUADRANGULARIS, WALL.

(Vitaceae.)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

हैमवतीवचा

नाम **चित्रसंख्या-१९०**

(१) संस्कृत-हैमवती वचा (२) हिन्दी-बालवच

(३) गुजराती-बाळवच (४) मराठी-बालबेखड

(५) लेटिन-Iris versicolor, Linn.

नैसर्गिक वर्ग-Iridaceae.

वानस्पतिक वर्णन-यह क्षुप जाति की वनस्पति है ।

मूल-कन्द **पुष्प**-श्वेत, रक्त, आसमानी

प्राप्तिस्थान-यह भारत में काश्मीर और ईरान में बहुतायत से प्राप्त होती है ।

उपयोगी अंग-मूल

रस-महाकषाय **वीर्य**-उष्ण **विपाक**-कटु

गुण-लेखनीय, कफनिःसारक **दोषशमन**-कफपित

श. स. प्रभाव-पाचन संस्थान

रोगोपयोग-प्रतिश्याय, कास, आमवात

मात्रा—२ से ४ माशा (चूर्ण) **अनुपान**-शहद

विशेष-(१) यह श्वेत, रक्त और आसमानी पुष्प वर्णभेद से तीन प्रकार की होती है ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चित्र संख्या १९०

हैमवतीवचा

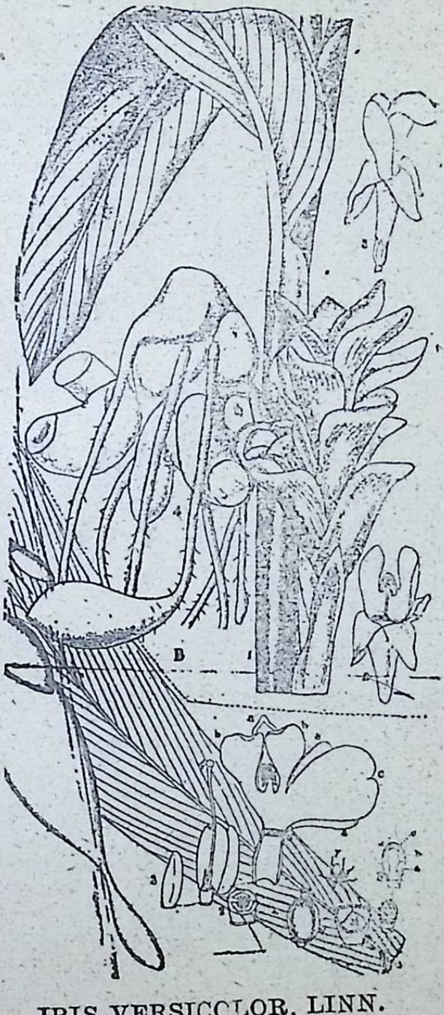

IRIS VERSICOLOR, LINN.
(Iridaceae)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

वनककडी

नाम **चित्र संख्या-१९१**

(१) संस्कृत - वनवृन्ताक
(२) हिन्दी–वनककड़ी
(३) गुजराती–वनककडी
(४) लेटिन–Podophyllum embodi, Wall.

नैसर्गिक वर्ग–Berberidae.

वानस्पतिक वर्णन–यह लता जाति की वनस्पति है।

मूल-सूत्री

पुष्प—रक्त वर्ण युक्त

तना—चतुष्कोणीय

फल—वीज कोष एक, मांसल

पत्र—सादे

प्राप्तिस्थान–यह हिमालय के काश्मीर प्रदेश में विशेष प्राप्त होती हैं।

उपयोगी अंग—मूल

रस—कटु **वीर्य**—उष्ण **विपाक**-कटु

गुण—पित्तसारक, विरेचक **दोषशमन**-पित्त

श.स. प्रभाव- पाचन संस्थान

रोगोपयोग—आमवात, वातरक्त त्वग्रोग, उदररोग

मात्रा— २ से ५ रत्ति

अनुपान–जल

विशेष– (१) इसमें Podophyllin और podophyllotorin नामक दो रासायनिक तत्व प्राप्त होते हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

वनककडी

चित्र संख्या १९१

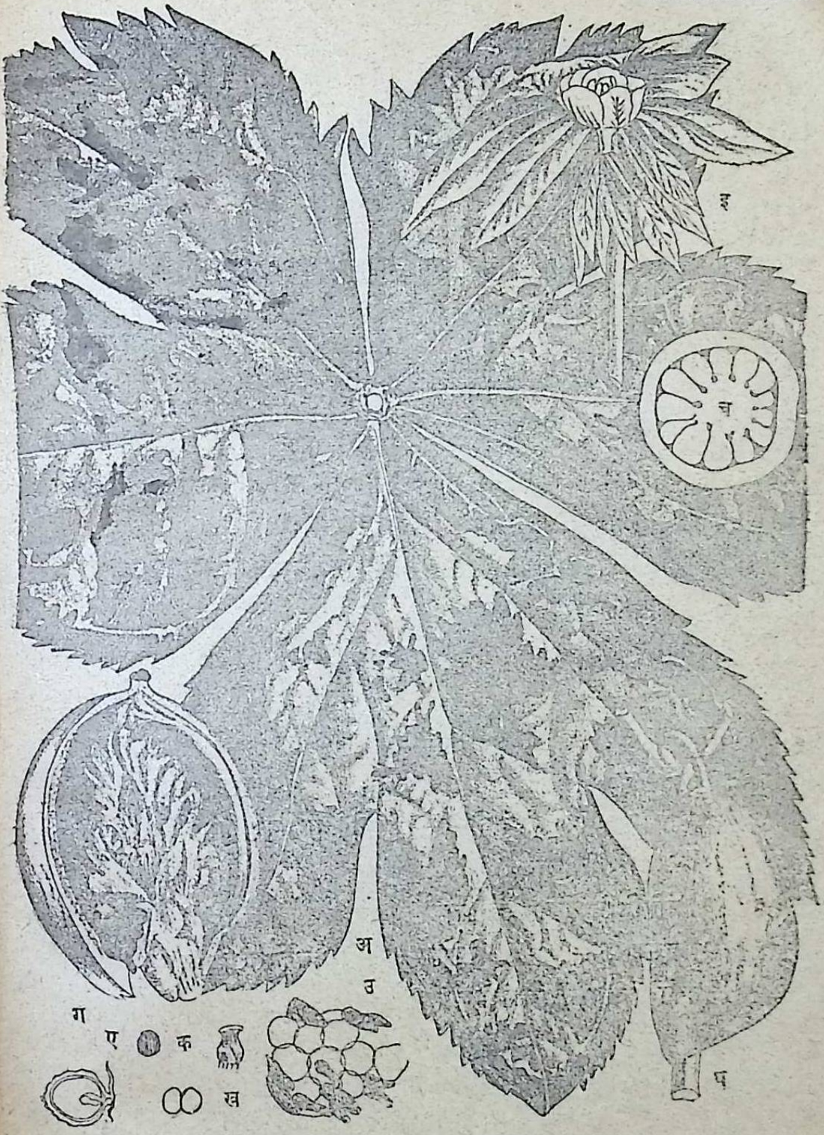

PODOPHYLLUM EMBODI, WALL.
(Berberidae)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

वदमुश्त (वेतस्)

नाम **चित्र संख्या १९२**

(१) संस्कृत—वेतस् (२) हिन्दी—वेदमुश्क
(३) गुजराती–वेदमुश्क (४) लेटिन–Salix caprera, Linn.

नैसर्गिक वर्ग—Salicaceae.

वानस्पतिक वर्णन—यह पन्द्रह से तीस फीट ऊंची वृक्ष जाति की वनस्पति है।

मूल—पृथ्वी में गहरी उतरी हुई **पुष्प**—पत्तों के पहले आते है। सुगन्धित पीत वर्ण युक्त

तना—गोल

शाखा—क्रम अभिमुख **बीज**—पुष्पल, रोमश

पत्र—एकान्तर, गहरे हरे, लम्बगोल, कंगूरेदार और नोकदार होते है।

प्राप्तिस्थान–यह उत्तर पश्चिमी सीमप्रान्त और ईरान में बहुतायत से प्राप्त होती है।

उपयोगी अंग–पत्र और फल

रस–कटु तिक्त **वीर्य**–शीत **विपाक**–कटु

गुण—अग्निदीपपक, उत्तेजक, कामोद्दीपक, मूत्रल

श. स. प्रभाव–यकृत सर्वशरीर प्रधानतः हृदय, **दोषशमन**–कफवात

रोगोपयोग–नैत्ररोग, यकृतरोग, योनिरोग, विसर्प मूत्रकृच्छ, रक्तविकार, हृदरोग

मात्रा—अर्क-४ से ८ तोला

विशेष-(१) प्रतिनिधि द्रव्य-सिकोना

(२) इसमें Salicine नामक रासायनिक तत्व प्राप्त होता है जिसका प्रधान उत्तेजक गुण है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

बदमुश्त (वेतस्) चित्र संख्या १९२

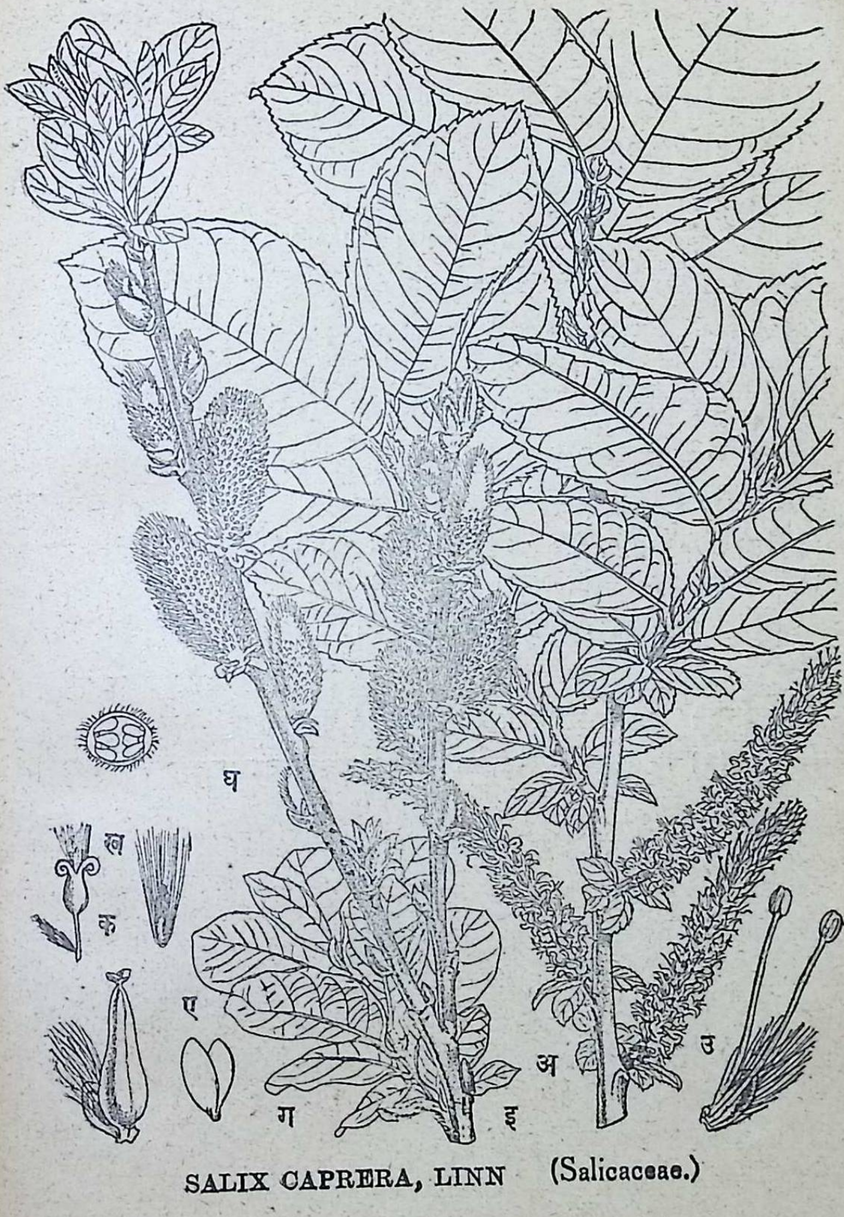

SALIX CAPRERA, LINN (Salicaceae.)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

रक्तचन्दन

नाम चित्र संख्या—१९३

(१) संस्कृत—रक्तचंदन (२) हिन्दी—लालचन्दन; रक्तचंदन

(३) गुजराती-लालचन्दन (४) लेटिन-Pterocarpus santalinus, Linn

नैसर्गिक वर्ग— Papilionaceae

वानस्पतिक वर्णन—यह वृक्ष जाति की वनस्पति है।

मूल—लम्बी, पृथ्वी में फैली हुई पुष्प—पीताभ श्वेत

तना—सुगन्धित श्लक्षण, फ़ीके फल-छोटे

शाखा-कठोर श्लक्षण, कषायक्तिक्त स्वादयुक्त

प्राप्तस्थान—यह भारत के मलावार प्रान्त में सर्वत्र प्राप्त होते हैं।

उपयोगी अंग—काष्ठ

रस-तिक्त मधुर वीर्य-शीत विपाक—कटु

गुण—वृष्य, चक्षुष्प, गुरु दोष—पित कफ

श. स. प्रभाव—त्वचा, रक्त

रोगोपयोग— ज्वर, कास, कृमि वमन, विष शोथ

मात्रा—२ से ४ माशा

विशेष (१)—इसका लेप त्वग्र रोगों में बहुत उपयोगी है।

(२) यह रक्तविकारजन्य रोगों में अत्यंत लाभप्रद है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

रक्तचन्दन चित्र संख्या १९३

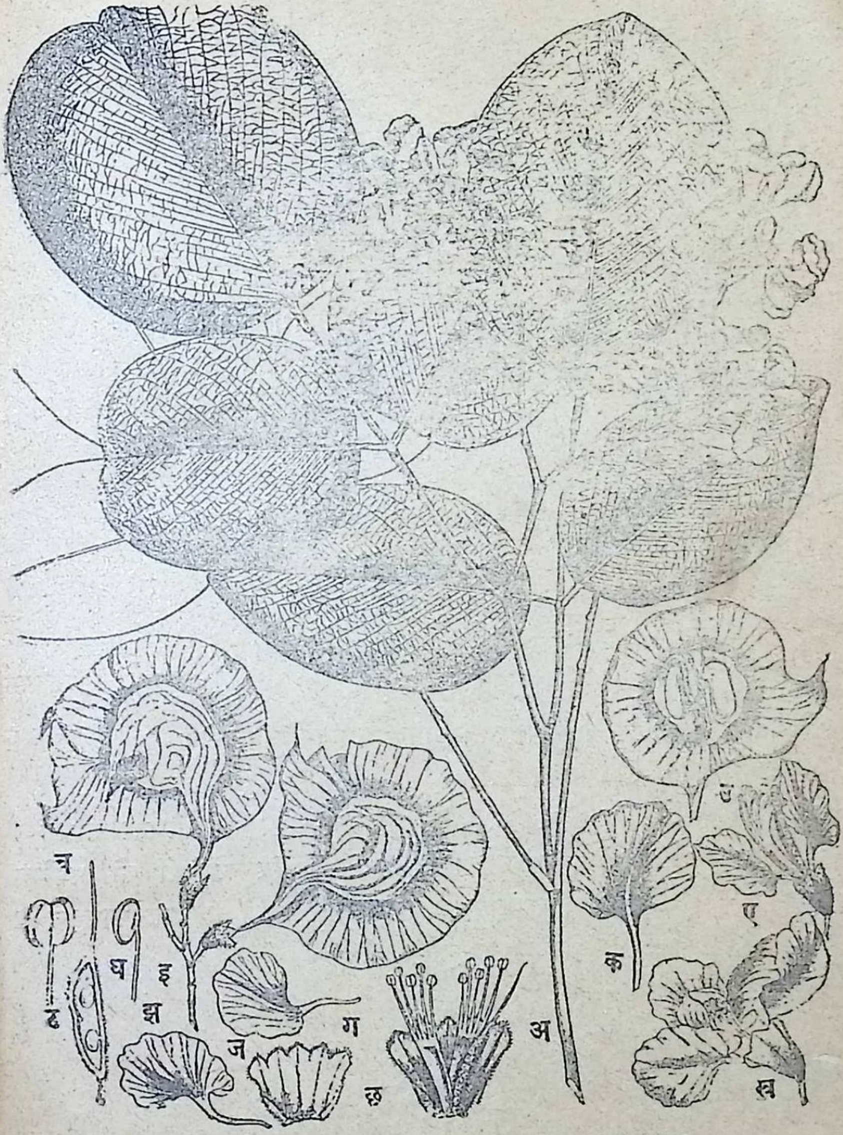

PTEROCARPUS SANTALINUS, LINN
(Papilionaceae)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

[अन्वेषणार्थ] **जोगीपादशाह**

नाम **चित्रसंख्या—१९४**

(१) हिन्दी–जोगीपादशाह

(२) गुजराती–जोगीपादशाह

(३) लेटिन–Saussurea Sarca, Linn.

नैसर्गिक वर्ग—Compositae.

वानस्पतिक वर्णन—यह काण्ड रहित क्षुप जाति की वनस्पति है।

मूल-छोटे सूत्रवत् **पुष्प**–पीताभ कपिश

शाखा-छोटा स्निग्ध **फल**-छोटें श्वेत वर्ण युक्त रोमस

पत्र-एकान्तर, श्लक्षण **बीज**–बहु

प्राप्तिस्थान–यह काश्मीर में गुलवर्ग के समीपवर्ती प्रांत में १०,००० फीट की ऊंचाई पर सर्वत्र प्राप्त होते हैं।

उपयोगी अंग—पंचाग

रस—कषाय; **वीर्य**—उष्ण **विपाक**—कटु

गुण–बृहण, रक्त दोषान्तक, **दोषशमन**—वातकफ,

श. स. प्रभाव—त्वचा और आंज

रोगोपयोग–त्वग्रोग, वार्यसम्बन्धि विकार, ज्वर, आन्त्ररोग

मात्रा—चूर्ण २ से ४ मांशा **अनुपान**—दुग्ध का शहद

विशेष–(१) इस वनस्पति का मैने त्वग्रो रोगों और वीर्य क्षीणता सम्बन्धि विकारों में यथेष्ठ उपयोग किया है और रोगियों को पर्याप्त लाभ प्रद सिद्ध हुई। इसका आगे अन्वेषग वाछनीय हाने से पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत की हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चित्रसंख्या १९४

जोगीपादशाह

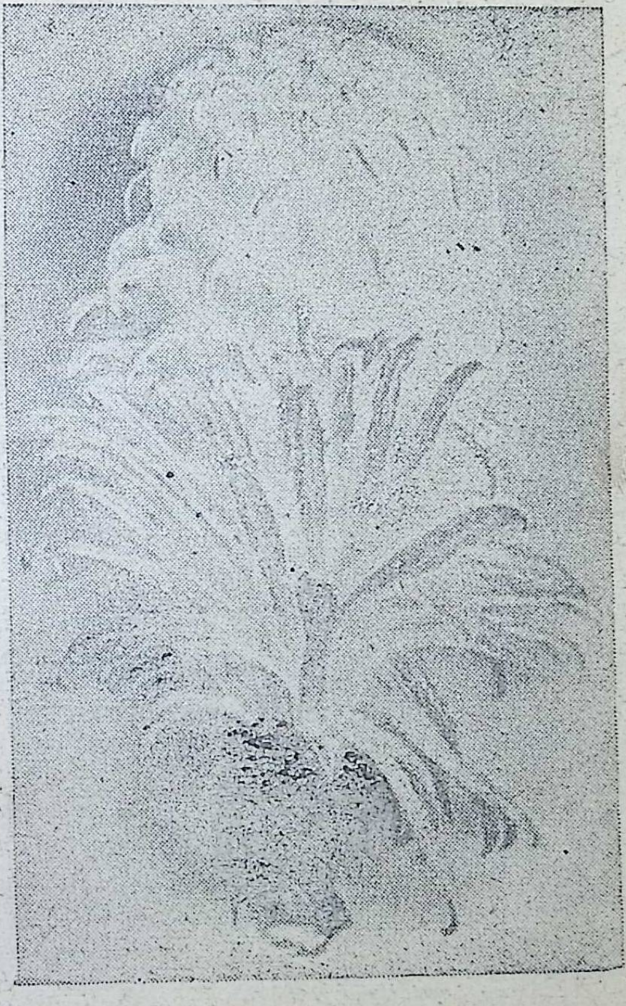

SAUSSUREA SARCA, LINN.
(Compositae.)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

[अनुवेषणार्थ] जुमकी बेर

नाम चित्रसंख्या—१९५

(१) गुजराती—जुनकी बेर (२) हिन्दी-जुनकी बेर

(३) लेटिन—Vaccinium myrists, Linn.

नैसर्गिक वर्ग Apocynaceae

वानस्पतिक वर्णन-यह वृक्ष जाति की वनस्पति है।

मूल—साधारण गुच्छदार पुष्प—नीलाभश्वेत

तना—गोल कुण्ठित कंटकयुक्त फल- कठोर

शाखा—गोल श्लक्षण पाण्डुवर्णयुक्त बीज—बहु

पत्र—गोलाकार एकान्तर सादे

प्राप्तिस्थान—यह हिमालय में काश्मीर में ७,००० फीट की ऊंचाई पर सर्वत्र प्राप्य होती है।

उपयोगी अंग—फल

रस-कषाय वीर्य-उष्ण विपाक-कटु

गुण—हृद्य, दीपन, शोथघ्न दोषशमन-कफ श. उ. प्रभाव-फुफ्फुस

रोगोपयोग—आन्त्रशोथ, आन्त्र विकार, त्वग्रोग, फुफ्फुसावरीणयशाध

मात्रा—चूर्ण २ से ४ माशा अनुपान—शहद

विशेष--इसका गुण Chloromaycitin से भी अत्युत्तम है। मैने इस वनस्पतिक Typhoid के रोगियों पर प्रयोग किया है। रोगियों को यथेष्ठ लाभप्रद सिद्ध हुआ है। अतः इसको आगामी अन्वेंषणके लिये पाठकों के लिये प्रधानतः प्रस्तुत की गई है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चित्र संख्या-१९५

जुमकी बेर

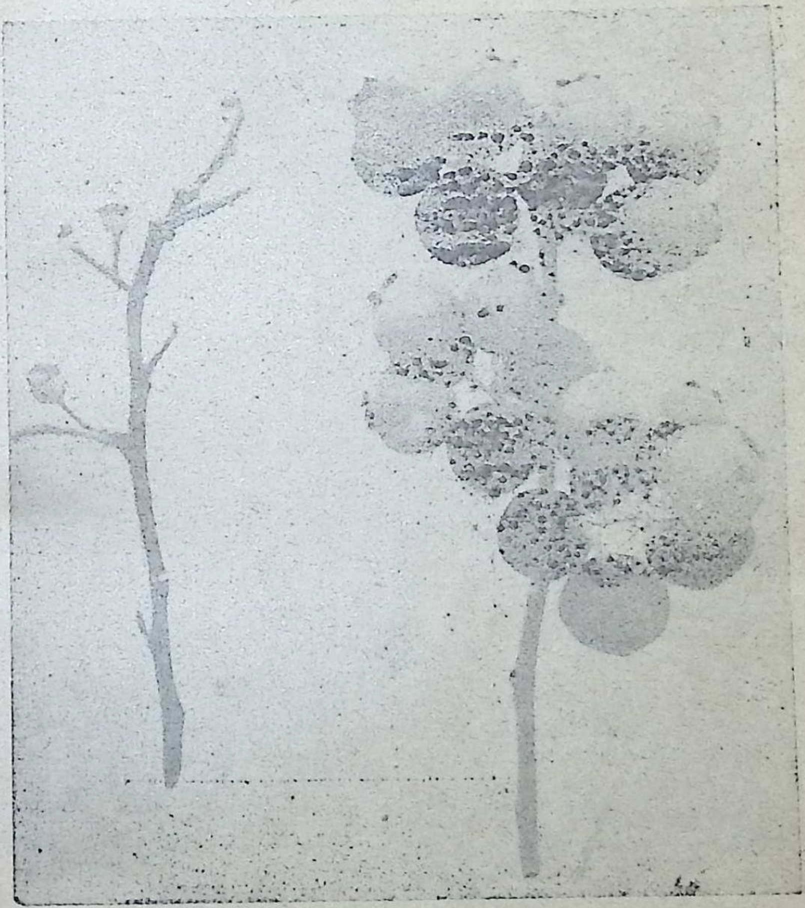

VACCINIUM MYRISTS, LINN.

(Apocynaceae)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

मूली

नाम चित्र संख्या—१९६

(१) संस्कृत—मूलक (२) हिन्दी—मूली

(३) गुजराती—मुळा (४) मराठी—मुळा

(५) लेटिन—Raphanus sativus, Linn.

नैसर्गिक वर्ग—Cruciferae

वानपस्तिक वर्णन—यह क्षुप जाति की वनस्पति है।

मूल—कन्द श्वेत **पुष्प**—श्वेत

तना—गोल हरिताभ, श्लक्षण **बीज**—श्वेत छोटे

पत्र—एकान्तर मूलोद्भूत **प्राप्तिस्थान**—यह भारतमें प्रायः सर्वत्रहोता है।

उपयोगी अंग—पंचाग

रस—कटुतिक्त **वीर्य**—उष्ण **विपाक**—कटु

गुण—हृद्य, रोचन, दीपन **दोष**—त्रिदोष

श. स. प्रभाव—पाचनसंस्थान

रोगोपयोग—अश्मरी, उदररोग, त्वग्राग, अर्श

मात्रा—१ से ३ माशा

विशेष—(१) मूली के पुष्प, और फल उत्तरोत्तर गुरु हैं।

(२) मूली के कन्द और बीजों में रंगविहिन, और गंधयुक्त तैल प्राप्त होता है, इस तैल में गन्धक तत्व की प्राप्ति होती है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

मूली

चित्र संख्या १९६

RAPHANUS SATI. S, L. NN
(C uciferae)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

वृक्षाम्ल (कोकम)

नाम — चित्र संख्या-१९७

(१) संस्कृत-वृक्षाम्ल (२) हिन्दी-कोकम

(३) गुजराती-कोकम (४) मराठी-कोकम

(५) लेटिन-Garcinia indica, Chois.

नैसर्गिक वर्ग—Guttiferae.

वानस्पतिक वर्णन-यह वृक्ष जाति की वनस्पति है।

मूल-पृथ्वी में गहरी उतरी हुए — पुष्प-पीताभ श्वेत

तना—गाल श्लक्षण — फल-छोटे, कृष्णाभ

शाखा—खर — बीज—गोल, बहु.

पत्र-अभिमुख, सादे अखण्ड,

प्राप्तिस्थान-यह भारत में कोंकण और मलावार प्रांतों में प्रायः सर्वत्र प्राप्त होता है।

उपयोगी अंग-बीज

रस—मधुर अम्ल — वीर्य-उष्ण — विपाक—अम्ल

गुण—रोचक, गुग्राही रुक्ष, दापन, — दोषशमन-वात

श. स. प्रभाव-पाचन संस्थान

रोगोपयोग-ग्रहणी, गुल्म अर्श, हृद्रोग, शूल, कृमि, त्वग्रोग

मात्रा—चूर्ण २ से ४ माशा — अनुपान-जल

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

वृक्षाम्ल (कोकम) चित्र संख्या १९७

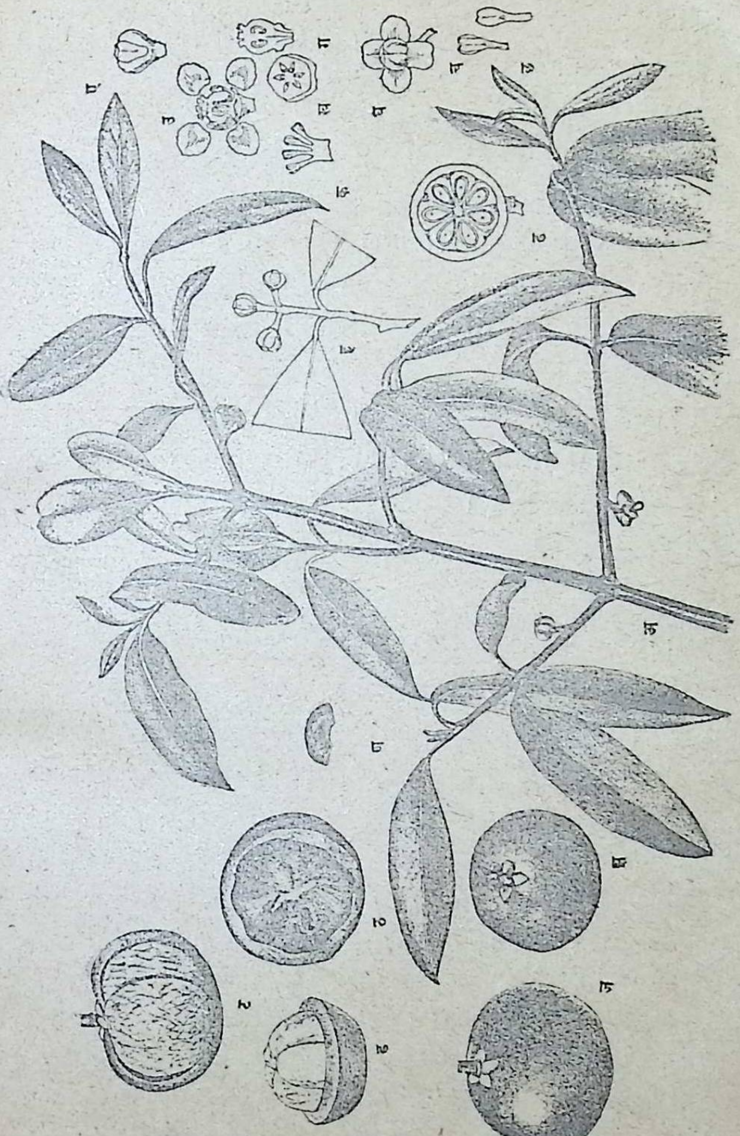

G RCINIA INDICA, CHOIS.
(Guttiferae)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

सिन्कोना

नाम

(१) संस्कृत—किंकिणी (२) हिन्दी—सिन्कोना

(३) गुजराती—सिन्कोना (४) मराठी—सिन्कोना

(५) लेटिन–Cinchona succirubra, Pavom.

नैसर्गिक वर्ग–Pubiaceae.

वानस्पतिक वर्णन–यह क्षुप जाति की वनस्पति है ।

मूल–पृथ्वी में गहरी उतरी हुई **पुष्प**–पीताभ श्वेत

तना—गोल कपिश वर्ण युक्त **फली**–कोमल कटु वीज

शाखा—श्लक्ष्ण

पत्र—एकान्तर

प्राप्तिस्थान–यह हिमालय में ७००० से २३००० फीट की उचाई तक सर्व प्राप्त होता है ।

उपयोगी अंग–त्वचा

रस–तिक्त **वीर्य**–उष्ण **विपाक**–कटु

गुण—अग्निवर्धक तापहर **दोषशमन**–वातकफ

श. स. प्रभाव–समस्तशरीर

रोगोपयोग–शिरःशूल, रजःकृच्छ्रता, विषमज्वर, शीतज्वर.

मात्रा—

घनसत्व—१ से ४ रति

द्रवसार—५ से १५ रति

सुरासार—३० से ६० बिन्दु

सुधीर—१ से ४ रति

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

हरीतकी

नाम

(१) संस्कृत—हरीतकी (२) हिन्दी-हरीतकी

(३) गुजराती—हरडे (४) मराठी-हरीतकी

(५) अंग्रेजी-Myrobalans. (६) लेटिन-Terminalia chebula, Linn.

नैसर्गिक वर्ग—Combretaceae.

वानस्पतिक वर्णन-यह बहुत ऊंची वृक्ष जाति की वनस्पति होती है।

मूल-पृथ्वी में गहरी उतरी हुई पुष्प-श्वेत या पीले

तना-लम्बा, सीधा फल-१ से दो इंच लम्बा

शाखा-कामल, गोल भरी

पत्र-अडूसे के पत्रों के समान तीन से आठ इंच लम्बे.

प्राप्तिस्थान—यह उतरी भारत, बंगाल, बम्बई आदि समस्त प्रान्तों में प्राप्त होती है।

उपयोगी अंग—फल

रस-कषाय (प्रधान) अम्ल, तिक्त, कटु वीर्य-उष्ण विपाक-मधुर

गुण-दीपन, रुक्ष, चक्षुष्य दोषशमन-त्रिदोष

श. स. प्रभाव—आन्त्र, सर्व शरीर

योग—

त्रिफला (उदरराग)

अमृतहरितकी-(अजीर्ण)

रोगोपयोग-विषमज्वर, कामला, अर्श, प्रमेह, हिक्का, उदरशूल, अजीर्ण, पाण्डु, वातरक्त

मात्रा—१-१/२ से ३ माशा

विशेष (१) "हरीतिकी मनुष्याणां मातव हितकारिणी।
कदाचित् कुप्यते माता, नोदरस्था हरीतिकी ।।"
"यस्य माता गृहे नास्ति तस्य माता हरीतिकी"

(२) इसमें पच्चीस प्रतिशत Tannic acid रहता है।

२६

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

हरमल

नाम

(१) हिन्दी–हरमल (२) गुजराती–हरमल

(३) मराठी–हरमळ (४) अंग्रेजी -Harmla.

(५) लेटिन–Panganum harmala, Linn.

नैसर्गिक वर्ग-Rutaceae.

वानस्पतिक वर्णन–यह एक से तीन फीट ऊंची क्षुप जाति की वनस्पति है।

पुष्प-नियमित, पत्राकोणोद्भूत, श्वेत वर्ण युक्त

तना-क्षुद्र किंचित चतुष्कोणीय,हरित **फल**–त्रिखण्डी

शाखा छोटी गोल हरित **बीज**–त्रिकोणी प्रत्येक खण्डमें एक स्वाद में कटु, मेहन्दी के समान.

पत्र-एकान्तर, २ से ३ इंच लम्बे, बारीक बारीक

प्राप्तिस्थान–यह भारत में संयुक्तप्रांत, दक्षिण, कोकण और अफगानिस्तान में सर्वत्र प्राप्त होती है।

उपयोगी अंग–बीज कटु

रस–कटु **वीर्य**–उष्ण **विपाक**—कटु

गुण–मादक, पौष्टिक,आर्तवप्रवर्तक एकवर्षायु **दोषशमन**–वातकफ

श. स. प्रभाव-प्रजनन संस्थान

रोगोपयोग-अपस्मार, पक्षाघात, वातरोग, आर्तवविकार, कर्णरोग, वात और कफप्रधानरोग, फुफ्फुसरोग कास, श्वास

मात्रा–१ से ३ माशा **अनुपान**–जल, शहद शर्करा.

विशेष–(१) इसकी वर्ण भेद से कृष्ण और श्वेत दो जातिया होती है।

(२) इसमें Harmine, Harmaline नामक दो रसायनिक तत्व प्राप्त होते हैं।

(३) इसकी गर्भाशय पर अर्गट के समान क्रिया होंती है।

(४) आमवात में इसका प्रयोग करने से Soda salycalic acid की अपेक्षा शीघ्र गुणकारी है।

(५) ईरान से आने वाले बीज उत्तम होते है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

वृक्षदनी [बांदा]

नाम

(१) संस्कृत—वृक्षादनी (२) हिन्दी—बांदा

(३) गुजराती-बांदा (४) मराठी-बांड गुळ

(५) लेटिन— Loranthus longiflorus, Desr.

नैसर्गिक वर्ग—Loranthaceae

वानस्पतिक वर्णन—यह पराश्रमी लता जाति की वनस्पति होती है। वृक्षों पर शाखा का आश्रम रूप खडी होती है।

मूल—सूत्रवत् पुष्प—श्वेत; गुलाबी या जामुनी

फल—मांसल

शाखा—चतुष्कोणीय बीज—निग्ध

पत्र-अभिमुख, मांसल, लम्बगोल, ३ से ६ इंच लम्बे १-२ इंच चौड़े,

प्राप्तिस्थान—यह भारत में प्रायः सर्वत्र प्राप्त होते हैं।

उपयोगी अंग—पत्र और पुष्प

रस—तिक्त, कषाय मधर वीर्य—शीत विपाक—कटु

गुण—मूत्र विरेचन; ग्राही दोषशमन— कफ

श. स. प्रभाव—वात संस्थान

रोगोपयोग-वाम रक्त, व्रण, विष, अशमी आर्तवविकार उन्माद तरुण-शोथ अपस्मार

मात्रा—चूर्ण २ से ४ माशा

अनुपान—जल

विशेष—(१) यह Mania और Asthma में बहुत ही उपयोगी वनस्यति है।

(२) यह आर्सव विकार में बहुतायत से उपयोग का जाती है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

पृष्ठ संख्या २३७ का चित्र संख्या ११९

निगुण्डी, सम्हालु

VITEX NIGUNDO LINN (Verb-naceae)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

पृष्ठ संख्या २४९ का

चित्र संख्या-१२

पंजूली (भुई आँवला)

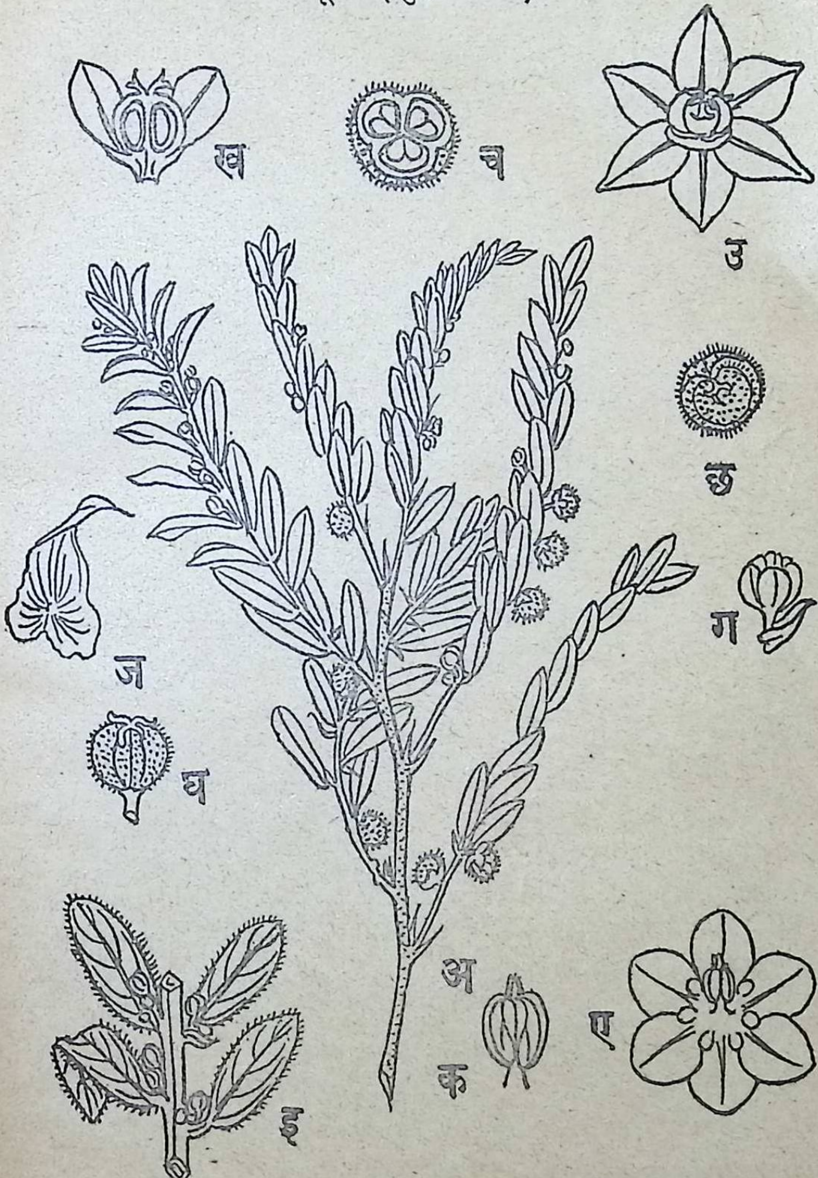

PTHYLLANTHUS NIRURI, LINN. (Euphorbiaceae)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

पृष्ठ संख्या २७५ का

चित्र संख्या १९६

बाँस

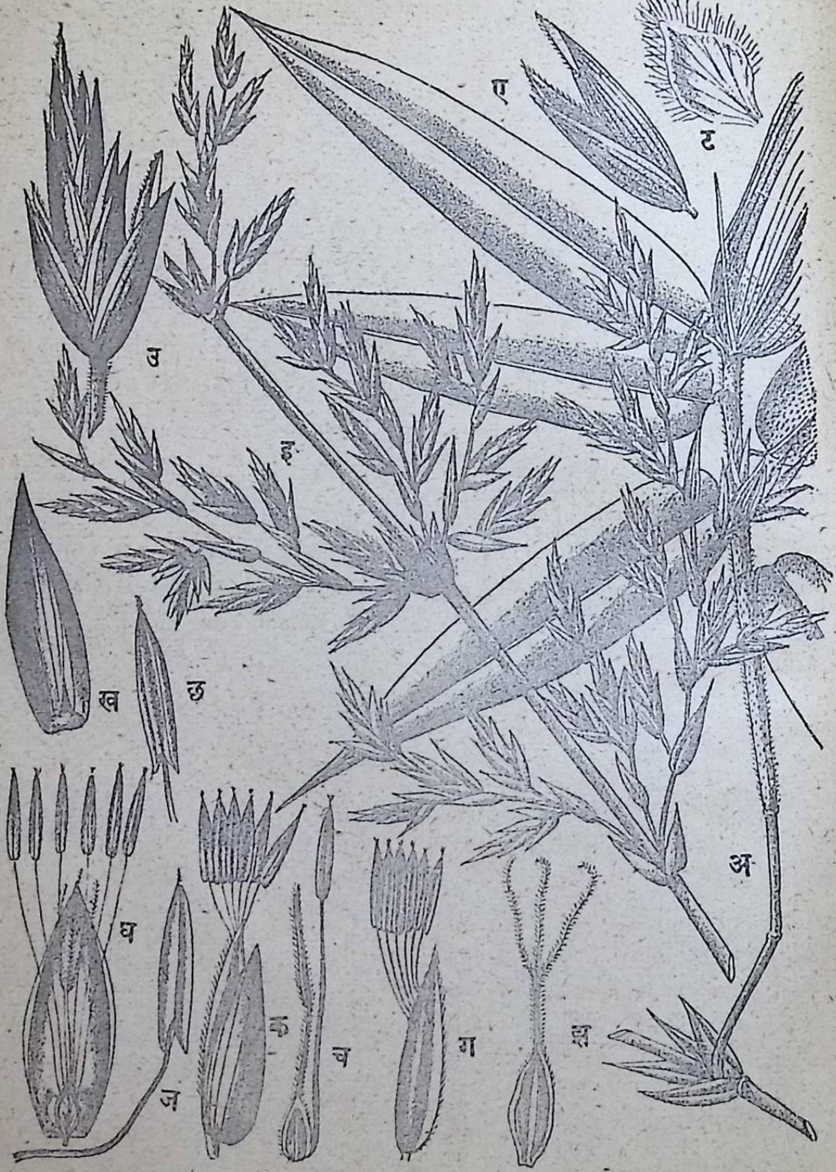

BAMBUSA ARUNDINACEA, RETZ. (Graminae)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

पृष्ठ संख्या ३१९ का

चित्र संख्या १६०

लोध्र

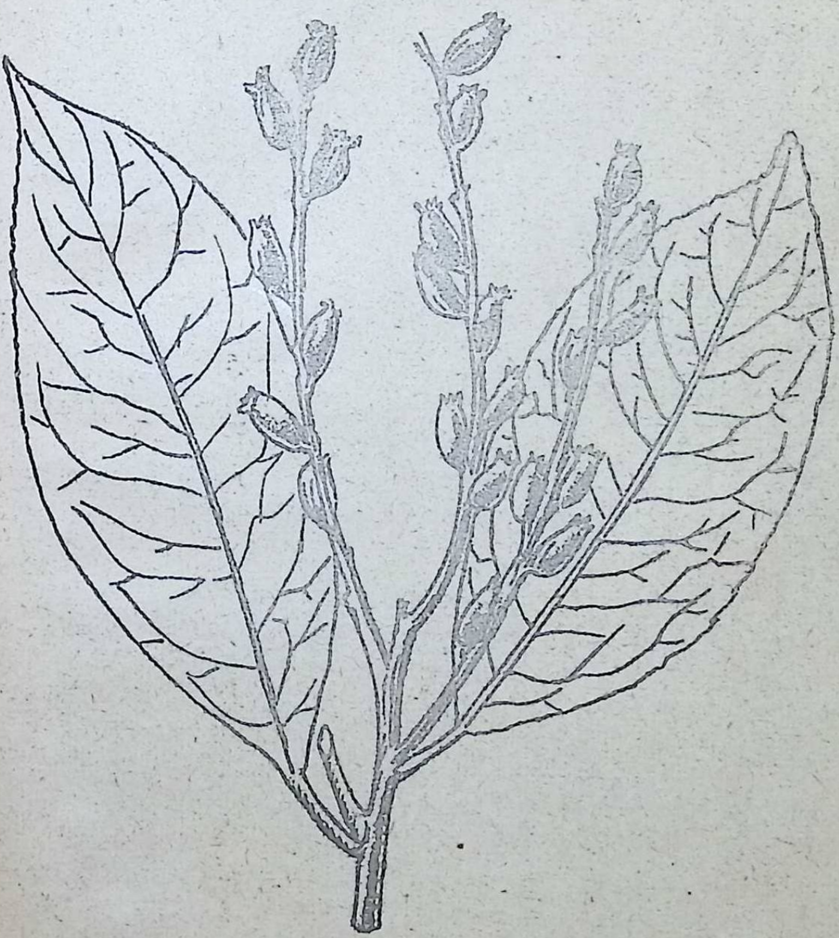

SYMPLOCOS RACEMOSA ROXB

(Styraceae)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

पृष्ठ संख्या २४१ का

चित्र संख्या १२१

पवार

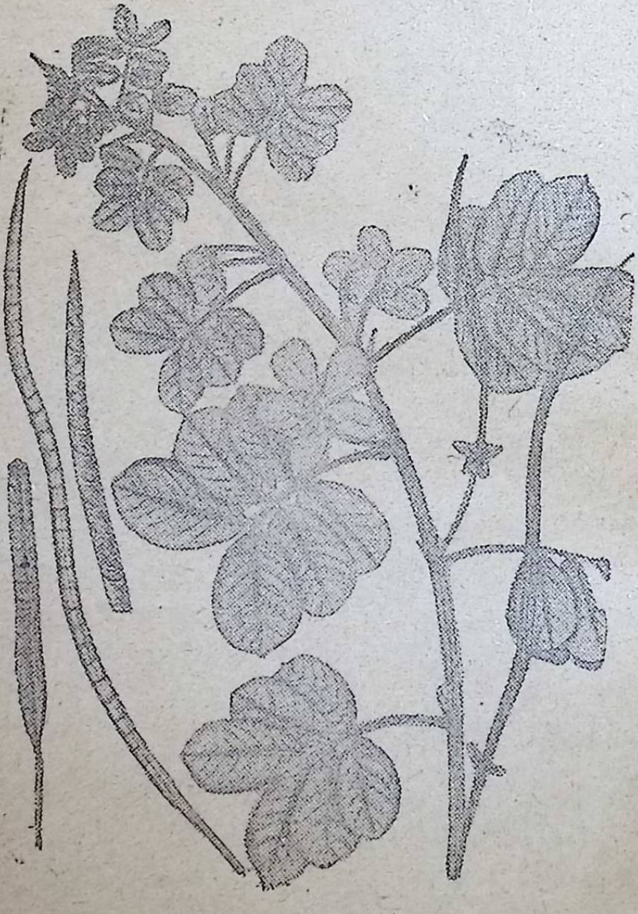

CASSIA TORA LINN.

(Leguminosae)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

क्षीराष्टक-

माहिष; अज; उटड़ी; स्त्री; आविक; ऐभ; ऐक, शफम्

क्षारत्रय-

यवक्षार; सर्जिकाक्षार; टंकणक्षार

क्षारद्वय-

यवकक्षार और सर्जिकाक्षार

त्रिफला-

हरडे; बेहड़ा; और आंवला

त्रिकटु-

सोंठ; मरिच और पिप्पली

त्रिमद-

विडंग; मुस्तक और चित्रक

त्रिजातक-

दालचीनी; तमालपत्र; और इलायची

त्रिगंधक-

गन्धक; हरिताल और मनः शिला

★

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

परिशिष्ट ६

वनस्पति-कर्मभेदानुसार

जीवनीय–(Restoratives) विदारीकंद, ऋषभक, जीवक, नमक, (पार्थिव+आप्य) यवक्षार, लोह, काकोल्यादिगण (सुश्रुत)

वृंहणीय– (पार्थिव+आप्य) असगन्ध, काकोली, सालममिश्री, (मांस) विदारीकंद, मुनक्का, खजूर, अंजीर, तालफल, नारीयल, बादाम, अखरोट, पिस्ता, चिलगौंजा, खुरबानी, (चरक ४, २५ सू. २८) काकोल्यादिगण (सुश्रुत);

लेखनीय–सालरादिगण (सु. सू. अ. ३८) (वायव्य+आग्नेय)

भेदनीय–अम्लवेंत, कुटकी, निशोथ, एरण्ड (च. सू. अ. ४

संधानीय–(Union pronotar). मुलेठी, पिठवन (च. सू. अ. ४) प्रियंगादि और न्योग्रोदिगण (सु. सू. अ. ३८)

दीपनीय–(Stomachics). सौफ (शा); छोटीपिपल, पीपलामूल, (पार्थिक वायव्य) (च. सू. अ. ४) पिपल्यादि, त्रिफला, त्रिकटु, आमलयक्यदि, बिल्वादि, गुडुच्यादि (सु. सू. अ. ३८)

पाचन–आमयुक्त दोष, धातु और मल पाचन करे किन्तु जठराग्नि (वायव्य+आग्नेय) प्रदीप न करे) नागकेशर·

दीपनपाचत–(Carminatives and Aronelics) (दीपन और आमपाचन करे) चित्रक (श)

बल्य–(Vitality, Tonics)कौंच, शतवरी, सालमपंजा, विदारीकंद आम (पक्व) बादाम, पिस्ता, अखरोट चिलगौंजा क्वर्राभांस (च. सू. अ. २७) लघुपंचमूल (सु. सू. अ. ३८)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

वर्ण्य–(कान्ति–वर्धक)–चन्दन, पद्माख (च. सू. अ. ४) लोध्रादि (वर्ण्य) एलादि (वर्ण प्रसादन) (सु. सू. अ. ३८)

कण्ठय–(कण्बनलिका और श्वासनलिक का श्लेष्मा निस्सारक) (Ciliary enciant) अनन्तमूल, मुलेठी (च. सू अ. ४) अदरक (सु. सूं. ४६/२२७

हृद्य–(हृदयाय मनसे हितं हृद्यम्–ग. यो.) आम, अम्लरसकाले द्रव्य (च. सू. अ. ४) परूषकादिगण (सु. सू. अ. ३८)

तृप्तिघ्न–(अन्न से अरुचि कर) सोंठ, चित्रक, विडंग, गुडूची, वच (च. सू. अ. ४)

अर्शोघ्न–कुडा, बेल, चित्रक, अतिविषा, दारुहरिद्रा, वच

कुष्ठघ्न–(Antparasitics) त्वग्दोषहर, खदिर, हरड़ हरिद्रा, सप्तपर्ण, त्रिफला, त्र्यूषण, कासीसाम्ल

कृमिघ्न–(शरीर बाह्याभ्यन्तर कृमिहर) Anthelminties; Vermifuise; and Vermicides) संहिजना, कालीमिर्च, विडंग निर्गुण्डी

कण्डूघ्न–चन्दन, अमलतास, निम्ब, कुटज. दारुहरिद्रा

विषघ्न–(Antidotes)हल्दी, मंजीठ, लोध्र, आक, पटोल,

स्तन्यजतन्–खस, गन्नेका मूल, काकोल्यादिगण (सु.)

स्तन्यवृद्धिकर–विदारीकंद

स्तन्यशोधक–पाठा, सोंठ, वच, हरिद्रा, नागरमोथा

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

शुक्रल- काकोली, क्षीरकाकोली, असगन्ध, मुसली शतावर

वृष्य-(Aphrodisiac) जायफल, अफीम

शुक्रशोधक-कूठ, कायफल,

स्नेहोपग-मुनक्का, मुलेठी, मेदा, विदारीकंद

स्वेदोपग-सहिजन, एरण्ड, पुनर्नवा

वमनोपग-मुलेठी, कचनार,

विरोचनोपगम-मुनक्का, गांभारी, पीलु

आस्थापनोगम-पिप्पली, निशोंथ, बेल, शतपुष्पा, मदनफल, मधुक

अनुवासनोपगम-बिल्व, रास्ना, देवदारु, शतपुष्पा, पुनर्नवा, श्योनाक

शिरोविरेचन-Errhinesपिप्पली, मरिच, माल काँगनी नक छिकनी,
विडंग छिक्काजनन (Sternutatories) कुटकी, तम्बाकू
मिर्च, सोंठ, एपिकाक्युआना

छर्दिनिग्रहक-(Anti emetic)जामुन, आम्रपल्लव, पटोल, आरग्वध,

तृष्णानिग्रह-चन्दन, नागरमोथ, धमासा, पर्पट, किरातक्तितु, गुढ़ची

हिक्कानिग्रहक-कचूर, पोहकरमूल, पिप्पली, कण्टकारी

पुरीष संग्रहणीय-सोनापाठा, आम की गुठली

ग्राही- (Corninatuics), aronaties)जीरा, सोंठ, पीपल

पुरीषविरजनीय-जामुन, मधुक, शालमली, कोंच

मूत्रसंग्रहणीय-(Urein di nishier) जामुन, आम, वट, उडुम्बर,
अश्वत्थ, भल्लातक

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

मूत्रविरजनोय–मधुक, प्रियंगु, धातकी, कमल, मुलेठी,

शोथहर–(Antiphlogistics) पाटला (Trumpet flowers), अरणी, श्योनाक बिल्व, गम्भारी, छोटीकटेरी, शालपर्णी, प्रश्नपर्णी, गोखरू

ज्वरहर–(Antifebriles) सादिवा, शर्करा (Sugar) पाठा, मजीठ (Madder) दाख, पीलु, फालसा, हरड़, आँवला बहेड़ा

श्रमहर–(Acopics) द्राक्ष, खजूर, पियाल, बेर, अनार, अंजीर, फालसा, गन्ना, जौ, सांठीचावल (Sastic rice)

दाहप्रशमन–(Refrigerants) लाजा, चन्दन, गम्भारीफल, महुवा, शर्करा, नीलोत्पल, खस, सारिवा, गिलोय, सुगन्धवाला (Fragrant Sticky meliow)

शीतप्रशमन–(Calefacients) तगर, अगर, धनिया, सोंठ, अजवायन, वच, छोटीकटेरी, अरणी, श्योनाक, पिप्पली

उदर्दप्रशमन–(Antiurticariols) तिन्दुक, प्रियाल, बेर, खैर, श्वेत खैर, सप्तपर्ण, शाल, अर्जुन, असन (Spints kins) अरिमेरा (गु. हरभो बावल White babool)

पुरीषविरननीय–(Fecal-pigment restorers) जामुन, कुन्दुरूकी छाल, कौंच, महुआ, शाल्मली, बिरोजा, विदारी, उत्पल (Blue-water lily) तिल, पक्व मिट्टी (Backed earths)

मूत्रसंग्रहणीय–(Gscuretics) जम्बु, आम, बरगद, प्लक्ष (Yellow barkedpig) पारसपींपल (Flowering peipel) गूलर, पीपल, भिलावा, अश्मन्तक Commonmountainhoney) श्वेत खैर

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

मूत्रविरजनीय–(Urinary pigment restorers) पद्म, उत्पल (blue water lily) नलिन (nolin lotus) कुमुद (night flowering lotus) सौन्धिक, पुण्डरीक, शतपत्र, मुलैठी, प्रियंगु, धानकी–पुष्प

मूत्रविरेचनीय–(Divretics) बन्दा (Vandar orchid) गोखरू, पुनर्नवा, चिरचिटा, पाषाणभेद, दर्भ, कुश, कास, गुन्द्रन्जा

कासहर–(Antibectics) द्राक्ष, हरड, आँवला, पिप्पली, धमासा, काकडाशिंगी, छोटी कटेरी, श्वेतपुनर्नवा, लालपुनर्नवा भूईआवेला (feather foil)

श्वासहर–(Antiodyspneics) शटकचूर (Long zedoary) पोहकरमूल (orris root) अमलवेंत, छोटीइलायची हींग, अगरू, तुलसी, भाईआंवला, जीवन्ती, चोरक (angelica)

अंगमर्दप्रशमन–(Anodynes);सरिवन (गु. शालवण Tictufoil), प्रश्नपर्णी, बड़ीकटेरी, छोटीकटेरी, एरण्ड, काकोली, (Kakoli) चन्दन, खस, इलायची (छोटी) मुलेठी

शूलप्रशमन–(Analgesics) पिप्पली, पिप्पलीमूल, चव्य, चित्रक सोंठ, काली मिरच, अजमोद (मु. बोडीअजमोद) अजगन्धा जीरा,

शोणितास्थापन–(Hemostatics) शहद, मुलैंठी, केशर, मोचरस, लौध्र, प्रियंगु, शर्करा, लाजा,

वेदनास्थापन–(Sedatives) साल, कट्फल, कदम्ब, पद्माख, तेजबल, मोचरस, शिरीष, बेंत, एलवालुक, अशोक

प्रजास्थापन–(Proreauts) ऐन्द्री, ब्राह्मी, सफेददूब, नीलदूब, आँवला गिलोय, हरड़, कुटकी, कंघी, गन्धप्रियंगु

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

वय: स्थापन (Rejuvenators)–गिलोय, हरड़, आँवला, रास्ना सफेद कोयल (गु. धोली गरणी); जीवन्ती, शतावरी, मण्डूकपर्णी, शालपर्णी, पुनर्नवा

संज्ञासंस्थापन (Resuscitatives)–हींग, मीठानीम, अरिभेद, वच, चोरक, ब्राह्मी, भूतकेशी, जटामाँसी, गुग्गुल, कुटकी

लंघन (Lightening therapy)–शरीर मे हल्कापन (Lightness) लाता है।

रुक्षण (Desiccation therapy)–शरीर में रुक्षता (Dryness) लावे।

वृंहण (Roborant therapy)–शरीर को पुष्ट (Robust) करे

स्नेहन (Oleation therapy)–शरीरमें स्निग्धता,मृदुता और क्लेदता (Viscosity fluidity and softness)

स्वेदन (Sudation therapy)–ज़ो शरीर में गौरवता, स्तम्भ और शीतका नाश करनेवाला हो।

शोथविलियन (Antiphlogestic)–पूयोत्पतिविना ही व्रणशोथ शमन करनेवाले जैसे कुन्दरू उषकादि।

पाचन– पचते हुए व्रणशोथ का शीघ्र पाचए करनेवाले तिल, सरसो, अलसी आदि।

प्रदरण (Escharotic)– स्वयम् विदीर्ण न होने वाले व्रण को विदीर्ण करनेवाले चित्रक, क्षार, आदि।

प्रपीडन– प्रपीडन द्वारा पूय निष्कासन करनेवाले पिच्छिल गुण युक्त पदार्थ।

शोधन– शस्त्रकर्म पश्चात् जिन द्रव्यों से व्रण का शोधन किये जानेवाले

रोपण–व्रण के भरने वाली क्रिया को रोपण कहते हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

उत्सादन– परिशुष्क, अल्प मांसवाले व्रणों का उत्सादन करनेवाले अपामार्ग, अश्वगंधा, सुवर्चला, काकोल्यादि गण आदि ।

अवसादनन– मृदु उठे हुए मांस व्रणों को सामान्यावस्था में लानेवाले मन:शिला, सैन्धव, का सीसा, आदि

उपशोषण (Absorvant)–शरीर के आर्द्रभाव का शोषण करने–वाले कुटज त्वक्

रोमशातन– केशों को विनाश करनेवाले शंखचूर्ण, हरिताल

रोमसजनन–उड़े हुए केशों के स्थान में नवीन केशोत्पति करनेंवालें रसौंत

रसोघ्न– रोगोत्पादक् कीटाणुओं को नाश करनेवाले-नीम, अगर, गूगल, सरसों आदि

लालाप्रसेकजनन (Sialagogues)–लालस्राव की वृद्धि करनेवाले-अकरकरा, राजिका, आदि

उत्तेजक (Stimulants)– शरीर के विभिन्न अंगोंको उत्तेजित करनेवाले सुगन्धित द्रव्य, रसोंत, नीम, बेंलीडोना, डिजिटेलिस आदि

हृदयोत्तेजक (Cordial)– रक्त की गतिशक्ति की वृद्धि करने वाले–उष्ण और सुगन्धित द्रव्य

मोहजनन (Narcotics)– निद्रोत्पादन करने वाले द्रव्य मद्य, अहिफेनादि

आविजनन (Oxytocics)–गर्भाशय संकोचक द्रव्य अर्गट

शोणितोत्क्लेशक (Rubefacients)–त्वचा के रक्तवर्ण युक्त करने वाले चित्रक, पीलु, राजिका आदि

स्फोटजनक (Vesicant)– स्फोट उत्पादन करनेवाले चित्रक, राजिका आदि

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अवसादक (Sedatives; Despresseants)– शरीर का अवसादन करनेवाले पद्मकाष्ठ, वत्सनाभ आदि ।

लालाप्रसेकापनयन (Antiscialcgogues;)– लाल स्राव नियमन करनेवाले बेलाडोना आदि ।

आनुलोमिक (च.) (Laxatives)– वातमूत्रपुरीषादि को अधोमार्ग की प्रवृत करनेवाले हरीतकी, अनार आदि ।

संस्रन (Simple purgative)– पक्व और अपक्व मल बाहर निकालनेवाले एरण्ड, सनाय, एलुआ, पारा आदि ।

भेंदन (च) (Drastic purgatives)–दाहसहित वेग मलप्रवृति करनेवाले निशोंत, इन्द्रायन, रेवंदचीनी आदि ।

विरेचन (Hydragogaue purgatives)–द्रवयुक्त मलप्रवृति करनेवाले जमालगोटा, कंटीली इन्द्रायण आदि ।

पितविरेचन (Cholagogue purgatives)– यकृत ग्रहणी को उत्तेजिक (पित निष्कामन) करनेवाले पारा, पाप्रा, एलुआ, रेवंदचीनी

शोधन– उर्ध्वभाग और अधोभाग दोनों ओर से दोषों का निष्कासन, वाले देलदाली फल

छेदन–कफादि दोषों का निष्कासन करनेवाले अम्ल लवण कटु द्रव्य; कालीमिर्च, क्षार, शिलाजित

रसायन–"दीर्घमायुः स्मृति मेधारोग्यं तरुणं वय" आदि का उपचय करनेवाले हरड़, गुग्गुल, गिलोय, आदि

सूक्ष्म–स्रोतो में सरलतापूर्वंक प्रवेश करनेवाले शहद, नीम, तिल,तैल आदि

व्यवायि– शरीर अग्नि द्वारा परिपाक होने पूर्व ही शरीर में फैलने वाले अफीम, माद्य, भाँग आदि

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

विकासी– (Antispasmodics.) परिपाक होने पूर्व ही सन्धिबन्धनों को शिथिल करनेवाले-सुपारी, कौदो

मदकारी (Delirifacients)– स्मृति भंग करनेवाले सुरासमान गुणवाले मादक द्रव्ल

प्राणघ्न– व्यवायी, विकासी, सूक्ष्म, छेदी, मादक, श्रेत्य गुणप्रधान द्रव्य प्राणघ्न होते हैं ।

प्रमाथि– निजवीर्य द्वारा स्रोतो संचित दोषों को नष्ट करनेवाले मरिच, वचा आदि

अभिष्यन्दि– दोषधातु मलस्रोतों में क्लेदन उत्पन्न करनेवालें-दहि

आशुकारी– शरीर में शीघ्रता से व्याप्त होनेवाले

विदाही– पचने में भारी और पित ही उत्पत्ति करनेवाले

योगवाही– सहगामी द्रव्यों की गुणशक्ति की वृद्धि करनेवाले, पारद मधु

षाण्यकर (Anaphrodisiac)–पुरुषत्व को नष्ट करनेवाले, क्षार

स्वप्नजनन् (Hypnotecs)–निद्रा लान`वाले सर्पगन्धा, पीपलामूल माहिष का दुध आदि

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

परिशिष्ठ ७

(रोगानुसार वर्गीकरण)

अतिसार–अफीम, आक, इसबगोल, इन्द्रजौ, कुचला, जायफल, धाय रोहिडा (रक्त) सौंफ, सोंठ, हरड.

र्श–आक, अरीठा, कचनार, कायफल, ढाक, दारुहल्दी, नीम, प्याज पाषाणभेद, विडंग, भिलामा

उदररोग–अजमोद, अजवायन, अमलतास, एरण्ड! कटकरंज कुटकी (जलोदर) डिजिटेलिस (जलोदर), तालमखाना (जलोदर), जटामांसी, जामुन, ढाक; पुनर्नवा (जलोदर), मकोय, विडंग, विदारी, बेल, भांगरा, सहिंजना, हरड

उन्माद–छोटाचांद, जटामांसी, धतूरा, नीम (बकायन); पाडल

उपदंश–चोपचीनी, धतूरा (कृष्ण); नीम, रोहिडा (रक्त)

कर्णरोग–अपराजिता, अपामार्ग, कलिहारी, कायफल, चीड, स्नुही, प्याज, बड, बेल

कास–कसौंदी, काकडासिंगी, निर्गुण्डी, पाषाणभेद, पीपल, बहेड़ा, मुलेठी, वंशलोचन, बेलाडोना, लहसन, लौंग

कामला–कपास, कुटकी

क्लैव्य–कनेर, करील केशर, कुचला, तालमखाना, तुलसी, तेजबल, धतूरा, नागकेशर, लालम मिश्री

कृमि–छतिवन, ढाक, धतूरा, धमासा, नीम, नीम्बू

गण्डमाला–चीड, चोपचीनी

ग्रहणीदोष–अफीम, अपराजिता, अरीठा

जाठराग्निविकार–कटेरी छोटी, कुचला, कालीमिर्च (मंदाग्नि);

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

ज्वर–अतीस, अरलू अर्जुन, कटकरंज, कालमेघ, कुटकी, छतिवन, जटामांसी, तुलसी, दारुहल्दी, नागबेल, नीम, पारिजात, बनफशा, वचन मेनफल, भारंगी, सहदेवी, स्वर्णमाक्षिक

नेंत्ररोग–अगस्त, आक, कटकरंज, कनेर, कपूर, ढाक, धतूरा (पीत) धनिया, नीम, पुनर्नवा, बब्बूल, ममीरा, सिरस, हल्दी

प्रदर–कपास, कमल, माजूफल (श्वेतप्रदर), लाख, सेमर

प्रमेह–कबाबचीनी; कपूर (पूयमेह), चीड (पूयमेह), माजूफल (पूयमेह) मूली (पूयमेह)

प्लीहारोग–कुटकी

बालरोग–अतीस, अनन्तमूल, डिकामारी, बनफशा, रेवन्दचीनी, समुद्रफल, हरड, हंसपदी

मधुमेह–जामुन, जायफल, वीस

मुखरोग–अकरकरा (दन्त), कचनार, कटेरी छोटी (दन्तरोग)

मूत्ररोग–अजमोद (पथरी); अनन्तमूल (मूत्रकृच्छ्र), ककडी, कपास, कबाबचीनी, कटेरी, शिलारस (अण्डवृद्धि)

राजयक्ष्मा–अडूसा, आम, आंवला

रेतोदोष–अकरकरा, प्याज, पीपल, बड, बहेडा, लज्जालु

वातव्याधि–अकरकरा, आक, कायफल, चोपचीनी, निसोथ (संधिवात) वछनाग, वायविडंग, बेल भिलावा, रासना, लहसुन, लोभान

विसूचिका–आक, अगियाघास, कपूर, कुचला, भिलामा

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

विष–अपामार्ग, अंकोल, कमल, जामुन (कुचले का विष); धतूरा कृष्ण (अलर्कविष); पीलू, पीपल, मकोय (मूषकविष), माजूफल (स्थावरविष) मेनफल (सर्पविष) भांगरा

शोणितजन्य और त्वग्रोग–अनन्तमूल, आक, छतिवन, जटामांसी, दारुहल्दी, धतूरा (पीत); नीम, पितपापडा, पीपल, मजीठ, मूर्वा, ब्रासी, बाकुची, बांस, विडंग, बेलाडोना, भिलामा

शिरोरोग–अपराजिता (शिरःशूल), कटफल, नीम, मेथिका

श्वास–अंकोल, अडूसा, आक, धतूरा (कृष्ण), निर्गुण्डी, पाषाणभेद, वंशलोचन, बेलाडोना

स्त्रीरोग–अपामार्ग, अजवायन (सूतिका), अनार (Hysteria), अपराजिता (गर्भपात), अशोक (रक्तप्रदर); उलटकंबल, छतिवन, तिल, नीम, पीपल, मेनफल (वन्ध्यत्व) लोध

हिक्का–कसौदी, कालीमिर्च

हृदरोग–डिजिटेलिस, तालीसपत्र

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

परिशिष्ट-८
(अनुक्त-परिभाषा)

अनुक्त	जिस पदार्थका ग्रहण किया जाय
अंग में	जटा
अतिस्थूलजटा में	त्वक्
कषाय (लेपार्थ) में	लाल चन्दन
काल में	प्रातः काल
खदिरादि में	सार
गुडूची आदि में	शाखा
घी, दूध, दहि आदि में	गाय
चूर्ण, स्नेह, आसवादि में	सफेद चन्दन
तालिसादि में	पत्र
तैल में	तिल तैल
द्रवपदार्थ में	जल
धातक्यादिगण में	पुष्प
न्यग्रोधादि में	त्वचा
प्रमाण न होने पर	समभाग
पात्र का उल्लेख न होने पर	मृत्पात्र
लवण विशेष में	सैन्धवनमक
सर्षप में	सफेद सर्षप
स्नुही अर्क आदि में	क्षीर
सूक्ष्म मूल	साराभाग
हिंगु आदि में	निर्यास
त्रिफलादि में	फल

उपरोक्त अनुक्त द्रव्य विशेषों के अतिरिक्त वनस्पति के प्रयोग में उसके वीर्य प्रमाणानुसार ही लेना चाहिए।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

परिशिष्ठ ९.

(भेषज ग्रहण और संरक्षण)

औषधग्रहणकाल— (सुश्रुतमतानुसार)—

वनस्पति	ऋतु
(क) सौम्यगुण विशिष्ट द्रव्य—	सौम्य ऋतु में
(ख) आग्नेयगुण विशिष्ट द्रव्य—	आग्नेय ऋतु में
(ग) सौम्याग्नेय विशिष्ट द्रव्य—	ऋतु अनुसार

चरक मतानुसार (शाखा और पत्र)— वर्षा और वसंत

(शाखा और पत्र)—	वर्षा और वसंत
मूल—	ग्रीष्म और शिशिर
त्वचा कन्द—	शरदऋतु
निर्यास—	हेमन्त
पुष्प और फल—	ऋतु अनुसार

द्रव्यगुण हीनकाल

चूर्ण—	दो मास
घी तैल—	चार मास
गुटिका अवलेह—	एक वर्षोपरान्त

आसव, रस और भस्में पुरानी उत्तम रहती है।

द्रव्य ग्रहण विशेष— घी, मधु वायविडंग, पिप्पली धान्य आदि द्रव्य हमेशा नवीन लेना चाहिए। नवीनताकी अवधि एक वर्ष की मानी जाती है।

ताज्य द्रव्य— वानस्पति विकृत प्रधान द्रव्य कृमियों से खाया हुआ, अकालातीत बहुत पका हुआ अकाल, अदेश, पुराना और हीन वीर्य द्रव्यों का प्रयोग, नहीं करना चाहिए।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

परिशिष्ठ १०

शारीरिक अवयवी प्रभावानुसार वर्गीकरण

वात संस्थान	अक्करकरा, अजमोद, अङ्कोल, एरंड, कपास, कुचला, कूट; केशर, गंधप्रसारणी, गुगल, सर्पगंधा, जटामांसी तगर, निर्गुंडी, प्याज, पीठवन, बच्छनाग, बेलाडोना भिलावां, महुआ, रासना, लहसुन.
पाचन संस्थान	रोहिष, अजमोद, अजवायन खुरासानी, अतीस, अदरक, अनार, अमलतास, अमलवेंत, अरंड, अरीठा अलसी, अशोक, आक, कूटज, इन्द्रायण, इमली, इसबगोल, कंगुनी, कडवी तुरई, कास कायफल, (मुख) किरमानी अजवायन, कुटकी, खेर, गांजा भांग, चव्य, चांगेरी, चित्रक, चिरायता, चीड, छतिवन, जामुन, जीरा, डिकामाली, दालचीनी, सुरण, ढाक, ताम्बूल (लालास्रावग्रंथियां), तिल, तेजपात, तेजबल, (दंत.) दली, धनिया, धमासा, धामन, धाय, नागकेशर, नागरमोथा, निशोथ, नीम्बू, पटोल, पाटला, पारिजात, प्रियंगु, प्याज, पीतपापडा, पीपर, बबुल (मुख), बहेडा, वच्छनाग, बिल्व, मरिच, मजीठ, मुलेठी, मेनफल, लांगली, लोंग; वायविडंग, लता कस्तूरी, लुनिया, शाल, सेमल, सहिजना, स्नूही, हिंग, सीसम, सोया, हेमवतिवचा।
फुफ्फुस	अगस्त, अडूसा, अपामार्ग, इलायची, कचूर, कटेरी, काकडा सींघी, कुलींजन, कूठ, चीड, तालिसपत्र, धमासा, पोखरमूल, वहेडा, वंशलोचन, भारंगा, मुलेठी, लोबान हंसराज।
प्रजनन संस्थान	अजमोद अजवायन खुरासानी, अरणी, अर्गट (गर्भाशय, अशोक, उलट कंबल (गर्भाशय), कपास कौंच, गोखरू, जायफल, ताम्बूल, तालमखाना, नागबला, पीठवन, पीपल, वड, बांस, लज्जालु, लोघ्र, विदारीकंद, सितावर।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

मूत्र संवनन संस्थान	अतीबला, अपामार्ग, इलायची, उशवा, गोखरू, चंदन, चोपचीनी, पुनर्नवा, वरुण, लिसोड़ा।
रक्त संवहन संस्थान	अनन्तमूल,अर्जुन, कचनार, खेर, गोरखमुंडी, नीम, पटोल, मजीठ।
प्लीहा यकृत	अपराजिता, कालमेघ (यकृत),कुटकी,चिल्ला,चीड़, दारुहल्दी, पारिजात (यकृत), भुई आंवला,रोहिड़ा, शरपुँखा।
हृदय	अर्जुन, डीजिटेलिस।
त्वचा	कटेरी, कट करंज, गोरखमुंडी, चालमोगरा,छतिवन तुवरक, दारुहल्दीं, नीम, पवार, बावची, भांगरा, राई, लुनिया, शिलारस, शाल, सिरस,
मस्तिष्क	कंगुनी, कद्दू, कनेर, कायफल, गांजा-भांग, सर्पगंधा वच, मजीठ, शंखाहुली।
संधि संस्थान	खरजाल, हाडजोड।
नेत्र	धनिया, सिरस।
केश	भांगरा

विशेष---प्रस्तुत पुस्तक में वर्णित शेष वनस्पतियां सर्व शरीरोपयोगी हैं।

Vaidya ... ... New Delhi ...

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

પરિશિષ્ઠ—૧૧

વર્ણાનુક્રમણિકા
(ગુજરાતી)

અંકોલ	...	...	૭
અક્કલકરો	...	...	૧
અગથિયો	...	...	૩
અગર	...	...	૫
અઘેડો	...	...	૩૧
અજમો ખુરાશાની	...	...	૧૫
અજમોદ	...	...	૧૩
અરડુસી	...	...	૧૭
અતિવિષ	...	...	૨૧
અફીણ	...	...	૩૩
અમલવેંત	...	...	૩૭
અંબુડી	...	...	૧૫૯
અમેલપોદી (સર્પગંધા)	...	...	૧૭૩
અરણી	...	...	૪૧
અરીઠા	...	...	૪૭
અર્જુન	...	...	૫૧
અર્ગટ	...	...	૪૯
અલસી	...	...	૫૩
અશોક	...	...	૫૫
આંબલી	...	...	૬૯
આંબાહળદર	...	...	૬૧
આંબળા	...	...	૬૩
આકડો	...	...	૫૯

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

આદુ	...	...	૨૩
આસંધ	...	...	૫૭
ઇંદ્રજવ	...	...	૬૫
ઇંદ્રામણા	...	...	૬૭
ઇસબગોલ	...	...	૭૩
ઉભીરિંગણી	...	...	૮૫
ઉમરડો	...	...	૧૪૯
ઉલટ કમલ	...	...	૭૫
ઉપસલરી	...	...	૨૭
ઉશબા	...	...	૭૧
એખરો	...	...	૧૯૫
એરંડો	...	...	૩૯
એલચી	...	...	૭૧
લીલું કરિયાતું (કાલમેઘ)	...	...	૧૧૯
કમળ	...	...	૧૧૬
કડવા પરવલ	...	...	૨૩૯
કપુરકાચલી	...	...	૧૦૧
કડુ	...	...	૧૨૫
કરંજ	...	...	૧૦૭
કણેર	...	...	૯૩
કપિલો	...	...	૯૭
કપાસ	...	...	૯૫
કપુર	...	...	૯૯
કરિયાતું	...	...	૧૬૫
કલુંબો	...	...	૧૦૯
કૌચા	...	...	૧૩૩
માલ કાંગણી	...	...	૭૯
કાસકી	...	...	૧૯
કાંચકા	...	...	૯૧

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

કાયફલ	...	...	૧૧૭
કાસુંદો	...	...	૧૧૩
કાકડાસિંગી	...	...	૧૧૫
કુલિંજન	...	...	૧૨૭
કુઠ	...	...	૧૨૯
કેશર	...	....	૧૩૧
કુવાડીયો	...	...	૨૪૧
કોકસ	...	...	૩૯૭
કાંચનાર	...	...	૮૧
કોથમીર	...	...	૨૧૫
કોળું	...	...	૮૯
કાળીજીરી	...	...	૩૫૭
ખાખરો	...	...	૧૯૧
પીલુ	...	...	૧૩૭
ખેર	...	...	૧૩૯
ગંધીલો ખેર	...	...	૪૫
ગરણી	...	...	૨૯
ગરમાળો	...	...	૩૫
ગળો	...	...	૧૪૫
ગિરિબુટ્ટી	...	...	૨૮૩
ગુગળ	...	...	૧૪૭
સૂરણ	...	...	૧૮૯
ગોરખમુંડી	...	...	૧૫૩
ઘઉંલા	...	...	૨૫૦
ઘોડા વજ	...	...	૨૬૯
ઘોલ (લુણી)	...	...	૩૨૧
ચણકબાબ	...	...	૧૦૩
ચંદન	...	...	૧૫૫
ચવક	...	...	૧૫૭

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

ચિત્રા	...	...	૧૬૩
ચાલમોગરા	...	...	૧૬૧
ચોપચીની	...	...	૧૭૫
છડિલો	...	...	૩૪૯
છુવારી અજમો	...	...	૧૨૧
જટામાંસી	...	...	૧૭૭
જાંબુ	...	...	૧૭૯
જાયફલ	...	...	૧૭૬
જીરૂં	...	...	૧૮૧
જુમખી બોર	...	...	૩૯૩
જેઠીમધ	...	...	૨૯૬
જોગીપાદશાહ	...	...	૩૯૧
ઝેરકોચલા	...	....	૧૨૩
ટેંટુ	...	...	૪૩
ડિજિટેલિસ	...	...	૧૮૩
ડુંગળી	...	...	૨૫૧
ડીકામારી	...	...	૧૮૫
તગર	...	...	૧૮૭
તજ	...	...	૧૮૬
તમાલ પત્ર	...	...	૨૦૩
તલ	...	...	૧૯૯
તાલિસ પત્ર	...	...	૨૦૭
તુવરક	...	...	૨૦૧
તેજબલ	...	...	૨૦૫
તોરઇ	...	...	૮૭
તાયમાણ ત્રખડા	...	...	૧૯૭
થોર	...	...	૩૪૭
દંતમૂલ	...	...	૨૦૯
દાડમ	...	...	૨૫

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

દારૂહળદર	...	...	૨૧૩
દરિયો વછનાગ	...	...	૩૦૯
દેવદાર	...	...	૨૧૧
ધમ સે.	...	...	૨૧૭
ધાવળી	...	...	૨૨૧
ધામણુ	...	...	૨૧૯
ધેળી મુસળી	...	...	૨૯૭
નગોડ	...	...	૨૩૭
નાગકેશર	...	...	૨૨૩
નાગરમોથ	...	...	૨૨૭
નાગરવેલ	...	...	૧૯૩
નાનું ગોખરૂં	...	...	૧૫૧
નસોતર	...	...	૨૨૯
પદમકાષ્ઠ	...	...	૨૩૮
પ્રસારીણી	...	...	૧૪૩
પાડળ	...	...	૨૪૩
પાષાણ ભેદ	...	...	૨૪૫
પીઠવણુ	...	...	૨૫૩
પીત પાપડા	...	...	૨૫૫
પીપળો	...	...	૨૫૭
પુષ્કરમૂળ	...	...	૨૬૩
વડગુંદો	...	...	૩૭૭
બલા	...	...	૧૩૫
બહેડાં	...	...	૨૭૩
વાંસ	...	...	૨૭૬
બદામ	...	...	૩૫૫
બનફશા	...	...	૩૬૩
બ્રાહ્મી	...	...	૨૭૪
બાલ વજ	...	...	૩૮૩

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

બાબચી	...	...	૨૭૭
બાવળ	...	...	૨૬૭
બીજોરૂં	...	...	૨૩૩
બિલી (બિલ્વ)	...	...	૨૮૧
બેલાડોના	...	...	૨૮૩
બોર	...	...	૩૬૧
ભાંગ	...	...	૧૪૧
	...	...	૨૮૫
ભારંગી	...	...	૨૮૪
ભિલામો	...	...	૨૮૭
ભોંય આમળા	...	...	૪૯
ભોંય બલ	...	...	૨૨૫
મરી	...	...	૨૮૯
મજીઠ	...	...	૨૯૧
મહુડો	...	...	૨૯૩
માજુ-ફળ	...	...	૨૯૫
મિંઢળ	...	...	૨૯૯
મૂળા	...	...	૩૯૫
મૌરી	...	...	૧૬૭
રાઇ	...	...	૩૦૧
રાસના	...	...	૩૦૩
રીસામણી	...	...	૩૧૧
રેવંચીની	...	...	૩૦૫
રોહીડો	...	...	૩૦૭
રોહીષ	...		૧૧
લતા કસ્તુરી	...		૩૨૦
લવીંગ	...	...	૩૧૫
લસણ	...	...	૩૧૩
લાલ ચંદન	...	...	૩૮૯

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

લિંબુ	...	...	૨૩૫
લિમડો	...	...	૨૩૧
લીલીદ્રાક્ષ	...	...	૯
લિલુ કરિયાતુ	...	...	૧૧૯
લીંડીપીપર	...	...	૨૫૯
લુણી	...	...	૩૨૧
લોધર	...	...	૩૧૯
લોબાન	...	...	૩૧૬
વંશલોચન	...	...	૨૭૫
વછનાગ	...	...	૨૯૯
વડગુંદા	...	...	૩૬૭
વનકા	...	...	૩૮૫
વડ	...	...	૨૬૫
વેણીવેલ	...	...	૩૮૫
વાયવરણો	...	...	૨૭૧
વાવડીંગ	...	...	૩૧૭
વિદારી કંદ	...	...	૩૩૭
વેદ મુશ્ક	...	...	૩૮૭
શંખાવલી	...	...	૩૩૩
શતાવરી	...	...	૩૨૩
શિંવણ	...	...	૧૦૫
સર પંખો	...	...	૩૨૫
શાજરૂ	...	...	૩૫૭
શાલ	...	...	૩૨૭
શિંગોડા	...	...	૩૭૧
શેમડો	...	...	૩૩૧
શીલારસ	...	...	૩૨૨
ષટકચુરો	...	...	૮૩
શતાબ	...	...	૩૪૫

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

સદડી	...	...	૩૪૨
સમેરવો	...	...	૩૨૯
સાહોડા	...	...	૩૫૯
સરગવો	...	...	૩૪૩
સરલ દેવદાર	...	...	૧૬૯
સરસડો	...	...	૩૩૫
સાટોડી	...	...	૨૬૧
સાતવણુ	...	...	૧૭૧
સાગ	...	...	૩૬૯
સિંકોના	...	...	૩૮૯
સીસમ	...	...	૩૭૩
સુરંજન	...	...	૩૫૨
સુવા	...	...	૩૭૫
સુરણ	...	...	૧૮૯
સાલમ	...	...	૩૬૭
હંસરાજ	...	...	૩૭૯
હાડસાંકળ	...	...	૩૮૨
હારશણગાર (પારિજાતક)	...	...	૨૪૭
હિંગ	...	...	૩૪૯
હળદર	...	...	૩૬૫
હરડે	...	...	૪૦૦
હરમલ	...	...	૪૦૧
વાંદા	...	...	૪૦૨

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

परिशिष्ट १२.

वर्णानुक्रमणिका

(मराठी)

अंकोल	—	४
अक्कलकरा	—	१
अगरु	—	५
अगस्ता	—	३
अजमोदा	—	१३
अजवायन खुरासानी	—	१५
अडकई	—	२७३
अडूलसा	—	१७
अतिकिशा	—	२१
अफू	—	३१३
अम्बूटी	—	१५९
अर्गट	—	४९
अळशी	—	५३
अशोक	—	५५
आँबे हळद	—	६१
आंवळा	—	६३
अघाडा	—	३१
आलें	—	२३
आसन्ध	—	५७
इन्द्रायन	—	६७
इसबगोल	—	७३
उपलसरी	—	२७
उमर	—	१४९

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

उलट कंबल		—	७५
एरंडी		—	३९
ऐराण		—	४१
ओली किरायत		—	११९.
कंकोळ		—	१०३
कचोरा		—	८३
कपिला		—	९७
कड्कवटी		—	२०१
कडू परवल		—	२३९.
कडू कुटकी		—	१२५
कडु दोडकी		—	८७
कडु नीम		—	२३१
कडू जीरें		—	३५३
कण्हेर		—	९३
कमळ		—	१११
कलस कावदा		—	१०५
कष्टलावी		—	३०९
कस्तुरमेंड		—	३२०
कांदा		—	२५१
कांटेधोत्रा	क. ख.	—	३४१
कांगोणा		—	७९
काकडा		—	११५
काजरा		—	१२३
कापूस		—	९५
कार्पूर		—	९९
कोपूरक.चरी		—	१०१
कायफल		—	११७
काडवेल्लक		—	३८१
कासविन्दा		—	११३

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

किरमाणी ओंवा	—	१२१
कुडियाचें बीज	—	६५
कुलिजन	—	१२७
कुष्ठ	—	१२९
कुहिली	—	१३३
केशर	—	१३१
कोकम	—	३९७
कोरल	—	८१
कोहळा	—	८९
खापरा	—	२६१
खैर	—	१३९
गहुला	—	२५०
गुळवेल	—	१४५
गुग्गुल	—	१४७
गेळफळ	—	२९९
गोकर्णी	—	२९
गोडा सूरण	—	१८९
गोरखमुंडी	—	१५३
घाणेराकरंज	—	१०७
घाणेंरा खेर	—	४५
घोटवेल	—	७७
घोळ	—	३२९
चन्दन	—	१५५
चवक	—	१५७
चांदवेंल	—	१४३
चालमोगरा	—	१६१
चिंच	—	६९
चिकणा	—	१३५
चित्रक	—	१६१

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चिरायता	—	१६५
चूका	—	३७
चेपचीनी	—	१७५
जटामांसी	—	१७७
जांभूळ	—	१७९
जायफळ	—	१७६
जिरें	—	१८१
जुनकी बैर	—	३९३
जेठीमद	—	२९६
जोगी बादशाह	—	३११
टांकली	—	२४१
ट्रेंटु	—	४३
डाळिंब	—	२५
डिकेमाळी	—	१८५
डिजिटेलिस	—	१८३
डोरलें	—	८५
तगर	—	१८७
तज	—	१८६
तमालपत्र	—	२०३
तालिसपत्र	—	२०७
तिळ	—	१९९
तेजबल	—	२०५
त्रायमाण	—	१९७
थूहर	—	३४७
दगडफूल	—	३३९
दारुहळद	—	२१३
द्राक्ष	—	९
दोमरा	—	२०९
देवदार	—	२११

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

धणे	—	२१५
धमासा	—	२१७
धावस	—	२२१
धामण	—	२१९
धोळी मूसळी	—	२९७
नागकेशर	—	२२३
नागबला	—	२२५
नागरमोथा	—	२२७
नागवेल	—	१९३
निर्गुंडी	—	२३०
निशोतर	—	२२९
पद्मकाष्ठ	—	२३८
पाडल	—	२४३
पाषाणवेद	—	२४५
पाढल	—	१९१
परिजात	—	२४७
पिंपरी	—	२४९
पिंपळी	—	२५०
पिठवण	—	२५३
पीतपापडा	—	२५५
पीपळ	—	३५७
पीलु	—	१३७
पोहकरमूळ	—	२६३
बकुल	—	३६१
बहेडा	—	२७३
बादाम	—	३५५
बांबू	—	२७६
बांडगुळ	—	४०२
ब्राम्ही	—	२७४

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

बांभूळ	—	२६७
बालवेखण्ड	—	३८३
बावची	—	२७७
बाहवा	—	३५
बिष्बा	—	२८७
बेल	—	२८१
बेलाडोना	—	२८३
भांग	—	१४१
भारंगी	—	२८४
भुई आंवला	—	२४५
भोंकर	—	३७७
भोंप कोहलु	—	३३७
मजीठ	—	२९१
माका	—	२८५
मायफल	—	२९५
मालकांगोणी	—	७९
मिरी	—	२८९
मुद्रा	—	१९
मूला	—	३९५
मोहडा	—	२९३
मोहरी	—	३०१
रीठा	—	४७
रासना	—	३०३
रुई	—	५९
रेवाचीनी	—	३१५
रोहिडा	—	३०७
रोहिष	—	११
लवंग	—	३०५
लसून	—	३१३

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

लाजरी — ३११
लाल चन्दन — २३३-३५
लिंबू — २३३
लोध्र — ३१९
लोबान — ३१६
वंशलोचन — २७५
वचनाग — २७९
वड — २६५
वनककड़ी — ३८५
वायवर्णा — २७१
बावडिंग — ३१७
विखरा — १९५
वेखंड — २६९
वेदमुश्क — ३८७
वँलची — ७१
शंखाहुली — ३३३
शतावरी — ३२३
शरपूंखा — ३२५
शाल — ३२७
शिरसी — ३३५
शिलारस — ३२२
शिवण — १०५
शेगडा — ३१७
शवगा — ३४३
षटकचु — ८३
स्याडजीरा — ३५७
सताप — ३४५
सप्तकपी — १६७
सरल — १६९

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

सलप	--	३६७
सराटे	—	१५१
सागर गोटा	—	९१
सागसाहोडा	--	३५९
सागवान	—	३६९
सांवर	—	३३१
सारोडी	—	३४१
सातविण	—	१७१
सादडा	--	५१
सालवण	--	३२९
सिंकोना	--	३९९
सीसू	--	३७३
सुरजान	--	३५१
सोवा	—	३७५
हरमळ	--	४१
हरीतकी	--	४००
हळद	--	३६५
हंसराज	--	३७९
हगण	—	३५९

Call No......
Book No......
A...

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

INDEX OF LATIN NAMES. 13

A

Abies webbiana, Windl. ... 207
Abroma augusta, Linn ... 75
Abutilon indicum, G. Don. ... 19
Acacia arabica Willd. ... 267
Acacia catechu, Willd. ... 139
Acacia farnesiana, Willd. ... 45
Achyranthes aspera, Linn. ... 31
Aconitum ferox, Wall. ... 279
Aconitum heterophyllum, Wall. ... 21
Acorus calamus, Linn. ... 269
Adhatoda vasica, Nees. ... 17
Adiantum lunulatum, Linn. ... 379
Aegle marmelos Corr. ... 281
Alangium lamarcii, Thw. ... 7
Albizzaa lebbeck, Linn ... 335
Allium sattivum, Linn. ... 313
Allium cepa, Linn. ... 251
Alpinia galanga, Sw. ... 127
Alstonia scholaris, BR. ... 171
Altingia excela, Noronha. ... 322
Amorphophallus campanulatus, Blume 189
An[illegible]cyclus pyr[illegible]thrum, DC. ... 1
Androp[illegible]gon citratu[illegible] DC. Ness ... 1
Andrographis [illegible]ta, Nees. ... 1[illegible]9

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

Apium Graveolens, Linn. ... 13
Aquilaria agallocha, Roxb. ... 5
Artemisia maritima, Linn. ... 121
Asparagus adscendens, Roxb. ... 297
Asparagus racemosus, Willd. ... 323
Asteracantha longifolia, Nees ... 195
Atropa belladonna, Linn. ... 283
Azadirachta indica, Juss. ... 231

B

Baliospermum montamum, Muell. ... 209
Balsamodendron mukul, Hook. ... 147
Bambusa arundinacea, Willd. ... 275
Bassia latifolia, Roxb ... 293
Bauhinia variegata, Linn. ... 81
Benincasa hispida, Thumb. ... 89
Berberis aristata, DC. ... 213
Boerhavia diffusa, Linn. ... 261
Brassica nigra, H.K.F.T. ... 301
Butea frondosa, Roxb. ... 191

C

Cæsalpina bondcuell, G.Felmina ... 91
Calotropis procera, Rbr. ... 59
Cannanis sativa, Linn. ... 141
Carum carvi, Linn. ... 357
Caryophyllus aromaticus, Linn. ... 315
Casearia esculenta, Linn. ... 167
Cassia fistula, Linn. ... 35
Cassia occidentalis, Linn. ... 113
Cassia tora, Limn. ... 241
Cedrus deodara, Linn. ... 211

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

Celastrus panniculata, Willd. ... 79
Centratherum anthelminticum, Linn. ... 353
Cinchona succirubra, Pavor. ... 99
Cinnamomum camphora, Nees. ... 99
Cinnamomum tamala, Linn. ... 203
Cinnamomum zeylanicum, Breyn. ... 186
Citrullus colocynthis, Schard. ... 67
Citrus acida, Linn. ... 235
Citrus medica, Linn. ... 233
Claviceps purpurea, Fr. Tul. ... 49
Clerodendron phlomides, Linn. ... 41
Clerodendron serratum, Spreng. ... 284
Clitoria ternatea, Bakel. ... 29
Colchicem lvtevm, Bakel. ... 351
Cordi a dichotoma, Forst. ... 377
Coriandrum, sativum, Linn. ... 215
Cratæva religiosa, Forst, ... 271
Crocus sativus, Linn, .. 131
Cuminum cyminum, Linn. ... 181
Curcuma, aromatica, Salbis. ... 61
Curcuma longa. Linn. ... 355
Curcuma zedoaria, Rose. ... 83
Cyperus rotundus, Linn. ... 227

D

Dalbergia stsoo, Roxb. ... 373
Delhinium zalil, Caith. ... 197
Desmodium gangeticium, DC. ... 329
Digitalis purpurea, Linn. ... 183

E

Eclipta alba, Hassk. ... 285
Elettaria cardamomum, Maton. ... 71

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

Embelia officinalis, Gaertn. ... 63
Eugenia jambolana, Lamk. ... 179
Embelia ribes, Burm. ... 317
Eugenia jambolana, Lamk. ... 179
Euphorbia neriifolia, Linn. ... 347
Evolvulus alsinoides, Linn. ... 333

F

Fagonia arabica, Linn. ... 217
Ferula narthex, Boiss ... 349
Ficus bengalensis, Linn. ... 265
Ficus glomerata, Roxb. ... 149
Ficus religiosa, Linn. ... 257
Fumaria pavriflora, Lamk ... 255

G

Garcinia indica, Chois ... 397
Gardenia gummifera, Linn. .. 185
Gloriosa superba, Linn. ... 301
Glycyrrhiza glabra, Linn. ... 216
Gmelina arborea, Roxb. ... 105
Gossypium herbaceum, Linn. ... 95
Grewia tiliæfolia, Vahl. ... 219
Gum benzoin, Dyrand. ... 216
Gynocardia odorata Rbr. ... 161

H

Hedychium spicatum, Ham. ... 101
Hemidesmus indicus, Rbr. ... 27
Hibiscus abelmoschus, Linn ... 320
Holarrhena antidysenterica wall ... 65

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

Hydoncarpus wightiana, Blume. ... 201
Hydrocotyle asiatica, Linn. ... 274
Hyocoyamus niger, Linn. ... 15

I

Inula racemosa, Hook ... 263
Ipomoea digitata, Linn. ... 337
Ipomoea turpethum, BR. ... 229
Iris versicolor, Linn. ... 383

J

Jatrorrhiza palmata, Linn. ... 109

L

Linum usitatissimum, Linn. ... 53
Loranthus longiflorus, Desr. ... 402
Luffa amara, Roxb. ... 87

M

Mallotus philippinensis, Muell ... 97
Mesua ferrea, Linn. ... 223
Mimosa pudica, Linn. ... 311
Mimusops elengi, Linn. ... 361
Moringa pterygosperma, Gtrn. ... 343
Mucuna pruriens, D.C. ... 133
Myrica nagi, Thunb. ... 117
Myristica fragans, Houtt. ... 176

N

Nardostachys jatamansi, DC. ... 177
Nelumbium speciosum, Willd. ... 111

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

Nerium odorum, Soland ... 93
Nyctanthes arbortristis, Linn. ... 247

O

Orchis laxiflora Lam. ... 367
Orcxylum indicum, Vent. ... 43
Oxalis corniculata, Linn. ... 159

P

Paederia foetida, Linn. ... 143
Peucedanum graveolens, Benth & Hook. 375
Panganum harmala, Linn. ... 401
Papaver somniferum, Linn. ... 33
Parmelia perforata, Linn. ... 339
Pterocarpus santalinus, Linn. ... 389
Phyllanthus niruri, Linn. ... 247
Picrorhiza kurrooa, Benth ... 125
Pinus longifolia, Roxb. ... 169
Piper betle, Linn. ... 193
Piper chaba, Hunter ... 157
Piper cubeba, Micuel. ... 103
Piper longum, Linn. ... 259
Piper nigrum, Linn. ... 289
Plantago ovata, Forsk. ... 73
Pluchea lanceolata, G.be. ... 303
Plumbago zeylanica, Linn. ... 163
Podophyllum emodi, Wall. ... 385
Pongamia glabra, Vent. ... 107
Portulaca oleracea, Linn ... 321
Prunus mabaleb, Linn. ... 250
Prunus amygdalus, Baili. ... 355
Prunus puddum Linn. ... 23
Psoralea corylifolia, Linn. ... 277

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

Pterocarcarpus santalinus, Linn. ... 25
Punica granatum, Linn. ... 25

Q

Quercus infectoria, Oliv ... 295

R

Randia dumetorum, Lamk. .. 299
Raphanus sativus, Linn. ... 395
Rauwolfia serpentina, Benth. ... 173
Rheum emodj, Wall. ... 305
Rhus succedanea, Linn. ... 115
Ricinus communis, Linn. ... 39
Rubia cordifolia, Linn. ... 291
Rumex vesicarius, Linn. ... 37
Ruta graveolens, Linn. ... 345

S

Salix caprea, Linn. ... 387
Salvadora persica, Linn. ... 137
Santalum album, Linn. ... 155
Sapindus trifoliata, Linn. ... 47
Saraca indica, Linn. ... 55
Saussurea lapa, Clarke. ... 129
Saussurea saraca, Linn. ...
Saxifraga Linulata, Wall. ... 245
Semecarpus anacardium, Linn, ... 287
Sesamum indicum, Linn. ... 199
Sesbania grandiflora, Pers. K. ... 3
Shorea robusta, Gaertn. ... 327
Sida cordifolia, Linn. ... 135
Sida humilis, Linn. ... 225
Smilax china, Linn. ... 175
Smilax zeylanica, Linn. ... 77
Solanum indicum, Linn. ... 85
Sphaeranteu indicus, Linn. ... 135

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

Sterelucous aspera, Lovr. ... 359
Stereospermum suaveolens Dc, ... 243
Strychnos nuxvomica, Linn. ... 123
Swertia chirata, Ham. ... 165
Symplocos racemosa, Roxb. ... 319

T

Tamarindus indica, Linn. ... 69
Tecomella undulata. Cadon. ... 307
Tectona grandis. Linn. ... 359
Tephrosia purpurea, Pers. ... 325
Terminalia arjuna, W&A. ... 51
Terminalia chebula, Linn. ... 400
Terminalia belerica, Roxb. ... 273
Tinospora cordifolia, Miers. ... 145
Trapa bispinosa, Roxb. ... 371
Tribulus terrestris, Linn ... 151
Trichosanthes dioica, Roxb. ... 239

U

Uraria lagopoides, DC. ... 253

V

Vaccinium myristis, Linn. ... 393
Valeriana wallichii, DC. ... 187
Vernonia cinera, Linn. ... 341
Viola odorata, Linn. ... 363
Vitex negundo, Linn. ... 237
Vitis quadrangularis, Wall. ... 381
Vitis vinifera, Linn ... 9

W

Withania somnifera, Dunal. ... 57
Woodfordia fruticosa, Kurz. ... 221

Z

Zanthoxylm alatum, Roxb. ... 205
Zingiber officinale, Rose. ... 23

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

आधार ग्रंथः—

चरक संहिता
सुश्रुतसंहिता
अष्टांगहृदय
भावप्रकाश
मदनपाल निघण्टु
राजनिघण्टु
कैयदेवादि निघण्टु
द्रव्य गुणसंग्रह—श्री यादवजी त्रिकमजी आचार्य
Useful Plants of India & Pakistan by Dastur.

Indian Medicinal Plants	by Kirtikar, K. R. & Basu, B. D.
Vegetable Materia Medica of Western India	,, Dymock, W.
Indigenous drugs of India	,, Chopra R. N.
Commercial Products of India	,, Watt G.
Indian materia medica	,, Nadkarni, K. M.
Commercial drugs of India	,, Dutta, N. B.
Flora of British India	,, Hooker, J. D.
A Dictionary of the Economic products of India	Watt. G.
Wild Flowers of Kashmir	,, Coventry.

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

शुद्धिपत्र

पृष्ठ संख्या	अशुद्ध	शुद्ध
२८	मराठी–ऊपरसाल	उपळसर
३१	लेटिन–Aspera	Aspera, Linn
६७	गु. इन्द्रावारुणा	गु. इन्द्रामण
७९	मराठी–अघेडी	अघेंडो
८९	गुजराती–कोह्का	कोहळा
	गुजराती–मालकंगी	मालकांगोणी
९१	लेटिन–Pongamia glabra, Vent.	Cæsalpinia bonducell, Fleming.
	नैसर्गिक–(Papilionaceae)	(Caesalpiniacea.)
९२	चित्र–Ponogamia glabra Vent (Papllionaceae)	Cæsaplpinia bonducell Fleming. (Caesalpiniacea)
११५	गुजराती–काकडा	काकडासिंगी
१३९	मराठी–	खैर
१७९	मराठी –जम्बू	जांभळ
१९३	गुजराती–नागवेल	नागरवेल
१९७	गुजराती–त्रायमाण	त्रायमाण तृष्णां
२०९-१०	लेटिन Montamum	Montamum, linn
२११-१२	,, Deodara	Deodara, linn
२१९	,, Teliafolia	Tiliafolia
२२३-२४	,, Ferrea	Ferrea, linn
२२९	Turpethum	Turpethum, Linn.
२३१	गुजराती–वरोडो	साटोडी
२३३	गु. लिम्बू	विजोरु
२४४	यह चित्र Cassia Alata का है।	Cassia Tora का

चित्र पृष्ठ संख्या ४०७ पर देखें।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

२६३	नैसर्गिक Irideae	Compositae
२६४	चित्र	;,
२६७	मराठी-बबुल	बाभूळ
२९९	गुजराती-मींडव	मीढळ
३१७	वविठाग	वावडिंग
	लेटीन	
३३१	Bonrlux ceiba, Linn	Bombax malabarioum
३३२	चित्र	, Linn
३३५	लेटिन-Aeliggio lellreeil, Linn.	Albizzia lebbeck, Linn.
३५१	हिन्दी-सुरजा	हि०-सरंजन

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

सम्मतियां

अहमदाबाद

मैने श्रीं अन्तुभाई वैद्य की '**वनस्पति परिचय**' नामक पुस्तक का अवलोकन किया। मुझे यह कहते हुए हर्ष है कि हिन्दी संसार में यह पुस्तक अपने ढंग की निराली है। लेखक ने रस वीर्य विपाक गुण प्रभाव और वानस्पतिक विकृतियों का वर्णन बड़े ही सुन्दर ढंग से विवेचन किया है। पुस्तक के चित्र पाठकों को प्रत्येक चिकित्सोपयोगी वनस्पति के पहिचानने में बहुत सहायता होगी।

आज से आयुर्वेद साहित्य का यह एक अनूठा मोती है जो वैद्यजी ने विभिन्न ग्रंथों का मंथनकर निकाला है।

मुझे आशा ही नहीं वरन विश्वास है कि वैद्य समाज, अध्यापक वर्ग और विद्यार्थी वर्ग इस पुस्तक को अपनाकर लेखक का उत्साह वर्धन करेंगे।

मैं प्रस्तुत पुस्तक के रचयिता श्री अन्तुभाई को इस सत्कार्य के लिए बधाई देता हूं।

वल्लभराम वैद्य,
मेम्बर,--बोर्ड ऑफ इंडियन सिस्टम्स ऑफ मेडिसिन्स,
आयुर्वेदिक स्टेट फेकल्टी, कस्तूरबा मेमोरियल
ट्रस्ट, आयुर्वेदिक रिसर्च डिपार्टमेंट,
और फेलो,--बडौदा युनिवर्सिटी तथा सदस्य, गुजरात
युनिवर्सिटी.

ता. १-९-५२

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

४५ कॅथेड्रल स्ट्रीट,
बम्बई २.

श्रीमान् अन्तुभाई वैद्य लिखित वनस्पति परिचय पुस्तक देखी। पुस्तक में वनस्पतियों के नाम विविध भाषाओं में दिये गये हैं। पुस्तक में रस, वीर्य, विपाक प्रभाव और कौन कौन रोग में उपयोगी है दिया गया है। पुस्तक नवीन ढंग से बहुत परिश्रम के साथ लिखी गई है। तदर्थ ग्रन्थकर्ता धन्यवाद के पात्र हैं।

वैद्यसमाज, वनस्पति शास्त्री और विद्यार्थी वर्ग इसका अवश्य लाभ उठावेंगे।

वामनराव दीनानाथ
सभापति, महागुजरात आयुर्वेद
महासम्मेलन, बम्बई.

ता० २५-६-५२

डॉ विगास स्ट्रीट,
बम्बई. २

श्री युत वैद्यराज अन्तुभाई विश्वनाथ विरचित **'वनस्पति परिचय'** (संक्षिप्तसचित्र) के छपे हुए २८० पृष्ठ देखे। ग्रन्थ की लेखनशैली नवीन और अच्छी है। यह ग्रन्थ वनस्पति परिचय के लिए वैद्यों और विद्यार्थियोंको उपयुक्त होगा। प्रायः प्रत्येक वनस्पति के चित्र इस ग्रन्थ में दिये गए हैं। चित्रों में वनस्पतियों के अङ्गदर्शक अ, इ, उ, क, आदि संकेताक्षर दिये गए हैं

वैद्य जादवजी त्रीकमजी आचार्य

ता० २५-६-१९५२

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

सम्मतियां

वैद्यरत्न पं. शिव शर्मा; आयुर्वेदाचार्य; D. Sc. (Ayu.)
सभापति–अखिल भारतीय आयुर्वेद महासम्मेलन, दिल्ली.

मैंने श्री अन्तुभाई वैद्य लिखित "वनस्पति-परिचय" के कुछ अंश मुद्रण के समय देखे। मुझे यह कहने में हर्ष है कि यह पुस्तक बड़ी योग्यता और अनुभव से लिखी गई है। जिन वनस्पतियों का वर्णन किया गया है उनके संबंध में जानने योग्य सभी बातें स्पष्ट और सरल भाषा में दी गई हैं। विद्यार्थियों, वैद्यों और साधारण जिज्ञासुओं के लिए भी यह पुस्तक अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होगी। लेखक का परिश्रम पूर्णतया सफल हुआ है और इसके लिए वह धन्यवाददाई हैं।

ता०१२-६-१९५२ शिवशर्मा

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

सौराष्ट्र गवर्मेंट, आयुर्वेदिक विभाग, राजकोट

श्री अन्तुभाई वैद्य लिखित "वनस्पति-परिचय" सचित्र व संक्षिप्त होने पर भी उसकी उपादेयता को देखकर अत्यन्त आनन्द हुआ। वृहत् निघंटुओं में वर्णित अनिश्चित, संदिग्ध औषधोपयोगी वनस्पतियों का निर्णय अत्यन्त जटिल है। ऐसी स्थिति में प्रस्तुत पुस्तक लिख कर लेखक ने जनता और विद्यार्थी समाज कीं अमूल्य सेवा की है। पुस्तक में नैसर्गिक वर्णन, वानस्पतिक विकृतियां, रस, वीर्य, विपाक, प्रभाव तथा रोगोपयोग का वर्णन अपने ढंग का अनुठा है, जो चिकित्सा क्षेत्र में अत्यन्त ही उपयोगी सिद्ध होगा।

पुस्तक में भारतीय चिकित्सा पद्धति विभाग बंबई द्वारा निर्धारित समस्त वनस्पतियों का उल्लेख है, जो विद्यार्थियों के लिए निःसंदेह पथ प्रदर्शन करेगा।

साथ ही वैद्य समाज भी इस अनुठी उपयोगी पुस्तक का यथेष्ट लाभ ले, जनता का कल्याण और लेखक को ऐसे सत्कार्य के लिये प्रोत्साहित करेंगे।

वासुदेव मू. द्विवेदी,
डायरेक्टर ऑफ आयुर्वेदिक मेडिकल सर्विसेस.

१४-५-१९५२

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

पोद्दार मेडिकल कॉलेज; बंबई.

श्रीयुत अन्तुभाई लिखित "वनस्पति परिचय" का अवलोकन किया। यह पुस्तक वनस्पतियों के सुन्दर चित्रों से युक्त होने के कारण वैद्य बन्धुओं के लिए और भी उपादेय हो गई है। इन चित्रों की सहायता से वनस्पति परिचय में अत्यन्त सरलता हो गई है।

विविध भाषाओं में वनस्पतियों के नाम संक्षिप्त किन्तु सुनिश्चित वनस्पति परिचय, गुण आदि के वर्णन के कारण पुस्तक आयुर्वेदीय छात्रों तथा चिकित्सकों दोनों के लिए उपादेय और संग्रहणीय हो गई है। इस प्रकार की सचित्र पुस्तक प्रकाशनार्थ लेखक व प्रकाशक बधाई के पात्र हैं।

कविराज महेन्द्रनाथ शास्त्री,
बा. ए. आयुर्वेदाचार्य, वैद्य वाचस्पति,
प्रिन्सिपल–पोद्दार मेडिकल कॉलेज;
सुप्रिन्टेन्डेन्ट–म. आ. पोद्दार
हॉस्पीटल, बम्बई.

१९–६ १९५२

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

आरोग्य धाम
बोझांक्वेट मार्केट, इन्दौर

श्री० डाँ० अन्तुभाई वैद्य आयुर्वेदाचार्य द्वारा लिखित 'वनस्पति परिचय' पुस्तक का प्रारम्भिक अंश देखकर अत्यन्त आनन्द हुआ। यद्यपि प्रस्तुत पुस्तक 'तवर्ग' तक की वनौषधियों का एक सुन्दर संग्रह है फिर भी प्रत्येक औषधि का संकलन, उसकी लेखनशैली अपने ढंग की नवीन और वनौषधि शास्त्र पर आज तक प्रकाशित ग्रंथों में उत्तम है।

आयुर्वेद का छात्र और शिक्षित वर्ग इस पुस्तक से उन सब शास्त्र और लौकिक परिपाटियों का सम्यग्ज्ञान सम्पादन कर सकेंगे जो किसी भी वनौषधि के लिए उसके शास्त्रीय विवेचन और अनुभव की दृष्टि से जानना आवश्यक है।

लेखक ने प्रत्येक औषधि के साथ उसके प्रतिनिधि द्रव्य, दर्पनाशक वनस्पति और वानस्पतिक विकृतियाँ (Plant Pathology) पर अतिव सुन्दर और सामयिक विवेचन दिया है, जो अन्यत्र कहा भी मिलना अशक्य प्राय: हैं। एक वनौषधि शास्त्र के लिए जितनी शास्त्रीय विवेचना की आवश्यकता है उतनी या उससे भी अधिक उसकी लौकिक और आनुभविक, प्रायोगिक पद्धति की भी आवश्यकता होती है जिसे लेखक ने अपने अगम्य अध्ययन और परिश्रम से पूर्ण किया हैं।

मैं वैद्य समाज और वनौषधि शास्त्रज्ञों से सादर अनुरोध करूंगा कि वे इस पुस्तक का अवश्य ही अध्ययन करें और लेखक के सत्परिश्रम को सफल बनावें।

भिषकरत्न वैद्य कालूशंकर चतुर्वेदी,
भूतपूर्व प्रधान वैद्य-प्रिन्स यशवन्तराव आयुर्वेदिक औषधालय तथा
सुपरिन्टेन्डन्ट-सर हुकमचंद आयुर्वेद इन्स्टिटयूट
इन्दौर.

ता.-३-६-५२

Vaidya...
National ...
Punjabi ...
Call No.....
...
000096

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

DR. L. L. MAHABALE, ...

DEPARTMENT OF BOTANY,
THE INSTITUTE OF SCIENCE,
BOMBAY-1 (India).

INDIAN BOTANICAL SOCIETY

... P. 29 ... Date 9th July, 1952

I have gone through the excellent manual on plant written by Shri Antubhai Vaidya. The information regarding the uses ... is accurate and is given in clear ... The book is well illustrated and ... explanation of technical ... several ... and ... the book ... which should prove helpful to readers.

This is one of the few books well written in Indian languages and ... sure will be widely appreciated ... interested in plants and Ayurveda. Shri Antubhai's efforts in writing this are certainly praiseworthy.

L. L. Mahabale

Chairman
BOARD OF STUDIES IN BOT...
UNIVERSITY OF BOMBA...
BOMBA...

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection